॥ श्रीः ॥

कोकसार-वैद्यक ।

(कोकापंडितकृत वैद्यकग्रन्थका सार)

जिसको

पंडित नारायणप्रसादमिश्र लखीमपुर खीरी
निवासीने सांसारिक जनोंके उपकारार्थ
लिपिबद्ध किया !

जिसमें

स्त्री पुरुषोंके लक्षण और गुप्त रोग उपाय
सहित वर्णित हैं.

जिसको

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास-
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें
मैनेजर प० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये
छापकर प्रकाशित किया.

शाके १८३८, संवत् १९७३.

कल्याण-मुंबई.

सब हक्क यन्त्राधिकारीने अपने आधीन रखे हैं।

वैद्यकग्रन्थाः ।

नाम. की.रु.आ.ट.म.रु.आ.

६३० अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) मूल मोटा अक्षर वाग्भट विरचित. .... खे २-८ ०-६

६३१ अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) वाग्भट विरचित तथा पं० रविदत्तकृत भाषाटीका-सहित और पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र संशोधित। जिसमें-सूत्रस्थान, शारीरकस्थान, निदानस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, उत्तरस्थान, इत्यादिमें संपूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, निदान, लक्षण और क्काथ, चूर्ण, रस, घी, तैल आदिसे अच्छी प्रकार चिकित्सा वर्णित है .... खे ८-० १-०

६३२ अमृतसागर हिन्दी भाषामें.... .... क २-८ ०-८

६३३ अनुपानदर्पण भाषाटीका सहित .... क ०-१० ०-२

६३४ अर्कप्रकाश भाषाटीका रावणकृत (सब औषधियोंके गुण व अर्क निकालनेकी क्रिया) क ०-१४ ०-२

६३५ अभिनवनिघंटु (द्वितीय भाग) यह यूनानी दवाइयोंका अत्युत्तम, अपूर्व निघंटु है, इसमें हरएक दवाईका प्रसिद्ध नाम और यथा प्राप्त संस्कृत, फारसी अरबी और इंग्रेजी नामोंका वर्णन है. २-८ ०-४

६३६ अंजननिदान भाषाटीका अन्वयसहित. क ०-८ ०-१

६३७ आयुर्वेद सुषेण भा० टी० .... खे ०-१४ ०-२

६३८ आदिशास्त्र भा०टी०सहित (कोकशास्त्र) क ०-१० ०-१

६३९ चिकित्साचक्रवर्ती-यह अकबर बादशाह निर्मित मुजर्रबात अकबरीका सरल हिन्दी अनुवाद है इसमें सैंकडों फर्कीरी नुसखे हैं. १-० ०-२

६४० अजीर्णतिमिरभास्कर भाषाटीका-अजीर्ण रोगके विषयमें चुनचुनकर ग्रंथोक्त औषधीका संग्रह किया है .... क ०-३ ०-१

६४१ इलाजुल्गुर्बा-वैद्य और हकीमोंके लिये

बडे कामकी वस्तु है इसमें शिरसे पांवत-
कके सब रोगोंके लक्षण निदान और
उनके नुसखे एक २ रोगपर दश दश वीस
२ दिये हैं. .... क १-४ ०-३

६४२ आयुर्वेदचिन्तामणि अर्थात् मिश्रानिघंटु-(चरक,
सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, राजनिघण्टु, आत्रेय-
संहिता, राजवल्लभ और वैद्यक निघंटु इत्यादि
अनेक ग्रंथोंसे संग्रहीत और अनुवादित.) क १-१२ ०-३

६४३ उपदंशतिमिर (गर्मी)नाशक भाषामें क ०-३ ०-॥

६४४ कूटमुद्गराख्यसटीक .... (१) ०-२ ०-॥

६४५ कूटमुद्गर भा०टी० .... क ०-२ ०-॥

कुमारतंत्र रावणकृत भाषाटीका .... खे ०-८ ०-१

६४६ केशकल्पद्रुम इस पुस्तकमें १०१ उत्तम
नुसखे बहुत उत्तम बालोंको काला करनेके
लिखे हैं. .... क ०-४ ०-॥

६४७ पथ्योपथ्योदय भाषाटीका व्यंजन
बनानेका ग्रंथ. .... क १-८ ०-२

६४८ चरकसंहिता-(चरकऋषिप्रणीत) टीका
टकसाल निवासी वैद्यपञ्चानन पं०
रामप्रसाद वैद्योपाध्यायकृत प्रसादनी
भाषाटीकासहित । चरकके आठोंस्थान
एकसे एक अपूर्व होनेपरभी "चिकि-
त्सास्थान" तो अद्वितीय है उसमें
निरोग मनुष्यके लिये वे सहजप्रयोग
लिखे हैं कि, वह कभी बीमारही
न हो और रोगी चिकित्सा करनेपर
तत्काल निरोग हो । वैद्यमात्रको यह
ग्रन्थ अवश्य संग्रह करना चाहिये ।
पहलेसे अबकीवार बहुत बडा होगया
है जिसकी सुन्दर सुनहरी दो जिल्द
बन्धी है. .... रे ९-० १-०

६४९ चिकित्साधातुसार भाषा .... क ०-६ ०-१

६५० चिकित्साखण्ड भाषाटीका प्रथमभाग (१) ४-० ०-८

६५१ ज्वरतिमिरनाशक भाषाटीका सर्व
प्रकारके ज्वरोंकी अच्छी २ अनुभवी
दवाओंका संग्रह .... क १-० ०-२

६५२ जर्राही प्रकाश-जर्राही (शस्त्रक्रिया)
संबंधी सब प्रकारके विषयोंका वर्णन है. १-८ ०-४

६५३ डाक्टरी चिकित्सासार भाषा .... खे ०-१० ०-१

६५४ धन्वंतरी भाषाटीका (वैद्यकग्रंथ)
लाला शालिग्राम वैश्यकृत भाषाटीका
जिसमें समस्त रोगोंका निदान कारण
लक्षण और चिकित्सा औषधी संग्रह
कर लिखा है द्वितीयावृत्ति .... क ६-० ०-८

६५५ नपुंसकसंजीवनी प्रथम भाग .... क ०-६ ०-॥

६५६ तथा दूसरा भाग .... क ०-६ ०-॥

६५७ नपुंसकचिकित्सा भाषाटीका (नूतन) क ०-६ ०-१

६५८ नाडीदर्पण नाडी देखनेमें अत्यन्त उत्कृष्ट क ०-६ ०-१

६५९ नाडीपरीक्षा भाषाटीका अतिसुलभ.... क ०-१॥ ०-॥

६६० निदानदीपिका संस्कृत .... मुं १-८ ०-४

६६१ पथ्यापथ्यभाषाटीका.... .... क ०-१२ ०-२॥

६६२ पशुचिकित्सा अर्थात्-वृषकल्पद्रुम .... क १-० ०-२

६६३ पाकप्रदीप वाजीकरण भा० टी० .... क ०-८ ०-१

६६४ पाकमाला वाकबोधोदय भा० टी० क ०-३ ०-॥

६६५ बालतंत्रभाषावार्तिक.... .... क ०-१४ ०-२

६६६ बालसंजीवन (वार्तिकमें) .... क ०-८ ०-२

६६७ बालबोधपाकावली .... क ०-२ ०-॥

६६८ बूटीप्रचार प्रथम भाग-अनुभव किये
हुए चुटकुले इसमें जहां बूटीयोंके १००
से ऊपर ऐसे अनुपम चित्र दिये
गये हैं. १-० ०-२

६६९ बृहन्निघण्टुरत्नाकर प्रथमभाग. .... क ३-० ०-६

६७०	बृहन्निघण्टुरत्नाकर द्वितीयभाग	क	३-८	०-६
६७१	बृहन्निघण्टुरत्नाकर तृतीयभाग	क	३-८	०-८
६७२	बृहन्निघण्टुरत्नाकर चतुर्थभाग	(१)	२-८	०-६
६७३	बृहन्निघण्टुरत्नाकर पंचम भाग	क	५-८	०-१२
६७४	बृहन्निघण्टुरत्नाकर छठा भाग	खे	४-८	०-१०
६७५	बृहन्निघंटु रत्नाकर-सप्तम अष्टम भाग जिसमें (अनेक देशदेशांतरीय संस्कृत, हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गौर्जरी, द्राविडी, तैलंगी, औत्कली, इंग्लिश, लैटिन, फारसी, अरबी भाषाओंमें सर्व औषधोंके नाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसमेत	क	८-०	१-०
६७६	बृहन्निघण्टुरत्नाकर संपूर्ण आठोंभाग	क	३०-०	३-०
६७७	बोपदेवशतकवैद्यक भाषाटीका समेत	खे	०-६	०-॥
६७८	भावप्रकाश भा० टी० अति उत्तम*	खे	७-०	१-०
६७९	माधवनिदान-मधुकोष और आतंकदर्पण संस्कृतटीकासमेत	खे	३-०	०-६
६८०	मदनपालनिघंटु भाषाटीका ग्लेज	क	२-०	०-४
	,, रफ	क	१-१२	०-४
६८१	हिकमतप्रकाश	खे	१-४	०-२
६८२	माधवनिदान भाषाटीका उत्तम ग्लेज	क	२-०	०-॥
६८३	माधवनिदान ,, रफ	क	१-८	०-३
६८४	मिजान तिब्ब सर्वांग चिकित्सा	म	२-०	०-४
६८५	योगतरङ्गिणी बहुतही उत्तम भा०टी०	रे	२-०	०-४
६८६	योगचिन्तामणि भाषाटीका	क	१-४	०-४
६८७	यूनानके हकीम-बदहजमी यह आमाशयकी बीमारी है, इसी पुस्तकमें २९ प्रकारकी बदहजमी वर्णन करके उनकी औषधियां लिखी हैं.	क	०-२	०-॥
६८८	रसव्यंजनप्रकाश-जिसमें हर तरहके पक्वान्न भात, साग, कोज, मुरब्बा, अचार इत्यादि किस रीतिसे तैयार करना यह सुबोध हिंदी भाषामें अच्छी रीतिसे वर्णन किया है....	क	०-८	०-१

६८९	रसराजमहोदधि भाषा (वैद्यक) यूनानी हिकमत और यूनानी दवा और फकीरोंकी जड़ी बूटी और सन्तोंकी पुस्तकसे संग्रह है	क	०-१२	०-२
६९०	रसराजमहोदधि दूसराभाग (उपरोक्तसर्वाकारों समेत छपकर तैयार है)	क	०-१२	०-२
६९१	रसराज महोदधि तृतीय भाग	क	०-१२	०-२
६९२	रसराजमहोदधि चतुर्थ भाग	क	०-१२	०-२
***	तिब्बेईहसानी-यूनानी वैद्यकके मतसे प्रत्यंगके रोगोंके लक्षण, निदान, चिकित्सा और उत्तम उत्तम औषध बनानेकी क्रिया, नुसखे और विषचिकित्साका वर्णन है	खे	१-०	०-२
६९३	रसराजमहोदधि संपूर्ण चारों भाग सोनेरी सुंदर एकही जिल्दमें	क	३-८	०-६
६९४	वैद्यक-रसराजमहोदधि-संपूर्ण उपरोक्तालंकारोंसमेत पांचों भाग इकट्ठा लेनेवालोंको	खे	-०	०-८
६९५	विषयतंत्रचिकित्साप्रकाश भाषाटीका प्रायः सभी विषयोंकी चिकित्साओंका संग्रह....	खे	०-८	०-१
६९६	रसेन्द्रचिंतामणि भा० टी०-रसकार्यभी आयुर्वेदशास्त्रका एक प्रधान अंग है जो कार्य बड़े २ डाक्टरोंकी अमोघ औषधियोंभी नहीं कर सकतीं उन कार्योंपर तथा दुर्निवार रोगोंपरभी रसोंका विशेष प्रभाव होता है इसी हेतुसे यह प्राचीन सिद्ध लोगोंके बनाये हुए जितने रसग्रंथ हैं उनमें रसेंद्रचिंतामणि भली भांतिसे विख्यात है. उसीकी सरल हिंदी भाषाटीका यह तैयार है....	क	१-१२	०-४
६९७	रसराजसुन्दर भाषाटीकासह	श्री.	३-४	०-८
६९८	रसमञ्जरी भाषाटीका	क.	०-१४	०-२

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-कल्याण-मुम्बई.

भूमिका.

प्रगट हो कि दश वर्षकी अवस्थामें जब हम कसबा महमदी स्कूलमें अँगरेजी उर्दू पढते थे उस समय चौथे क्लासमें पंडित सर्वजीतसिंह पढाते थे उनके पास मकानपर हम नागरी पढने जाया करतेथे; एक दिन उनके पास लिथो अक्षरोंमें छपी हुई एक छोटी पुस्तक हमने देखी उसमें स्त्री पुरुषोंके नग्न चित्र बने हुए थे उसको देखनेकी इच्छासे हमने पूछा कि पंडितजी ! यह कौन पुस्तक है ? पंडितजीने उत्तर दिया कि यह कोकसार है. तुम्हारे देखने योग्य नहीं है. चित्रोंके कारण उस पुस्तकके देखनेके निमित्त बालबुद्धिवश हमने कई बार कहा, परंतु पंडितजीने पुस्तकको बाँधकर रखादिया. उसका नाम हमको स्मरण रहा. कुछ वर्षोंके उपरान्त हमने सुना कि कोकसारका छपना बन्द होगया है. तो हमने शोचा कि निर्लज्ज चित्रोंके कारण ऐसी पुस्तकका छापना सरकारने बन्द करदिया सो अच्छाही किया.

हालमें जब कोकशास्त्र नामक पुस्तकें नागरी उर्दूमें छपी हुई हमने देखीं तब हमारी यह इच्छा हुई कि ऐसा ग्रन्थ संस्कृतमें देखनेको मिल जाता तो अच्छा था. प्रकृतिका ऐसा नियम है कि मनुष्य सद्भावसे जिस वस्तुकी इच्छा करता है. वह वस्तु अवश्य प्राप्त हो जाती है. एक दिन एक पर्वती पंडित भवानीदत्त गोदानगोकरणनार्थमें आये उनके पास हमने कोकशास्त्र पुस्तक संस्कृत भाषामें देखी. पंडितजीने कहा कि यह तो कोकृत वैद्यक भाग है, इस ग्रंथके अन्यभी शकुन आदि अनेक भाग हैं. शकुनभागमें पक्षियोंकी बोली आदि द्वारा शकुन

वर्णन किये हैं, ज्योतिषभागमें भूगोल और खगोलविद्या है, तंत्रभागमें अनेक तंत्र और रसायनविद्या है, मंत्रभागमें अनेक सिद्धियोंका वर्णन है, यंत्रभागमें अनेक प्रकारकी कलायें वर्णन की गई हैं. परंतु हमारे पास यह वैद्यक भाग है, कई दिनपर्यन्त हम उस पुस्तकको देखते रहे. अनन्तर पंडितजीकी आज्ञासे हमने उसका आशय लिख लिया. उसी आशयको कुछ बढाकर यह पुस्तक हमने परोपकारबुद्धिसे लिखी है. इसमें दो भाग हैं १ पूर्व भाग, २ उत्तर भाग. तहां पूर्व भागमें वीर्यरक्षा स्त्रीपुरुषलक्षण आदि वर्णन किये हैं. उत्तर भागमें स्त्रीपुरुषोंके गुप्त रोग उपायसहित वर्णन किये हैं. इसके छापनेका सदैव अधिकार सेठ गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासजी मालिक ' लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर ' प्रेस कल्याणको देदिया है.

शुभाकांक्षी-
पं० नारायणप्रसादमिश्र,
लखीमपुरखीरी.



आवश्यक सूचना।

संपूर्ण कोकशास्त्रको भली भांति पढनेवाला मनुष्य सर्वज्ञ कहा जासकता है इसीसे एक हिंदी मसल मशहूर है कि क्या 'तुम कोक पढे हो.

आजकलके विज्ञापनोंकी ओर ध्यान दीजिये कि नाम तो कोकशास्त्र असली बडा विज्ञापनमें छपाया परंतु उसमें काट छाँट की हुई थोडीसी बातें लिख चार पाँच रुपये दाम रख भोले लोगोंको धोखा देनाही - किसी किसीने अपना कर्तव्य समझ रक्खा है, व्यापार तो प्रायः सबही करते हैं परंतु उसमें धोखा देना अच्छे मनुष्योंका काम नहीं है.

हमारी यह पुस्तक केवल एक (बचक) भागका सार है इसीसे हमने इस पुस्तकका नाम कोकसार बचक रक्खा है.

पहले जो पुस्तक लिथोमें छपी थी जिसका छापना सरकारने बंद करदिया है उसके बाबमें हमने सुनाथा कि उसमें पद्मिनी आदि स्त्रियोंके लक्षण और चौंसठ आसनोंके चौंसठ नग्न चित्र और कुछ औषधियां छपीथीं इसके पृथक और कुछ नहीं था. चौंसठ नग्न चित्रोंको अनुपकारी और अश्लील समझकर सरकारने उसका छापना बन्द कर दिया है.

आजकल कोकशास्त्रके नामसे कई तरह ग्रन्थ हिंदी उर्दूमें छपे हैं परंतु उनमें कोई अश्लील शब्द नहीं है गुप्तेन्द्रियका नाम योनिस्तनादिसे आशय समझानेके निमित्त लिखा गया है. इस कारण उनमें सरकारने हस्तक्षेप नहीं किया. जिस प्रकार यहाँकी

प्रजा राजभक्त है, अपनी सरकारकी भलाई सर्वदा चाहती है, इसी प्रकार सरकारभी अपनी प्रजाकी भलाईकी बातको अंगीकार करती है. यही समझकर हमने इस पुस्तकको सबकी भलाईके निमित्त यह ग्रंथ लिपिबद्ध किया है. इस कारण इसकी एक एक प्रति सबको अपने पास रखनी चाहिये.

शुभाकांक्षी—
नारायणप्रसादमिश्र,
लखीमपुर खीरी.



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

कोकसारवैद्यक विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.

(१)

राज्य सभा।

देखो पुस्तकका सातवांपृष्ठ

महाराजा शम्भूसिंह



सभासद

कामकलाकुशल कामिनी

पं॰ कोका

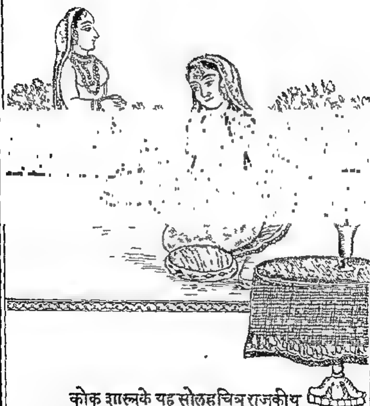
राजपुरुष

कोकशास्त्रके प्रधान

कामकुशलकामिनी पं॰ कोकाजी



रति स्वरूप.



कोक शास्त्रके यह सोलह चित्र राजकीय
चित्रकार गंगाबक्षजीसे "हनूमान शर्मा,
जैपुर सिटी"के मार्फत प्राप्तकर प्रकाशित किये हैं.

श्रीकामदेव स्वरूप.





पद्मिनी स्वरूप.



चित्रिणी स्वरूप.

(७)



हस्तिनी स्वरूप



शंखिनी स्वरूप



मृगप्रकृतिक पुरुष।

(१०)



शश प्रकृतिक पुरुष ।



वृषप्रकृतिक पुरुष ।



अल्पप्रकृतिक पुरष । ६

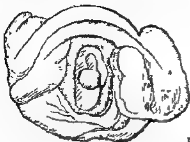
मदन निवास ज्ञानाकृति

कृष्णपक्षेऽधोयाति शुक्ले ऊर्ध्वंगमिष्यति।



प्रत्येकतिथिमें कामदेवका चढाव उतार

गर्भाशय स्थिति



१

गर्भस्थ शिशु



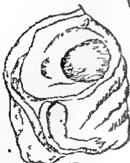
२

यमलगर्भ



३

अनिष्टप्रसव



७

गर्भवती



६

आसन्न प्रसव (१६) सुख प्रसवकाल





गर्भस्थसुस्थिति







श्रीः ।

कामसंजीवनी

अर्थात्

पं० कामनाथ (कोका) का संक्षिप्त जीवनचरित ।

दोहा–धनि जीवन उन नरनको, जो पराहितमें देत ॥
तन मन धन अरु सम्पदा, सब जग सुखके हेत ॥ १ ॥

महाराज भोजके समयमें काश्मीराधिपति महाराज शान्तिदेव 'यथा नाम तथा गुण' वाले थे और न्यायपूर्वक अपनी प्रजाका पुत्रवत् पालन करतेथे. महाराजके प्रधानमंत्री पंडित दीनानाथजी थे. वे अपने उत्तम स्वभावसे प्रजाको अति प्रसन्न रखतेथे. महाराजकी सब प्रजा उनको पिताके समान मानतीथी. एक दिन सोते समय पंडितजीने एक महासुन्दर पुरुष देखा कि वह स्वप्नमें कहरहाहै कि हम आपके घर जन्म लेंगे. उस दिन शिवरात्रिका व्रत था. स्वप्न देखतेही पंडितजीकी निद्रा भंग होगई तब पंडितजी उठकर बैठगये और शिवजीका ध्यान करनेलगे. पंडितानीके गर्भके दिन पूरे होनेको थे फाल्गुन शुक्लपक्षमें बालकका जन्म हुआ. पंडितजीने प्रसन्न होकर बालकके जन्मका उत्सव और जातकसंस्कार आदि बडी धूमधामके साथ किया कि जिसके वर्णन करनेकी यहाँ आवश्यकता नहीं. बालकके नामकरणके समय पंडितोंको बुलाकर बालकके लक्षण पूछे तब ज्योतिषियोंने उस बालकको भाग्यवान् बतलाया और कहा कि यह बालक बडा विद्वान् होगा और इसका नाम संसारभरमें प्रसिद्ध होगा. यह सुनकर पंडितजी बहुत प्रसन्न हुए. ज्योतिषियोंने उस बालकका नाम काशीनाथ रक्खा परंतु पंडित दीनानाथजीने उस

बालकको सुन्दर रूपवाला देखकर 'कामनाथ' नाम प्रसिद्ध किया. महाराज शान्तिदेवजी अपने प्रधान मंत्री पंडित दीनानाथजीके घर बालकका जन्म सुनकर बहुत आनन्दित हुए. क्योंकि उनकी महारानी भी गर्भवती थीं और दिन पूरे होचुकेथे, चैत्र कृष्णपक्षमें महाराज शान्तिदेवजीके घरमें भी बालकका जन्म हुआ. सुनतेही महाराजके आनन्दकी सीमा न रही. राजधानी भरमें आनन्द छागया. कारण यह कि महाराजकी आयु पचास वर्षसे अधिक होचुकी थी और तीन रानियोंमेंसे किसीके सन्तति नहीं थी. हमारे पीछे उत्तराधिकारी कौन होगा ? इस बातकी चिंतासे महाराज शान्तिदेवका चित्त प्रायः दुःखी रहता था. बालक उत्पन्न होतेही महाराजकी चिन्ता दूर होगई. प्रधानमंत्रीजी भी वृद्धावस्थामें पदार्पण करचुके थे. महाराजने .बालजन्मोत्सव किया और बालकका नाम शम्भूसिंह प्रसिद्ध किया. तथा बालकके लालन पालनका प्रबंध उत्तम रीतिसे किया. प्रधानमंत्रीजीका बालक कामनाथ जब .कुछ बोलने लगा तो उसकी वाणी ऐसी मधुर थी कि मानों कोकिला बोल रही हो. कोकिलाके समान उस बालकका स्वर सुनकर लोग उसको प्यारके भावसे कोका कहकर पुकारने लगे. कोकाकी मोहनीमूर्तिको देखकर लोग मोहित होजातेथे. नगरकी अनेक लुगाइयाँ प्रतिदिन कोकाके दर्शन करनेको आया करतीथीं. पंडित दीनानाथजी स्वयं बडे विद्वान् थे. कोकाको अक्षराभ्यास कराकर एक एक पद करके अनेक श्लोक और व्याकरणके अनेक सूत्र कंठस्थ करादिये. यह प्राकृतिक नियम है कि विद्वान्के विद्वान्ही पुत्र होताहै. जैसे तिलोंमें तेल है परंतु विना प्रयत्न किये नहीं निकलता. इसी प्रकार विना शिक्षाके कोई शिक्षित नहीं होसकता. जब कोकाकी आयु सात वर्षकी हुई और आठवें वर्षका आरंभ हुआ तब पंडितजीने उपनयन संस्कार कराकर कोकाको विद्यारंभ कराया. प्रथम व्याकरण पढाया, साथही काव्य

कोषमें अभ्यास कराया. अनन्तर अन्यशास्त्रोंमें अभ्यास कराया, तदनन्तर वेद वेदांगोंमें भी अभ्यास कराया. आयुर्वेद (वैद्यक) में कोकाकी बुद्धि बडी तीव्र थी. इस प्रकार कोकाजी थोडेही कालमें विद्वान् होगये. कोकाजीकी स्मरणशक्ति असीम थी. एक दिन पंडितजी अपने बालक कोकाको राजसभामें लेगये. तो कोकाजीकी मोहनी मूर्ति देखकर महाराज शान्तिदेव मारे आनन्दके फूले नहीं समाये. और जब कोकाकी विद्या बुद्धिका चमत्कार सुना तो बोले कि इस बालकको प्रतिदिन राजदरबारमें लाया करो. अब कोका भी राजदरबारमें नित्य जाने लगे. कोकाको बिना देखे महाराजका चित्त शान्त नहीं होताथा. जिस दिन किसी कारणसे कोकाका जाना नहीं होताथा उस दिन महाराज कोकाको बुलवालेतेथे. एक दिन राजकुमार शंभूसिंहभी दरबारमें बैठेथे उसी समय अपने पिताके साथ कोका भी दरबारमें पहुँचे. कोकाको देखतेही शंभूसिंहके चित्तमें कोकासे मिलनेकी उत्कंठा हुई. क्योंकि कोकाकी विद्या और बुद्धिकी प्रशंसा राजकुमारने सुन रक्खीथी परंतु मिलनेका समागम नहीं हुआथा. अपने पिताके भयसे शंभूसिंह संकोचवश चुप बैठे रहे. महाराजने कोकाकी ओर संकेत कर राजकुमारसे कहा ' युवराज! देखो जिस-प्रकार हमारे प्रधानमंत्री पंडितदीनानाथजी हैं उसी प्रकार यह कोकाराम तुम्हारा प्रधानमंत्री है इसीकी सम्मतिसे तुमको राज-कार्य करना होगा. ' यह सुन राजकुमारने हाथ जोडकर बडी नम्रतासे कहा कि पिताजी ! जो आज्ञा. उसी दिनसे शंभूसिंहके चित्तमें कोकाजीसे अथाह प्रेम उत्पन्न होगया. अब प्रतिदिन राजकुमार भी कोकासे मिलनेकी इच्छासे आनेलगे. राजकुमार धनुर्विद्या पढरहेथे. यह सुन कोकाने अपने पितासे आज्ञा माँगी कि राजकुमारके साथ हम भी धनुर्विद्या पढेंगे. यह बात कोकाकी सुनकर और पुत्रके चित्तका अभिप्राय समझकर पंडितजीने कहा

कि अच्छा, धनुर्वेद्यके तत्त्वको अवश्य समझलो. आज्ञा पातेही उसी दिनसे कोकारामजी राजकुमारके साथ धनुर्विद्या पढनेलगे और कुछही दिनोंमें राजकुमारसे आगे निकल-गये, क्योंकि अभ्यास तो पहलेहीसे था. धनुर्वेदमें निपुण होने पश्चात् दोनोंमें इतनी गाढ मैत्री होगई कि एक दूसरेसे पृथक् होना नहीं चाहतेथे. जब कभी बाहरको निकलते तो राजकुमार और कोका दोनों मिलकर अश्वशालामें जाय एक एक घोडा लेकर उसको सजाय उसपर चलतेथे और एकसाथ रहतेथे. कोकाजी उसी घोडेको अपने लिये लेतेथे जिसको सबसे अधिक चंचल समझतेथे. राजकुमारसे इनका नंबर सब बातमें अव्वल रहताथा इसीसे राजकुमार बडी प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे देखतेथे और सब प्रकारसे इनको योग्य समझतेथे. एक दिनकी बात है कि राजकुमारके जन्मदिनका उत्सव था. राजसभामें छोटे छोटे राजा और नगरके सब प्रतिष्ठितजन तथा सब राजकर्मचारी यथायोग्य स्थानपर उपस्थित थे. उस समय महाराजके चित्तमें उमंग उठी तो युवराजको अपने समीप गद्दीपर बिठाकर राजतिलक धरादिया और शिरपर राजमुकुट रखदिया. अनंतर कोकाको प्रधानमंत्रीके आसनपर बिठाकर कहा कि देखो युवराजके लिये कैसा उत्तममंत्री हमने नियत किया है. यह देखकर सबलोग प्रसन्न हुए और राजालोग एकस्वरसे बोलउठे कि धन्य है. महाराजने युवराजके लिये बहुत सुयोग्य मंत्री नियत किया है. तदनन्तर महाराजने उस भरी सभामें एक प्रश्न किया. वह प्रश्न यह है कि संसारमें जितना प्रेम माता पिताका अपनी संतानपर होता है उतना प्रेम संतानको अपने माता पितापर नहीं होता. इसका क्या कारण है ? महाराजके इस प्रश्नके उत्तर देनेका साहस किसीको नहीं हुआ. तब कोकाने उठकर बडी नम्रताके साथ उत्तर दिया कि महाराज ! आपके प्रश्नका उत्तर यह है कि,—

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् ॥
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥ १ ॥
ततः स्वयंभूर्भगवानव्यक्तो व्यञ्जयन्प्रजाः ॥
महाभूतादिवृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुदः ॥ २ ॥

मनु० अ० १ श्लो० ५।६.

यह जगत् आदिमें अप्रज्ञात (प्रत्यक्षके अयोग्य) अर्थात् प्रत्यक्ष नहीं देख पडताथा अलक्षण (लक्षणरहित) अन्धकाररूप था और तर्करहित अविज्ञेय (जाननेके अयोग्य) सब ओरसे सोये हुएके समान था. अनन्तर स्वयंभू (स्वयं प्रगट होनेवाला) भगवान् (परमेश्वर) प्रजाको व्यक्त अवस्थामें प्राप्त करता हुआ अर्थात् स्थूलरूपसे प्रकाश करताहुआ अन्धकारको दूर करके प्रगट हुआ जिसका बल महाभूतोंसे घेराहुआहै ॥१॥२॥

उस स्वयंभू भगवान्की हम प्रजारूप सन्तान हैं कि जिसके माता पिता नहीं है. सन्तानपर उत्पन्न करने और पालन करनेवालेका प्रेम होताहै. अतः स्वयंभू भगवान्का हमपर प्रेम है और स्वयंभूभगवान्के माता पिता नहीं इसका कारण प्रेमभी नहीं यह उसका गुण हममें आया. पिताका गुण पुत्रमें आताहै पुत्रका गुण पितामें नहीं जाता, इसीसे सन्तानपर माता पिताका प्रेम होताहै और माता पितापर सन्तानका प्रेम नहीं होता. क्योंकि 'कारणाभावे कार्याभावः' कारणके अभावमें कार्यका अभाव होताहै. स्वयंभू भगवान्के माता पिता रूप कारणका अभाव होनेसे प्रेमरूप कार्यका अभाव हुआ. यह समयानुसार युक्तियुक्त उत्तर सुनकर महाराज शांतिदेवजी बहुत प्रसन्न हुए.

युक्त्या युक्तं वाक्यं बालेनाऽपि प्रभाषितं ग्राह्यम् ॥
त्याज्यं युक्तिविहीनं श्रौतं स्यात्स्मार्तकं वा स्यात् ॥ ३ ॥

युक्तिसे युक्त वचन बालक भी कहे तो उसका वह वचन ग्रहण करना चाहिये और युक्तिसे हीन वचन त्याग करे चाहे श्रुति वा स्मृतिका हो यह युक्तियुक्त सामयिक सिद्धान्त है, इस सिद्धान्तके अनुसार प्रसन्नता प्रगट करके महाराज शांतिदेवजी कोकासे कहनेलगे कि तुम अपने पिताके कार्यमें पूर्णरीतिसे सहायता किया करो, यह सुन कोकाने नम्रभावसे उत्तर दिया कि महाराज! कुछ समय हमको देशान्तर जानेके निमित्त आज्ञा दीजिये, क्योंकि जबतक मनुष्य देशाटन करके सब देशोंकी रीतिभाँति नहीं जानता तबतक वह चतुर नहीं कहा जा सकता, यह सुनकर महाराजने कोकाके देशान्तर भ्रमणका प्रबन्ध करना चाहा, तब कोकाने कहा कि हम अकेलेही देशाटन करेंगे, एकाकी देश भ्रमण करनेमें हमारा अभीष्ट सिद्ध होगा, कोकाका अभिप्राय समझकर महाराजने आज्ञा देदी, आज्ञा पातेही पितासे सम्मति कर उनकी आज्ञा लेकर कोकाजी घरसे चलदिये और देशाटन करने लगे, देशभ्रमणमें जहाँ जिस विद्यावालेको सुना वहाँ उसके समीप जाय यथासाध्य उस विद्याको समझलिया कोई समय व्यर्थ नहीं गया, पांचवर्षतक देशाटन करते रहे, देश देशकी भाषा देश देशके मनुष्य और स्त्रियोंकी रीतिभांति तथा व्यवहारसे पूर्ण विज्ञ होकर अपने घरको लौट आये, इनके आनेपर महाराजने बड़ा दरबार किया और युवराज शंभूसिंहको गद्दीपर बिठाकर राज्यका सब काम सौंपदिया, कोकाजीको प्रधानमंत्री नियत किया, तब शंभूसिंहजी अपने प्रधानमंत्री पंडित कोकारामजीकी सम्मतिसे राजकाज करने लगे, महाराज शांतिदेव तथा पंडितदीनानाथजी कुछही समय बीते परमात्माका भजन करते हुए परलोकगामी होगये.

एक दिन महाराज शंभूसिंहजीकी भरी सभामें एक सुंदरी नग्न स्त्री आकर खडी हो गई, उसको देखतेही सभाके सब लोग चकित हो गये और अपना अपना मुख फेरलिया. महाराजने भी मुख फेर लिया और कहा तू बडी निर्लज्ज है पुरुषोंके सन्मुख नग्न खडी है. उसने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे राज्यभरमें भ्रमण करती हुई यहां आई हूं. परंतु कोई पुरुष मुझको नहीं मिला. मैं तुम सबको नामर्द समझती हूं इस कारण लाज नहीं करती. यदि कोई पुरुष हो तो मुझसे बात करे. यह सुनकर महाराजने कहा कि तू अपने नीचेके अंगको ढकले तब बात की जाय. स्त्रीने महाराजकी आज्ञासे नीचेका अंग ढकलिया. तब सब लोग उसके सन्मुख देखने लगे. महाराजने सभाके लोगोंसे कहा कि तुम सबमेंसे यदि कोई इस योग्य हो तो इस स्त्रीको प्रसन्न करे. महाराजका वचन सुनकर सब मौन हो रहे. किसीकोभी उससे बात करनेका साहस न हुआ तब महाराजने उदास होकर सबसे कहा कि शोक है! हमारी सभामें कोईभी पुरुष इस योग्य नहीं? महाराजका यह वाक्य पूराभी नहीं होने पाया था कि पंडित कोकारामजीने महाराजसे निवेदन किया कि हमने देश परिभ्रमण करते हुए पूर्वोत्तर देशमें एक पर्वतीय पंडितके यहाँ चार महीने निवास करके इस विद्याको भी सीखाहै और इस विषयके चार ग्रन्थ जो मुख्य हैं उनको हमने पढाहै इसीसे हमको निश्चय है कि हम इस स्त्रीको प्रसन्न करसकेंगे. पंडितकोकारामजीका यह वचन सुनकर महाराजने कहा कि हमने भी सुनाहै कि इस विद्याका जाननेवाला स्पर्शमात्रसेही स्त्रीको प्रसन्न करसकताहै. पंडितजीने कहा कि हाँ. आपका यह कहना ठीक है. आपके इस कथनकी पुष्टि इस स्त्रीके मुखसेही होजायगी. यह कहकर पंडितजी अपने स्थानसे उठे और उस स्त्रीके समीप जाकर उसका हाथ पकडकर बोले कि तुमको हमारे अधिकारमें रहना होगा हम

तुमको प्रसन्न करनेका प्रयत्न करेंगे. यह सुनतेही वह सुन्दरी कोकाजीके साथ चलदी. कोकाजीने उसको अपने साथ लेजाकर एक उत्तम स्थानमें रहनेका प्रबन्ध कर दिया. और प्रतिदिन उसके समीप आय जिस दिन जिस अँगमें कामका निवास होताहै उस दिन उस अंगको स्पर्श मर्दन आदि करदेनेसेही उस सुन्दरीकी तृप्ति करदेतेरहे. मैथुनकर्म (सहवास) किसी दिन नहीं किया. दश दिनके उपरान्त उस सुन्दरीने अनेक स्त्रियोंके सन्मुख पंडितजीकी बहुत प्रशंसा की. और महाराजकी सभामें कहला भेजा कि मुझको इच्छानुसार पुरुष प्राप्त होगयाहै मैं अब राजसभामें नहीं आसकती. यह सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और पंडित कोकारामजीसे कहनेलगे कि आप ऐसी विद्याको परोपकारार्थ प्रकाशित करदीजिये. तब पंडितजीने कहा कि इस विद्याकी चार पुस्तकें हैं. प्रथम ' आदिशास्त्र, जिसको शिवजीने वर्णन कियाहै. द्वितीय ' कामशास्त्र ' जिसको वात्स्यायन ऋषिने निर्माण कियाहै, तृतीय ' कामसंजीवन ' जिसको सिद्धनागार्जुनने कथन किया है, चतुर्थ ' रतिशास्त्र ' जिसको गर्गाचार्यजीने कहा है. इनमें ब्रह्मचर्यद्वारा वीर्यरक्षाका उपाय, शतवर्ष पर्यन्त आरोग्य रहनेका उपाय, स्त्रियां और पुरुषोंके लक्षण, अपनी स्त्रीको प्रसन्न रखनेकी विधि, कामवास, मैथुनप्रकार, गर्भाधानविधि, गर्भपरीक्षा, गर्भरक्षा, पुरुषोंके गुप्त-रोग और चिकित्सा, स्त्रियोंके कठिन रोग और चिकित्सा, इच्छानुसार सन्तान उत्पन्न करना, गर्भिणीधर्म, धात्रीशिक्षा, बालरक्षा, बालचिकित्सा, केशकृष्णीकरण इत्यादि उपयोगी विषय संसारके उपकारार्थ वर्णन किये हैं वे सब विषय सरल रीतिसे लिखकर हम आपकी आज्ञाका परिपालन करेंगे.

इस प्रकार कहकर पंडितकोकारामजीने उसी दिनसे ग्रन्थ

लिखना आरंभ किया और छः महीने उपरान्त कोकमंजरी नामक ग्रन्थ लिखकर महाराजके सन्मुख लाकर रखदिया. महाराजने उस ग्रन्थको आद्योपांत देखकर और उसके आशयको समझकर अति प्रसन्नता प्रगट की और कहनेलगे कि इस ग्रन्थको कोकशास्त्र कहना चाहिये. तभीसे कोकमंजरीका नाम कोकशास्त्र भी प्रसिद्ध हुआ.

जो लोग कोकशास्त्रमें चौसठ आसनोंका होना प्रसिद्ध करते हैं. उनकी भूल है. कोकाजीने अपने ग्रन्थमें आसन नहीं लिखे. अनंगरंग ग्रन्थके रचयिताने चौसठ आसन लिखे हैं. और अन्य भी ऐसेही प्रयोग अपने ग्रन्थमें लिखे हैं उसी अनंगरंगमेंसे कोकसार लिखनेवालेने चौसठ आसन मिलाये होंगे. योगशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थोंमें अवश्य आसनोंका प्रकार शरीरके साधन निमित्त वर्णन है. उन आसनोंमेंसे चार आसन मुख्य माने गये. परन्तु श्रेष्ठ योगीजन योगके निमित्त केवल एक पद्मासनको ही मुख्य मानते हैं. इसी प्रकार अनंगरंग ग्रन्थमें कहे हुए चौसठ आसनों-मेंसे सन्तानोत्पत्ति निमित्त बुद्धिमान् जनोंने सुखआसनको मुख्य माना है जिनको सबही जानते हैं. पूर्वाचार्योंने जितने ग्रन्थ रचे हैं वे सब मनुष्योंके उपकार निमित्त कथन किये हैं. कोई ग्रन्थ ऐसा नहीं है कि जिससे मनुष्योंको हानि पहुँचे. तौभी जो कोई अपनी मूढ बुद्धिसे उन ग्रन्थोंके आशयको न समझकर विपरीत कर्म करने लगे तो उन पूर्वाचार्योंका अथवा उन ग्रन्थोंका क्या दोष है ? विचार करनेकी बात है कि धातुओंको फूंककर रस बनाना और उस रसको मात्रानुसार उचित अनुपानके साथ रोगीके रोग निवारणार्थ उचित समयमें देना पूर्वाचार्योंने लिखाहै. परन्तु यदि कोई मूढ मनुष्य अनुचित रीतिसे धातुको फूंके और रस कचा रहजाय. फिर उस रसको अनुपान और समयके विरुद्ध रोगीको देवे और वह रोगी मरजावे तो पूर्वाचार्योंका क्या दोष है? परंतु यहां

यह प्रश्न उठता है कि अनंगरंगके रचयिताने आसनोंको किस उपकारदृष्टिसे लिखा है. इसका उत्तर यह है कि स्त्री प्रबल हो और पुरुष निर्बल हो तो उस प्रबल स्त्रीको प्रसन्न करनेके लिये नम्र होकर खडे बैठे तिरछे बेडे आसनोंसे काम लेना लिखाहो तो कुछ आश्चर्य नहीं.[१] अनंगरंग रचयिताकी स्त्री प्रबल होगी इसीसे उसने दूसरोंके उपकार निमित्त आसन लिखदियेहों. अथवा अनंगरंगका लेखक वाममार्गी हो तो क्या आश्चर्य है क्योंकि प्रायः वाममार्गियोंने मिलावट करके अनेक शुद्ध ग्रन्थोंको दूषित करदिया है. निर्बुद्धि मनुष्योंके हाथमें पडकर असली ग्रंथ कुछके कुछ हो जाते हैं. इसी प्रकार कोकशास्त्रमें भी मिलावट होजाना सम्मत है. परंतु बुद्धिमान् जन अपनी सूक्ष्म बुद्धिसे मिलावटको समझकर हंसके समान सार वस्तुको ग्रहण करलेते हैं. 'हंसो यथा क्षीरमिवांबुमध्ये' जैसे हंसके सन्मुख जल मिलाकर दूध रखदिया जाय तो वह जलको रहनेदेताहै और दूध पीलेताहै. प्रायः आचार्योंका यह भी मत है कि अधिकारी और अनधिकारीको देख समझकर विद्या प्रदान करना चाहिये. क्योंकि जिस विद्यासे सज्जनोंका उपकार होता है. दुर्जनलोग उसी विद्यासे अपनेको हानि पहुँचाते हैं इसीसे यह प्रथा अबतक प्राचीन लोगोंमें वर्तमान रही कि अनधिकारीको विद्या नहीं देतेथे. अब हम कामसंजीवनी (कोकापंडितका संक्षिप्त जीवनचरित्र) समाप्त करते हैं और कोकाकृत कोकशास्त्रका सार ग्रहण करके हम कोकसार वैद्यक ग्रंथ लिखते हैं, कि जिसके पढनेसे मनुष्योंका बहुत उपकार होगा. इति.

---

१ चौंसठ आसनोंके कारण आजकलके नवयुवक कोकशास्त्रकी खोज करते हैं आसनोंके अभिप्रायको न समझकर कामांध पशुवत् प्रयोग करनेलगतेहैं कि जिससे बुद्धिहीन नरको हानि पहुँचती है इस हानिकी ओर ध्यान देकर वर्तमान नरपति (अंगरेजसरकार) ने आसनसहित कोकसारके प्रकाश करने (छापने) का निषेध किया है

श्रीः ।

कोकसार-वैद्यक प्रारंभः ।

पूर्व भाग.



मङ्गलाचरण ।

नमस्कृत्य महादेवं सुखदं ज्ञानदं विभुम् ।
जगद्धिताय कोकस्य क्रियते सारसंग्रहः ॥ १ ॥

मयेति शेषः ।

अन्वयः—सुखदं (सुखदायकम्) ज्ञानदं (ज्ञानप्रदम्) विभुं (स्वामिनम्) नमस्कृत्य (नमस्कारं कृत्वा) कोकस्य (कोककृद्वैद्यकस्य) सारसंग्रहः क्रियते इत्यन्वयः ॥ १ ॥

भावार्थ—सुख और ज्ञानके देनेवाले प्रभुमहादेवजीको नमस्कार करके जगत्‌के हितके अर्थ कोककृत वैद्यकका सार मुझ करके संग्रह किया जाता है ॥ १ ॥

दोहा—पदललाम घनश्यामके, कंजसरिस अभिराम ॥
बारबार वन्दन करत, नारायण सब ठाम ॥ १ ॥

प्रायः मनुष्योंको कोकशास्त्र देखनेमें रुचि है, क्योंकि कोक-शास्त्रके विषयमें यह कहावत प्रसिद्ध है कि,

दोहा—बिन पिंगल छन्दहि रचैं, बिन गीताको ज्ञान ॥
बिना कोक जे रति करैं, ते नर पशू समान ॥ २ ॥

इस दोहेका भावार्थ यह है कि पिंगल ग्रन्थके बिना पढे जो छन्द रचना करते हैं और बिना गीता पढे अपनेको ज्ञानी समझते हैं तथा बिना कोकशास्त्र विचारे जो रति करते हैं वे नर पशुके समान हैं. कोकशास्त्र जाननेके विषयमें किसीने कहा है कि,

दोहा—रहनि कबूतरकी रहै, गहनि गहै जस बाज ॥
अंग अंग मर्दन करै, कहा कोकसों काज ॥ ३ ॥

इस दोहेके बनानेवालेने कोकशास्त्रका भाव न जानकर केवल एकही बातको तत्त्व समझलिया है. कोकशास्त्रका जानना परमावश्यक है. इसके जाननेसे मनुष्योंको कामसम्बन्धी सब बातोंका ज्ञान हो जाता है. बिना इसके जाने कामको जीतना सर्वथा असंभव है.

इस कारण आगे सांसारिक मनुष्योंके उपकारार्थ कोकशास्त्रमेंसे वैद्यकभागका सार लिखा जाता है. इसीसे इस ग्रन्थका नाम 'कोकसारवैद्यक' रक्खा है.

तत्रादौ कामदेव प्रशंसा।

शम्भुस्वयम्भुहरयो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः । वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥ २ ॥

भावार्थ—जिसने अपने कर्तव्यसे महादेव, ब्रह्मा और हरिभगवान्को भी मृगनयनियों (स्त्रियों) के गृहकर्म करनेके निमित्त निरन्तर दास बनारक्खाहै और जो अनेक प्रकारके चरित्र करनेमें विचित्र है, तथा जिसकी चतुरताका वर्णन नहीं होसकता. ऐसे कामदेव भगवान्को नमस्कार है ॥ २ ॥

तात्पर्य यह कि जब ऐसे महाबलवान् देवताओंको कामदेव अपने आधीन करलेताहै तो मनुष्योंकी क्या गणना है ? परमात्माने इस जगत्में नाना प्रकारके कौतूहल रचे हैं जिनमें आसक्त होकर मनुष्य परम आनन्दपूर्वक मग्न रहते हैं. परंतु कलिकालमें प्रायः सबही मनुष्य कामकौतूहलमें मग्न हो भामिनीकेलिकोही सार समझते हैं. कामदेवकी विलक्षण महिमाको देखो कि इसने

प्रत्येक नरनारीको अपने आधीन कररक्खा है. वास्तवमें कामदेवके समान बलवान् इस संसारमें कोई नहीं है जिसके प्रभावसे परमोत्तम सन्तान और महाआनन्दरूप विषयसुख प्राप्त होता है. जो इस सुखसे रहित है. उसका जन्म संसारमें वृथा है।

रंभाशुकसम्वादमें रंभाका वचन है कि।

पीनस्तनी चन्दनचर्चिताङ्गी विलोलनेत्रा तरुणी सुशीला। नालिङ्गिता प्रेमभरेण येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्॥ ३॥

भापार्थ-पीनस्तनी अर्थात् गोल और कठोर स्तनोंवाली, चन्दनसे चर्चित अङ्गोंवाली, चंचल नेत्रोंवाली, युवा अवस्थावाली और सुशीला ऐसी कामिनीको जिसने प्रेमपूर्वक आलिंगन नहीं किया. उस मनुष्यका जीवन वृथाही गया॥ ३॥

अथवा।

आनन्दरूपा तरुणी नताङ्गी सद्धर्मसंसाधनसृष्टिरूपा। कामार्थदा यस्य गृहे न नारी वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्॥ ४॥

भापार्थ-आनन्द देनेवाला (मनोहर) रूप जिसका, युवा अवस्थावाली, कुचोंके भारसे नत अंगवाली, पतिव्रता आदि श्रेष्ठ धर्मको साधनेवाली, और सन्तान उत्पन्न करनेवाली, काम और अर्थको देनेवाली ऐसी स्त्री जिसके घरमें नहीं है उस मनुष्यका जीवन वृथाही गया॥ ४॥

तथाच।

बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमलं लावण्यलीलाजलं श्रोणीतीर्थशिला च नेत्रशफरं धम्मिल्लशैवाल-

कम् । कान्तायाः स्तनचक्रवाकयुगलं कन्दर्पबाणानलैर्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्मितम् ॥ ९ ॥

भाषार्थ-दोनों बाहु (भुजा) कमलकी डंडी, मुख कमल, लावण्य (सुन्दरता) लीलारूपी जल, जंघा सीढी, नेत्र मछली, केश सेवार, दोनों स्तन (कुच) दोनों चक्रवाक (चकई चकवा) ऐसा स्त्रीरूप सुन्दर सरोवर ब्रह्माजीने कामदेवरूप बाणकी अग्निसे दग्ध हुए जनोंको स्नान करनेके निमित्त बनाया ॥ ९ ॥

जो संसारसे विरक्त होकर वनमें जप, तप और योगसाधन करते हैं, उनकी तो बातही निराली है परन्तु जो संसारमें आसक्त रहते हैं, वे बिना किसी विशेष कारणके इस सुखसे रहित होनेकी इच्छा नहीं करते हैं.

विषयी जन विषयसुखमें बहुतही आनन्द मानते हैं परन्तु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' अति आनन्दमेंभी निरानन्दता आजाती है अर्थात् बहुत विषय सुख भोगनेसे भांति भांतिके रोग शरीरमें उत्पन्न होजाते हैं. जिन दुष्ट कर्मोंके श्रवणमात्रसे आश्चर्य होताथा आजकल वेही दुष्टकर्म प्रायः कुचालीजन अधिकतासे करते हैं. इसी कारण यह भारतवर्ष अधिकरोगोंकी खानि होगया है. जबसे यहां स्वास्थ्यका सर्वथा सत्यानाश करनेवाले करमैथुन पुंमैथुन और अपरीमित मैथुनका अधिक प्रचार कुचाली मनुष्यों द्वारा हुआ है, तबसे यह भारत गारत होता चला जाता है. और धर्मके विरुद्ध, मनुष्यजातिके विरुद्ध, नियमके विरुद्ध, वृद्धोंके विरुद्ध, तथा सृष्टिके विरुद्ध इन दुष्कर्मोंकी वृद्धि होती चलीजाती है. इसीसे हमने कोकशास्त्र संस्कृत ग्रन्थमेंसे सर्वोपकारी अंशको मनुष्योंके हितार्थ सरल देशभाषामें लिखना उचित समझाहै.

कोकशास्त्रमें जो कामध्वज और स्त्रीजनोंके कामसम्बन्धी अंगोंका पृथक् पृथक् वर्णन विस्तारपूर्वक किया है उनको पृथक् पृथक् न लिखकर इस ग्रन्थमें यथास्थान प्रसंगवश संक्षिप्तरीतिसे लिखेंगे. कामदेवसम्बन्धी वार्ताओंको जानलेनेका मुख्य प्रयोजन यह नहीं है कि कामके वश होकर सर्वदा उसीके ध्यानमें मग्न होजावे, किन्तु मुख्य प्रयोजन उसका यह है कि ग्रन्थमें कहे अनुसार वर्ताव करते हुए अपने शरीरकी रक्षा करै और कामको अपने वशमें सर्वदा रखनेका प्रयत्न करता रहे.

प्रायः कामीजनोंका विश्वास है कि कोकशास्त्रमें विषयसुख (स्त्रीसंभोग) की रीतिको भली भांति वर्णन किया है उसके पढनेसे हमको परमानन्द प्राप्त होकर सुख मिलेगा. सो उनका विश्वास तो ठीक है. परन्तु बिना देखे पढे समझनेमें भेद हो जाना संभव है. इसीसे हम इस पुस्तकमें क्रमशः उन बातोंको लिखते हैं कि जिनके अनुसार वर्ताव करनेसे मनुष्य सांसारिक सुखसे युक्त रहता है. परन्तु यदि इसको पढकरभी इसके विरुद्ध वर्ताव करेगा तो वह अवश्य दुःखी होगा. निरन्तर सुखी रहनेकी इच्छावाले पुरुषको योग्य है कि इसी लेखके अनुसार वर्ताव करै. तहां प्रथम हम वीर्यरक्षाका उपाय लिखते हैं.

वीर्यरक्षा।

प्रत्येक मनुष्यको योग्य है कि वीर्यकी रक्षाके निमित्त अपने बालकोंको सबसे प्रथम ब्रह्मचर्यकी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य रखनेका प्रयत्न भलीभाँति करे, बिना ब्रह्मचर्यके वीर्यकी रक्षा नहीं हो सकती, और बिना वीर्यरक्षाके ब्रह्मचर्यका फल (दीर्घायु, पराक्रम, सौन्दर्य, तेज आदि) प्राप्त होना दुर्लभ है. अतः ब्रह्मचर्य धारण करके वीर्यकी रक्षा करना मनुष्यका पहला कर्तव्य है. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास ये चार आश्रम हैं. इन चारों

आश्रमोंकी मूल (जड) ब्रह्मचर्य है. ब्रह्मचर्य आश्रममें विद्या पढना और वीर्यकी रक्षा करना मुख्य है. विद्यासे उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है कि मनुष्यका जन्म सुधर जाता है और वीर्यरक्षासे बल पराक्रम बढता है. आयु अधिक होती है. शरीर पुष्ट रहता है. कान्ति (तेज) की वृद्धि होती है. जिसका ब्रह्मचर्य अर्थात् पहली अवस्थामें विद्याध्ययन (शिक्षा) और वीर्यरक्षाका क्रम विगड जाता है उस मनुष्यका जन्म निरर्थक हो जाता है अर्थात् उसके शरीरका तेज घट जाता है. बल नहीं बढनेपाता, सुन्दरता जाती रहती है और रोगोंका भय सर्वदा बनारहता है. शरीर अंगभंग हो जाता है. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चार पुरुषार्थोंके साधन करनेवाले मनुष्यको शरीरकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये.

'धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं यतः ।'

वीर्यही मनुष्यके शरीरका पूर्ण अंश है वीर्यहीसे मनुष्यका जीवन है.

ध्यान देकर विचार करनेकी बात है कि आहार कियाहुआ अन्न वायुकी प्रेरणासे प्रथम आमाशयमें पहुँचताहै. अनन्तर वह आहार मधुर भावको प्राप्त होता है. फिर वही आहार पाचक पित्तके प्रभावसे कुछ पककर खट्टा होजाता है. तदनन्तर नाभिमें स्थित समान वायुसे प्रेरित होकर छठवीं ग्रहणी कलामें पहुँचताहै. फिर वहां कोठेकी अग्निसे पककर कडुआ होताहै और उत्तमरस रूप हो जाता है. वही रस नाभिस्थित समान वायुके बलसे प्रेरित होकर हृदयमें पहुँचता है फिर वही रक्त पित्तसे पककर रुधिर (खून) बनजाताहै और सब शरीरमें रहता है. जो जीवका पूर्ण आधार है, उस रुधिरसे मांस, मांससे मेद, मेदसे अस्थि (हड्डी) अस्थिसे मज्जा, मज्जासे वीर्य, ये सात धातु क्रमसे सवाचारचार दिनमें उत्पन्न होते हैं. भावार्थ यह कि भोजन

किये हुए आहारका एक महीनेमें वीर्य बनता है, और वीर्यहीमें जीवका निवास है, जैसा कि सुश्रुतमें लिखा है कि-

जीवो वसति सर्वस्मिन्देहे तत्र विशेषतः ।
वीर्ये रक्ते मले यस्मिन्क्षीणे याति क्षयं क्षणात् ॥ ६ ॥

भावार्थ-जीव सब शरीरमें वास करता है, परंतु वीर्य रुधिर और मलमें विशेष करके रहताहै. जिनके क्षीण होनेसे जीव क्षणभरमें शरीरसे निकल जाताहै. अब इसमें विचारना चाहिये कि जो वीर्य एक महीनेमें उत्पन्न होताहै. उसको एक क्षणमात्रके सुखमें नष्ट करदेना कितनी भारी मूर्खताका काम है.

केवल अपनीही स्त्रीके साथ ऋतुसमयमें सन्तानोत्पत्ति निमित्त सम्भोग करना उचित है ऐसाही समस्त आचार्योंका मत है. जो बुद्धिमान् जन केवल सन्तानोत्पत्तिकेही निमित्त कामकेलि करते हैं उनके शरीरमें वीर्यकी अधिकताके कारण अधिक बल, पराक्रम, सौन्दर्य, साहस, बुद्धि और आरोग्यताकी वृद्धि होती है. यह समझकर अवश्य वीर्यकी रक्षा करनी चाहिये. जिस प्रकार उत्तम बीज और अच्छा खेत होनेसे धान्य आदि पदार्थ भी अच्छे-प्रकार उत्पन्न होते हैं. उसी प्रकार रज और वीर्यकी उत्तमतासे सन्तान भी परमोत्तम होती है. सो उत्तम वीर्य और रज तब होसकताहै कि जब पचीस वर्ष पर्यन्त पुरुष और सोलह वर्ष पर्यन्त स्त्रीजन ब्रह्मचर्य रहैं. धन्वन्तरीजीने मनुष्यकी चार अवस्थायें वर्णन करी हैं. १ वृद्धि, २ यौवन, ३ सम्पूर्णता, ४ किंचित् हानि इन चारों अवस्थाओंका भेद यह है कि सोलह वर्षकी आयुसे पचीस वर्षकी आयुपर्यन्त वृद्धि अवस्था. इसको वृद्धि अवस्था इस कारण कहा कि सोलह वर्षकी अवस्थासे वीर्यकी वृद्धि होनेलगती है, पचीस वर्षकी अवस्थातक वीर्य बढताहै. इन नव वर्षोमें धातुकी वृद्धि होनेका कारण वृद्धिअवस्था जानकर

बुद्धिमान् जन ब्रह्मचर्य धारण करे. विद्या पढने और वीर्यकी रक्षा भलीभांति करनेको ब्रह्मचर्यव्रत कहते हैं. यही व्रत सब आश्रमोंकी जड है. इस अवस्थामें वीर्य गिरने अथवा जानबूझकर वीर्यको निकालदेनेसे जन्मपर्यन्त शरीर निर्बल रहता है, कि जिससे सन्तान भी निर्बल उत्पन्न होती है. अनन्तर पचीस वर्षसे चालीस वर्ष पर्यन्त युवावस्था जानना, इन पन्द्रह वर्षोंतक धातु पुष्ट होती है. तदुपरान्त अडतालीस वर्षपर्यन्त सम्पूर्णता रहती है. अर्थात् इन आठ वर्षोंतक वीर्य न घटता है, न बढताहै. अड-तालीस वर्षके उपरान्त कुछ हानि होने लगती है. तब सब प्रकारकी शक्ति घटतीही जाती है.

दोहा-ज्यों अनाज तरु फल चुकत, जल सींचत मुरझात।
समय पाय यह देह त्यों, पोपत जात नशात॥ ३॥

पचीस वर्षका पुरुष और सोलह वर्षकी स्त्री इन दोनोंका वीर्य रज उक्त अवस्थापर समभावको प्राप्त होता है, वही अवस्था विवाहकी जानना. सोलह वर्षसे कमती अवस्थावाली स्त्रीमें यदि पचीस वर्षसे कमती अवस्थावाला पुरुष गर्भ धारण करता है तो उस गर्भसे उत्पन्न बालक पूर्ण बलवान् नहीं होता है, यह वैद्यकशास्त्रका मत है. इसके विरुद्ध समयमें आजकल विवाह होते हैं. थोडी अवस्थावाले वर और कन्याका विवाह करके माता पिता अपनी सन्तानको निर्वीर्य करदेते हैं. जिससे उनका बल पौरुष नष्ट होजाता है. इसके विषयमें अधिक क्या कहाजाय.

दोहा-बैठे ज्ञानी डारपर, काटत सोई डार।
जियन मरनको नाहिं डरत, यह गति है संसार॥ ४॥

प्रायः जन इस संसारमें ऐसे हैं जो बिना उपदेश पाये किसी उत्तम बातका विचार नहीं करते. परन्तु उपदेश पाकर जो विचार करतेहैं उन सज्जनोंसे हमारी प्रार्थना है कि आप स्वयं वीर्यकी रक्षा करतेहुए अपने तथा पराये बालकोंको वीर्यरक्षा करनेका

उपदेश करें और कुकर्मोसे तथा दुष्टजनोंकी संगतिसे बचातेरहें कि जिससे उनका बल पराक्रम दिनदिन बढतारहे.

वीर्यकी रक्षा करनेसे पुरुष महासामर्थ्यवान् होताहै. जो वीर्यकी रक्षा नहीं करता और व्यर्थ अपने वीर्यको नष्ट करताहै. वह एक सामान्य ग्रामीणजनसे भी बुद्धिहीन कहाजासकताहै. देखो किसान अपनेही खेतमें समयानुसार बीज बोता है, कि जिससे वह बीज अन्नरूप होकर सब संसारका भला करताहै तो जो मनुष्य किसी अन्यक्षेत्रमें कुसमयं अपने वीर्यको डालदेताहै उसकी पशुसंज्ञा है. किन्तु पशुसेभी बढकर इसमें प्रमाण यह है कि,

चौपाई।

कातिक कुत्ती माघ बिलाई। चैत चिडी वैशाख गेधाई[1] ॥ ९ ॥

कुत्ती कार्त्तिकमासमें, विलाई माघमासमें, चिडी चैत्रमासमें, गदही वैशाखमें संभोगकी इच्छा करती है, अन्य मासमें नहीं. एवं अन्य पशुपक्षी भी अपने अपने नियमित समयमें केलि करते हैं जो उनकी उत्पत्तिसे प्रगट होताहै. कोई वर्षभरमें एक बार कोई दो बार जिस जिस ऋतुमें बच्चे जनताहै. उसी उसी ऋतुमें फिर जनताहै. ऋतुमें अदल बदल कभी नहीं होता है. जब पशु पक्षियोंमें नियमानुसार काम होताहै, तब मनुष्योंको क्यों नहीं नियमानुसार काम करनाचाहिये, सृष्टिके नियमानुसार ऋषियोंने मनुष्योंके कल्याणनिमित्त नियम बांधे हैं सो जब वृक्ष आदि जडपदार्थ नियमानुसार चलतेहैं तो सब प्राणियोंमें श्रेष्ठ मनुष्य क्यों नहीं उन नियमोंका परिपालन करते. यह महाशोककी बात है. वीर्यरक्षाके विषयमें हम यहां एक छोटासा दृष्टांत लिखते हैं. एक वैद्यराजने चालीसवर्षपर्यन्त अपना विवाह नहीं किया. बहुत कुछ मित्रोंद्वारा कहागया तब एक श्रेष्ठ गृहस्थजनके यहां विवाह

[1] ढगाई यह भी पाठ है।

परके केवल एकवार स्त्रीसंभोग किया. जिससे गर्भ रहकर एक पुत्र उत्पन्न हुआ. यह पुत्र जब कुछ समझदार हुआ तब उसकी माताने उसको एक दिन वैद्यराजके पास यह कहकर भेजा, कि अपने पिताको प्रसन्न जानकर यह कहना, कि पिताजी ! हम चाहते हैं कि हमारा एक भाई और होवे. यह सुनकर बालक अपने पिताके पास गया, पिताने पुत्रको देखकर बहुत आदर किया और गोदमें बिठालिया. पिताको प्रसन्न जानकर बालकने कहा कि पिताजी ! हम चाहते हैं कि हमारे एक भाई और हो. यह सुनकर पिताने कहा पुत्र ! जब तू उत्पन्न हुआ तब हमारे शरीरका आधा बल चला जातारहा. अब आधा बल शेष रहगया है. सो हम अब अपना शेष बल नष्ट करना नहीं चाहते. वैद्यराजकी इस बातपर ध्यान देना चाहिये कि वीर्यरक्षाको वैद्यराजजीने परम प्रधान माना है. और उचित कियाहै कि वीर्यही मनुष्यका बल (पराक्रम) और जीवन है. अधिक विषयी पुरुषोंकी यह गति है कि जैसे श्वान कोई सूखा हाड पाकर चबाताहै और चटचटाकर अपनेही मुखमेंसे निकलेहुए रुधिरको चूसकर प्रसन्न होताहै. यह नहीं जानता कि इस हाडमें क्या रक्खा है. यह जो रुधिर मैं चूसरहाहूं, यह मेरेही मुखमेंसे प्रगट हुआहै.

अंडनिर्माणकर्यंत्र (अंडकोशों) में रुधिरका वीर्य तत्काल बनजाताहै. कामेच्छाकी प्रबलता, पुरुषांगकी दृढता और स्थिरता यह वीर्यकी शक्तिका कार्य है. शरीरमें बल, रक्त, वर्ण, ओज, तेज, चंचलता और स्मरणशक्तिका तीव्र होना यह वीर्य शक्तिका गुण है.

जिन पुरुषोंको वीर्यरक्षानिमित्त अधिक जानना हो तो इस बातको ध्यानमें रक्खें कि वीर्यही शरीरमें प्राणोंकी रक्षा करनेवाला है. वीर्यरक्षा न करनेसे प्राणोंपर बाधा है. वीर्यरक्षा करनाही पहला कर्तव्य है. वीर्यकी रक्षा चाहनेवाला पुरुष अपने चित्तको विषयोंकी ओर न जाने देवे, मनको चंचल न होनेदेवे, व्यर्थ न

बैठे, ज्ञानयुक्त पुस्तकोंको पढ़े, व्यर्थ पुस्तकोंको हाथसे भी न छुवे, कन्दुकक्रीडा (गेंद खेलने) में अभ्यास करे, व्यायाम (दंडकसरत) करे, पैदल चलनेका अभ्यास करे, प्रातः सायं टहले, परन्तु व्यर्थ स्थानमें न जावे, शीघ्र पचनेवाला भोजन करे, कामध्वजको शीतल जलसे स्वच्छ रक्खे, कि जिससे कामोद्दीपन न हो, मल मूत्रको त्यागकर शयन करनेका अभ्यास सर्वदा रक्खे, कामकी इच्छा कदापि न करे, वीर्यरक्षाके गुणोंको सर्वदा स्मरण करता रहे, इससे बढकर वीर्यरक्षाका दूसरा उपाय नहीं है. बुद्धिमानोंको संकेतही बहुत है, परन्तु मूढ बुद्धिवालोंको एक बडा भारी ग्रन्थ लिखकर सुनाया जाय तो भी कुछ नहीं. अब आगे हम स्त्री पुरुषोंके लक्षण लिखते हैं.

तत्रादौ नारीभेदः ।

पद्मिनी चित्रिणी चैव शंखिनी हस्तिनी तथा ।
चतस्रो जातयो नार्या रतौ ज्ञेया विशेषतः ॥ ७ ॥

भाषार्थ-१ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी, ये चार प्रकारकी नारियां विशेष करके रतिमें जाननेके योग्य हैं ॥७॥

पद्मिनी लक्षण।

भवति कमलनेत्रा नासिका क्षुद्ररंध्रा अविरलकुचयुग्मा दीर्घकेशी कृशाङ्गी । मृदुवचनसुशीला नृत्यगीतानुरक्ता सकलतनुसुवेषा पद्मिनी पद्मगन्धा ॥ ८ ॥

भाषार्थ-कमलसमान नेत्रोंवाली, छोटे छिद्रोंसे युक्त नासिकावाली, सघनकुचोंवाली, बडे केशोंवाली, सूक्ष्म अंगोंवाली, कोमल वचन बोलनेवाली, सुशीला, नृत्य और गीतोंमें अनुरागवाली,

सब शरीर सुन्दर, मनको हरनेवाली, कमलके समान गन्धवाली ऐसी स्त्री पद्मिनी होती है ॥ ८ ॥

तथाच।

कमलनयनयुग्मा क्षुद्ररन्ध्रा च नासा कृशतनु-मृदुवाक्या दीर्घकेशी शुभाङ्गी । परहितमति-युक्ता पद्मगन्धा सुवेषा अविरलकुचयुग्मा कीर्तिता पद्मिनी सा ॥ ९ ॥

भावार्थ-कमलसमान दोनों नेत्र जिसके, छोटे छोटे छिद्रोंसे युक्त नासिकावाली, सूक्ष्मशरीरवाली, कोमलवचन बोलनेवाली, लंबे केशवाली, सुन्दर अंगोंवाली, दूसरेका हित चाहनेवाली, बुद्धि-मती, कमलके समान गन्धवाली, मनोहर वेषवाली अर्थात् सुन्दर-रूपवाली, सघन कुचोंवाली ये लक्षण जिस स्त्रीमें हों वह पद्मिनी कहाती है ॥ ९ ॥

सवैया।

कंजसे कोमल अंग सबै, गजगौनी सुवास रहै तन छाई ।
चन्दसों आनन कुन्दनसों तन मैनकी भूमि महासुखदाई ॥
श्वेत दुकूल रुचै सुरपूजन है कविराज सुबुद्धि सुहाई ।
रूप सियासी हिया हुलसै लखि ऐसी तिया अतिपुण्यसों पाई॥६॥

चित्रिणी लक्षण।

कठिनघनकुचाढ्या नातिदीर्घा मनोज्ञा रतिरस-गुणयुक्ता सुन्दरी नातिखर्वा । कमलनयनयुग्मा लोभहीना सुशीला तिलकुसुमसुनासा कीर्तिता चित्रिणी सा ॥ १० ॥

भावार्थ-कठोर और घने कुचोंवाली, जिसका शरीर बहुत लंबा नहीं अर्थात् शरीर सुडौल और देखनेमें मनोहर, रतिरसके

गुणसे युक्त, सुन्दरी, बहुत छोटी नहीं, कमलसमान दोनों नेत्र, लोमरहित और सुशीला, तिलके फूलके समान सुन्दर नासिका जिसकी, ऐसे लक्षण जिस स्त्रीमें हों उसको चित्रिणी कहते हैं ॥१०॥

अथवा।

भवति रतिरसज्ञा नातिदीर्घा न खर्वा तिलकुसुमसुनासा स्निग्धदेहोत्पलाक्षी। कठिनघनकुचाढ्या सुन्दरी सा सुशीला सकलगुणविचित्रा चित्रिणी चित्रवक्त्रा ॥ ११ ॥

भावार्थ-रतिरसको जाननेवाली, न बहुत लंबी, न बहुत छोटी, तिलके फूलके समान सुन्दर नासिकावाली, चिकने शरीरवाली, कठोर और घने कुचोंवाली, सुन्दरी और सुशीला, सब गुण विचित्र जिसमें, तथा विचित्र अर्थात् अद्भुत सुन्दरतासे युक्त मुख जिसका ऐसे लक्षणोंवाली स्त्री चित्रिणी कहाती है ॥ ११ ॥

तथाच।

दयाक्षमावती या हि देवपूजापरायणा।
चित्रिणी रमणी सा हि रतिशास्त्रे प्रकीर्तिता ॥ १२ ॥
पत्यौ परायणा या हि नेक्षते परपूरुषम्।
धर्मे मतिः सदा यस्याश्चित्रिणी सा प्रकीर्तिता ॥ १३ ॥

भावार्थ-जो दया और क्षमावाली हो, देवपूजामें तत्पर हो, अथवा अपने बडे और उत्तमजनोंके यथायोग्य सत्कार करनेमें निपुण हो, ऐसी स्त्रीको रतिशास्त्रमें चित्रिणी कहा है. किंवा जो स्त्री पतिव्रता हो, परपुरुषको न देखनेवाली हो, धर्ममें सदा तत्पर रहनेमें जिसकी मति हो ऐसी स्त्री चित्रिणी कही है ॥ १२ ॥ १३ ॥

दोहा-पद्मिनि चित्रिणि एकसम, भेद एक तिन माहिं ।
चित्रिणि तहां हँसौड अति, वह हँसौड बहु नाहिं ॥७॥

सवैया ।

ऊँचे उरोज विलोचन चंचल लोकको लीक न जातहै जानी ।
कारे महा सटकारे हैं केश निकारे मयूरनकी कछु वानी ॥
गन्ध लियो मधुको मथि सुन्दरि मैनके मन्दिर मैनको पानी ।
मित्रको चित्र लखे कविराज विचित्रिणी चित्रिणी ऐसी वखानी ॥८॥

शंखिनी लक्षण ।

दीर्घा सुदीर्घनयना वरसुन्दरी या कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता । रेखात्रयेण च विभूषितकंठदेशा संभोगकेलिचतुरा किल शंखिनी सा ॥१४॥

भावार्थ-लँबी बडे बडे नेत्रोंवाली और सर्वांग सुन्दरी, कामके उपभोग अर्थात् हाव भाव कटाक्षादिमें रसीली, गुण और शीलसे युक्त, तीन रेखाओंसे सुशोभित कंठवाली और कामकेलिमें चतुरा ऐसे लक्षणोंवाली स्त्री शंखिनी कही है ॥ १४ ॥

सवैया ।

सूखि रह्यो तन मांस न है निकरीसो परे न सखीन खरी है ।
रोस बडो कुच ओछनसों कछु पीपरके फल होड परी है ॥
सारी धरे रँगराती मनोज सुताती विगंधिनि भूरि भरी है ।
शंखिनीसों करतार असंखन शंखिनीमों करतार करी है ॥ ९ ॥

हस्तिनी लक्षण ।

स्थूलाधरा स्थूलनितम्बभागा स्थूलाङ्गुली स्थूलकुचा सुशीला । कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च नितम्बखर्वा खलु हस्तिनी सा ॥ १५ ॥

भापार्थ-मोटे होंठोंवाली, और मोटे नितम्बवाली, मोटी अँगुलियोंवाली, मोटे अथवा बडे कुचोंवाली, सुशीला, कामकी अत्यन्त अभिलाषा करनेवाली, रतिकेलिमें अतिलीन, और नीचे नितम्बवाली ऐसे लक्षणोंवाली स्त्री हस्तिनी कहाती है ॥ १५ ॥

सवैया।

ईक्षण हैं लघु तीक्षण केश सुवेष नये कटु गन्ध सदाई।
कान दयेकर कान सुनै धुनि कानन रोप अनंग मुछाई॥
मोटी महा कविराज कहा कहीं चाल चलै तिय मंद सुहाई।
औ निहई सब छोडिदई करि नीक लई करि नीकी निकाई ॥१०॥

पद्मिनी पद्मगन्धा च मधुगन्धा च चित्रिणी।
शंखिनी क्षारगंधा स्यान्मद्यगन्धा च हस्तिनी॥ १६॥

भापार्थ-पद्मिनी स्त्रीमें कमलकीसी सुगन्ध आती है, चित्रिणी स्त्रीमें शहतकीसी सुगन्ध और शंखिनीमें क्षारकीसी गन्ध और हस्तिनी स्त्रीमें मदिराकीसी गंध आती है ॥ १६ ॥

जिस प्रकार नारीभेद चार हैं उसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकारके यहां वर्णन किये हैं।

पुरुषभेद।

चत्वारः पुरुषा ब्रह्मन्नामानि च यथाक्रमम्।
शशो मृगो वृषश्चैव चतुर्थस्तुरगस्तथा ॥ १७ ॥

भापार्थ-हे ब्रह्मन्! चार प्रकारके पुरुष होते हैं १ शशक, २ मृग, ३ वृषभ, ४ तुरग (अश्व) ॥ १७ ॥

शशकपुरुष लक्षण।

मृदुवचनसुशीलः कोमलांगः सुकेशः सकलगुण-
निधानः सत्यवादी शशोऽयम् ॥ १८ ॥

---

१ मीनगन्धा इत्यपि पाठः।

भावार्थ-मृदुभाषी, सुशील, कोमल अंगवाला, सुन्दर केश जिसके, सकलगुणनिधान, सत्यवादी, यह लक्षण जिस पुरुषमें हों उसकी शशक संज्ञा है ॥ १८ ॥

न खर्वो नातिदीर्घश्च गुरुद्विजपरायणः ।
विमुखः परदारेषु सदा परहिते रतः ॥ १९ ॥
साधूनां सङ्गमे चैव अनुगामी समुत्सुकः ।
लक्षणैर्लक्षितः श्रीमान् शशोऽयं देवपूजकः ॥ २० ॥

भावार्थ-न छोटा न बहुत लंबा, गुरु और ब्राह्मणका भक्त, पराई स्त्रीसे विमुख, दूसरेका सदा हित करनेवाला अर्थात् निरन्तर परोपकारी और साधुजनोंकी संगतिमें अनुरक्त, समुत्सुक (भली भांति प्रीति करनेवाला), उत्तम लक्षणोंवाला, श्रीमान् (धनी), देवपूजन करनेवाला अथवा आदर सत्कार करनेमें निपुण यह लक्षण जिसमें हों वह पुरुष शशकसंज्ञक होताहै ॥ १९ ॥ २० ॥

पद्य ।

शशक शरीर शुभ्र अतिकोमल चित्त दया अति भारी ।
शान्तचित्त गम्भीर साधु शुभ लक्षण शुभ आचारी ॥
सत्यवचन रुचि गुणी दयाकर प्रियवादी प्रणवारो ।
पूजारत मत सत उद्योगी काम स्वल्प अति भारो ॥
परतिय त्यागी सदा जो सत्य वचन भाषत रहत ।
शशक पुरुष संसार महँ सत जीवनको सुख लहत ॥११॥

मृगपुरुष लक्षण ।

वदति मधुरवाणीं दीर्घनेत्रोऽतिभीरुश्चपलमति-
सुदेहः शीघ्रवेगो मृगोऽयम् । अथवा । भवति
कमलनेत्रः पद्मगन्धः सुवेष उपकृतिपरधीरो
नित्यमोदी मृगोऽयम् ॥ २१ ॥

भाषार्थ-मधुर वचन बोलनेवाला, बडे बडे नेत्रोंवाला, अति-डरपोक, चंचल बुद्धि, सुन्दर देहवाला और शीघ्रगामी ऐसा पुरुष मृगसंज्ञक होता है. अथवा कमल समान नेत्रोंवाला, कमलके तुल्य गन्धवाला, मनोहर वेषवाला, परोपकारी, धीर और सर्वदा आनन्दपूर्वक रहनेवाला ऐसा पुरुष मृगसंज्ञक होता है ॥ २१ ॥

स्मितास्यः स्निग्धगात्रश्च बह्वाशी बलवान्सदा ।
नृत्यगीतप्रियो ब्रह्मन् मृगोऽयं पुरुषः स्मृतः ॥२२॥

भाषार्थ-हास्ययुक्त मुखवाला, स्निग्ध (चिकने) शरीरवाला, बहुत भोजन करनेवाला, सदाबलवान, नाच और गान जिसको प्रिय, हे ब्रह्मन् ! ऐसे लक्षणवाले पुरुषको मृगसंज्ञक कहा है॥२२॥

पद्य।

मृगके दृग मृगसम सुन्दर अति, कोमल कनक शरीरा ।
सम वपु वदन हास्य मुख दीरघ दया चित्त मतिधीरा ॥
नृत्य गान प्रिय रुचि अति जाकी मिठबोला अतिप्यारा ।
कृष्ण खेलरत चित अतिप्रेमी नारि सुरत सतमारा ॥
श्रद्धा वचन गुरू प्रणपालत मित्र सुनेह दुलारा ।
मृगके लक्षण कहे प्रेमयुत कोककला आधारा ॥ १२ ॥

वृषभपुरुष लक्षण।

बहुगुणबहुबन्धुः शीघ्रकामो नतांगः सकल रुचिरदेहः सत्यवादी वृषोऽयम् ॥ २३ ॥ ह्रस्वौ च चरणौ यस्य हृष्टपुष्टकलेवरः। योऽसौ लज्जाविहीनश्च स वृषः परिकीर्तितः ॥ २४ ॥

भाषार्थ-अतिगुणी, बहुबन्धुवाला, शीघ्र कामकेलिमें चैतन्य और कोमल अंगवाला, सब शरीर सुडौल और मनोहर, तथा सत्य-वादी, ऐसे लक्षणोंवाला पुरुष वृषभ संज्ञक होताहै, अथवा जिसके

दोनों पांव छोटे, हृष्टपुष्ट शरीर, और लज्जाहीन हो तो ऐसा पुरुष वृष संज्ञक कहा है ॥ २३ ॥ २४ ॥

दोहा ।

पूत गन्ध तन जासुके, युग पग होवें छोट ।
लाजहीन तिय प्रिय पुरुष, वृषभ सुतनुको मोद ॥ १३ ॥
तिय लखि जाके चित्तमें, उमगत प्रेम अधीर ।
मतवारो कामी अधिक, परतियरति गंभीर ॥ १४ ॥
पापकर्म निर्भय करत, स्वल्पनींदसों सुख लहत ।
वृषभ पुरुष संसारमहँ, मित्रनसों रत नाहिं चहत ॥ १५ ॥

अश्वपुरुष लक्षण ।

कर्कशांगः कदाचारी सदा निर्भीकमानसः ।
दीर्घांगो द्रुतगामी च तुरगः पुरुषः स्मृतः ॥ २५ ॥
काष्ठतुल्यवपुर्धृष्टो मिथ्याचारश्च निर्भयः ।
कर्कशो दीर्घदेहश्च दरिद्रस्तु हयो मतः ॥ २६ ॥

भाषार्थ-कर्कश (कठोर) अंगवाला, खोटे चालचलनवाला सदा निर्भय रहनेवाला, लंबे शरीरवाला, और शीघ्रगामी ऐसा पुरुष तुरग (अश्व) संज्ञक कहा है. अथवा काठके समान कठोर शरीरवाला, झूंठ बोलनेवाला और झूंठ व्यवहारवाला, तथा निर्भय और कर्कश (दुष्टस्वभाव), लंबे शरीरवाला, दरिद्र, (धनहीन) ऐसा पुरुष अश्वसंज्ञक कहा है ॥ २६ ॥

पद्य ।

अश्व पुरुष आलसी महा निद्रा मतवारो ।
लाजहीन अतिखोट क्रूरकर्मन पनहारो ॥
श्यामवर्ण बुधिहीन धर्मआरि निपट कुकर्मी ।
परतिय लंपट छली महाकामी हठधर्मी ॥

ताकि परतिय निशदिन रमत व्याकुल सो अतिही रहत।
क्रूरस्वभाव उतावला अश्व न यश भूपर लहत ॥ १६ ॥

तथाच मतान्तर।

देव आदि-पुरुषभेद।

देवगन्धर्वयक्षाणां ये राक्षसपिशाचयोः।
लक्षणैः संयुतास्ते स्युर्नरास्तैरेव नामभिः॥ २७॥

भाषार्थ-१ देव, २ गन्धर्व, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ पिशाच, इन लक्षणोंसे युक्त मनुष्य उसी नामवाले कहाते हैं॥ २७॥

उन पांच महापुरुषोंके पृथक् पृथक् लक्षण आगे लिखते हैं।

देवपुरुष लक्षण-पद्य।

सत्त्वगुणी ज्ञानी दानी अरु सत्यप्रिय बलवाना।
सत्य मधुरभाषी शुचि कोमल सुन्दर रंग समाना॥
काम क्रोधसे रहित कान्तियुत भोजन मधुर पियारे।
लंबी भुजा सुगन्धियुक्त तनु नयन कमल अनियारे॥
मृगगतिसम चंचल नारायणभक्त मनोहररूपा।
घनसमान गम्भीर नाद तेहि साधुस्वभाव अनूपा॥
ये लक्षण शुभ होयँ मनुजमें जानिय देव समाना।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि सुर नर कोक बखाना॥१७॥

गन्धर्वपुरुष लक्षण-पद्य।

सत रज गुणयुत श्यामरंग अरु चम्पक वर्ण समाना।
रूप शील शुचि शब्द मनोहर लागत अतिप्रिय गाना॥
खट्टे अरु मधुरे भोजनमें अतिरुचि कोमल बैना।
मित्रभाव मानत सबहीसों मृगवत् सुन्दर नैना॥
ये लक्षण गन्धर्व मनुजके सबही सकल सुजाना।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडित कोक बखाना॥१८॥

यक्षपुरुष लक्षण-पद्य ।

पुष्टशरीर दीनरक्षक अरु दयावान् गुणधामा ।
स्थूलोदर अरु कंठ जंघ युग रक्तवर्ण अभिरामा ॥
दृढ मति रक्तनेत्र धनयुत अरु रज तम गुण बलवाना ।
सकल अंग सामान्य रोम बहु अतिरव सिंहसमाना ॥
ये लक्षण सब यक्ष मनुजके समुझौ सकल सुजाना ।
काम शास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडितकोक बखाना ॥१९॥

राक्षसपुरुष लक्षण-पद्य ।

रक्त श्याम रँग अरु मुख डाढें जासु भयंकर घोरा ।
तमोगुणी कामी क्रोधी अरु निर्दय चित्त कठोरा ॥
लंब स्थूल अंग सब दुर्मति नेत्र विडाल समाना ।
मद्यपानरत नित सुरनरतें मानत द्वेष महाना ॥
ये लक्षण सब राक्षस नरके समुझौ सकल सुजाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडितकोक बखाना ॥ २० ॥

पिशाचपुरुष लक्षण-पद्य ।

बहुभोजी बहु पाप कर्मरत क्रोधी दया विहीना ।
क्रूर स्वभाव गन्ध बकरी सम अतिशय वेष मलीना ॥
अति कटु अम्ल वस्तु भोजी अति शब्दकाकसम ताको ।
करत रहत विश्वास घात सो मनमलीन नित जाको ॥
ये लक्षण सब पिशाचनरके समुझौ सकल सुजाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडितकोक बखाना ॥ २१ ॥

देवी आदि स्त्री भेद ।

चार प्रकारकी स्त्रियाँ जो पूर्व कहचुकेहैं उनमें पद्मिनीको देवी, चित्रिणीको गन्धर्वपत्नी (अप्सरा), शंखिनीको यक्षिणी, हस्तिनीको राक्षसी संज्ञावाली जानना ।

यथोक्तं च।

देवीमप्सरसो यक्षकान्तां राक्षसकामिनीम्।
कृत्यामिति जगुर्नारीं युक्तां तैरेव नामभिः ॥ २८ ॥

भावार्थ-१ देवी, २ अप्सरा, ३ यक्षिणी, ४ राक्षसी, ५ कृत्या इनके लक्षणोंसे युक्त स्त्री जिसका लक्षण हो वह उसीके नामसे कहातीहै अर्थात् देवपुरुषके समान लक्षणोंवाली देवी और गन्धर्वपुरुषके समान लक्षणोंवाली स्त्री अप्सरा और, यक्षपुरुषके समान लक्षणोंवाली यक्षिणी, तथा राक्षसपुरुषके तुल्य लक्षणोंवाली स्त्री राक्षसी और पिशाचपुरुषके समान लक्षणोंवाली स्त्री कृत्या कहातीहै ॥ २८ ॥

कृत्याका विशेष लक्षण यह है कि कलहप्रिया, स्थूल शरीर वाली, अतिक्रोधवाली, श्यामवर्ण, लंबे होंठ अथवा मोटे होंठ, छोटी नाक, शिथिल स्तनविभाग, सूखी कमर, ऊंचा पेट और तमोगुणवाली ये पांच प्रकारकी स्त्रियां हैं. इनमें देव और देवी, गन्धर्व और अप्सरा, यक्ष और यक्षिणी, राक्षस और राक्षसी, पिशाच और कृत्याका लक्षण एकही है, एकलक्षणवाले पुरुष स्त्रीका संयोग ठीक होता है. विरुद्ध लक्षणवाले स्त्रीपुरुषके संयोगसे परस्पर ईर्ष्या, कलह, द्वेषभाव होजाना संभव है. विरुद्ध संयोगही अनर्थका हेतु है. भावार्थ यह कि यदि देवगन्धर्व लक्षणवाले पुरुषका देवी व अप्सरा लक्षणवाली स्त्रीके साथ विवाह होता है तो आनन्दसे दिन व्यतीत होते हैं और यदि देवसंज्ञक पुरुष और राक्षसी अथवा कृत्या स्त्री हो तो विवाह होनेसे दुःख होताहै. इस कारण इन लक्षणोंको देखकर जहांतक होसके समान लक्षणोंसे युक्त नर नारीका विवाह सम्बन्ध करना, अन्यथा दुःख शोक कलह उत्पन्न होकर दोनोंका जन्म निरर्थक होजाता है।

कुपुत्रेण कुलं नष्टं जन्म नष्टं कुभार्यया ।
कुभोजनैर्दिनं नष्टं यन्नष्टं तन्न गृह्यते ॥ २९ ॥

भाषार्थ-कुपुत्र (कपूत) से कुल नष्ट होजाता है, दुष्टस्त्रीसे जन्म नष्ट होजाता है, कुभोजनसे दिन नष्ट होजाता है, इस कारण जो नष्ट हो उसको ग्रहण नहीं करे ॥ २९ ॥

वातप्रकृति स्त्री लक्षण-पद्य ।

वात प्रकृतिवाली नारीका नाहिं कोमल कोउ अंग ।
रूखे स्वल्प केश चंचल चित अतिमलाप बहुरंग ॥
कारी आंख सारस नहिं जाकी भोजन करत अघाई ।
श्याम धूसर अंग गातचर सुरत चित्त अधिकाई ॥
स्वप्न गगनचर वातैं रूखी करै प्रीति नहिं धारै ।
वातप्रकृति स्त्रीको लक्षण ऐसे कोक उचारै ॥ २२ ॥

पित्तप्रकृति स्त्री लक्षण-पद्य ।

गोरा रंग अंग उजलासा लोचन चंचल स्यानी ।
क्षणमें होय प्रसन्न क्षणकमें रूठि रहै दीवानी ॥
पीनपयोधर कुच कठिनाई रतिसों हित अतिजाको ।
फूलतन कछुक अस्थूल द्रविणता स्वल्प संग रत ताको ॥
प्रीतिरीति मल स्तन गमनसों क्रोध स्वभाव सुभारी ।
पित्तप्रकृति भामिनि हृदि मानी कामकला आगारी ॥ २३ ॥

कफप्रकृति स्त्री लक्षण-पद्य ।

कोमलगात दांत चिकने अति नख शित लोचन श्वेन ।
माननीय मदमत्त करै अनुराग सुदृढ घन हेत ॥
श्यामरंग मृदु अंग मनोहर श्रवण सुछबि अतिभारी ।
प्रीति रीति अनुराग राग चित स्वल्प सुरत मनहारी ॥
अतिदिन चितमें चाव जासुके केलिकाम अधिकाई ।
श्लेष्मप्रकृति कामिनि प्यारी भांति कहत सुखदाई ॥ २४ ॥

वातप्रकृति पुरुष लक्षण।

दोहा—कृश तन मोटे केश अति, रूखा होय शरीर।
चंचल वाचाली घना, वातमनुज मतिधीर ॥ २५ ॥

पित्तप्रकृति-पुरुष लक्षण।

दोहा—तरुणाईमे श्वेत हो, केश बुद्धि गंभीर।
क्रोधी प्रस्वेदी महा, पित्तमनुज अतिवीर ॥ २६ ॥

कफप्रकृति पुरुष लक्षण।

दोहा—चिक्कन केश स्थूल तनु, बलयुत बुद्धि गँभीर।
कफज मनुज लक्षण यही, सबमे लखे सुनीर ॥ २७ ॥

प्रकृति संयोग (जोडा)

एक प्रकृति और एकही प्रकारके स्वभाववाले स्त्री पुरुषको जोडा कहते हैं. जिनके रूप रंग और वय (अवस्था) में कुछ अन्तर भी होता है परन्तु गुण और स्वभाव एकही हो तो जोडा मिलजाता है. साथही इसके यह भी ध्यान रखना चाहिये कि स्त्रीकी आयु (उमर) से पुरुषकी आयु अधिक होना चाहिये, क्योंकि बारह वर्षकी नारी षोडश (सोलह) वर्षवाले पुरुषके समान होती है और विवाहका ठीक समय तबही ठीक होता है कि जब स्त्री पुरुष दोनोंकी अवस्था विवाहके योग्य हो. और दोनोंके चित्तमें विवाहकी इच्छा भी कामोद्दीपनके साथ हो तभी परस्पर प्रीति भी बनीरहती है और जोडा भी ठीक मिल जाता है.

पद्मिनी आदि स्त्री लक्षण।

कविमाधव लिखित-पद्मिनी लक्षण।

सम्पूर्णेन्दुमुखी कुरंगनयना पीनस्तनी दक्षिणा।
मृद्वंगी विकचारविन्दसुरभिः श्यामाथ गौरद्युतिः ॥

स्वल्पाहाररता विलासकुशला हंसस्वना गायनी ।
सव्रीडा गुरुदेवपूजनरता सा पद्मिनी प्रोच्यते ॥३०॥

भावार्थ-पूर्णचन्द्रमुखी अर्थात् पूर्णिमाके चन्द्रमाके समान (बहुत गोरे) मुखवाली, मृग (हरिण) के समान नेत्रोंवाली (मृगनयनी), कठोर स्तनोंवाली, बुद्धिमती, और कोमल अंगोंवाली, तथा खिलेहुए कमलके समान सुगन्धिवाली, श्याम अर्थात् गौर कान्तिवाली, थोडा भोजन करनेवाली, कामक्रीडामें चतुर, हंसके समान शब्दवाली, और गान करनेवाली, लज्जावाली, तथा गुरुदेवताओंकी पूजामें तत्पर रहनेवाली इन लक्षणोंवाली स्त्री पद्मिनी कही है ॥ ३० ॥

चित्रिणी लक्षण ।

श्यामा पद्ममुखी कुरंगनयना क्षामोदरी वत्सला ।
सङ्गीतागमवेदिनी परतनुस्तुंगस्तनी शिल्पिनी ॥
बाह्यालापरता मतंगजगतिः सत्कुंकुमार्द्रस्तनी ।
सत्येयं कविमाधवेन कथिता चित्रोपमा चित्रिणी॥३१॥

भावार्थ-श्यामा (श्यामवर्णवाली) अथवा षोडश वर्षकी अवस्थावाली जिसको बाला भी कहते हैं, किंवा ' शीतकाले भवे-दुष्णा ग्रीष्मे वा सुखशीतला तप्तकांचनवर्णाभा । सा स्त्री श्यामेति कीर्तिता ॥ ' अर्थ-शीतकालमें जिसका शरीर गरम हो और गरमीके समयमें जिसकी देह सुखशीतल हो और तपायेहुए सुवर्णके समान जिसकी कान्ति हो ऐसी स्त्री श्यामा कही है, तथा कमलसमान मुखवाली, मृगके सदृश नेत्रोंवाली (मृगनयनी), सूक्ष्म उदरवाली, प्यारी मूर्ति जिसकी, गानविद्याको जाननेवाली, उत्तमशरीरवाली, ऊँचे स्तनोंवाली, शिल्पविद्या जाननेवाली, इधर उधरकी बात करनेवाली, हाथीके समान मन्द मन्द गतिवाली

(गजगामिनी), उत्तम कुंकुमसे आर्द्र स्तन जिसके, उन्मत्त रहनेवाली ऐसी विचित्र उपमावाली स्त्रीको कवि माधवने चित्रिणी कहा है ॥ ३१ ॥

शंखिनी लक्षण।

सूक्ष्मांगी कुटिलेक्षणा लघुकचा संभोगसंवर्धिनी।
प्रायो दीर्घकचा स्वभावपिशुना कष्टोपभोग्या रतौ॥
पिङ्गा लोलगतिश्च वर्वरकृतप्राङ्गार्चनाह्लादिनी।
नानास्थाननखप्रचिह्निततनूः सेयं मता शंखिनी॥३२॥

भाषार्थ-छोटे छोटे अंगोंवाली, टेढे नेत्रोंवाली, छोटे छोटे स्तनोंवाली, रतिक्रीडा बढानेवाली, प्रायः वडे (लंबे) केशवाली, खोटे स्वभाववाली, रतिसमयमें कष्टसे भोगी जानेवाली, पिंगल वर्ण, चंचलगतिवाली, अपने अंग सुधारनेमें प्रसन्न रहनेवाली, तथा अनेक स्थानोंपर नखों करके चिह्नित देहवाली ऐसी स्त्रीको शंखिनी कहा है अर्थात् ये लक्षण शंखिनी स्त्रीके हैं ॥ ३२ ॥

हस्तिनी लक्षण।

पीनस्वल्पतनुर्भृशं मृदुगतिः क्रूरा नमत्कन्धरा।
स्तोकं पिंगलकुन्तला पृथुकुचा लज्जाविहीनानना॥
बिम्बोष्ठी बहुभोज्यभोजनरुचिः कष्टैकसाध्या रतौ।
गौराङ्गी करिदानगंधरुचिरा सेयं मता हस्तिनी॥३३॥

भाषार्थ-कठोर और सूक्ष्म शरीरवाली, मन्दगतिवाली, क्रूरस्वभाववाली, चलते समय ऊँचे कन्धोंवाली, छोटे छोटे पिंगलवर्ण केश जिसके, वडे वडे कुचोंवाली, लज्जाहीन मुखवाली, कुंदरूके समान होंठवाली, और वहुत भोज्यपदार्थ भोजन करनेमें रुचिवाली, कामक्रीडामें कष्टसे भोगीजानेवाली, गोरे अंगवाली, जिस

प्रकार हाथीके मद चूताहै उसी प्रकार स्रव होनेवाली, ऐसे लक्षण-वाली स्त्री हस्तिनी कही है ॥ ३३ ॥

पद्मिनी चित्रिणी भेद-पद्य।

दोहा-बात करतमें नहिं हँसै, नहिं परसों कछु प्रीति।
पद्मिनिकी पहिचानि यह, कही कोककी रीति ॥ २८ ॥
करै प्रीति परपुरुषसों, बात करत मुसक्याय।
चतुर चित्रिणी नारि जग, कोक कह्यो समुझाय ॥ २९ ॥
पद्मिनि चित्रिणि नारिको, इतनोइ अन्तर मान।
चित्रिणि हँसि बातें करै, पद्मिनि हँसै न जान ॥ ३० ॥

शंखिनी हस्तिनी भेद-पद्य।

दोहा-अंग स्थूल सु दुहुनके, अन्तर एतो जान।
शंखिनिकी पतरी कमर, हस्तिनि मोटी जान ॥ ३१ ॥
बात करतमें हँसि परत, शंखिनि कहिये जाय।
हँसिहँसिके बातें करै, हस्तिनि सोइ कहाय ॥ ३२ ॥

योग्यायोग्य संयोग।

शशकं पद्मिनी तुष्टा चित्रिणी रमते मृगम्।
वृषभं शंखिनी तुष्टा हस्तिनी रमते हयम् ॥ ३४ ॥

भाषार्थ-शशकसंज्ञक पुरुष और पद्मिनीका जोडा प्रसन्नचित्त रहताहै, एवं मृगसंज्ञक पुरुष और चित्रिणी स्त्रीका जोडा रमणमें सुयोग्य जानिये, तथा वृषभसंज्ञक पुरुष और शंखिनी स्त्रीका जोडा प्रसन्न रहता है, और हस्तिनी स्त्री अश्वसंज्ञक पुरुष रमणकार्यमें अच्छा जोडा होता है ॥ ३४ ॥

सामान्ये नरनारीणां गर्भाधानं च जायते।
हीनाधिक्ये प्रजत्वं च कृशत्वं च परस्परात् ॥ ३५ ॥

भापार्थ-पुरुप स्त्रियोंके समान लक्षण होनेसे जो गर्भाधान होता है तो उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है तथा परस्पर हीन अधिक संयोगसे अर्थात् बेमेल पुरुप स्त्रियोंके योगसे उत्पन्न सन्तान दुर्बल अंग अथवा विकृत अंगवाली होती है ॥ ३८ ॥

तथा भाषा।

पद्मिनी स्त्री और शशकसंज्ञक पुरुपसे उत्पन्न पुत्र धर्मात्मा व सुशील होता है और कन्या पतिव्रता व धर्ममें तत्पर बुद्धिवाली होती है. तथा चित्रिणी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुपसे उत्पन्न पुत्र रूपवान् धनवान् होता है और कन्या विद्याधरीसे भी अधिक रूपवती होती है. शंखिनी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुपसे उत्पन्न पुत्र महाबाहु महाभुज और महाबलवान् होताहै और कन्या डाकिनी तथा अपने पुरुपको त्यागकर परपुरुपगामिनी होती है. हस्तिनी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुपसे उत्पन्न पुत्र महायोधा और महाबली होता है और कन्या सदैव परपुरुपगामिनी होती है.

पद्मिनी मृग संयोग।

पद्मिनी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुपसे उत्पन्न पुत्र महाबलवान् व सुख दुःख भोगनेवाला होता है और कन्या अल्प आयु व धन धान्य आदिसे पूर्ण होती है.

पद्मिनी वृष संयोग।

पद्मिनी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुपसे उत्पन्न पुत्र बैलके समान मत्त व दुराचारी होता है और कन्या दुराचारिणी व कुलको कलंक लगानेवाली होती है.

पद्मिनी अश्व संयोग।

पद्मिनी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुपसे उत्पन्न पुत्र नपुंसक अथवा राजयक्ष्मारोगी व दुःखी रहता है और कन्या धर्ममें तत्पर साध्वी व शुद्धबुद्धिवाली होती है.

चित्रिणी शशक संयोग ।

चित्रिणी स्त्री और शशकसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र सुशील स्वल्पायु होता है और कन्या दुःख भोगनेवाली व वृद्धपतिवाली होती है.

चित्रिणी वृषभ संयोग ।

चित्रिणी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र अकाल मृत्युको प्राप्त होता है और कन्या गर्भमेंही मरजाती है.

चित्रिणी अश्व संयोग ।

चित्रिणी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र थोडेही कालतक जीता है और कन्या एकनेत्रवाली श्वेतवर्ण होती है.

शंखिनी शशक संयोग ।

शंखिनी स्त्री और शशकसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र धर्मात्मा होता है और कन्या सदा शोकयुक्ता और दीर्घ आयुवाली होती है.

शंखिनी मृग संयोग ।

शंखिनी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र दयाशील आदि सर्व गुणसम्पन्न होता है और कन्या महासुन्दरी बुद्धिमती गुणवती और पुत्र पौत्र आदिको बढानेवाली होती है.

शंखिनी अश्व संयोग ।

शंखिनी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र जन्मान्ध व दुर्बल होता है और कन्या महाव्यभिचारिणी पतिघातिनी होती है.

हस्तिनी शशक संयोग ।

हस्तिनी स्त्री और शशक संज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र अल्पायु

भाषार्थ-जिस स्त्रीका ऊरुभाग स्थूल, शंखके सदृश कंठ, सम श्वेतदशन अर्थात् बराबर और उज्ज्वल दांतोंकी पंक्ति, कमलके समान विशालनेत्र. विम्बाफलके समान होंठ, ऊंची नाक, तथा गजराजके तुल्य गति (चाल), दक्षिणावर्त नाभि, स्निग्ध (चिकने) अंग, कुंचित केश. कनककी सुन्दरता व पूर्णचन्द्रमाके समान मुख ये लक्षण जिसमें हों उसका पति राजा हो और वह सौभाग्यवती पुत्रपौत्रोंसे युक्त होती है ॥ ३८ ॥

कपिनेत्रा दीर्घकेशी काकवत्स्वरभाषिणी ।
कृष्णा कपिलकेशी च त्यक्तव्या सा सदा बुधैः ॥३९॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीके नेत्र कपि (वानर) के सदृश हों, केश घने हों, कौवाके समान शब्दवाली हो, कृष्णवर्ण हो, केशोंका रंग कपिल हो ऐसी स्त्री बुधजनों करके सदा त्याग करदेने योग्य है ॥ ३९ ॥

यस्या गमनमात्रेण भूमिकंपः प्रजायते ।
बह्वाशिनी प्रगल्भा च तां नारीं परिवर्जयेत् ॥ ४० ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीके गमनमात्रसे भूमिकंप हो अर्थात् इस प्रकार चले मानों धरती हिलतीहो, और जो स्त्री बहुत आहार करती हो, लज्जाहीन हो उस स्त्रीको त्याग करे ॥ ४० ॥

यस्या गुल्फस्तु दीर्घः स्याच्छिद्रं पाणितले तथा ।
प्रलापं भाषते नित्यं तां नारीं परिवर्जयेत् ॥ ४१ ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीकी एँडी अथवा गांठ बडी हों तथा चरणतलमें छिद्र (खाली) हो और सदा बहुत बात करती हो उस स्त्रीको त्याग करे ॥ ४१ ॥

विरला दशना यस्याः कृष्णाङ्गी कृष्णजिह्विका ।
भर्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं सा च विन्दति ॥ ४२ ॥

मुख्य काम है. पुरुषोंका यौवन व पुरुषार्थ वीर्यही है. वीर्यको पुष्ट व स्थिर रखना और संचय किया हुआ वीर्य उचित समयमें व्यय (खर्च) करनाही परम पुरुषार्थका हेतु है, इसके रक्षणसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ सहजमेंही साधन किये जा सकते हैं.

विवाहयोग्यायोग्य कन्या।

पिंगाक्षी कूपगंडा प्रविरलदशना क्षुद्रनेत्रातिखर्वा ।
दीर्घा छिद्रांगुलिश्च वितरति कपिला दीर्घकेशी कुरूपा ॥
लम्बोष्ठी स्थूलनासा द्रुततरगमना दन्तुरा कृष्णवर्णा ।
सा नारी दासपत्नी भवति सुनियतं राजपुत्री यदि स्यात् ॥ ३७ ॥

भावार्थ-जिस स्त्रीके नेत्र पीले हों, गंडस्थलमें कूप हो अर्थात् कपोलोंमें गडे पडजाते हों और दांत विरले हों अर्थात् पृथक् पृथक् दांत हों, नेत्र छोटे हों, आकृति बहुत छोटी हो अथवा बहुत बडी हो, अंगुलियोंमें छिद्र हों अर्थात् अंगुलियां पृथक् पृथक् होवें और पिंगलवर्ण देह हो, केश बहुत हों, तथा कुरूपा हो, होंठ लंबे हों, नासिका मोटी हो और बहुत शीघ्र गमन करनेवाली हो, ऊँचे दांतोंवाली तथा काले रंगकी जिह्वा जिसकी ऐसी नारी यदि राजकन्या भी हो तोभी दासकी स्त्री (दासी) होती है ॥ ३७ ॥

पीनोरुः कंबुकंठा समसितदशना पद्मपत्रायताक्षी ।
बिंबोष्ठी तुंगनासा गजपतिगमना दक्षिणावर्तनाभिः ॥
स्निग्धा चोत्तानकेशी कनकरुचिरता पूर्णचन्द्रानना वा ।
भर्त्ता तस्याः क्षितीशो भवति च सुभगा पुत्रपौत्रान्विता च ॥ ३८ ॥

लंबा, और जिसकी गति गजराजके समान हो, जिसके दांत बडे नहीं हों, तथा जिसका करतल लोहित पद्मके सदृश हो वह स्त्री सती, पतिव्रता और धर्मतत्परा होती है, उसीको उत्तमा कामिनी कहते हैं.

मध्यमा स्त्री।

जिस नारीका शरीर न बहुत छोटा हो और न बहुत लंबा हो किन्तु सामान्य होवे, और केश लम्बे हों, नाभि गहरी हो, जिसके देहमें आलस्य न हो, सुख पाकर बहुत प्रसन्न और दुःख पाकर बहुत व्याकुल न होती हो, सदैव प्रसन्नमुख और सबसे प्रेमपूर्वक सम्भाषण करनेवाली हो, नियम आचार और धर्ममें जिसकी निष्ठा रहती हो, जो भोजन प्राप्त होजायें उसीमें सन्तुष्ट रहती हो, जो सबको समान दृष्टिसे देखतीहो, तथा देवता ब्राह्मण और गुरुजनोंमें जिसकी पूर्णभक्ति हो वह स्त्री मध्यमा कही है.

अधमा स्त्री।

जिस स्त्रीके शरीरमें रोम बहुत हों, हाथ पांव क्षीण हों, दोनों नेत्र पिंगलवर्ण हों, जिसका शरीर हस्तिनी स्त्रीके समान लक्षणवाला हो, ऊँचे स्वरसे ठट्ठा मारकर हँसनेवाली हो, लज्जाहीन हो, क्रोध करनेवाली हो, बहुत बात करनेवाली हो, हाथ पांव कठोर हों, केश थोडे हों और आचार निन्दनीय हो ऐसी स्त्री अधमा कही है.

पुरुषार्थ हेतु।

जिस प्रकार स्त्रियां अकाल ऋतुकी पीडाओंकी यंत्रणा भोगती हैं उसी प्रकार पुरुष भी अकाल (कुसमयमें) वीर्य नष्ट करके सदा निर्बल आलसी नपुंसक और संतानहीन तथा संसारसुखसे शून्य रहते हैं, इस कारण वीर्यकी सर्वदा रक्षा करना पुरुषमात्रका

(थोडी आयुवाला) और निर्बल होता है और कन्या रूप, और अल्पायु (थोडे समयतक जीनेवाली) होती है. शश संज्ञक पुरुषसे हस्तिनी स्त्री कभी तृप्त नहीं होती है और प्रसन्न रहती है इस कारण यह संयोग ठीक नहीं जानना.

हस्तिनी मृग संयोग।

हस्तिनी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र पशुके समान आचरण करनेवाला होता है और कन्या महाव्यभिचारिणी व पतिको मारनेवाली होती है.

हस्तिनी वृषभ संयोग।

हस्तिनी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र महाबलवान् योधा व दुराचारी होता है और कन्या परपुरुषगामिनी होती है.

बालाद्यवस्था।

सोलह वर्षकी स्त्रीकी बाला संज्ञा है, तदुपरान्त बत्तीस वर्षकी स्त्रीकी तरुणी संज्ञा है, तिस पीछे पचास वर्षकी स्त्रीकी प्रौढा संज्ञा है, पचास वर्षके उपरान्त वृद्धा संज्ञा है, वृद्धा स्त्रीसे रमण कदापि न करे.

वृद्धोऽपि तरुणीं गत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् ।
वयोऽधिकां स्त्रियं गत्वा तरुणः स्थविरायते ॥ ३६॥

भाषार्थ–वृद्धा अवस्थावाला (वृद्ध) पुरुष तरुण अवस्थावाली

भाषार्थ-जिस स्त्रीके दांत विरले हों कृष्णवर्ण हो, और जिह्वा कृष्णवर्ण हो तो वह प्रथम पतिको हनती और दूसरे पतिको [illegible]त होती है ॥ ४२ ॥

अत्युत्कटौ पदौ यस्या वक्षश्च विस्तृतं भवेत् ।
उत्तरोष्ठे च रोमाणि शीघ्रं सा भक्षयेत्पतिम् ॥ ४३ ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीके दोनों पद अति उत्कट (बहुत कठोर) अर्थात् उतावलेकी नाईं गमन करनेवाली हो, और जिसका वक्ष[illegible] विस्तृत हो, तथा ऊपरवाले होंठके ऊपर लोम हों तो ऐसे [illegible]णवाली स्त्रीका पति नहीं रहना है ॥ ४३ ॥

पृष्ठावर्ता पतिं हन्ति नाभ्यावर्ता पतिव्रता ।
कक्षावर्ता तु स्वच्छन्दा पार्श्वावर्ता च बन्धकी ॥४४॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीके पृष्ठ (पीठ) में आवर्त (भँवर) हो तो पतिको हनती है. नाभिपर आवर्त हो तो पतिव्रता होती है. [illegible] कक्ष (काँख) पर आवर्त हो तो स्वेच्छाचारिणी होती है. [illegible] पार्श्व बगलके नीचेके भागपर आवर्त हो तो वन्ध्या [illegible]ती है ॥ ४४ ॥

पारावताक्षी या काचिद्या काचित् स्थूलनासिका ।
सहस्रस्वामिनं हन्ति विशालाक्षी विवर्जयेत् ॥ ४५ ॥

भाषार्थ-जो कोई स्त्री कबूतर पक्षीके समान नेत्रवाली हो और कोई स्थूल नासिकावाली हो तो वह हजार स्वामियोंको हनने-[illegible] होती है ऐसी विशालाक्षीको त्याग करे ॥ ४५ ॥

चरणानामिका यस्याः क्षितिं न स्पृशते यदि ।
द्वितीया वा तृतीया वा सा कन्या सुखवर्जिता ४६॥

भाषार्थ-जिसके दोनों चरणोंकी अनामिका अँगुलीका स्पर्श-

यदि पृथ्वीसे न हो अथवा दूसरी तीसरी अँगुली पृथ्वीपर न छूजातीहो वह कन्या सुखसे हीन होती है ॥ ४६ ॥

कपिला पिंगला चैव कुटिलातिविशेषतः ।
रूक्षा च सर्वदा या स्यात्तां कन्यां परिवर्जयेत्॥४७॥

भाषार्थ-जो कपिलवर्ण अथवा पिंगल वर्ण हो, और विशेष करके कुटिल स्वभाववाली हो, रूखे स्वभावकी अथवा कटुवादिनी और सदा क्रोध करनेवाली हो उस कन्याको परित्याग करदेवै ॥ ४७ ॥

रम्यांगी सूयते पुत्रान् प्राप्नोति विपुलं सुखम् ।
या हि चम्पकवर्णा च नीलपंकजलोचना ॥
राजपत्नी भवेत्सा तु ध्रुवं दासकुलेऽपि सा ॥ ४८ ॥

भाषार्थ-जिसके सब अंग मनोहर होते हैं वह अनेक पुत्रोंको उत्पन्न करनेवाली होती है और बहुत सुख पाती है, तथा जो चम्पाके समान वर्ण हो और नीलकमलके समान नेत्रोंवाली हो, वह कन्या दासकुलमें होनेपर भी राजाकी पत्नी होती है ॥ ४८ ॥

मध्ये कृशा कंबुकंठी सुन्दरी कनकप्रभा ।
भृत्यानां च सहस्राणां स्वामिनीं तां विदुर्बुधाः॥४९॥

भाषार्थ-जिसका मध्यभाग क्षीण हो, शंखके सदृश कंठ हो, सुन्दरी हो, सुवर्णसमान कान्ति हो वह कन्या हजारों सेवकोंकी स्वामिनी (महारानी) होती है ऐसा बुधजनोंने कहा है ॥४९ ॥

लोम्ना समाकीर्णतमांगयष्टिः धृष्टा कुदन्ता यदि पिंगलाक्षी। मध्ये च पुष्टा यदि राजकन्या कुलेऽपि योग्या न विवाहनीया ॥ ५० ॥

भाषार्थ-जिसके अंगोंपर रोम बहुत हों, जिसका स्वभाव ढीठ , दांत बडे और विरले हों, यदि पिंगलवर्ण नेत्र हों, तथा मध्य-

भाग (कटिप्रदेश) स्थूल हो तो ऐसे लक्षणवाली राजकन्या अच्छे कुलमें उत्पन्न होनेपर भी विवाह योग्य नहीं होती है ॥ ५० ॥

नेत्रे यस्या केकरे पिंगले वा स्याद्दुःशीला श्यावलोलेक्षणा च । कूपौ यस्या गंडयोः सस्मिता या निस्सन्देहं बन्धकीं तां वदन्ति ॥ ५१ ॥

भाषार्थ-जिसके नेत्रमें फुल्ली हो अथवा जिसके नेत्र पिंगल वर्ण हों, अथवा जिसके नेत्र दुःशील अथवा श्याम रक्तवर्ण मिश्रित और चंचल हों, जिसके हँसनेपर दोनों कपोलोंमें गढे पडजाते हों, जिसके ये लक्षण हों वह कन्या निस्सन्देह वन्ध्या होती है ऐसा बुधजन कहते हैं ॥ ५१ ॥

श्यामा सुकेशी तनुलोमराजी सुभ्रूः सुशीला सुगतिः सुदन्ता । वेदीविमध्या यदि पङ्कजाक्षी कुलेन हीनापि विवाहनीया ॥ ५२ ॥

भाषार्थ-जो श्यामा (सुन्दरी शीतमें उष्ण और उष्ण कालमें शीत अंगवाली) हो, सुन्दर केशोंवाली, शरीरमें जिसके रोम सूक्ष्म हों, भौंहें सुन्दर हों, सुशीला हो, गति जिसकी अच्छी हो, दांतोंकी पंक्ति बराबर हो, मध्यभाग वेदीके सदृश हो, और यदि कमल समान नेत्रवाली हो तो ऐसे लक्षणोंवाली कन्या हीनकुलमें उत्पन्न होनेपर भी विवाहके योग्य होती है ॥ ५२ ॥

पुरुष सामुद्रिक भाषा ।

सुलक्षण और कुलक्षण भी पुरुषोंका आकार देखनेपरही जाने जा सकते हैं. परन्तु विशेष रीतिसे लिखदेना भी उचित है. जिस पुरुषका वर्ण गौर, कृश शरीर, सूक्ष्म देह तथा कला

और जांघपर बाल बहुत हों वह अत्यन्त कामी और बहुपुत्रवान् होता है. जिसका शरीर लंबा, गोधूमवर्ण, अत्यन्त चतुर और कृश देह हो वह पुत्रहीन अथवा अल्प सन्तानवाला होता है. जो छोटी ग्रीवा (गर्दन), सूक्ष्मदेह, चंचलस्वभाव हो वह कपटी और छली होता है. एवं काना, खंज, बिडालनेत्रका पुरुष पापात्मा और अविश्वास पात्र होता है. जिसका लिंग दक्षिणांग टेढा हो वह पुत्र सन्तातिवान् होता है, और वामांग टेढा हो तो कन्याकी सन्तानवाला होता है, एवं जो लम्बदेह, स्थूलकाय, बहुभाषी, उच्चशब्दवाला हो वह मानी और अहंकारी होता है, तथा जिसका मध्यभाग भारी, देह गौरवर्ण, शीघ्र बोलनेवाला और बोलतेसमय जिसकी जीभ घटकतीहो वा मेददंतो हो, वह अवश्य चतुर विद्वान् और बहुपुत्रवान् होता है. तथा कृष्णवर्ण, छोटा शरीर, कुरूप, क्रूरस्वभाव पुरुष अवश्य झूंठा छली व ठग होता है.

कामध्वज लक्षण।

महद्भिरायुराख्यातं ह्यल्पलिंगो धनी नरः।
अपत्यरहितो लोके स्थूललिंगो धनोज्झितः ॥९३॥

भाषार्थ-पुरुषका कामध्वज ७ अंगुलसे १० अंगुलतक होता है इनसे यदि छोटा (६ अंगुल) हो तो मनुष्य धनी होता है, और स्थूल (मोटे) लिंगवाला पुरुष सन्तानहीन और निर्धनी होता है ॥ ९३ ॥

मेढ्रे वामनके चैव सुतान्नरहितो भवेत्।
वक्रेऽन्यथा पुत्रवान्स्याद्दारिद्र्यं विन्दते त्वधः ॥९४

भाषार्थ-जिस पुरुषका कामध्वज टेढा, छोटा और बाईं ओरको झुकाहुआहो वह पुत्र और अन्नधनसे रहित होता है. तथा जो दाहिनी ओरको झुकाहुआ प्रतीत हो तो वह पुरुष पुत्रवान् होता

है और जो नीचेकी ओरको झुकाहुआहो तो वह पुरुष दरिद्री होता है ॥ ५४ ॥

अल्पे तु तनयो लिंगे शिरालेऽथ सुखी नरः ।
स्थूलग्रन्थियुते लिंगे भवेत्पुत्रादिसंयुतः ॥ ५५ ॥

भापार्थ-जिसका लिंग टेढा छोटा और ऊपरकी गांठ सुडौल लाल लाल ऊपरको उठी हुई हो तो वह मनुष्य सम्पूर्ण सुखको भोग करनेवाला होताहै और जो लिंगके ऊपरकी गांठ मोटी हो अथवा बडी हो तो वह पुरुष पुत्र आदिसे युक्त होता है ॥५५॥

दीर्घलिंगेन दारिद्र्यं स्थूललिंगेन निर्धनः ।
कृशलिंगेन सौभाग्यं ह्रस्वलिंगेन भूपतिः ॥ ५६ ॥

भापार्थ-मनुष्यका दीर्घ (बडा) लिंग होनेसे दरिद्री और स्थूल (मोटे) लिंगसे धनहीन, कृश (पतले) लिंगसे भाग्यवान् तथा ह्रस्व (छोटे) लिंगसे राजा होता है ॥ ५६ ॥

कर्कशैः कठिनैर्लिंगैः परदाररतः सदा ।
रमते च सदा दास्या निर्धनो भवति ध्रुवम् ॥५७॥

भापार्थ-जिस मनुष्यका कामध्वज कर्कश (कठोर) और कडा हो वह मनुष्य पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला होता है और सदा दासियोंसे रमण करनेवाला तथा निश्चय निर्धनी होता है ॥ ५७ ॥

कृशलिंगेन रक्तेन लभते चोत्तमांगनाः ।
राज्यं सुखं च दिव्यं च कन्यकायाः पतिर्भवेत् ५८॥

भापार्थ-कृश (पतला) और रक्तवर्ण लिंग हो तो उस मनुष्यको उत्तम स्त्री और दिव्य राज्यसुख प्राप्त होता है और वह कन्यका (थोडी अवस्थावाली स्त्री) का पति होता है ॥ ५८ ॥

कृष्णलिंगेन सूक्ष्मेण रक्तलिंगेन भूपतिः ।
परस्त्रीं रमते नित्यं नारीणां वल्लभो भवेत् ॥ ५९ ॥

भावार्थ-जिस पुरुषका कामध्वज कृष्णवर्ण और पतला अथवा छोटा हो और लालरंग हो तो वह पृथ्वीका स्वामी होताहै और सदा पराई स्त्रियोंसे रमण करनेवाला और स्त्रियोंका प्यारा होता है ॥ ५९ ॥

सुलक्षण ।

जिस मनुष्यका मस्तक बडा हो, भरा हो, बराबर हो, चमकता हुआ हो, तथा मस्तकपर रेखा आदि न हों, शिरपर चँदुला हो, एवं आखें बडी और रसीली मृगसमान हों, पुतली स्याह नीलाहट लिये हों, तथा जिसके मुखपर प्रसन्नता रहती हो एवं जिसका चेहरा दमकताहुआ जान पडै, तथा जो अपनी इच्छापर चित्तको प्रसन्न रक्खै ऐसे लक्षणवाला पुरुष भाग्यवान् होताहै. तथा जिसके वार्त्तालापसे सबका चित्त प्रसन्न होजाय, जिसका सम्भापण हृदयग्राही हो, जिसका स्वभाव सरल हो, क्रोध शीघ्र नं आताहो, अथवा जिसका क्रोध किसी पर प्रकाशित न होने पाता हो, अथवा क्रोधित होनेपर भी किसीके अनिष्टकी चिन्ता न करता हो ऐसा पुरुष भाग्यवान् होता है. एवं जिसके हाथ घुटनोंतक पहुँचें वह भी भाग्यवान् होता है.

कुलक्षण ।

जिसका शरीर दुबला और बेडौल हो, बात करते क्रोध आजाय, अथवा जिसको क्रोध शीघ्र आकर दूसरेपर प्रगट हो जाय, जिसका मस्तक ऊंचा नीचा और छोटा हो, जिसके मस्तकपर लकीरें हों, और जिसके नेत्र नीचेको झुके हों तथा जिसके नेत्र क्रोधसे युक्त रहते हों और जल्दी जल्दी पलक मारनेवाले हों, जिसकी वाणीसे जल्दी जल्दी बात निकलती हो, तथा जो

कुवचन बोलनेवाला हो, जिसकी ग्रीवा छोटी हो, जिसके हँसनेपर गालोंमें गढे पडजायँ, जिसकी छाती पर रोम न हों, जिसके नेत्र कंज (बिलावके सदृश) हों, जिसके एक नेत्र हो, जो शीघ्र शीघ्र चलनेवाला हो, अथवा टेढी चालवाला हो, तथा जिसका बायाँ पाँव पहले उठे, जिसके बोलनेके समय थूक बहुत आनेलगे, बात करनेपर मुख काँपने लगे, मार्ग चलनेपर बडबडाताजाय इन लक्षणोंमेंसे एक दोलक्षणवाला मनुष्य भी अवगुणी होता है. सुलक्षण और कुलक्षण इसी प्रकार स्त्रियोंमें भी जानना.

क्वचित्काणो भवेत्साधुः क्वचित्खल्वाटो निर्धनी।
वक्रदन्तः क्वचिन्मूर्खः क्वचिद्गानवती सती ॥ ६० ॥

भाषार्थ-एक नेत्रवाले मनुष्योंमें कोई एक साधु होता है, जिसके शिरपर चंदला होता है वह कोई एक निर्धनी होता है, टेढे दांतवाला कोई एक मूर्ख होता है, एवं गानेवाली स्त्रियोंमें कोई एक पतिव्रता होती है ॥ ६० ॥

स्त्री-सामुद्रिक भाषा।

जिस स्त्रीके चरणोंमें शंख, चक्र, कमल, रथ, ध्वज, मच्छर, विमान और चांदनीके आकार चिह्न हों उसका पति ऐश्वर्यवाला होताहै. जिस स्त्रीके चरणके तलुए कोमल हों, ऊँचे नीचे न हों और गुडहरके फूलके समान लाल हों तो वह स्त्री स्थूल देह, कामबाधासे सन्तापित, राजाकी प्रियवल्लभा और धर्महीन होती है. जिसके चरणके तलुए खरखरे, बुरे रंगके, सूखे और रूखे हों वह स्त्री भाग्यहीन होती है. जिसके चरणका अँगूठा ऊँचा, गोल और समान होता है वह स्त्री सुख भोगनेवाली होती है, तथा सूर्पाकार नखवाली स्त्री दुःख भोगनेवाली होती है. जिस स्त्रीके चलते समय मार्गमें धूल उडतीजाय अथवा धूलको हाथसे उछालती चले वह माता पिता और पतिके कुलको कलंक लगानेवाली

होती है. जिसके पांवकी अँगुली दूसरी अँगुलीपर चढीहो वह पतिको हनन कर वेश्या होजाती है. जिसके पांवकी छोटी अँगुली चलते समय पृथिवीको नहीं छूवे वह स्त्री निजपतिहंत्री और परपुरुषगामिनी होती है. जिसके चरणकी मध्यमा और अनामिका अँगुली भूमिको न छुवे वह स्त्री भी पतिहंत्री होती है. जिसके पांवके नख चिकने, ऊँचे, गोल और तांबेके समान हों, वह स्त्री बहुत सुख भोगनेवाली होती है. जिसके चरणके ऊपरकी पीठ स्वच्छ, कोमल, कमलके समान लाल अथवा केशर व मूँगेके समान लाल हो वह गुणवती होती है. जिस स्त्रीके चरणकी अँगुलियोंके बीचमें निचाई हो वह दरिद्रिणी होती है. जिसके पांवके अँगुलियोंकी नसें अधिक हों वह मार्ग चलनेवाली होती है. तथा जिसकी अँगुलियोंपर रोम हों वह दासी होती है. जिसके गुल्फ मांसहीन हों अथवा मांसयुक्त पुष्ट शिरासहित गोल हों, वह स्त्री सौभाग्यवती होती है. जिसके घुटने समान हों वह भाग्यवती और मोटे होनेसे भाग्यहीना, ऊँचे होनेसे व्यभिचारिणी, लम्बे होनेसे रोगिणी होती है. जिसके जंघा केलेके खंभके समान गोल, रोमहीन, स्थूल, चिकने और बराबर हों वह स्त्री ऐश्वर्य-वाली होती है, इससे विपरीत हो तो भाग्यहीन होती है. जिसकी कमर ऊँचे नितम्बोंवाली चौबीस अंगुलकी चौडी हो वह दासियोंसे युक्त ऐश्वर्यवाली होती है. जिसकी कटि मांसहीन, नीची, लंबी, गहरी, चिपटी, गाडीके आकार-वाली छोटी व रोमयुक्त हो वह विधवा होती है. जिसके नितम्ब सुन्दर हों वह सुख भोगनेवाली और ऊंचे स्थूल बडे हों, वह कामसुखको बढानेवाली होती है. जिसकी नाभि दक्षिणावर्त गहरी हो वह सुख भोगनेवाली और गांठके समान खुले मुखकी वामावर्त अच्छी नहीं होती है. जिसका उदर बडा हो वह अनेक पुत्रोंवाली होती है, मेंढकके सदृश हो वह राजपुत्र जनती है,

बहुत विस्तृत उदरवाली वली पुत्र जनती है. जिसका उदर ऊंचा हो वह वंध्या, कठोर हो वह नीच स्वभावाली होती है. जिसका उदर घटाकार वा मृदंगाकार तथा यवाकार हो वह पुत्रहीन होती है और पेठेके आकार हो वह दुःखभागिनी होती है. जिसकी त्रिवली सूक्ष्म सरल हो वह रतिकेलिमें प्रेम बढानेवाली होती है और भूरे रंगकी कुटिल केशोंमें आच्छादित त्रिवलीवाली स्त्री दुष्ट वचन बोलनेवाली होती है, एवं विरल बडे आकारवाली त्रिवली अच्छी होती है. जिस स्त्रीका हृदय लोमरहित बराबर हो वह भोग भोगनेवाली और पिछली अवस्थामें प्रियतमसे वियोगवाली होती है. जिस स्त्रीके हृदयके ऊपर फटेसे रोम हों अथवा स्वयं उखडकर गिरजायें तो वह स्त्री पतिहंत्री होती है. जिस स्त्रीका हृदय बहुत चौडा हो वह व्यभिचारिणी होती है. अठारह अंगुल चौडे हृदयवाली स्त्री सुख भोगनेवाली होती है. जिसका हृदय ऊंचा नीचा रोमयुक्त हो वह दरिद्रा होती है. जिस स्त्रीके दोनों कुच कठोर, समान, दृढ, घन, गोल और सुन्दर हों वह पतिको हर्ष बढानेवाली होती है. जिसके स्तन मिले न हों नीचे नहीं हों और कठोर व स्थूल हों, दाहिना स्तन कुछ बडा हो वह स्त्री पुत्रवती होती है. जो बायां स्तन बडा हो तो कन्या उत्पन्न करनेवाली होती है. जिसके स्तनोंके बीचमें स्थान खाली हो और स्तन बडे हों तो अच्छे नहीं होते हैं. जिस स्त्रीके स्कन्ध पुष्ट हों वह कामान्ध रहती है और कन्धे नम्र हों तो पुत्रवती होती है, छोटे हों तो वह सुख भोगनेवाली होती है. जिसके स्कंध चौडे कठोर हों वह स्त्री धन्य होती है और ऊंचे मांसहीन पतले होनेसे वह स्त्री विधवा होती है. जिस स्त्रीका अंगूठा और दो अंगुली कमलकी कलीकेसमान हों वह स्त्री अधिक सुख भोगनेवाली होती है. जिस स्त्रीकी भुजाओंसे हाथोंके तलुए यदि कोमल, स्वच्छ, कमल समान लाल ऊंचे हों तो वह स्त्री रतिके-

लिये अपने पतिको प्रसन्न करती है. जिस स्त्रीका हाथ बहुतसी रेखाओंसे युक्त हो अथवा रेखा नहीं हों तो वह विधवा होती है. तथा जिसके हस्ततलपर स्वच्छ रेखा हो तो वह स्त्री सुखी रहती है. जिस स्त्रीका हाथ बहुतसी नसोंसे भरा हो तो दरिद्रा - और हाथकी पीठ ऊँची तथा विना नसोंवाली हो तो वह स्त्री सुख भोगनेवाली होती है. जिस स्त्रीकी हथेलीपर कमलका चिह्न हो वह रानी होती है और उसका पुत्र भी पराक्रमी और तेजस्वी होता है. जिस स्त्रीके हाथके अँगूठेकी जडसे छोटी अँगुलीकी जडतक रेखा गई हो तो वह पतिहंत्री होती है. जिसके हाथमें शुभ वस्तुओंका आकार हो वह सुखभागिनी और अशुभ वस्तुओंका आकार हो वह दुःखभागिनी होती है. जिस स्त्रीके हाथका अँगूठा सीधा, कोमल, गोल और अँगुली क्रमसे छोटी, लंबी और गोल हों, ऊपर रोम जमे हों, मध्यभागमें रेखायें बहुतसी हों वह भाग्यवाली होती है. इससे विपरीत होनेसे दरिद्रा होती है. जिसके नखोंमें सफेद रंगके बूंद हों वह बहुत कामवती होती है. जिसके नख शंख वा सीपके समान हों, नीचेको झुके और कुरूप हों एवं कपिल व भूरे रंगके हों वह स्त्री कुलक्षणवाली होती है. जिस स्त्रीकी पीठकी हड्डी मांसमें मिली हुई हो वह पतिकी प्यारी और जिसकी पीठमें बहुत रोम हों वह विधवा होती है. जिस स्त्रीका कंठ गोल वर्तुलाकार, ऊँचा दर्शनीय और चार अंगुल लम्बा हो वह स्त्री अपने पतिकी प्यारी होती है. जिसकी ग्रीवा मोटी हो वह अपने पतिमें आसक्त रहती है और जिस स्त्रीके कंठका रंग लाल हो वह दासी होती है. जिस स्त्रीकी ग्रीवा चिपटी और पतली हो वह पतिहीन और छोटी ग्रीवा होनेसे धनहीन होती है. स्त्रीकी ठोडी भारी रोमहीन और कोमल अच्छी होती है और जो रोमवाली मोटी तथा छोटी हो तो अच्छी नहीं होती है. स्त्रीके गाल मोटे भारी ऊँचे गोल अच्छे होते हैं और मांसहीन,

कुटिल और रोमवाले होनेसे अच्छे नहीं होते हैं. जिस स्त्रीके होंठ गोल, रेखायुक्त, लाल. चिकने हों तो वह स्त्री राजाकी प्रिया होती है. तथा जिसके होंठ लम्बे पुरुषके होंठके समान फटेहुए मांसहीन हों वह अभागिनी होती है और काले होंठवाली पतिहीन होती है. जिस स्त्रीके दांत नीचे ऊपरके बराबर हों और मिले हुए हों, दांतके ऊपर दांत न चढा हो, गिनतीमें पूरे बत्तीस हों और दूधके समान श्वेत हों तो वह स्त्री सौभाग्यवती होती है. तथा जिस स्त्रीके नीचेके दांत ऊपरके दांतोंसे बडे हों अथवा अधिक हों तो वह स्त्री मातासे हीन और दुःख पानेवाली होती है. जो दांत विकट हों तो पतिहीना और बीचमें छिद्रहों तो व्यभिचारिणी होती है. जिस स्त्रीकी जीभ नरम, बराबर, लाल सपेद रंग हो वह स्त्री भाग्यवती होती है और जो बीचमें विकृतवाली हो तो सुखहीन होती है. जिसकी जीभ काली हो वह कलहा और मोटी हो तो धनहीन, तथा लंबी हो तो अभक्ष्य पदार्थ भक्षण करनेवाली होती है. जिस स्त्रीका तालु लाल कमलके समान हो तो वह स्त्री सौभाग्यवती, और पीला होनेसे तपस्विनी तथा सफेद होनेसे पतिविहीना होती है. जिस स्त्रीकी नासिका छोटे छिद्रके समान और गोल पुटकी हो वह भाग्यवती होती है और नासिकाका अग्रभाग स्थूल और बीचमें नीचा हो वह दरिद्रा होती है. तथा जिसकी नासिकाका अग्रभाग लाल और टेढा हो वह स्त्री पतिहीना होती है. एवं चपटी नाकवाली दासी और लंबी नाकवाली कलहा होती है. जो स्त्री नेत्र बन्द किये विना उत्तम दृष्टि करके बोले और बोलनेसमय गाल कमलके समान प्रफुल्लित मुखसे शोभित हों, दांत दिखाई न देवें ऐसे मुसक्यानवाली स्त्री भाग्यवती होती है. जिस स्त्रीके नेत्रोंके अन्तिमभाग लाल हों और नेत्रोंके बीचका तारा काला, बादरकी पुतली हंसके समान अथवा दूधके तुल्य सफेद, पलक कोमल और उनके बाल काले हों तो वह

भाग्यवती होती है. जिस स्त्रीके नेत्र ऊंचे हों वह अल्पायु होती है, गोल नेत्रोंवाली व्यभिचारिणी, तथा बकरी केंकडा और भैंसके समान नेत्रोंवाली अभागिनी होती है, तथा पिंगल व कबूतरके समान नेत्रोंवाली दुष्टा, एवं कोटरके समान नेत्रोंवाली महादुष्टा, लाल नेत्रोंवाली पतिहंत्री, बिल्ली व हाथीके समान नेत्रोंवाली कुलनाशिनी, दाहिने नेत्रसे काणी वन्ध्या और वामनेत्रसे काणी कुलटा होती है. एवं शहतके समान पीले नेत्रोंवाली धनवती, पतिव्रता और पुत्र पौत्र आदिसे युक्त होती है. तथा जिस स्त्रीके पलक काले, कोमल, सघन और छोटे हों वह स्त्री भाग्यवती और पतिप्रिया होती है. जिसके पलक केशहीन और थोडे केश हों अथवा मोटे केश हों, लंबे और कपिलवर्ण हों तो वह परपुरुषगामिनी होती है. जिस स्त्रीकी भौंहें नम्र, गोल, काली, धनुषाकार हों

और दुष्ट होती है. जिस स्त्रीके ऊपरके होंठपर बाल हों और घरके द्वारपर वार वार जाय वह पतिके संग कलह करनेवाली और व्यभिचारिणी होती है. जिस स्त्रीका स्वभाव तामसी हो और जिसकी भौंहें मिली हों उसका विश्वास कभी नहीं करना चाहिये. जिस स्त्रीके चरणकी तर्जनी अँगुली अँगूठेसे लंबी हो वह व्यभिचारिणी तथा पतिहीन होती है. जो स्त्री ह्रस्वकाय, श्यामनयना हो वह व्यभिचारिणी होती है. जिसके हाथ, पांव भारी, अंगुली छोटी, किंचित् स्थूलकाय, मध्य देह, गौरवर्ण वह भी व्यभिचारिणी, निर्लज्जा और निर्भय होती है. तथा जो स्त्री लंबी, कृशशरीर, पिंडली और कलाईपर बाल, शीघ्र चलनेवाली हो और जिसका पांव चलतेसमय मध्यसे भूमिपर न लगै वह भी व्यभिचारिणी होती है; जिस स्त्रीके कुच नितम्ब गमन करते समय हिलैं तथा शीघ्र और तिरछी चाल वा दृष्टिवाली हो वहभी व्यभिचारिणी होती है. जिस स्त्रीके लक्षण बहुत अच्छे हों वह यदि अल्पायुवाले पतिकोभी प्राप्त हो तो उसके पतिकी दीर्घायु हो जाती है. एवं जो स्त्री कुलक्षणा भी हो और सुलक्षण पतिको प्राप्त हो तो उसको कुछ सुख प्राप्त होसकता है.

केशा यस्या भ्रमणपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णा वक्राकारा कुवलयदृशां किंचिदाकुंचिताग्राः। भाग्यं सद्यो ददति विरलाः पिंगलाः स्थूलरूपा रूक्षाकाराः परमलघवो वन्धवैधव्यदुःखम् ॥ ६१ ॥

भाषार्थ-जिस मृगनयनी स्त्रीके शिरके केश भौंराओंके समूह सदृश काले रंगके चमकीले टेढे और कुछ घुँघुवारे नोकदार होवें तो शीघ्र भाग्यकी वृद्धि करनेवाले होते हैं और जो विरले पिंगल-

वर्ण (पीले) मोटे और रूखे अथवा बहुत छोटे हों तो बन्धन, वैधव्य और दुःख देनेवाले होते हैं ॥ ६१ ॥

मशकोऽपि ललाटपट्टवर्ती यदि जागर्ति समध्यगो भ्रुवोर्वा । तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ॥ ६२ ॥

भाषार्थ- यदि स्त्रीके ललाटपर अथवा भोंहोंके बीचमें छोटे व्रणके सदृश मस्सा हो तो वह स्त्री सुख, धन, अनेक प्रकारके भोग और निरन्तर पति पुत्र व सेवकजनोंका जो सुख है उस सुखको प्राप्त होवे अर्थात् सदा सुखी रहे ॥ ६२ ॥

मशकोऽपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एवमिष्टदः स्यात् । हृदयं तिलकेन शोभितं वा लशुनेनापि च राज्यकारणम् ॥ ६३ ॥

भाषार्थ—जिस सुनयनी स्त्रीके बीच गालपर लाल लाल मस्सा हो तो इच्छानुसार उसका कार्य सिद्ध होता है और जो तिल वा लहसन हृदयपर हो तो राज्य प्राप्त होता है ॥ ६३ ॥

लोहितेन तिलकेन मंडितं सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा । जायते किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयमुदीरितं तदा ॥ ६४ ॥

भाषार्थ—यदि सुन्दर भृकुटीवाली स्त्रीके स्तनमण्डलपर जो लाल तिल हो तो निश्चय उस स्त्रीके चार कन्यायें उत्पन्न होवें और तीन पुत्र उत्पन्न होवें ऐसा पूर्वाचार्योंने कहा है ॥ ६४ ॥

भवति वामकुचेऽरुणलाञ्छनं शुभदृशस्तिलकं कमलप्रभम् । प्रथमतस्तनयं परिसूय सा क्रतिवरं विधवा तदनन्तरम् ॥ ६५ ॥

भावार्थ-जिस सुनयनी स्त्रीके बायें कुचपर लाल चिह्न हो अथवा कमलके रंग समान तिल हो तो उस स्त्रीके प्रथम एक सुपुत्र प्रगट हो, अनन्तर वह विधवा हो जावे ॥ ६५ ॥

लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभदृशास्तिलकं गुददक्षिणे । नरपतेरबला कमलालया नृपमपत्यमरं जनयेदलम् ॥ ६६ ॥

भावार्थ-जिस सुनयनी स्त्रीके छोटे भौंरोंके समूहके आकार (काला) तिल गुदाके दक्षिण भागमें हो तो वह राजाकी स्त्री होवे और उसके घरमें लक्ष्मीका वास हो तथा वह सुन्दर राजपुत्रको उत्पन्न करनेवाली होवे ॥ ६६ ॥

मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी सुदृशी विद्रुमकान्तिरर्थदायी । अलिपक्षनवाम्ररूपधारी पतिहंत्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥ ६७ ॥

भावार्थ-जिस सुनयनी स्त्रीके नाकके आगे मूँगेकी कान्तिके सदृश मस्सा हो, तो द्रव्यको देनेवाला जानना और जो भौंरेके पंखसमान अथवा नवीन मेघके समान रूपवाला हो तो वह स्त्री निश्चय करके अपने पतिको हनन करनेवाली और विशेष करके व्यभिचारिणी होती है ॥ ६८ ॥

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लांछनं स्फुटम् ।
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ॥ ६८ ॥

भावार्थ-यदि झुकीहुई भौंहवाली स्त्रीकी नाभिके नीचे तिल वा लछन प्रगट दीखपडे अर्थात् ऐसे चिह्नवाली स्त्री सौभाग्यवती रहती है ॥ ६८ ॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कंठगतं तिलकं तदा । श्रुतितलेऽपि च सा पतिवल्लभा वरदृशां मशकामललांछनैः ॥ ६९ ॥

भापार्थ-यदि सुनयनी स्त्रीकी हथेली वा कपोल पर अथवा कंठ यद्वा कानके नीचे तिल हो तो वह स्त्री पतिको प्यारी होवे. एवं मस्सा अथवा प्रगट लहसन आदि चिह्न हों तो भी वह स्त्री अपने पतिकी प्यारी होवै ॥ ६९ ॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ।
चुल्लिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः ॥ ७० ॥
रोमाकुलोऽदृष्ययोनिर्विकृतास्यो महाधमः ।
कामिनां न विनोदार्हो भगो भवति सर्वथा ॥ ७१ ॥
कामिन्यां कंचुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ।
स गर्भधारणाशक्तो वक्राकारोऽपि तादृशः ॥ ७२ ॥

भापार्थ-जिस स्त्रीकी भग पीपलके पत्रके आकार हो अथवा गुप्तमणिके सदृश हो तो शुभ होवे है तथा जो चूलेके पेटके समान अथवा हरिणके खुरके सदृश हो तथा बहुत रोमोंसे युक्त हो कि जिससे जननेन्द्रिय दिखाई न देवे और जिसका मुख विकारवाला हो अर्थात् देखनेमें अच्छी नहीं होवे ऐसी जननेन्द्रिय अधम जानना, सो सर्वथा कामी पतिके आनन्द हेतु नहीं होती है. जिस कामिनीकी योनि कंचुकावर्त हो अर्थात् दोनों ओर ऊंची बीचमें खाली हो तो ऐसी योनी दुर्भाग्यको बढानेवाली होती है और वह गर्भ धारणके योग्य नहीं होती है, तथा जो टेढे आकार की हो तो भी दुर्भाग्य बढानेवाली और गर्भधारणमें असमर्थ जानना ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

यदा गजस्कन्धसमानरूपो भगोऽथ वा कच्छप-
पृष्ठवेषः । इलापतेः कामविनोददायी वामोन्नतः
सोऽपि सुताजनेता ॥ ७३ ॥

भावार्थ-जिस स्त्रीकी जननेन्द्रिय हाथीके कन्धेके सदृश रूपवाली हो अथवा कछुएकी पीठके आकार हो वह राजाको कामक्रीडा द्वारा आनन्द देनेवाली (राजपत्नी) होती है. तथा जिसकी योनि ऊपरको उठीहुई होवै ऐसी योनिवाली स्त्री कन्याओंको उत्पन्न करनेवाली होती है ॥ ७३ ॥

मृदुला विपुला वास्तिः शोभना च समुन्नता ।
अशुभा रेखया क्रान्ता शिराला लोमसंकुला ॥ ७४ ॥
शंखावर्ता भगो यस्याः सा गर्भमिह नेच्छति ।
वामोन्नतं च कन्यादः पुत्रदो दक्षिणोन्नतः ॥ ७५ ॥
तदेव दक्षिणावर्तं मांसलं शुभसूचकम् ।
वामावर्तं खंडितं स्यात् कामिनी व्यभिचारिणी ७६॥
निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम् ।
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥७७॥

भावार्थ-जिस स्त्रीकी योनि कोमल, बडी और ऊँची हो तो शुभ जानना और बहुत रेखा व नसोंवाली तथा रोमवाली हो तो अशुभ जानना. जिस स्त्रीकी योनि शंखावर्त अर्थात् शंखके समान घूमीहुई एक ओर मोटी और एक ओर पतली हो तो ऐसी योनि गर्भको धारण करनेवाली नहीं होती है. तथा यदि स्त्रीकी योनि बायें ओरको ऊंची हो तो कन्याओंको प्रगट करनेवाली होती है, और जो दाहिनी ओरको ऊंची हो तो पुत्र उत्पन्न करनेवाली होती है और जिस स्त्रीकी योनि दाहिनी ओरको घूमीहुई औरमोटी हो तो शुभ होती है और जो बाईं ओरको घूमीहुई व किसी स्थानपर खंडितसी हो तो ऐसी योनिवाली कामिनी व्यभिचारिणी होती है. तथा जिस स्त्रीका भग मांसरहित, कुछ टेढासा, रूखा हो तो वैधव्यसूचक जानना अर्थात् विधवा करताहै और जो भग बहुत मोटा और बहुत लंबा हो तो शीघ्र भाग्यहीन करनेवाला होताहै ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

मृदुतलं मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भग-
भाजनम् । उत समुन्नतमायतमादरात्पतिकलाक-
लितं गादितं बुधैः ॥ ७८ ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीका भग बहुत कोमल और कोमल रोमोंसे युक्त हो तो वह ऐश्वर्य प्रदाता होता है. तथा जो ऊँचा, बड़ा, चमकदार हो तो वह आदरपूर्वक पतिकलासे शोभित अर्थात् जिसके देखने छूनेसे चित्तकी उमंग बढे, ऐसा भग ऐश्वर्यको बढानेवाला बुधजनोंने कहा है ॥ ७८ ॥

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः ।
ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ ७९ ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीके चरणोंके नख चिकने, गोल उठे हुए तांबेके रंगके समान हों तो वे स्त्रियोंके उत्तम भोग ऐश्वर्य प्रदानवाले होते हैं ॥ ७९ ॥

प्रलंबिनी ललाटे च देवरं हंति चांगना ।
उदरे श्वशुरं हंति पतिं हंति स्फिचोर्द्वयोः ॥ ८० ॥

भाषार्थ-जिस अंगनाका ललाट लंबायमान हो वह अपने देवर (पतिके छोटे भाई) को विनाश करती है अर्थात् लम्बे शिरवाली स्त्रीका देवर मरजावे और जिस स्त्रीका उदर (पेट) बहुत लंबा हो तो वह स्त्री अपने श्वशुरको हनती है अर्थात् लंबे पेटवालीका श्वशुर मर जाय और जिस स्त्रीके दोनों नितंब ऊपरको चढे हुएहों वह स्त्री पतिहंत्री होवे अर्थात् उसका पति नहीं रहै ॥८०॥

चौर्याय पुष्टकर्णौ च दीर्घौ भर्तुश्च मृत्यवे ।
कव्यादिरूपैर्हस्तैश्च वृककंकादिसंनिभैः ॥ ८१ ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीके दोनों कान पुष्ट हों तो वह स्त्री चोरी करनेमें प्रवीण होवे और जिसके कान बडे बडे हों वह पतिहंत्री होवे

अर्थात् उसका पति नहीं रहे तथा जिसके कान क्रौञ्चआदि व हाथके आकार अथवा भेडिया गीध आदिकोंके कानके समान हों वह स्त्री भी विधवा होवै ॥ ८१ ॥

स्त्रीणां पुंसां तथा सम्यग्राज्याय च सुखाय च।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्ना चोर्ध्वरेखा सुखप्रदा ॥ ८२ ॥

भाषार्थ-जिन स्त्रियों तथा पुरुषोंके हाथमें या चरणतलमें ऊर्ध्व रेखा प्रत्यक्ष दीख पडे तो राज्य व सुख पूर्ण प्रकारसे प्राप्त होवै और पुत्र पौत्र आदिकोंसे संपूर्ण सुख सदा प्राप्त होवै ॥८२॥

यह प्रसंगवश सामुद्रिकरीति स्त्रीपुरुषोंके लक्षण संक्षेपसे लिखकर प्रकाशित किये हैं. प्रायः लोग सामुद्रिक शकुन और ज्योतिषके फलितको असत्य समझते हैं उनका भ्रम है. क्यों कि प्राचीन आचार्योंने सामुद्रिक और शकुन आदिकी भलीभांति परीक्षा करके लेखनी उठाई है, जिन्होंने शकुनादि ग्रन्थ भलीभांति नहीं देखे, पढे और नहीं समझे हैं उनको कैसे ज्ञात हो सकता है कि ये सत्य नहीं हैं. जो पुरुष जिस विद्याको भलीभांति नहीं पढा और न परीक्षा की है. वह पुरुष उसमें कैसे सुबोध होसकता है. जो जिसको नहीं जानता वह उसकी निन्दा करदेता है. जैसे आजकलके नवीन मतानुयायी असत्य और असंभव शब्दका प्रयोग अधिक करते हैं. एक लोमडीने एक ऊँचे वृक्षपरके अंगूर जब न पाये तब उनको खट्टा बताकर अपना मन समझालिया. इसी प्रकार अपनेको सर्वज्ञ समझकर धूर्तलोग प्रत्येक बातमें असंभव और असत्यका पचडा लगादेते हैं. ज्योतिषके फलितके विषयमें युक्ति प्रमाण हमने जन्मपत्रीप्रदीप ग्रन्थमें लिखकर शंका समाधान कर दिया है. परन्तु हठवादीका समाधान करनेके

१ कथा सार

लिये कोई भी समर्थ नहीं है. फलित कहनेके लिये प्रथम उसके मननकी परम आवश्यकता है.

देशभेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि।
यः कथयति शुभाशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी॥८३

भावार्थ-देशभेद, ग्रहगणित, जातक कुल आदि सब बातोंका ध्यान कर जो शुभ या अशुभ कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है॥ ८३॥

लावण्य (सुन्दरता)।

दृष्टिके सामने रहे जैसे साधुसन्त, धर्मात्मा और सज्जन पुरुष. इन बातोंको विचारकर प्रत्येक मनुष्य अपने उत्तम गुणोंसे सुन्दरताको प्राप्त होसकता है.

'गुणा प्रधानतां याति आकृतिर्न गरीयसी।'

अर्थात् गुण प्रधानताको प्राप्त होते हैं यहां आकृतिकी बडाई नहीं है. जो मनुष्य अपने शुभ गुणोंसे युक्त रहे तो मरणपर्यन्त उसको सुन्दरता नहीं छोडती अर्थात् उसकी सुन्दरतामें कुछ भी भेद नहीं पडता है. रूपकी सुन्दरता ऐसी है कि आज जो रूपवान् है कलको वही कुरूपवाला होकर घृणा करनेके योग्य हो जाता है. एक उसके रूपपर मोहित होकर उसपर मरनेलगता है. दूसरा उसी रूपको देखकर घृणा करता है. और उसको देखतेही क्रोधमें भरजाता है. भावार्थ यह कि जिसके आचरण अर्थात् जिसका चालचलन अच्छा है वही सुन्दर है. और यह सुन्दरता उसकी सर्वदा रहती है, और जिसके आचरण अर्थात् जिसका चालचलन अच्छा नहीं वही सुन्दरतासे हीन है. जो मनुष्य अच्छे मनुष्योंमें बैठते हैं, अच्छे अच्छे पुस्तक पढते हैं, अच्छा व्यापार करते हैं, आहार व्यवहार शुद्ध रीतिसे करते हैं, कभी अपने स्वभावको अदलबदल नहीं होनेदेते, अनिष्ट बातोंकी ओर ध्यान नहीं देते हैं, चित्तको सर्वदा प्रसन्न रखते हैं, वेही मनुष्य सबको सुन्दर दीखपडते हैं. और जो मनुष्य सर्वदा क्रोधयुक्त रहते हैं, कटु वचन मुखसे बोलते रहते हैं. तथा सदा अप्रसन्नचित्त रहते हैं, निकृष्टमनुष्योंमें बैठते हैं. तामसी भोजन करते हैं, नशा आदि पीते हैं उनको देखकर सबको भय लगता है. उनकी सुन्दरता भी लोगोंको अच्छी नहीं लगती, कि हमारे साथ यह अनुचित वर्ताव न कर बैठे. यह लावण्य भाव दर्शाकर आगे रूपके विषयमें लिखते हैं.

रूप।

रूपवान् होना भी संसारमें दुर्लभ है जिसको भगवान् रूप देता है, उसमें कुछ अवगुण भी साथही होता है कि जिससे रूपपर लांछन आजाताहै. ऐसा कोई भी रूपवान् संसारमें नहीं हुआ जिसने शुभ गुणोंके साथ प्रतिष्ठा न पाई हो. देखो श्रीरामचन्द्रजी महाराज यद्यपि श्यामवर्ण थे परंतु उनमें रूपकी छटा थी, अंगप्रत्यंग सब सुडौल थे, मनोहर रूप होनेके कारण उनको देखतेही दूसरे लोग मोहित होजाते थे और प्रशंसा करते थे, परन्तु साथही उनमें शुभगुण भी वर्तमान थे, इसीसे माना जाता है कि ईश्वरका पूर्ण अंश उनमें विद्यमान था. इसी प्रकार श्रीकृष्णचन्द्रजी भी थे कि शत्रु भी उनका आदर करतेथे. जिसके सब अंग प्रत्यंग सुन्दर और मनोहर हों वही रूपवान् होता है. जो जो पुरुष ऐसे रूपवान् हुए हैं उनका नाम अबतक जगत्में विख्यात है जैसे राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, श्रीकृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, शिव, अश्विनीकुमार आदि. रूपमें आजकल मुख प्रधान माना जाताहै जिसका मुख देखनेमें अच्छा होता है वही रूपवान् समझा जाता है. मुख देखकरही उसकी सुन्दरताका परिचय मिलता है. परंतु रूपवान् जभीतक अपने रूपको ठीक धारण करता है. जबतक वह ब्रह्मचर्य रहकर वीर्यकी रक्षा करता है, जहाँ वीर्यकी रक्षासे रहित हुआ कि मानों उसने अपने रूपपर प्रहार किया. वीर्य नष्ट होतेही रूपमें अन्तर होने लगता है. चमकदमक (तेज) घटकर शरीर मुरझा जाता है, मुख ग्रस्त होजाता है, क्योंकि शरीरमें वीर्यही रूप, बल, तेजका कारण है. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे लक्ष्मणजीने मेघनादका वध किया. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे हनुमान्जीने संसारमें नाम पाया. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे भीष्मजी अजेय थे, जिनको जीतनेवाला कोई न था. जिनका नाम बालब्रह्मचारी विख्यात है. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे स्वामी शंकराचार्यजी परम

विद्वान् होकर जगत्में प्रसिद्ध हुए. कहाँतक कहा जाय वीर्यरक्षा करनेवालेका नाम जगत्में अटल होजाता है. वीर्यरक्षा होनेसे रूप ज्योंका त्यों बनारहता है. रूपवान्को देखकर सबका चित्त प्रसन्न होजाता है, परंतु शुभ गुणोंके साथ उस रूपवान्की प्रशंसा होती है और अवगुणोंके साथ उस रूपवान्की निन्दा होती है. यदि किसी रूपवान् मनुष्यको अपने रूपकी स्थिरताकी चाहना हो तो उसको चाहिये कि अपनेमें कोई दोष न आनेदेवै और सदैव वीर्यकी रक्षा करै. नहीं तो उसके रूपवान् होनेसे उसको क्या लाभ हुआ. प्रायः यह भी देखा जाताहै कि पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें रूप अधिक होताहै सो ठीकही है. स्त्रियोंको रूपवती होनेकी अभिलाषा भी अधिकतासे होती है. जो स्त्री रूपवती नहीं होती, वह दूसरी रूपवतीको देखकर लज्जित हो जाती और उसका चित्त उदास होजाता है. ऐसी स्त्रियोंको वस्त्र आभूषण आदि नहीं सुहाता है. रूपवती स्त्री वस्त्र अलंकारोंकी विशेष इच्छा भी नहीं करती, क्योंकि वह विना वस्त्रालंकारकेही सुन्दरी होती है, और जिन स्त्रियोंको परमेश्वरने रूप नहीं दिया वे वस्त्र और आभूषणोंकी सदा भूखी बनी रहती हैं और अपने पतिको आभूषणादिके लिये कष्ट दिया करती हैं. कभी कभी कुवाक्य भी कहने लगती हैं. जिसको पेटभर रोटी भी कठिनतासे मिलती है वह अपनी स्त्रीकी अभिलाषा कैसे पूरी करसकता है. यहांतक कि उसका प्रेम स्त्रीमें न्यून हो जाता है. जिससे उन दोनोंको हानि पहुँचती है. यह नियम है कि स्त्री रूपवती हो अथवा न हो परन्तु जो स्त्री अपने पतिको प्रसन्न रखती है और आप प्रसन्न रहती है वही उसको परम प्यारी होती है. उसीको वह परमरूपवती समझकर प्रसन्न रहता है. यह प्रेम रूपपर नहीं जाता किन्तु शीलस्वभावपर अपना अधिकार करता है. जिस स्त्रीका प्रेम अपने पतिसे नहीं वह चाहे जैसी रूपवती क्यों न हो कुछदी

कालमें उसका पति उसको देखकर घृणा करने लगता है, और उस रूपको कुछ नहीं समझता. तात्पर्य यह कि रूपकी शोभा शुभगुणोंसे है, अशुभ गुणोंसे नहीं. शुभ गुणोंकी पदवी रूपकी पदवीसे अधिक मानी जाती है. रूप प्राप्त होना यद्यपि अपने आधीन नहीं है तथापि शुभ गुणोंकी प्राप्ति अपने आधीन है. रूपपर प्रायः मनुष्य मोहित होजाते हैं फिर किसी समय उसी रूपसे दूर दूर भागने लगते हैं. इसका यही कारण है कि रूपकी स्थिरता नहीं है. एक दोहा है कि—

दोहा—यौवन था जब रूप था, गाहक थे सब कोय।
यौवन रूप गँवायके, बात न पूछे कोय ॥ ३३ ॥

प्रायः लोग रूपपर कुवासना करके मोहित होते हैं और रूपवालेके चित्तको डामाडोल करके विषयोंकी ओर झुकादेते हैं, इसीसे रूप बिगडजाता है. रूप बिगडजानेसे प्रेममें विघ्न पडजाता है और एक दूसरेसे पृथक् होजाते हैं. यदि ऐसा न हो तो प्रेम सर्वदा बनारहे और रूपकी भी स्थिति रहे. कभी कभी ऐसा भी देखाजाता है कि एक अंग भी यदि किसीका मनोहर हो तो उसी अंगके कारण लोग मोहित होजाते हैं. जैसे किसीके नेत्र रसीले हैं तो नेत्रोंके कारण ही दूसरा मोहित होजाता है, किसीके कपोल मनोहर होते हैं, किसीके नेत्र, किसीके दांत, किसीकी हँसनि, किसीकी मुसक्यान, किसीकी चाल, किसीकी कटि, किसीका उदर, किसीका वक्षःस्थल इत्यादि. स्त्रियोंके अंगोंकी मनोहरतापर एक श्लोक है कि—

वाचि श्रीमाथुरीणां जनकजनपदस्थायिनीनां कटाक्षे । दन्ते गौडाङ्गनानां सुललितजघनेपूत्कलोपेयसीनाम् ॥ तैलङ्गीनां नितम्बे सघनघनरुचा

केरलीकेशपाशे। कट्यां कार्णाटजानां स्फुरति रतिपतिर्गुर्जरीणां कुचेषु ॥ ८३ ॥

× भाषार्थ—मथुरा प्रदेश (व्रजमंडल) की स्त्रियोंकी वाणीमें, जनकपुरके प्रदेशमें स्त्रियोंके कटाक्षमें, गौडदेशकी अंगनाओंके दांतोंमें, और उत्कलप्रदेशकी स्त्रियोंकी जंघाओंमें, तथा तैलंगदेशकी स्त्रियोंके मनोहर नितम्बोंमें, एवं केरल (मालवादेश) की स्त्रियोंके केशपाश (चोटी) में, कर्णाटकदेशकी स्त्रियोंके कटिभागमें, एवं गुर्जरदेशकी स्त्रियोंके कुचोंमें रतिपतिका स्फुरण होता है. भावार्थ यह कि ये अंग मनोहर होते हैं. जैसे व्रजकी बोली सर्वत्र प्रसिद्ध है. तथा छाजा वाजा केश यह वंगालादेश इत्यादि ॥ ८३ ॥

संसारमें रूप विचित्र पदार्थ है, जिससे दूसरेका मन रूपवान्की ओर खिंचकर चलाआताहै और चित्तमें यही आताहै कि इसके रूपको देखाकरूं. ऐसा रूप भी परमेश्वरकी महान् कृपासे प्राप्त होता है. एक एक अंग प्रायः सवहीका अच्छा होताहै. अंगोंकी सुन्दरताका विस्तार वहुत है. यहां संक्षेपसे केवल दो चार अंगोंका वर्णन करते हैं. संपूर्ण मुखमंडल तो किसी किसीकाही अच्छा होता है, जो सुन्दरताका एक वडा अंश है. मुखमंडलके चार भागोंमेंसे पहला भाग शिर है, दूसरा भाग मस्तक, तीसरा भाग नासिका, दूसरे तीसरे भागके मध्यमें नेत्र और कान हैं, चौथा भाग मुख और ठोडी है. इन सब अवयवोंके सुन्दर होनेसे मुखमंडलकी शोभा है. यहां शिरका छोटा होना वा टेढा और वहुत लंबा होना भी ठीक नहीं. गोल और वडा शिर अच्छा होता है. एक हिंदी कहावत है कि शिर वडा सरदारका और पांव वडा गँवारका. शिरमें केश भी शोभाका चिह्न है, केश कृष्ण वर्ण अच्छे होते हैं. स्त्रियोंके केशही स्वरूपवती होनेमें प्रधान हैं. केशोंको भलीभांति सुधारना और चोटी आदि बनाना. इस लिए-

नेकी यहां आवश्यकता नहीं क्योंकि देशप्रथाके अनुसार केशोंका सुधार होता है. जिसका मस्तक विशाल होता हैं वह अच्छा होता है. परन्तु परिमाणसे अधिक ऊँचा नीचा अच्छा नहीं होता. आजकल प्रायः मनुष्य मस्तकपर केशोंका ढकना ढककर अपने मस्तकको अशोभित कियेरहते हैं और अभिमान करते हैं कि हम बहुत अच्छे लगते हैं. परन्तु पीछेकी चोटी मस्तकपर लाकर रखना यह उनकी बडी भूल है. मानों मस्तकपर पर्दा डालकर अपने भाग्योदयरूप मस्तकको ढकेहुए हैं. दूसरी हानि यह है कि तेल आदि डालनेसे वह केशोंमें खपजाता है. मस्तकके भीतर न पहुँचनेसे तरावट आनेमें बाधा पडती है. उचित है कि मस्तकके ऊपरवाले भागपर केश न रक्खे, जिससे दिमागपर किसी प्रकारका बोझा न रहे. देखो स्त्रियां अपने मस्तकपर मांग काढकर उस स्थानके केशोंको अधिक चिकना डालकर बांधती हैं और चोटी पीछेको बांधती हैं. मस्तकको विशाल बतानेका यह एक उत्तम प्रयत्न है. नासिका ऊँची होनेसे रूपमें मनोहरता आजाती है. जिसके मुखमंडलमें नाक नहीं उसमें मानों कुछ नहीं. छोटी वा चपटी नाक अच्छी नहीं होती. एवं कानभी बहुत बडे अच्छे नहीं होते. गहरे कान शोभाको बिगाड देते हैं. मुखमंडलकी शोभामें कान भी प्रधान हैं. यदि कान न हों तो शोभा नहीं. प्रायः स्त्रियाँ कानोंमें अधिक आभूषण बाले आदि धारण कर कानोंकी शोभाको कम करदेती हैं. कान नीचेको लटककर अशोभित होजाते हैं और रूपमें कमी होजाती है. उचित है कि यदि सामर्थ्य हो तो सुवर्णकी एक दो बाली सचे मोतियोंसहित धारण करलें तो कुछ ऐसी हानि नहीं. परन्तु बिना आभूषणोंकेही जो रूपवती हो उसको आभूषणोंकी क्या आवश्यकता है. मुखमंडलमें नेत्र सबसे प्रधान अंग है, चमकीले श्यामवर्ण नेत्र जादूके समान प्रभाववाले होते हैं. एक दोहा है कि-

अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जाहिं चितवत इकबार॥ ३४॥

इसी प्रकार कपोलोंकी सुन्दरतासे भी मुखमंडलकी शोभा है. गोल और गुलाबी रंगके कपोल अच्छे होते हैं. कपोलोंपर झाई पडजाने अथवा मसोडोंके निकलनेसे अथवा गुदवानेसे कपोलोंकी शोभा कम होजाती है. इसी प्रकार होंठ बिंबाफलके सदृश रंगवाले शोभित होते हैं, बहुत पतले और बहुत मोटे अच्छे नहीं होते हैं. मोटे होंठ औषधीद्वारा पतले होसकते हैं और बहुत पतले होंठ चूसनेसे मोटे हो सकते हैं. मन्द मुसक्यानसे होठोंकी शोभा प्रतीत होती है. भावार्थ यह कि मुखमंडलके सब अवयवोंकी शोभासे मुखमंडलकी शोभा है और मुखमंडलकी शोभासे शेष सब अंगोंकी शोभा है. इस कारण शेष अंगोंका विस्तार नहीं लिखा. सामुद्रिक लक्षण पूर्व लिखचुके हैं. जिसके लक्षण शुभ हों वही शुभ अंग है इति.

षोडश (सोलह) शृंगार।

आदौ मज्जन चीर चारु तिलकं नेत्रांजनं कुंडलं। नासा मौक्तिक हार केश कुसुमं सिन्दूर वस्त्रं परम् ॥ देहे चन्दनलेप कंचुक मणी क्षुद्रावली घंटिका। तांबूलं कर कंकणं चतुरता शृंगारकाः षोडश ॥ ८४ ॥

भाषार्थ–१ प्रथम मज्जन (उबटन स्नान), २ चीरधारण, ३ सुन्दरतिलक धारण, ४ नेत्रोंमें अंजन लगाना, ५ कानोंमें कुंडल धारण करना, ६ नासिकामें मोती पहिरना, ७ हार पहिनना, ८ केश सम्हारना, ९ फूलोंके आभूषण बनाकर पहिनना, १० सिन्दूर लगाना, ११ वस्त्र धारण करना, १२ देहमें चन्दन

लगाना, १३ कंचुकी पहिनना, १४ मणि क्षुद्रावली, घंटिका धारण करना, १५ तांबूल लगाकर खाना, १६ हाथोंमें कंकण पहिनना. चतुरतापूर्वक ये सोलह शृंगार हैं ॥ ८४ ॥

द्वादश (बारह) आभूषण ।

शीलं लज्जा च माधुर्यं दृढता ह्यार्जवस्तथा ।
पवित्रता च सन्तोषं सुहृत्ता विनयक्षमा ॥
शुचिता गुरुशुश्रूषा भूषणा द्वादश स्मृताः ॥८५॥

भाषार्थ-१ शील, २ लज्जा, ३ मधुर भाषण, ४ दृढता, ५ सरल स्वभाव, ६ पवित्रता, ७ सन्तोष, ८ सुहृद्भाव, ९ विनय, १० क्षमा, ११ हृदयकी शुद्धता, १२ गुरुजनोंकी सेवा येही बारह आभूषण कहे हैं ॥ ८५ ॥

परन्तु रसिकजन प्रायः १ नूपुर, २ किंकिणी, ३ हार, ४ चूडी, ५ मुंदरी, ६ कंकण, ७ कंठश्री, ८ बाजूबन्द, ९ बेसर, १० विरिया, ११ टीका, १२ शीशफूल इनको बारह आभूषण कहते हैं.

दम्पति प्रीति ।

स्त्री पुरुषमें परस्पर प्रीतिका होना परम आवश्यक है, क्योंकि विना परस्पर प्रीतिके पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता. प्रीति चार प्रकारकी होती है, १ नैसर्गिकी, २ विषयजा, ३ समा, ४ अभ्यासिकी. विवाह होतेही जो दृढ प्रीति स्त्री पुरुषमें होजाती है और छुटानेसे भी नहीं छुटसकती उसको नैसर्गिकी प्रीति कहते हैं. और माला चन्दन भोज्य पदार्थ देनेलेनेमें जो प्रीति होती है उसको विषयजा प्रीति कहते हैं. तथा जो प्रीति योग्य गुणोंके

वचन, उत्तम धर्म, और उपाख्यान ज्ञान तथा सुगन्धित पदार्थ प्रदान कर प्रसन्न करै. पद्मिनी स्त्रीके सन्मुख पराई स्त्रीकी निन्दा नहीं करे. चित्रिणी स्त्रीको प्रेमभरे प्रीतिपूर्वक वचन, सुन्दर मनभावन इतिहास सुनावे, और नवीन वस्त्र आभूषण देवै, सुगन्धित पदार्थ प्रदान करै तो चित्रिणी स्त्री परम प्रसन्न रहती है. ये दोनों प्रकारकी स्त्रियां आदरपूर्वक रखनेसेही प्रसन्न रहती हैं. शंखिनी स्त्रीको उत्तम उत्तम गहने और वस्त्र देके तथा नवीन नवीन वस्तु लाकर देनेसे वह प्रसन्न रहती है. हस्तिनी स्त्री भांति भांतिके भोजन और वस्त्र आभूषणोंसे प्रसन्न रहती है. केवल बातों और विनय भावसे प्रसन्न नहीं होती. भावार्थ यह कि जिस जिस पुरुषको जैसी स्त्री भाग्यानुसार प्राप्त हो जाय उसको यथाशक्ति पूर्वोक्त रीतिसे प्रसन्न रखकर प्रीति बनाये रक्खे.

वीर्य प्रभाव।

कहावत है कि ' तुरूम तासीर सोहबत असर ' सो यह बात सर्वथा सत्य है. वीर्यके एक बूंदमें भी मनुष्यके स्वभाव आदि लक्षण विद्यमान रहते हैं. जैसे वृक्षके बीजमें वृक्ष उत्पन्न करनेकी शक्ति पूर्णरीतिसे विद्यमान रहती है. जिस बीजको देखकर उसमें सिवाय बीजके कुछ दृष्टि नहीं आता और पृथ्वीमें उचित रीतिसे गाड देनेसे वही वृक्षरूप होकर फल देनेलगता है. ठीक इसी प्रकार पुरुषका वीर्य है. वैद्यलोग मनुष्यके पसीना आदिको देखकर रोगको भलीभांति जानलेते हैं तो वीर्य तो सब शरीरका अंश होताहै. वीर्य जब बिगडा होताहै तो उसका प्रभाव सन्तानपर अवश्य पडता है. जिस प्रकार क्रोधकी दशामें मुख लाल होजाता है, भय प्राप्त होनेपर मुख पीला पडकर शरीर कांपनेलगताहै, उसी प्रकार रोगके होनेसे अण्डकोशोंपर भी रोगका प्रभाव पडता है कि जहां वीर्य बनताहै. लिंग तो वीर्यको व्यय (वीर्य)

करनेवाला एक हेतु है परन्तु वीर्यको मुख्य स्थान अण्डकोशही है. पुरुषके पन्द्रह वर्षकी आयुसे वीर्य बननेलगता है. परन्तु पूर्ण प्रकारसे उत्पत्तिशक्ति बीस वर्षकी आयुमें होती है. वीर्यके बनतेही जो पुरुष उत्पत्तिशक्तिका काम लेते हैं उनकी इन्द्रियां क्षीण होजाती हैं. वीर्यकी रुकावट जितनी हो उतनीही अधिक शक्ति शरीरमें रहती है. नव्वे वर्षकी आयुपर्यन्त मनुष्य सन्तान उत्पन्न करसकताहै. इस कारण उचित है ऐसे उत्तम पदार्थ अपरिमित व्यय (खर्च) कदापि न करे तो वीर्यका प्रभाव सदा एकसा रहकर शरीरको सुख प्राप्त होगा. जरा अवस्थामें दुःख न होगा, रोग निकट नहीं आवेंगे.

शुद्ध वीर्य ।

पुरुषका वीर्य जो शुद्ध होताहै उसमें प्रत्येक बूँद सैकडों कीडोंसे युक्त होताहै अर्थात् वीर्यके एक बूँदमें सैकडों कीडे सूक्ष्मवीक्षणयंत्रद्वारा लंबी पूंछवाले देखपडतेहैं. वायु लगनेसे वे कीडे दिनभर नहीं जीवित रहते, परन्तु स्त्रीके गर्भाशयमें पहुँचकर अनेक दिनपर्यंत जीवित रहतेहैं, और यही कीडे सन्तानका कारण होते हैं. जितनाही शुद्ध वीर्य होताहै उतनेही अधिक कीडे होते हैं. शुद्ध वीर्य यदि थोडाही हो और स्त्रीके गर्भाशयमें ठहरजावे तो गर्भस्थितिका कारण होताहै, और यदि वीर्य शुद्ध न हो तो चाहे जितना अधिक वीर्य हो व्यर्थ है. इस कारण मनुष्यको उचित है कि वीर्यको शुद्ध रखनेका प्रयत्न करे. गर्भस्थितिके निमित्त पुरुषका शुद्ध वीर्य थोडा भी बहुत है, अधिककी आवश्यकता नहीं. जिसका वीर्य पतला और कुछ नीले रंगका होताहै वह वीर्य दूषित होताहै और जिसका वीर्य श्वेतवर्ण और देखनेमें अच्छा लगता है वह वीर्य शुद्ध होताहै. यदि वीर्य शुद्ध न हो तो उचित है कि खटाई, मिर्च आदि तामसी भोजन त्यागकर औषधि सेवन करे और वीर्यके उपयोगके समय स्त्री भी तामसी भोजन परि-

त्याग करदेवे. शुद्धवीर्यसे मनुष्यका बल पराक्रम बढकर विचार-शक्तिकी उन्नति होती है और फिर मनुष्य बडे बडे काम करसकताहै. जिनके वर्णनकी यहां आवश्यकता नहीं. वीर्य बननेके मुख्य स्थान अंडकोश हैं. स्त्रीके गर्भाशयमें यदि दाहिने अंड-कोशका वीर्य अधिक पहुँचताहै तो पुत्र और बायें अण्डकोशका वीर्य अधिक पहुँचनेसे कन्याकी उत्पत्ति जानना. वीर्य अधिक पहुँचानेकी रीति करवट है.

शुद्ध रज।

स्त्रीके गर्भाशयसे दाहिनी और बाईं ओर एक इंचसे कुछ अधिक लंबी चौडी बादामके आकार दो थैलीसी (गांठें) झिल्लियोंमें लिपटीहुई होती हैं. इनके भीतर पीला जल भराग्हताहै. उसमें छोटे छोटे बहुतसे कीडे दीख पडते हैं, जो युवा अवस्थाके उपरान्त बढने लगते हैं. बहुतही बारीक होनेके कारण नेत्रोंसे नहीं देखपडते परंतु सूक्ष्मवीक्षणयंत्र (खुर्दबीन) से देखेजासकते हैं. यही स्त्रीके अंडकोश हैं. जैसे पुरुषके अंडकोश निकाललेनेसे वह नपुंसक होजाताहै, उसी प्रकार स्त्रीके अंडकोश निकाल लेनेसे वह वन्ध्या होजाती है. बाल्यावस्थामेंही स्त्रीकी योनिके द्वार-पर एक झिल्लीका परदा पडारहताहै उसमें एक छिद्र मूत्रके निमित्त और दूसरा मासिकधर्म निकलनेके समय होता है. प्रथम समागमके दिन वह परदा फटजाताहै, कि जिससे उस समय स्त्रीको कुछ कष्ट होता है. परदा फटनेसे पहले अक्षतयोनि रहती है. जिस स्त्रीका विवाह अधिक अवस्थामें होता है उनके रजोधर्म होते होते परदा नष्ट भी होजाताहै. महीने महीने ठीक समयपर निकलनेवाला रज शुद्ध समझाजाताहै. गर्भके दिनोंमें रुधिर नहीं निकलता अर्थात् मासिकधर्म बन्द हो जाताहै, उससे बालकके अंग प्रत्यंग बनते हैं. अनन्तर स्तनोंमें

होताहै. तेल आदि पदार्थ लगाने और मर्दन करनेसे बालक कुष्ठरोगी होता है. चन्दनादि लेप और स्नान आदि करनेसे बालक दुःखी होता है. सुरमा, काजल, अंजन लगानेसे प्रायः बालक नेत्रहीन उपजताहै. दिनमें सोनेसे बालक आलसी और बहुत सोनेवाला उपजताहै. दौडनेसे बालक चंचल प्रगट होताहै. बहुत ऊंचे शब्दको सुननेसे बालक बहिरा होताहै, बहुत हँसनेसे बालकके तालु होंठ दांत जीभ ये सब काले होजाते हैं. बहुत बकवाद करनेसे वाचाल बालक उपजताहै. परिश्रम करनेसे बालक निर्बल और उन्मत्त प्रगट होताहै. भूमि खोदनेसे बालक स्खलित अंगोंवाला होता है. अधिक वायु सेवन करनेसे उन्मत्त बालक उत्पन्न होता है.

संयोगविधि।

चतुर्थेऽह्नि ततः स्नात्वा शुक्लमाल्याम्बरा शुचिः।
इच्छन्ती भर्तृसदृशं पुत्रं पश्येत्पुरः पतिम् ॥ ८८ ॥
पूर्वं पश्येदृतुस्नाता यादृशं नरमङ्गना।
तादृशं जनयेत्पुत्रं भर्तारं दर्शयेत्ततः ॥ ८९ ॥

भाषार्थ-रजोदर्शनसे तीन दिनके अनन्तर चौथे दिन रजस्वला स्त्री स्नान करके सफेद माला और स्वच्छ वस्त्र धारण कर पुत्रकी इच्छा करती हुई प्रथम पतिके समीप जाकर पतिकेही दर्शन करै. क्योंकि लिखा भी है कि ऋतुमती स्त्री अन्तमें प्रथम जिसके दर्शन करती है उसीके समान उसके पुत्र उत्पन्न होता है. इस कारण प्रथम पतिकेही दर्शन करना चाहिये ॥ ८८॥८९॥

लाता है. शेष दश रात्रियां उत्तम होती हैं. जो पुरुष ऋतुमती स्त्रीसे पहले दिन प्रसंग करता है तो उसके शरीरमें रोगोंके उत्पन्न होनेका भय रहता है. क्योंकि पहले दिन संभोग करना ऐसा है मानों प्रज्वलित अग्निमें प्रवेश करना है. दूसरे दिनके प्रसंगसे गर्भ रहजानेपर सन्तान नहीं जीती है. तीसरे दिन संभोग करनेसे गर्भ रहजानेपर सन्तान अल्पायु और विकृतअंग-वाली होती है. इस कारण तीन दिन कदापि प्रसंग न करे. स्त्री पुरुषको उचित है कि जिस दिन गर्भकी इच्छा हो उस दिन निर्मल वस्त्र धारण कर सुगन्धलेपन कर सुगन्धित फूलोंकी माला धारण करें. उत्तम और शीघ्र पचनेवाला ऐसा भोजन करें कि भोजनकी कुछ इच्छा बनीरहे, अधिक भोजन न करें. अनन्तर तांबूल चबाकर मुखकी शोभा बढाय सब प्रकारसे अपने चित्तको प्रसन्न करें, जो पुरुष अधीर हो, क्षुधित हो, तृषासे युक्त हो, पीडित हो, मल मूत्र आदि वेगसे युक्त हो, रोगी हो, उसको उचित है कि पुत्रकी इच्छासे संभोग न करे.

रति तथा पुरुषकामवास।

गर्ग उवाच।

पुराप्रृच्छन्मुनिर्गर्गो देवदेवं महेश्वरम्।
अनुग्रहाय वदतां किन्नाम रतिरुच्यते ॥ ९० ॥

भाषार्थ-पूर्वसमय गर्गमुनि देवदेव महादेवजीसे पूछनेलगे, कि हे शिव! अनुग्रहपूर्वक यह कहिये कि रति किसको कहते हैं॥९०॥

महादेव उवाच।

आनन्दाज्जायते विश्वं स एव रतिरुच्यते।
स्त्रीपुंसां शृणु विप्रेन्द्र मनसो मेलनं रतिः ॥ ९१ ॥

भावार्थ–महादेवजीने उत्तर दिया कि यह विश्व (संसार) आनन्दसे उत्पन्न होता है. उसी आनन्दको रति कहा है. हे विभेन्द्र ! सुनो स्त्री पुरुषके मनके मेलनको भी रति कहते हैं॥९१॥

यत्र नास्ति रतिर्देव तत्र किं सुखमस्ति वै ।
पण्डितैः कथ्यते वत्स शवसंगम एव तत् ॥ ९२ ॥

भावार्थ–हे देव ! जहां मनका मिलन नहीं है वहां क्या सुख मिलता है. हे वत्स ! पंडितोंने विना मन मिले संगमको शवसंगम कहा है. अर्थात् विना मन मिलनके आनन्द नहीं और विना आनन्दके सहवास वृथा है. इसीसे शवसंगमके समान उस सहवासका होना है. सो मनका मिलन यही रति है. स्त्री पुरुषके जोडामें रति प्रधान है ॥ ९२ ॥

पूर्णिमायां वसेत्कामो हृदये पुंसि विद्धि वै ।
न स्पृशेद्धृदयं तस्मात् कात्यन्त्या ... हि॥९३॥

भाषार्थ-द्वितीयातिथिको त्रिवलीके मूलदेशमें काम वास करता है. स्पर्शविधानसे उस स्थानको लालन करनेसे रमणी सुख पाती है और तृतीयातिथिको नाभिके नीचेके भागमें काम वास करता है ॥ ९५ ॥

मूलदेशोर्ध्वभागे तु वसेत्कामश्चतुर्थके ।
उक्तक्रमेण ललना लालयेच्छृणु मानद ॥ ९६ ॥

भाषार्थ-चतुर्थीतिथिको मूलदेशके ऊर्ध्वभागमें काम वास करता है. हे मानद ! सुनो उक्त क्रमसे उस स्थानको ललना लालन करै ॥ ९६ ॥

नाभिमूले वसेत्कामः पंचम्यां च तथैवहि ।
प्रसूतिकामना नारी तत्स्थानं परिलालयेत् ॥ ९७ ॥

भाषार्थ-पंचमीतिथिको पुरुषके नाभिमूलमें काम वास करता है. जिस स्त्रीको सन्तान उत्पन्न करनेकी इच्छा हो वह उस स्थानको लालन करे ॥ ९७ ॥

षष्ठ्यां मध्ये वसेत्कामो निश्चयं विद्धि मानद ।
सुगन्धवासिता नारी सुवेशा परिलालयेत् ॥ ९८ ॥

भाषार्थ-हे मानद ! छठीको मध्यभागमें निश्चय काम वास करता है. सुगन्धसे सुवासित नारी सुन्दर वेष धारण कर लालन करै ॥ ९८ ॥

सप्तम्यामग्रतः कामो वसेद्वत्स न संशयः ।
स्नाता च धौतवसना सालङ्कारा च सम्मुदा ॥ ९९ ॥

भाषार्थ-हे वत्स ! सप्तमीतिथिको काम अग्रभागमें वास करता है. उस दिन नारी स्नान कर धौत वस्त्र धारण कर आभूषणों-सहित प्रसन्नतापूर्वक सजकर अपने स्वामीका संग करै ॥ ९९ ॥

भावार्थ-महादेवजीने उत्तर दिया कि यह विश्व (संसार) आनन्दसे उत्पन्न होता है. उसी आनन्दको रति कहा है, हे देवेन्द्र ! सुनो स्त्री पुरुषके मनके मेलनको भी रति कहते हैं॥९१॥

यत्र नास्ति रतिर्देव तत्र किं सुखमस्ति वै ।
पण्डितैः कथ्यते वत्स शवसंगम एव तत् ॥ ९२ ॥

भावार्थ-हे देव ! जहां मनका मिलन नहीं है वहां क्या सुख मिलता है, हे वत्स ! पंडितोंने बिना मन मिले संगमको शवसंगम कहा है. अर्थात् बिना मन मिलनके आनन्द नहीं और बिना आनन्दके सहवास वृथा है. इसीसे शवसंगमके समान उस सहवासका होना है. सो मनका मिलन यही रति है. स्त्री पुरुषके जोडामें रति प्रधान है ॥ ९२ ॥

पूर्णिमायां वसेत्कामो हृदये पुंसि विद्धि वै ।
न स्पृशेद्धृदयं तस्मात् काकवन्ध्या भवेत्तु हि॥ ९३॥

भावार्थ-पूर्णिमा तिथिको काम पुरुषके हृदयमें वास करता है इस कारण उस स्थानको न स्पर्श करे. स्पर्श करनेसे स्त्री काकवन्ध्या होती है. स्त्रीको उचित है कि पूर्णिमातिथिको पुरुषसे पृथक् रहे ॥ ९३ ॥

नाभेरूर्ध्वं वसेत्कामो परादे शृणु मारिष ।
लालयेल्ललना तस्माद्रतिकामा मनस्विनी ॥ ९४ ॥

भावार्थ-हे मुने ! पूर्णिमाके दूसरे दिन अर्थात् प्रतिपदातिथिको काम नाभिके ऊर्ध्व भागमें वास करता है. रतिकी इच्छावाली ललना स्त्री उस स्थानको लालन करनेसे आनन्दको प्राप्त होती है ॥ ९४ ॥

त्रिवलीमूलदेशे तु वसेत्कामः परेऽहनि ।
नाभेरधो बहिर्भागे वसेत्कामो परे द्यवि ॥ ९५ ॥

भापार्थ-द्वितीयातिथिको त्रिवलीके मूलदेशमें काम वास करता है. स्पर्शविधानसे उस स्थानको लालन करनेसे रमणी सुख पाती है और तृतीयातिथिको नाभिके नीचेके भागमें काम वास करता है ॥ ९५ ॥

मूलदेशोर्ध्वभागे तु वसेत्कामश्चतुर्थके ।
उक्तक्रमेण ललना लालयेच्छृणु मानद ॥ ९६ ॥

भापार्थ-चतुर्थीतिथिको मूलदेशके ऊर्ध्वभागमें काम वास करता है. हे मानद ! सुनो उक्त क्रमसे उस स्थानको ललना लालन करे ॥ ९६ ॥

नाभिमूले वसेत्कामः पंचम्यां च तथैवहि ।
प्रसूतिकामना नारी तत्स्थानं परिलालयेत् ॥९७ ॥

भापार्थ-पंचमीतिथिको पुरुषके नाभिमूलमें काम वास करता है. जिस स्त्रीकी सन्तान उत्पन्न करनेकी इच्छा हो वह उस स्थानको लालन करे ॥ ९७ ॥

षष्ठ्यां मध्ये वसेत्कामो निश्चयं विद्धि मानद ।
सुगन्धवासिता नारी सुवेशा परिलालयेत् ॥ ९८ ॥

भापार्थ-हे मानद ! छठीको मध्यभागमें निश्चय काम वास करता है. सुगन्धसे सुवासित नारी सुन्दर वेप धारण कर लालन करे ॥ ९८ ॥

सप्तम्यामग्रतः कामो वसेद्वत्स न संशयः ।
स्नाता च धौतवसना सालङ्कारा च सम्मुदा ॥ ९९ ॥

भापार्थ-हे वत्स ! सप्तमीतिथिको काम अग्रभागमें वास करता है. उस दिन नारी स्नान कर धौत वस्त्र धारण कर आभूपणों-सहित प्रसन्नतापूर्वक सजकर अपने स्वामीका संग करे ॥ ९९ ॥

अष्टम्यामूरुबन्धे च वसेत्कामो हि वत्सक ।
शुद्धवेपाद्धि तत्स्थानं लालयेच्छुभदा सदा ॥१००॥

भाषार्थ–हे वत्स ! अष्टमी तिथिमें काम ऊरुके मूलदेशमें वास करताहै. स्त्री शुद्धवेषसे उस स्थानको लालन करै ॥ १०० ॥

नवम्यां निवसेत्कामः कट्यां वत्स निशामय ।
दशम्यां कटिपार्श्वे च वसेत्कामो पतिप्रियः ॥१०१॥

भाषार्थ–हे वत्स ! सुनो नवमीको काम कटिमें वास करताहै. और दशमीको प्रियपतिके कटिपार्श्वमें काम वास करताहै॥१०१॥

एकादश्यां वसेत्कामो नितम्बे निश्चयं शृणु ।
द्वादश्यां शृणु विप्रेन्द्र लिंगपार्श्वे तथैव च ॥ १०२ ॥

भाषार्थ–निश्चयपूर्वक श्रवण करो कि एकादशीको नितम्बमें काम वास करताहै, हे विप्रेन्द्र ! सुनो इसी प्रकार द्वादशीमें लिंगपार्श्वमें काम वास करताहै ॥ १०२ ॥

त्रयोदश्यामूरुकेन्द्रे निवसेद्रतिवल्लभः ।
चतुर्दश्यां सर्वदेहे वसेत्कामो हि मानद ॥ १०३ ॥

भाषार्थ–त्रयोदशीको ऊरुकेन्द्रमें काम वास करताहै. हे मानद ! चतुर्दशीको सब देहमें काम वास करताहै ॥ १०३ ॥

अत्र यत्पंडितैः प्रोक्तं ह्युपायं विधिपूर्वकम् ।
पालयेत्सर्वथा विप्र स्त्री चाथ पुरुषस्तथा ॥ १०४ ॥

भाषार्थ–यहां पंडितोंने जो उपाय विधिपूर्वक कहाहै हे विप्र ! सो स्त्री अथवा पुरुष दोनों सर्वथा पालन करैं ॥ १०४ ॥

पालनादायुषो वृद्धिरारोग्यमतुलं तथा ।
सुसन्ततिसुखं नित्यं प्राप्नोति शृणु मानद ॥१०५॥

भाषार्थ–पालन करनेसे हे मानद ! श्रवण करो कि आयुकी वृद्धि तथा अतुल आरोग्य उत्तमसंततिसुख सदैव प्राप्त होताहै ॥ १०५ ॥

पञ्चमी च शुभा षष्ठी सप्तमी नवमी पुनः ।
द्वितीया च तृतीया च चतुर्थी शुभदा तथा ॥१०६॥
दशमी द्वादशी चैव तथा विप्र त्रयोदशी ।
चतुर्दशी शुभा प्रोक्ता पण्डितैर्विश्वदर्शिभिः१०७॥

भाषार्थ-पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, नवमी, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, दशमी, द्वादशी तथा हे विप्र ! त्रयोदशी, चतुर्दशी विश्वदर्शी पंडितोंने ये शुभ कही हैं ॥ १०६ ॥

परन्तु यह उपरोक्त लेख रसिकजनप्रमोदार्थ गर्गशिवसंवाद द्वारा किसीने लिख दिया है ऐसा अनुमान होता है. इस कारण कदाचित् बुद्धिमान् जनोंके हृदयमें यह लेख स्थान न पावे. किंतु यह मुख्य है कि शीतकालमें रात्रिसमय, उष्णकालमें मध्याह्नकाल, वसंतमें रातदिन, वर्षामें वर्षा समय, शरत्कालमें सरोवरसमीप स्त्रीपुरुषोंमें कामवास करता है.

कामवास।

कोकशास्त्र तथा अन्य कामसम्बन्धी ग्रन्थोंमें कृष्णपक्ष और शुक्लपक्षभेदसे सब तिथियोंमें क्रमशः चन्द्रकलानुसार कामदेवका वास लिखा है. कृष्णपक्षमें ऊपरके अंगोंसे नीचेको उतरता है और शुक्लपक्षमें नीचेके अंगोंसे ऊपरको चढता है. यहां कामवासके विषयमें तिथि जाननेमें अनेक मत हैं. परन्तु जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन कृष्णपक्षकी प्रतिपदा मानना बहुमत है. जिस तिथिमें जहां कामका वास हो उस अंगके स्पर्श, गहन, मर्दन, चुम्बन आदिसे कामदेव चैतन्य होता है. कृष्णप्रतिपदा और शुक्लपूर्णिमाको कामका वास मस्तकमें जानना, कृष्णद्वितीया और शुक्लचतुर्दशीके दोनों नेत्रोंमें कामका वास जानना, कृष्णतृतीया और शुक्लत्रयोदशीको नीचेके होंठमें कामका वास जानना, कृष्णचतुर्थी

और शुक्लद्वादशीको कपोलोंमें कामका वास जानना, कृष्णपंचमी और शुक्लएकादशीको कंठमें कामका वास जानना, कृष्णपक्षकी षष्ठी और शुक्लदशमीको बगलमें कामका वास जानना, कृष्ण-सप्तमी और शुक्लनवमीको कुचोंमें कामका वास जानना, कृष्णाष्टमी और शुक्लाष्टमीको हृदयपर कामका वास जानना, कृष्णनवमी और शुक्लसप्तमीको नाभिमें कामका वास जानना, कृष्णदशमी और शुक्ल-षष्ठीको कटिमें कामका वास जानना, कृष्णएकादशी और शुक्लपंचमी-को योनिमें कामका वास जानना, कृष्णद्वादशी और शुक्लचतुर्थीको दोनों जंघाओंमें कामका वास जानना, कृष्णत्रयोदशी और शुक्लतृतीयाको पिंडुलियोंमें कामका वास जानना, कृष्णचतुर्दशी और शुक्लद्वितीयाको पांवके तलुवोंमें कामका वास जानना, कृष्ण अमावास्या और शुक्लप्रतिपदाको बायें पांवकी अंगुलियोंके नीचे कामका वास जानना. यहां स्त्रीका वाम अंग प्रधान है. इस कारण वामअंगोंमें विशेष कामका वास जानना. यद्यपि यहां कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष कथनसे यह निश्चय होता है कि जिस दिन स्त्री रजस्वला होती है उस दिन कृष्णप्रतिपदा मानना ठीक न हो क्योंकि केवल सोलह दिन आर्तवका होना निश्चय है, उसमें भी दश दिन सम्भोग करना उचित माना गया है. फिर तीस दिन कामवास लिखनेकी क्या आवश्यकता थी, तथापि आजकलके समयानुसार अथवा परोपकार बुद्धिसे कामवास लिखना पूर्व रीत्य-नुसार सब तिथियोंमें उचित समझागया. कामवासके अंगोंमेंसे मस्तक, नेत्र, ओष्ठ, कपोल, कंठ, कुच, ठोडी ये चुम्बन करनेके अंग हैं. और कंठ, चिबुक, ठोडी, कुच, भाल ये अंग दांतसे काटने चूसने और मर्दन करने और सहलानेके हैं. एवं बगल, कंठ जंघा, नितम्ब, पिंडुली, पांवका तलुआ ये अंग मलने दबाने और सहलानेके हैं. तथा ठोडी, कुच, कटि, नाभि, उदर, कंठ, अंगुलियोंके नीचे ये अंग स्पर्श करने और चुटकी लेनेके हैं.

रजस्वला धर्मके दिन कृष्णपक्षकी प्रतिपदा मानकर परीक्षा करनेसे कामवास ठीक बतायागया है. परन्तु यह सब लेख कामीजनोंके मन बहलावका हेतु है. जो लोग ब्रह्मचर्य रहकर वीर्यरक्षाको मुख्य मानते हैं और मैथुन केवल अपनीही स्त्रीके साथ केवल सन्तानोत्पत्ति निमित्त मुख्य मानते हैं उनके प्रति कामवास वर्णन सामान्य बात है.×

परस्त्रीगमन निषेध।

आयुःक्षतिर्विकलतात्युपहास्यता च निन्दार्थहानिर्लघुता कुगतिः परत्र। स्यादेव यद्यपि रतेन पराङ्गनायाः प्राहुस्तथाप्यनवमित्यपि कारणेन ॥ १०८ ॥

भावार्थ-परस्त्रीगमनसे आयु क्षीण होती है और विकलता, संसारमें हँसी, निन्दा, धनहानि, तुच्छता, तथा पीछेसे दुर्गति होती है. इस कारण पराई स्त्रीके साथ रमण नहीं करना ॥१०८॥

दोहा-काम जात निज देहसे, दाम गांठसे जात।
उत्तम कुलके धर्म सब, सो तुरन्त नशिजात ॥ ३५ ॥
यासों पररमणी दुखद, भूलि करो नहिं संग।
नारायण निज नारिसों, समुझि करो सतसंग ॥ ३६ ॥

मैथुनकाल।

मैथुन करना तो अपनीही स्त्रीमें केवल सन्तान उत्पत्ति निमित्त उचित है. वृथा सम्भोग करना कदापि उचित नहीं. स्त्री संभोग करनेसे मनुष्यका बल तुरन्त घट जाता है, वीर्य नष्ट होता है. वीर्य अधिक होनेसे पुत्र और रज अधिक होनेसे कन्या होती है, अतः वीर्यकी रक्षा अवश्य करे. प्राचीन ऋषि महात्माओंका मत है कि वर्षभरमें पुत्रकी कामनासे अपनी स्त्रीमें केवल एक वार

और शुक्लद्वादशीको कपोलोंमें कामका वास जानना, कृष्णपंचमी और शुक्लएकादशीको कंठमें कामका वास जानना, कृष्णपक्षकी षष्ठी और शुक्लदशमीको बगलमें कामका वास जानना, कृष्ण-सप्तमी और शुक्लनवमीको कुचोंमें कामका वास जानना, कृष्णाष्टमी और शुक्लाष्टमीको हृदयपर कामका वास जानना, कृष्णनवमी और शुक्लसप्तमीको नाभिमें कामका वास जानना, कृष्णदशमी और शुक्ल-षष्ठीको कटिमें कामका वास जानना, कृष्णएकादशी और शुक्लपंचमी-को योनिमें कामका वास जानना, कृष्णद्वादशी और शुक्लचतुर्थीको दोनों जंघाओंमें कामका वास जानना, कृष्णत्रयोदशी और शुक्लतृतीयाको पिंडुलियोंमें कामका वास जानना, कृष्णचतुर्दशी और शुक्लद्वितीयाको पांवके तलुवोंमें कामका वास जानना, कृष्ण अमावास्या और शुक्लप्रतिपदाको बायें पांवकी अंगुलियोंके नीचे कामका वास जानना. यहां स्त्रीका वाम अंग प्रधान है. इस कारण वामअंगोंमें विशेष कामका वास जानना. यद्यपि यहां कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष कथनसे यह निश्चय होता है कि जिस दिन स्त्री रजस्वला होती है उस दिन कृष्णप्रतिपदा मानना ठीक न हो क्योंकि केवल सोलह दिन आर्तवका होना निश्चय है, उसमें भी दश दिन सम्भोग करना उचित माना गया है. फिर तीस दिन कामवास लिखनेकी क्या आवश्यकता थी, तथापि आजकलके समयानुसार अथवा परोपकार बुद्धिसे कामवास लिखना पूर्व रीत्य-नुसार सब तिथियोंमें उचित समझागया. कामवासके अंगोंमेंसे मस्तक, नेत्र, ओष्ठ, कपोल, कंठ, कुच, ठोडी ये चुम्बन करनेके अंग हैं. और कंठ, चिबुक, ठोडी, कुच, भाल ये अंग दांतसे काटने चूसने और मर्दन करने और सहलानेके हैं. एवं बगल, कंठ, जंघा, नितम्ब, पिंडुली, पांवका तलुवा ये अंग मलने दबाने और सहलानेके हैं. तथा ठोडी, कुच, कटि, नाभि, उदर, कंठ, अंगुलियोंके नीचे ये अंग स्पर्श करने और चुटकी लेनेके हैं.

रजस्वला धर्मके दिन कृष्णपक्षकी प्रतिपदा मानकर परीक्षा करनेसे कामवास ठीक बतायागया है. परन्तु यह सब लेख कामीजनोंके मन बहलावका हेतु है. जो लोग ब्रह्मचर्य रहकर वीर्यरक्षाको मुख्य मानते हैं और मैथुन केवल अपनीही स्त्रीके साथ केवल सन्तानोत्पत्ति निमित्त मुख्य मानते हैं उनके प्रति कामवास वर्णन सामान्य बात है.×

परस्त्रीगमन निषेध।

आयुःक्षतिर्विकलतात्युपहास्यता च निन्दार्थ-
हानिलघुता कुगतिः परत्र। स्यादेव यद्यपि रतेन
पराङ्गनायाः प्राहुस्तथाप्यनवमित्यपि कार-
णेन ॥ १०८॥

भावार्थ-परस्त्रीगमनसे आयु क्षीण होती है और विकलता, संसारमें हँसी, निन्दा, धनहानि, तुच्छता, तथा पीछेसे दुर्गति होती है. इस कारण पराई स्त्रीके साथ रमण नहीं करना ॥१०८॥

दोहा-काम जात निज देहसे, दाम गांठसे जात।
उत्तम कुलके धर्म सब, सो तुरन्त नशिजात ॥ ३५ ॥
यासों पररमणी दुखद, भूलि करौ नहिं संग।
नारायण निज नारिसों, समुझि करौ सतसंग ॥ ३६ ॥

मैथुनकाल।

मैथुन करना तो अपनीही स्त्रीमें केवल सन्तान उत्पत्ति निमित्त उचित है. वृथा सम्भोग करना कदापि उचित नहीं. स्त्री संभोग करनेसे मनुष्यका बल तुरन्त घट जाता है, वीर्य नष्ट होता है. वीर्य अधिक होनेसे पुत्र और रज अधिक होनेसे कन्या होती है, अतः वीर्यकी रक्षा अवश्य करे. प्राचीन ऋषि महात्माओंका मत है कि वर्षभरमें पुत्रकी कामनासे अपनी स्त्रीमें केवल एक बार

मैथुन करे. जालीनूसका मत है कि वर्षभरमें दो वार, बूअली-सेनाका मत है कि जब मैथुनकी पूर्ण इच्छा हो तब करे. परन्तु मैथुनशक्ति रहनेपर तीसरे दिन मैथुन करनेसे शक्ति नहीं घटती. परन्तु जो लोग प्रतिदिन अथवा दिनभरमें कई वार मैथुन करते हैं, उनकी शक्ति घट जाती है, रोग प्रगट होजाते हैं. इस कारण योग्य है कि निष्प्रयोजन मैथुन न करे. निष्प्रयोजन मैथुन करना अपने वीर्यको वृथा खोना है. देखो किसानलोग बीजको खेतमें तब बोते हैं कि जब खेत बोनेके योग्य तैयार होजाता है. जो अपना वीर्य वृथा खोते हैं उनकी बुद्धिसे किसानोंकी बुद्धि अच्छी जानना. भोजन करने उपरान्त जब एक प्रहर वीत जाय तब रात्रिसमय मैथुन करे अर्थात् भोजन और मैथुनमें एक प्रहरका अन्तर होना चाहिये. इस हेतु मैथुनका ठीक समय अर्द्धरात्रि है. अर्द्ध रात्रिसे चार घडी रात्रि रहेतक मैथुनका समय निश्चय जानना. परन्तु ऐसे समय मैथुन नहीं करे कि जब शरीरमें आलस्य हो अथवा शरीरमें रुधिरविकार हो, नेत्र व शिरमें पीडा हो. भावार्थ यह कि प्रसन्नतापूर्वक मैथुन करना योग्य है.

मैथुन दोष वर्णन ।

रजस्वला स्त्रीके तीन दिनतक रुधिर प्रवाह होताहै, तब जो पुरुष अज्ञानतासे मैथुन कर बैठता है, उसके उपदंश (आतशक गरमी) रोग होजाता है, अथवा अन्य रोग उत्पन्न होजाना संभव है. चालीस वर्षकी अवस्थावाली स्त्री प्रायः गर्भधारण नहीं करती, परन्तु जिसका विवाह सोलह वर्षकी अवस्थामें हुआ हो और अठारह वर्ष या बीस वर्षकी अवस्थामें सन्तान हुई हो वह स्त्री पचास वर्षकी अवस्थातक सन्तान उत्पन्न करसकती है. इससे अधिक अवस्थावाली स्त्रीसे मैथुन करना विष पीना है. तथा जो स्त्री बहुत कालसे पुरुषके पास न गई हो और कुरूपा हो, कोपसे

युक्त हो, रोगिणी हो, उसके साथ मैथुन न करे, एवं जो पुरुष अजीर्ण रोगसे युक्त हो, सरदी वा गरमी लग रही हो, शिर और हृदय निर्बल हो, भयसे विह्वल हो, दृष्टिमें बल नहीं हो, देह किसी कारणसे कृश (दुर्बल) हो, जलन्धर आदि रोगसे युक्त हो, पेट भरा हो, ऐसा पुरुष मैथुन नहीं करे. मैथुन कर्म करने उपरान्त कामध्वजको शीतल जलसे नहीं धोवे, न शीतल जल पीवे. शीतल जलसे धोनेपर कामध्वजकी शक्तिमें बाधा उत्पन्न होजाती है. शीतल जल पीनेसे सरदी गरमीका रोग प्रगट होजाता है. यदि आवश्यकता हो तो गरम जलसे कामध्वजको धोवे. मैथुनोपरान्त प्यास लगी हो तो गरम दूध पीवे. शीतल जल पीलेनेसे प्रायः अंगकम्पन, जलन्धर और झोलारोग प्रगट होजाना सम्भव है. पेट भरेपर मैथुन करनेसे वातविकार पीलपांव और अंडवृद्धि रोग हो जानेका भय रहता है. क्षुधित समय मैथुन करनेसे दृष्टि क्षीण होजाती है. क्षीण शरीर होनेपर मैथुन करनेसे विषम रोग प्रगट होजाता है. अधिक खटाई खाने और अधिक मैथुन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बलहीन हो जाती है और वातविकार प्रगट हो जानेका भय रहता है.

× रतिप्रकार।

सहवासमें रति प्रधान है, सो रति तीन प्रकारकी जानना, १ उच्चरति, २ नीचरति, ३ समरति. उच्चरतिमें पुरुष बलवान्, स्त्री निर्बल रहती है, परस्परमें प्रसन्नता रहती है ऐसी दशामें पुत्रकी उत्पत्ति जानना, नीचरतिमें पुरुष निर्बल और स्त्री सबल रहती है, परस्पर उदासीनभाव रहता है और कन्या उत्पन्न होती है. समरतिमें दोनों समानबल होते हैं, प्रीतिमें हानि रहती है और संतान नपुंसक होती है.

× मैथुनविधान।

यद्यपि मैथुनकर्ममें शिक्षा देनेकी आवश्यकता नहीं क्योंकि

यह कर्म सबही जानते हैं. जैसे रोना और गाना सबहीको आता है. परंतु जैसे नेत्रोंमें काजल सबही लगाते हैं, लेकिन चितवनमें भाँति होती है. भाव यह कि जो काम अच्छी विधिसे किया जाता है उसका परिणाम अच्छा होताहै और जिसमें विधि नहीं उसमें विघ्न उत्पन्न होनेकी शंका रहती है, इसीसे विशेष और आवश्यक विधि हम संक्षेपरीतिसे लिखते हैं. अपनी स्त्रीमें पुत्रका कामनासे मैथुनसमय स्त्रीके कामको चैतन्य करनेके निमित्त कामवासका अंग चुम्बनादि करै. प्यार करनेमें मुख्य क्रिया चुंबनही है. कुचमर्दनका नंबर दूसरा है. जब स्त्रीको काम विशेष उद्दीपन हो उसकी पहचान यही है कि नेत्र लाल होजाते हैं, श्वास गरम जल्दी जल्दी चलनेलगती है, सिसकी आने लगती है, उस समय रतिदान देवे. प्रथम कामध्वजको शनैः २ संघर्षण करै फिर कुछ बल करके प्रवेश करै और शिरा धरनेमें लगै. जब कामिनी प्रथम स्खलित होजाय तब कामगत होकर वीर्यपात करै अथवा साथही स्खलित हो, पहले नहीं. रतिदानके समय एक कोमल तकिया शिरहाने और कटिके नीचे अवश्य होनी चाहिये. मैथुनके पूर्व वाम चरण उठाकर प्रथम स्त्री शय्यारूढ हो, अनन्तर पुरुष प्रथम दक्षिण पाद उठाकर शय्यापर वामाकी नाभिकी ओरसे आरूढ हो जैसे तुरंगपर आरूढ हुआ जाता है. वीर्यग्रहण करने उपरांत स्त्री शय्यापर चित लेटी रहे, जिससे वीर्य रज मिलकर गर्भके योग्य होजावे. यह मैथुनविधान अपनी स्त्रीमें सन्तानकी उत्पत्तिके निमित्त लिखागया, क्योंकि यदि मैथुन न कियाजाय तो सन्तानकी उत्पत्ति किस प्रकार हो और जगत्की स्थिरता कैसे हो. सृष्टिक्रम यही है कि मनुष्य सन्तान उत्पन्न करै, इसीसे स्त्री पुरुषमें मैथुनकी इच्छा ईश्वरने प्रगट की है और इसीसेही मैथुनमें परम आनन्द अनुभव होता है.

सहवास।

एकही मन्दिरमें एकसाथ स्त्री पुरुषका रहना यही सहवास है. सहवासमें मैथुनकी अभिलाषा अवश्य होती है. जिस मन्दिरमें समीपही अपने गुरुजन अर्थात् सास, ससुर, जेठ, जेठानी, तथा माता, पिता, बडा भाई आदि हों वहां सहवास न करै. यदि किसी महाकामी मनुष्यको सहवास करनाही हो तो प्रबन्ध करके अतिलज्जाके साथ मौन रहकर एकान्तमें सहवास करना चाहिये. परन्तु नीचे लिखे हुए वचनानुसार अवश्य वर्ताव करना चाहिये.

त्रिभिस्त्रिभिरहोरात्रैः समयात्प्रमदां नरः।
सर्वेष्वृतुषु घर्मे तु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः ॥ १०९ ॥

×भावार्थ-सब ऋतुओंमें मनुष्यको तीन तीन दिनके अन्तरसे रतिकर्म करना उचित है. और गरमीकी ऋतुमें पन्द्रह पन्द्रह दिनके अन्तरसे बुद्धिमान् जन सहवासमें गमन करै ॥ १०९ ॥

सद्यो बलहरा नारी सद्यो बलकरं पयः।
स्त्रियं गच्छेत्पयः पीत्वा तां च त्यक्त्वा पुनः पिबेत्११०

भावार्थ-स्त्री शीघ्र पुरुषका बल हरलेती है और दूध शीघ्र बल करता है, इस कारण स्त्रीके समीप जाकर रमण करनेसे पहले दूध पीकर रमण करै और उसको त्यागकर अर्थात् रमण कर चुकने उपरान्त फिर दुग्धपान करै ॥ ११० ॥

दूध गायका औटा हुआ हो उसमें मिश्री अथवा सपेद शक्कर पडी हो, अथवा भैंसका दूध उत्तम शक्कर अथवा कन्द मिलाहुआ हो, परन्तु गाय अथवा भैंस किसी प्रकारके रोगसे युक्त न हो. स्त्रीप्रसंगसे पहले और पीछेसे दूध पीनेवाला पुरुष शक्तिहीन नहीं होता. बल पराक्रममें अधिक न्यूनता नहीं आती

यह कर्म सबही जानते हैं. जैसे रोना और गाना सबहीको आता है. परंतु जैसे नेत्रोंमें काजल सबही लगाते हैं. लेकिन चितवनमें भाँति होती है. भाव यह कि जो काम अच्छी विधिसे किया जाता है उसका परिणाम अच्छा होताहै और जिसमें विधि नहीं उसमें विघ्न उत्पन्न होनेकी शंका रहती है, इसीसे विशेष और आवश्यक विधि हम संक्षेपरीतिसे लिखते हैं. अपनी स्त्रीमें पुत्रका कामनासे मैथुनसमय स्त्रीके कामको चैतन्य करनेके निमित्त कामवासका अंग चुम्बनादि करै. प्यार करनेमें मुख्य क्रिया चुंबनही है. कुचमर्दनका नंबर दूसरा है. जब स्त्रीका काम विशेष उद्दीपन हो उसकी पहचान यही है कि नेत्र लाल होजाते हैं, श्वास गरम जल्दी जल्दी चलनेलगती है, सिसकी आने लगती है, उस समय रतिदान देवे. प्रथम कामध्वजको शनैः २ संघर्षण करै फिर कुछ बल करके प्रवेश करै और शिरा धमनिमें लगै. जब कामिनी प्रथम स्खलित होजाय तब कामगत होकर वीर्यपात करै अथवा साथही स्खलित हो, पहले नहीं. रतिदानके समय एक कोमल तकिया शिरहाने और कटिके नीचे अवश्य होनी चाहिये. मैथुनके पूर्व वाम चरण उठाकर प्रथम स्त्री शय्यारूढ हो, अनन्तर पुरुष प्रथम दक्षिण पाद उठाकर शय्यापर वामाकी नाभिकी ओरसे आरूढ हो जैसे तुरंगपर आरूढ हुआ जाता है. वीर्यग्रहण करने उपरांत स्त्री शय्यापर चित लेटी रहे, जिससे वीर्य रज मिलकर गर्भके योग्य होजावे. यह मैथुनविधान अपनी स्त्रीमें सन्तानकी उत्पत्तिके निमित्त लिखागया, क्योंकि यदि मैथुन न कियाजाय तो सन्तानकी उत्पत्ति किस प्रकार हो और जगत्की स्थिरता कैसे हो. सृष्टिक्रम यही है कि मनुष्य सन्तान उत्पन्न करै, इसीसे स्त्री पुरुषमें मैथुनकी इच्छा ईश्वरने प्रगट की है और इसीसेही मैथुनमें परम आनन्द अनुभव होता है.

सहवास।

एकही मन्दिरमें एकसाथ स्त्री पुरुषका रहना यही सहवास है. सहवासमें मैथुनकी अभिलाषा अवश्य होती है. जिस मन्दिरमें समीपही अपने गुरुजन अर्थात् सास, ससुर, जेठ, जेठानी, तथा माता, पिता, बडा भाई आदि हों वहां सहवास न करे. यदि किसी महाकामी मनुष्यको सहवास करनाही हो तो प्रबन्ध करके अतिलज्जाके साथ मौन रहकर एकान्तमें सहवास करना चाहिये. परन्तु नीचे लिखे हुए वचनानुसार अवश्य बर्ताव करना चाहिये.

त्रिभिस्त्रिभिरहोरात्रैः समयात्प्रमदां नरः ।
सर्वेष्वृतुषु घर्मे तु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः ॥ १०९ ॥

× भावार्थ–सब ऋतुओंमें मनुष्यको तीन तीन दिनके अन्तरसे रतिकर्म करना उचित है. और गरमीकी ऋतुमें पन्द्रह पन्द्रह दिनके अन्तरसे बुद्धिमान् जन सहवासमें गमन करे ॥ १०९ ॥

सद्यो बलहरा नारी सद्यो बलकरं पयः ।
स्त्रियं गच्छेत्पयः पीत्वा तां च त्यक्त्वा पुनः पिबेत्११०

भावार्थ–स्त्री शीघ्र पुरुषका बल हरलेती है और दूध शीघ्र बल करता है, इस कारण स्त्रीके समीप जाकर रमण करनेसे पहले दूध पीकर रमण करे और उसको त्यागकर अर्थात् रमण कर चुकने उपरान्त फिर दुग्धपान करे ॥ ११० ॥

दूध गायका औटा हुआ हो उसमें मिश्री अथवा सपेद शक्कर पडी हो, अथवा भैंसका दूध उत्तम शक्कर अथवा कन्द मिलाहुआ हो, परन्तु गाय अथवा भैंस किसी प्रकारके रोगसे युक्त न हो. स्त्रीप्रसंगसे पहले और पीछेसे दूध पीनेवाला पुरुष शक्तिहीन नहीं होता. बल पराक्रममें अधिक न्यूनता नहीं आती.

गर्भाधान विधि।

सन्तानसुखकामानां मानवानां मुदे परम्।
गर्भाधानविधिं वक्ष्ये धन्वतरिमतं यथा ॥ १११ ॥

भापार्थ-सन्तानसुखकी कामनावाले मनुष्योंके परम प्रसन्नार्थ गर्भाधानविधि वर्णन करूंगा जैसा कि धन्वन्तरिजीका मत है अर्थात् धन्वतरीकृत सुश्रुतमें कहे अनुसार गर्भाधान विधि लिखते हैं ॥ १११ ॥

संसारमें जितने कार्य हैं सबकी विधि पृथक् पृथक् है. विना विधिके कोई कार्य पूर्णरूपसे सिद्ध नहीं होता है. मनुष्यको परमात्माने बुद्धि इसी निमित्त दी है कि विधिपूर्वक प्रत्येक कार्य करै. पूर्वज ऋपिमहात्माओंने हमारे कल्याणनिमित्त सच्छास्त्र बनाये हैं, जिनके अनुसार वर्ताव करनेसे हमारा कल्याण होता है. गर्भाधान भी एक संस्कार है जो पोडश संस्कारोंमें गणना किया जाता है. गर्भाधानविधिसे यदि सन्तान उत्पन्न कीजाय तो वह सन्तान दीर्घायु, आरोग्य और सर्वगुणसम्पन्न होती है. गर्भाधानकी सामग्री यह है कि-

ध्रुवं चतुर्णां सान्निध्याद्गर्भः स्याद्विधिपूर्वकः ।
ऋतुक्षेत्राम्बुबीजानां सामग्र्यादंकुरो यथा ॥ ११२ ॥

भापार्थ-जिस प्रकार पृथ्वीमें ऋतु, क्षेत्र, अम्बु, बीज अर्थात् समय, खेत, जल और बीज इन चार सामग्रियोंसे अंकुर उत्पन्न होता है, ठीक इसी प्रकार १ ऋतु (गर्भका समय) अर्थात् युवती स्त्रीके रजस्वला होनेके दिनसे सोलह दिवस, २ क्षेत्र (शुद्ध गर्भाशय), ३ अम्बु (शुद्ध रज), ४ बीज (शुद्ध वीर्य) इन चार वस्तुओंसे विधिपूर्वक गर्भ होता है ॥ ११२ ॥

तहां शुद्ध वीर्यका लक्षण यह है कि-

स्फटिकाभं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगन्धि च ।
शुक्रमिच्छन्ति केचित्तु तैलक्षौद्रनिभं तथा ॥ ११३ ॥

भाषार्थ-जिस शुक्र (वीर्य) का रंग बिल्लौरपत्थरके सदृश श्वेतवर्ण हो, पतला और चिकना मधुर हो, तथा शहतकीसी गन्धवाला हो तो शुद्ध होता है. कोई आचार्य तैल और शहतके समान भी शुद्ध बतलाते हैं, परन्तु धन्वन्तरिजीके मतसे श्वेतही शुद्ध मानागया है ॥ ११३ ॥

शुद्धआर्तव (रज) का लक्षण यह है कि-

शशासृक्प्रतिभे यत्तु यद्वा लाक्षारसोपमम् ।
तदार्तवं प्रशंसन्ति यद्वासो न विरंजयेत् ॥ ११४ ॥

भाषार्थ-खरगोशके रुधिरके सदृश रंग जिसका हो अथवा लाखके रंगके तुल्य हो अथवा जिसमें रंगाहुआ वस्त्र लाल रंग रहे बेरंग न हो जावे ऐसा रज गर्भके योग्य होता है ॥ ११४ ॥

मासेनोपचितं काले धमनीभ्यां तदार्तवम् ।
ईषत्कृष्णं विदग्धं च वायुर्योनिमुखं नयेत् ॥ ११५ ॥

भाषार्थ-एक महीनेभरका संचित आर्तव कुछ काला और दुर्गन्धयुक्त होजाता है, उस आर्तवको समय पाकर वायु धमनियोंके द्वारा योनिमुखपर ले आता है, उसीको रजोदर्शन कहते हैं ॥ ११५ ॥

तद्वर्षाद्द्वादशात्काले वर्तमानमसृक्पुनः ।
परिपक्वशरीराणां याति पंचाशतः क्षयम् ॥ ११६ ॥

भाषार्थ-यह आर्तव स्त्रियोंके बारह वर्षके उपरान्त प्रवृत्त होता है और बुढापेसे शरीरके निर्बल होजानेपर पचास वर्षकी अवस्थामें क्षय होजाता है ॥ ११६ ॥

गर्भाशयका स्वरूप यह है कि-

शंखनाभ्याकृतिर्योनिस्त्र्यावर्ता सा प्रकीर्तिता ।
तस्यास्तृतीये त्वावर्ते गर्भशय्या प्रतिष्ठिता॥ ११७

भाषार्थ-शंखकी नाभिके आकार तीन लपेटवाली योनि होती है, उसके तीसरे लपेटमें गर्भशय्या होती है ॥ ११७ ॥

यथा रोहितमत्स्यस्य मुखं भवति रूपतः ।
तत्संस्थानां तथारूपां गर्भशय्यां विदुर्बुधाः ॥११८

भाषार्थ-रोहूमछलीके मुखका जैसा आकार होता है वैसाही स्थान तथा रूप गर्भाशयका बुधजनोंने कहा है ॥ ११८ ॥

आभुग्नोऽग्रिमुखः शेते गर्भो गर्भाशये स्त्रियाः ।
सा योनिं शिरसा याति स्वभावात्प्रसवं प्रति॥११९॥

भाषार्थ-स्त्रीके गर्भाशयमें झुकाहुआ और सन्मुख बालक शयन करता है, फिर वह प्रसवकालमें स्वभावहीसे शिरके बल योनिके द्वारपर आ जाता है ॥ ११९ ॥

नियतं दिवसेऽतीते संकुचत्यंबुजो यथा ।
ऋतौ व्यतीते नार्यास्तु योनिः संव्रियते तथा १२०॥

भाषार्थ-जिस प्रकार दिनके व्यतीत होनेपर कमल वन्द हो जाता है उसी प्रकार सोलह दिन व्यतीत होजानेपर स्त्रीके गर्भाशयका मुख वन्द होजाता है ॥ १२० ॥

इस कारण गर्भाधान इन्हीं सोलह दिनमें करै. तहां प्रथम तीन दिन वर्जित करै, चौथे दिन विधिपूर्वक स्त्री स्नान करै. तहां शीतल जलसे स्नान शीत कालमें न करै, गरमीकी ऋतुमें शीतल जलसे स्नान करै और शीतकालमें गरम जलसे स्नान करे. वायुके स्पर्शसे अपना बचाव रक्खे, स्नानोपरांत अपना मुख आरसीमें देख लेवै अथवा अपने पतिका मुख देखै. अथवा जो कोई अपना प्यारा हो अथवा जिसके आकार सन्तानकी इच्छा हो उसका मुख देखलेवै, क्योंकि उस समय जिसके आकारका ध्यान स्त्रीके चित्तपर जमता है उसी आकृतिका बालक उत्पन्न होवाहै. तदनन्तर स्त्री पुरुष दोनों

उत्तम और शीघ्र पचनेवाले पदार्थ भोजन करें, और गर्भाधानकी इच्छासे सहवास करें. तहाँ–

युग्मेषु तु पुमान् प्रोक्तो दिवसेष्वन्यथावला।
पुष्पकाले शुचिस्तस्मादपत्यार्थी स्त्रियं व्रजेत् १२१

×भावार्थ–सम (४।६।८।१०।१२।१४।१६) दिनोंमें शुक्रकी प्रबलतासे पुत्र और विषम (५।७।९।११।१३।१५) दिनोंमें रजकी प्रबलतासे कन्या उत्पन्न होवै है. इस कारण सन्तानकी इच्छावाला पुरुष इन दिनोंमें स्त्रीके साथ समागम करै॥ १२१॥

इस प्रकार गर्भाधान करै परन्तु सोलह दिन ऋतुके होते हैं, जिनमें गर्भ रहसकता है, शेष १४ दिन जो महीनेमें रहते हैं उनमें गर्भ नहीं रहता है, सोलहों दिनमें पृथक् पृथक् गर्भ रहनेका फल यह है कि, पहले दिन मैथुन करनेसे पुरुषके शरीरमें रोग उत्पन्न होजाताहै, गर्भ नहीं रहताहै. दूसरे दिन मैथुन करनेसे गर्भ रहसकता है परन्तु गर्भस्थ बालक मरजाताहै. तीसरे दिन मैथुन करनेसे मरीहुई सन्तान होती है. चौथे दिन मैथुन करनेसे दरिद्री पुत्र उत्पन्न होता है, इसी कारण ऋतुकालसे चार दिन मैथुन नहीं करना चाहिये. पाँचवें दिन सौभाग्यवती कन्या, छठे दिन अपने समान पुत्र, सातवें दिन सुशीला कन्या, आठवें दिन धनवान् पुत्र, नवें दिन भाग्यवती कन्या, दशवें दिन बुद्धिमान् पुत्र, ग्यारहवें दिन अधर्मिणी कन्या, बारहवें दिन पुरुषार्थी पुत्र, तेरहवें दिन महापापिनी कन्या, चौदहवें दिन सुशील और धर्मात्मा पुत्र, पन्द्रहवें दिन पतिव्रता और साध्वी कन्या, सोलहवें दिन गम्भीर बुद्धिवाला पुत्र उत्पन्न होवे है. शेष १४ दिनमें कुछ नहीं, अतः शेष १४ दिन मैथुन करना वृथा है. स्त्री पुरुषके विना समागमके भी सन्तान उत्पत्ति होती है सो इस प्रकार कि ऋतुकालमें पुरुषका वीर्य किसी प्रकारसे स्त्रीके

भाषार्थ-शंखकी नाभिके आकार तीन लपेटवाली योनि होती है, उसके तीसरे लपेटमें गर्भशय्या होती है ॥ ११७ ॥

यथा रोहितमत्स्यस्य मुखं भवति रूपतः ।
तत्संस्थानां तथारूपां गर्भशय्यां विदुर्बुधाः ॥११८

भाषार्थ-रोहूमछलीके मुखका जैसा आकार होता है वैसाही स्थान तथा रूप गर्भाशयका बुधजनोंने कहा है ॥ ११८ ॥

आभुग्नोऽग्निमुखः शेते गर्भो गर्भाशये स्त्रियाः ।
स योनिं शिरसा याति स्वभावात्प्रसवं प्रति॥११९॥

भाषार्थ-स्त्रीके गर्भाशयमें झुकाहुआ और सन्मुख बालक शयन करता है, फिर वह प्रसवकालमें स्वभावहीसे शिरके बल योनिके द्वारपर आ जाता है ॥ ११९ ॥

नियतं दिवसेऽतीते संकुचत्यंबुजो यथा ।
ऋतौ व्यतीते नार्यास्तु योनिः संव्रियते तथा १२०॥

भाषार्थ-जिस प्रकार दिनके व्यतीत होनेपर कमल बन्द हो जाता है उसी प्रकार सोलह दिन व्यतीत होजानेपर स्त्रीके गर्भाशयका मुख बन्द होजाता है ॥ १२० ॥

इस कारण गर्भाधान इन्हीं सोलह दिनमें करै, तहां प्रथम तीन दिन वर्जित करै, चौथे दिन विधिपूर्वक स्त्री स्नान करै, तहां शीतल जलसे स्नान शीत कालमें न करै, गरमीकी ऋतुमें शीतल जलसे स्नान करै और शीतकालमें गरम जलसे स्नान करै, वायुके स्पर्शसे अपना बचाव रक्खे, स्नानोपरांत अपना मुख आरसीमें देख लेवै अथवा अपने पतिका मुख देखै, अथवा जो कोई अपना प्यारा हो अथवा जिसके आकार सन्तानकी इच्छा हो उसका मुख देखलेवै, क्योंकि उस समय जिसके आकारका ध्यान स्त्रीके चित्तपर जमता है उसी आकृतिका बालक उत्पन्न होताहै, तदनन्तर स्त्री पुरुष दोनों

उत्तम और शीघ्र पचनेवाले पदार्थ भोजन करें, और गर्भाधानकी इच्छासे सहवास करें. तहाँ-

युग्मेषु तु पुमान् प्रोक्तो दिवसेष्वन्यथाबला।
पुष्पकाले शुचिस्तस्मादपत्यार्थी स्त्रियं व्रजेत् १२१

×भाषार्थ-सम (४।६।८।१०।१२।१४।१६) दिनोंमें शुक्रकी प्रबलतासे पुत्र और विषम (५।७।९।११।१३।१५) दिनोंमें रजकी प्रबलतासे कन्या उत्पन्न होवे है. इस कारण सन्तानकी इच्छावाला पुरुष इन दिनोंमें स्त्रीके साथ समागम करे ॥ १२१ ॥

इस प्रकार गर्भाधान करे परन्तु सोलह दिन ऋतुके होते हैं, जिनमें गर्भ रहसकता है, शेष १४ दिन जो महीनेमें रहते हैं उनमें गर्भ नहीं रहता है, सोलहों दिनमें पृथक् पृथक् गर्भ रहनेका फल यह है कि, पहले दिन मैथुन करनेसे पुरुषके शरीरमें रोग उत्पन्न होजाताहै, गर्भ नहीं रहताहै. दूसरे दिन मैथुन करनेसे गर्भ रहसकता है परन्तु गर्भस्थ बालक मरजाताहै. तीसरे दिन मैथुन करनेसे मरीहुई सन्तान होती है. चौथे दिन मैथुन करनेसे दरिद्री पुत्र उत्पन्न होता है, इसी कारण ऋतुकालसे चार दिन मैथुन नहीं करना चाहिये. पाँचवें दिन सौभाग्यवती कन्या, छठे दिन अपने समान पुत्र, सातवें दिन सुशीला कन्या, आठवें दिन धनवान् पुत्र, नवें दिन भाग्यवती कन्या, दशवें दिन बुद्धिमान् पुत्र, ग्यारहवें दिन अधर्मिणी कन्या, बारहवें दिन पुरुषार्थी पुत्र, तेरहवें दिन महापापिनी कन्या, चौदहवें दिन सुशील और धर्मात्मा पुत्र, पन्द्रहवें दिन पतिव्रता और साध्वी कन्या, सोलहवें दिन गम्भीर बुद्धिवाला पुत्र उत्पन्न होवे है. शेष १४ दिनमें कुछ नहीं, अतः शेष १४ दिन मैथुन करना वृथा है. स्त्री पुरुषके विना समागमके भी सन्तान उत्पत्ति होती है सो प्रकार कि ऋतुकालमें पुरुषका वीर्य किसी प्रकारसे

गर्भाशयमें पहुँचायाजाय और ठहरजाय तो रजवीर्यके योगसे गर्भ रहसकता है. तथा ऋतुकालमें कामवती स्त्री हित पुरुषका ध्यान कर स्खलित होती है अथवा दो कामवती स्त्रियां ऋतुकालमें जब संसर्ग करती हैं तब भी गर्भ रहजाना सम्भव है परन्तु ऐसे गर्भकी स्थिति नहीं होती.

गर्भ लक्षण।

योषितोऽपि स्रवत्येव शुक्रं पुंसां समागमे।
तन्न गर्भस्य किंचित्तु करोतीति न चिन्त्यते १२२ ॥

भाषार्थ-पुरुषके मैथुन समय स्त्रियोंकेभी शुक्र निकलता है परन्तु वह शुक्रसे मिलकर गर्भका कारण नहीं होता है ॥ १२२ ॥

क्योंकि गर्भोत्पत्तिमें वीर्य सौम्य और आर्तव आग्नेय है. यद्यपि संसार पाञ्चभौतिक है तथापि अग्नि और सोम तो गर्भोत्पत्तिमें प्रधान मानेगये हैं और शेष अनुरूपसे सम्मिलित रहते हैं. स्त्री पुरुषके संयोगमें जो गरमाई उत्पन्न होती है वह प्रथम शरीरमें वायुको प्रबल करती है, फिर उस गरमाई और वायुके मिलनेपर पुरुषका वीर्य निकलकर स्त्रीकी योनिमें प्राप्त होता है और आर्तवके साथ मिलजाता है. अग्नि और सोमके संयोग होनेके कारण उत्पन्न हुआ गर्भ गर्भाशयमें प्राप्त होता है. इसलिये आग्नेय आर्तवकीही गर्भोत्पत्तिमें आवश्यकता है.

घृतपिंडो यथैवाग्निमाश्रितः प्रविलीयते।
विसर्पत्यार्तवं नार्यास्तथा पुंसां समागमे ॥ १२३ ॥

भाषार्थ-जिस प्रकार अग्निके आधिन होनेपर जमाहुआ घृतपिंड पिघल जाता है इसी प्रकार पुरुषके समागम होनेपर स्त्रियोंका आर्तव भी चलायमान होजाता है ॥ १२३ ॥

बीजेऽन्तर्वायुना भिन्ने द्वौ जीवौ कुक्षिमागतौ।
यमावित्यभिधीयेते धर्मेतरपुरस्सरौ ॥ १२४ ॥

भावार्थ-पुरुषका वीर्य जब भीतरकी वायुसे भिन्न होकर दो भागोंमें विभक्त होजाता है तब दो जीव कुक्षिमें आजाते हैं उनको जोरिहा कहते हैं. वे नियम विरुद्ध होते हैं ॥ १२४ ॥

शुक्रशोणितके संयोग होजानेपर जिसको क्षेत्रज्ञ आदि पर्यायवाची नामोंसे पुकारते हैं वह आत्मा दैवयोगसे गर्भाशयमें प्रविष्ट होकर स्थित होती है. श्रम होना, जंघायें शिथिल होना, तृषा लगना, ग्लानि होना, मनका स्फुरण होना यह तत्काल गर्भधारणके लक्षण हैं और स्तनोंके अग्रभागोंका काला होना, रोमांच होना, नेत्रोंके पलक मिचना, पथ्यभोजन भी वमन होजाना, उत्तम सुगंधित पदार्थोंसे भी भय करना, मुखसे पानी गिरना, शरीर जकड़ना गर्भ रहनेके पीछेके ये लक्षण हैं. जिस समय गर्भ रहजाता है उस समय चतुरा स्त्री स्वयं जानलेती है कि वीर्य ठहरगया. यदि पुरुषका वीर्य ठहरकर स्त्रीकी रजमें मिलजाता है तब वही रजवीर्य बुद्बुदरूपसे मिलकर गर्भ हो जाता है. स्त्री पुरुषके एक साथ स्खलित होनेपर स्त्रीको योग्य है कि कुछ समयतक चित लेटी रहे, जिससे वीर्य ठहरजाय. तुरन्त उठ खडी होनेसे वीर्य गिरजाता है. जब गर्भ रहजाता है तब कुछ पीडा नाभिके नीचे अवश्य होती है और दिन दिन स्त्री बलहीन होनेलगती है. स्त्रीका चित्त रतिसे फिर जाता है. धरनका मुख बन्द हो जाताहै. कभी कभी ऐसा भी होजाताहै कि उस समय रतिकी बहुत इच्छा प्रगट होजाती है. मुखका रंग बदलजाता है. नाडीकी गति तीव्र होजाती है. शरीरमें आलस्य बहुत आजाता है. कभी कभी शिरमें पीडा भी होनेलगती है. जी मिचलाता है. विना भोजन कियेही तृप्ति रहती है. चटपटी और सोंधी वस्तुपर चित्त चलता है और दूसरे महीनेमें स्त्री रजस्वला नहीं होती तभी निश्चय होजाता है कि गर्भ ठहरगया. गर्भ तबहीं स्थिर होता है कि जब स्त्री पुरुषके मैथुनमें पूर्वोक्त रीत्यनुसार वर्ताव रहे. इसीसे कोकाजीने अपने ग्रन्थमें आसन नहीं लिखे.

गर्भाशयमें पहुँचायाजाय और ठहरजाय तो रजवीर्यके योगसे गर्भ रहसकता है. तथा ऋतुकालमें कामवती स्त्री हित पुरुषका ध्यान कर स्खलित होती है अथवा दो कामवती स्त्रियां ऋतुकालमें जब संसर्ग करती हैं तब भी गर्भ रहजाना सम्भव है परन्तु ऐसे गर्भकी स्थिति नहीं होती.

गर्भ लक्षण।

योषितोऽपि स्रवत्येव शुक्रं पुंसां समागमे ।
तन्न गर्भस्य किंचित्तु करोतीति न चिन्त्यते १२२ ॥

भावार्थ-पुरुषके मैथुन समय स्त्रियोंकेभी शुक्र निकलता है परन्तु वह शुक्रसे मिलकर गर्भका कारण नहीं होता है ॥ १२२ ॥

क्योंकि गर्भोत्पत्तिमें वीर्य सौम्य और आर्तव आग्नेय है. यद्यपि संसार पाञ्चभौतिक है तथापि अग्नि और सोम दो गर्भोत्पत्तिमें प्रधान मानेगये हैं और शेष अणुरूपसे सम्मिलित रहते हैं. स्त्री पुरुषके संयोगमें जो गरमाई उत्पन्न होती है वह प्रथम शरीरमें वायुको प्रबल करती है, फिर उस गरमाई और वायुके मिलनेपर पुरुषका वीर्य निकलकर स्त्रीकी योनिमें प्राप्त होता है और आर्तवके साथ मिलजाता है. अग्नि और सोमके संयोग होनेके कारण उत्पन्न हुआ गर्भ गर्भाशयमें प्राप्त होता है. इसलिये आग्नेय आर्तवकीही गर्भोत्पत्तिमें आवश्यकता है.

घृतपिंडो यथैवाग्निमाश्रितः प्रविलीयते ।
विसर्पत्यार्तवं नार्यास्तथा पुंसां समागमे ॥ १२३ ॥

भावार्थ-जिस प्रकार अग्निके आश्रित होनेपर जमाहुआ घृतपिंड पिघल जाता है उसी प्रकार पुरुषके समागम होनेपर स्त्रियोंका आर्तव भी स्थानभ्रष्ट होजाता है ॥ १२३ ॥

बीजेऽन्तर्वायुना भिन्ने द्वौ जीवौ कुक्षिमागतौ ।
यमावित्यभिधीयेते धर्मेतरपुरस्सरौ ॥ १२४ ॥

भावार्थ-पुरुषका वीर्य जब भीतरकी वायुसे भिन्न होकर दो भागोंमें विभक्त होजाता है तब दो जीव कुक्षिमें आजाते हैं उनको जोरिहा कहते हैं, वे नियम विरुद्ध होते हैं ॥ १२४ ॥

शुक्रशोणितके संयोग होजानेपर जिसको क्षेत्रज्ञ आदि पर्यायवाची नामोंसे पुकारते हैं वह आत्मा दैवयोगसे गर्भाशयमें प्रविष्ट होकर स्थित होती है. श्रम होना, जंघायें शिथिल होना, तृषा लगना, ग्लानि होना, मनका स्फुरण होना यह तत्काल गर्भधारणके लक्षण हैं और स्तनोंके अग्रभागोंका काला होना, रोमांच होना, नेत्रोंके पलक मिचना, पथ्यभोजन भी वमन होजाना, उत्तम सुगंधित पदार्थोंसे भी भय करना, मुखसे पानी गिरना, शरीर जकडना गर्भ रहनेके पीछेके ये लक्षण हैं. जिस समय गर्भ रहजाता है उस समय चतुरा स्त्री स्वयं जानलेती है कि वीर्य ठहरगया. यदि पुरुषका वीर्य ठहरकर स्त्रीकी रजमें मिलजाता है तब वही रजवीर्य बुद्बुदरूपसे मिलकर गर्भ हो जाता है. स्त्री पुरुषके एक साथ स्खलित होनेपर स्त्रीको योग्य है कि कुछ समयतक चित लेटी रहे, जिससे वीर्य ठहर-जाय. तुरन्त उठ खडी होनेसे वीर्य गिरजाता है. जब गर्भ रहजाता है तब कुछ पीडा नाभिके नीचे अवश्य होती है और दिन दिन स्त्री बलहीन होनेलगती है. स्त्रीका चित्त रतिसे फिर जाता है. धरनका मुख बन्द हो जाताहै. कभी कभी ऐसा भी होजाताहै कि उस समय रतिकी बहुत इच्छा प्रगट होजाती है. मुखका रंग बदलजाता है. नाडीकी गति तीव्र होजाती है. शरीरमें आलस्य बहुत आजाता है. कभी कभी शिरमें पीडा भी होनेलगती है. जी मिचलाता है. विना भोजन कियेही तृप्ति रहती है. चटपटी और सोंधी वस्तुपर चित्त चलता है और दूसरे महीनेमें स्त्री रजस्वला नहीं होती तभी निश्चय होजाता है कि गर्भ ठहरगया. गर्भ तबही स्थिर होता है कि जब स्त्री पुरुषके मैथुनमें पूर्वोक्त रीत्यनुसार वर्ताव रहे. इसीसे कोकाजीने अपने ग्रन्थमें आसन नहीं लिखे.

आसनोंसे पशुवत् मैथुन समझाजाता है और अनेक रोग प्रगट होजानेका भय सर्वदा बनारहता है. जैसे खाना पीना खड़े होकर आरोग्यताको हानि पहुँचाता है. इसी प्रकार रतिकर्म भी खड़े होकर करनेसे टांगोंमें कंपवायु रोग हो जाता है. बैठकर काम करनेसे धरनमें आघात पहुँचता है और वीर्य ठिकानेतक न पहुँचकर वृथा जाता है इत्यादि. इसी प्रकार समझकर आसनोंसे जो हानियां हैं उनको समझ लेना चाहिये.

गर्भ परीक्षा।

गर्भ होनेमें यदि किसी प्रकारका सन्देह हो तो मधु पांच तोले, वर्षाका जल दश तोले एकमें मिलाकर पिलानेसे सोनेके समय यदि पेटमें पीडा हो तो गर्भ अवश्य है ऐसा जानना अथवा लहसनके रसमें वस्त्र तर करके सुघाके समय योनिमें धरे, यदि लहसनकी गन्ध और स्वाद मुखमें जान पडे तो गर्भ नहीं जानना. तथा एक दिन निराहार रहकर सब शरीरको चादरसे ढकेदें और सुगन्ध अथवा दुर्गन्धकी धूनी देवें, यदि धूनीकी गन्ध स्त्रीकी नाकमें आवे तो गर्भ जानना, नहीं आवे तो नहीं जानना. कभी कभी स्त्रीका पेट गर्भ होनेके समान फूलारहता है और बालकको चाल भी जान पडती है, परन्तु न वह गर्भवती है, न बालक है, किन्तु यह एक रोग है. इसमें अंतर यह है कि रोगवालीका पेट कठोर होता है और हलचल बहुत देरतक रहती है. गर्भवतीका पेट कोमल रहता है और बहुत देरतक हलचल नहीं रहती. कामके वेगसे स्त्री और पुरुषके समागम होनेपर शुद्ध शुक्र और आर्तवके मिलनेपर स्त्रियोंके गर्भ रहता है. उससे जो उत्पन्न होता है उसको बालक कहते हैं. जब वीर्य और आर्तवका मेल होता है उस समय शुक्र और आर्तवके साथ जीव प्रवेश करता है. जिस प्रकार सूर्यकी किरण और सूर्यकान्तमणि अर्थात् आतशीशीशाके संयोगसे

अग्नि प्रगट होती है उसी प्रकार शुक्र और आर्तवके संयोगसे जीव उत्पन्न होता है.

पहले महीनेमें गर्भ गुप्त रहता है. शुक्र और रज मिलकर सात दिनमें कललाकृति होकर बुद्बुदाकृति हो जाता है. दूसरे महीनेमें मांसापिंडाकार होजाता है. तीसरे महीनेमें पिंडाकारसे मस्तक, दो बाहु, दो पांवोंके सूक्ष्म अंग और प्रत्यंगकी आकृतियुक्त पिंड बनता है. गर्भवती स्त्री तीन महीनोंतक कोमल और मधुर पदार्थोंका सेवन करे, क्योंकि तीन मासतक थोडा भी कुपथ्य गर्भनाशका कारण होजाता है. चौथे महीनेमें गर्भके सम्पूर्ण अप्रगट अंग प्रगट होजाते हैं. इस महीनेमें गर्भस्थितिके कारण गर्भिणीको अपना सब अंग अतिशय जड मालूम होने लगताहै. इसी मासमें गर्भस्थ बालकके इच्छा प्रगट होतीहै. जिससे वह हिलने डुलने लगता है. तथा इसी मासमें गर्भस्थका हृदय माताके हृदयसे सम्बन्ध रखनेलगता है. और माताके हृदयस्थानसे रक्तवाहक नाडीद्वारा उसका पालन होता है, इस कारण इस समय गर्भिणी जिस वस्तुकी इच्छा करे वही देनाचाहिये: उसकी इच्छा भंग न होनेदे. क्योंकि इस महीनेमें गर्भिणीके मुखसे पानी छूटना, अन्नसे अरुचि, खट्टे पदार्थकी रुचि, शरीर भारी जानपडना, नेत्रोंकी ढिलाई, स्तनोंमें दूध प्रगट होना, होंठ और स्तन काले पडजाना, तथा पांवोंपर सूजन आना ये चिह्न प्रायः चौथे महीनेमें प्रगट होते हैं. इस महीनेमें गर्भिणीको इच्छित पदार्थ देनेमें यह विचार रखना कि जो वस्तु गर्भको हानिकारक हो सो नहीं देना. जैसे बहुत भारी, गरम, तीक्ष्ण पदार्थ आदि. पांचवें महीनेमें गर्भस्थ बालकके मनमें संकल्प विकल्प करनेकी शक्ति प्रगट होती है. इस महीनेमें गर्भस्थके शरीरमें मांस और रुधिरकी वृद्धि होती है, इस कारण गर्भिणीका शरीर अतिशय कृश हो जाता है. छठे महीनेमें पदार्थके निश्चय करनेकी बुद्धि गर्भस्थ बालकके उत्पन्न

होती है, इसी कारण छठे महीनेमें गर्भिणीका शरीर बल और वर्ण-रहित होता है. सातवे महीनेमें नवीन अंग मत्यंगादिभाग स्पष्ट होकर गर्भके सब अवयव पुष्ट होते हैं, इस कारण सातवें महीनेका उत्पन्न बालक जीजाता है. आठवें महीनेमें धातु स्थिर होता है तथा सर्वधातुओंका तेज जो ओज है वह क्रमसे वारंवार माता और पुत्रमें संचार करता है. इस कारण गर्भिणी स्त्री तेजके संचारसे मुरझाईसी रहती है. जब वालकका तेज संचार करता है तब बालक मुरझायासा रहता है, अतएव आठवें मासमें उत्पन्न सन्तान नहीं जीती हैं. ओजके स्थिर न रहनेसे आठ महीनेका बालक नहीं जीता है. इसी कारण आठवें महीनेमें बालककी रक्षाके निमित्त नैर्ऋतभागमें बलिदान करे. नवें और दशवें महीनेमें स्त्री बालकको जनती है. परन्तु कोई कोई स्त्री ग्यारहवें बारहवे महीनेमें भी बालक जनती है. इसके उपरांत बालक उत्पन्न न हो तो विकार समझना चाहिये.

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति प्रकार।

माता पिताकी यही इच्छा सर्वदा रहती है कि हमारी सन्तान सुन्दर हो, बुद्धिमान् हो, गुणवान् हो, परन्तु इस बातपर प्रायः लोग कहनेलगेंगे कि यह दैवगति है इसमें मनुष्यका क्या वश है. परन्तु यह बात नहीं, सचमुच मनुष्यके आधीन है. आधीन होनेमें अनेक प्रमाण हैं, इसमें यहां प्रथम एक दृष्टान्त लिखते हैं. एक पर्वतीय पण्डित विष्णुदत्त अपनी सुन्दर स्त्री-सहित हिमालयके समीप एक ग्राममें रहताथा, और विष्णुदत्तकी स्त्रीका भाई गोविन्ददेव भी विष्णुदत्तके पास पढनेकी इच्छासे रहताथा. अपनी बहिनके समान गोविन्ददेव भी रूपवान् था. विष्णुदत्तकी स्त्री अपने भाईसे बहुत प्रेम करतीथी. जब वह गर्भवती हुई तो एक दिन वह अपने चरणपर कमलका चिह्न बनाने-लगी, इतनेमें विष्णुदत्तने देखकर पूँछा कि यह क्या करतीहो?

तब उसने उत्तर दिया कि मैं चाहतीहूं कि मेरे पुत्र- उत्पन्न हो उसके चरणपर ऐसाही कमलका चिह्न हो. जब उसके पुत्र- हुआ तो बालकके चरणतलपर कमलका चिह्न था और वह बालक ठीक गोविन्ददेवके अनुहार उत्पन्न हुआ, यह देखकर शंका करके विष्णुदत्तने गोविन्ददेवको अपने घरसे निकालदिया. परन्तु जब दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ वह भी गोविन्ददेवकेही अनुहार था. तब विष्णुदत्तने अपनी स्त्रीसे पूछा कि यह क्या कारण है कि गोविन्ददेवके अनुहार यह पुत्र भी हुआ, क्या गोविन्ददेव आयाथा ? तब उसने उत्तर दिया कि स्वामिन् ! आप पंडित हैं, मैं आपकी स्त्री अबला हूं, आपसे क्या कहूं ? मेरा कुछ दोष नहीं. मैंने प्रथम पुत्रके लिये और इस पुत्रके लिये भी सर्वदा यही इच्छा की, कि जैसा मेरा भाई गोविंददेव रूपवान् गुणवान् है ऐसाही मेरा पुत्र भी हो. क्या आप नहीं जानते, प्राचीन पुस्तकोंमें लिखा है कि रजोवती स्त्री स्नान करके जैसे पुरुषको देखती है वैसाही बालक उसकी इच्छाके अनुसार उत्पन्न होता है और गर्भवती स्त्री जैसे पुरुषका ध्यान करती है वैसीही सन्तान उत्पन्न होती है. पहले पुत्रके समय स्नान करके मैंने गोविन्ददेवको देखाथा इससे उसीके अनुहार बालक उत्पन्न हुआ. दूसरे पुत्रके समय यद्यपि वह यहां नहीं था तथापि उसका ध्यान मुझको बनारहा और अब भी उसीका ध्यान बना रहता है. आपके सामने मैंने कभी गोविन्ददेवका नाम भी नहीं लिया. इसका कारण यही है कि प्रायः पुरुषोंका स्वभाव होता है कि स्त्रीका विश्वास नहीं करते और स्त्रीके विषयमें शंकाओंपर शंका मनमें लाकर कुछका कुछ समझ बैठते हैं और त्रास दिखाकर स्त्रीसे अपनी इच्छाके अनुसार बात कहलाकर उसको दोषी मानलेते हैं. यह सुनकर विष्णुदत्तकी शंका दूर होगई, तब गोविंद-देवको फिर अपने यहां बुलालिया. परीक्षा लेनेपर स्त्रीका वचन सत्य प्रतीत हुआ.

एवं रजस्वलादिनसे विषम दिनोंमें कन्या और सम दिनोंमें पुत्रका होना पूर्व लिखचुके हैं, यह तो अपने आधीनही है, रतिके समय स्त्री बायें करवट हो तो पुत्री और दाहिने करवट हो तो पुत्रकी उत्पत्ति होती है. तथा जो गोरे रंग और पुष्ट तथा पराक्रमी व सुन्दर पुत्रकी कामना हो तो स्नानके दिनसे स्त्रीको जौका मन्थ शहत डालकर सात दिनतक सफेद गायके दूधके साथ सेवन करावे. तथा सन्ध्यासमय बहुत सफेद बैल अथवा सफेद घोडेके दर्शन करावे. यदि धर्मात्मा पुत्र उत्पन्न करनेकी इच्छा हो तो हरिश्चन्द्र आदिके चरित्र सुनावे तो धर्मात्मा और आज्ञाकारी पुत्र उत्पन्न होगा. यदि वीर पुत्रकी इच्छा हो तो महाभारत आदिकी वीररसकथा सुनावे. यदि रसिक और सर्वकलासम्पन्न पुत्रकी इच्छा हो तो श्रीकृष्णचरित्र सुनावे. यदि गानविद्यामें चतुर पुत्रकी इच्छा हो तो गाना सुनावे. तात्पर्य यह कि जिस प्रकारकी सन्तान चाहे वैसीही वार्ता गर्भिणीको सुनाया करे, जिससे गर्भवती और बालकके चित्तपर उसका प्रभाव पूर्ण रीतिसे पडे. महाभारतमें इस बातका प्रमाण है कि सुभद्राके गर्भमें अभिमन्युजीने चक्रव्यूह (चकाबूह) की लडाई सुनी थी.

इन्द्रियार्थांस्तु यान् यान् सा भोक्तुमिच्छति गर्भिणी।
गर्भबाधभयात्तांस्तान् भिषगाहृत्य दापयेत् ॥ १२५ ॥
सा प्राप्तदौहृदा पुत्रं जनयेत्तद्गुणान्वितम्।
अलब्धदौहृदा गर्भं लभेतात्मनि वा भयम् ॥ १२६ ॥
येषु येष्विन्द्रियार्थेषु दौहृदे वै विमानता।
तेषु तेषु सुतस्यार्तिस्तस्मिंस्तस्मिंस्तथेन्द्रिये ॥१२७॥

भाषार्थ–गर्भवती स्त्री जिन जिन इन्द्रियोंके भोगकी इच्छा करे उनके न मिलनेसे गर्भको बाधा होती है, इस कारण बाधाके भयसे भिषग्वर (वैद्य) उन उन भोगोंको दिवावे. गर्भवतीको

जब दौहृद मिलजाता है तो गुणयुक्त संन्तान उत्पन्न होती है. दौहृदके न मिलनेसे गर्भ तथा गर्भवतीको व्याधि होजानेका भय है. और जिन जिन इन्द्रियोंके भोगोंकी दौहृदमें प्राप्ति न हो तो उन्हीं उन्हीं इन्द्रियोंमें बालकको हानि पहुँचती है ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥

वह दौहृद स्त्रीको चतुर्थ मासमें जानना क्योंकि जीवात्मा इन्द्रियोंके विषयोंमें रुचि करनेलगताहै. बालकका हृदय और गर्भवतीका हृदय यह दो हृदय हैं इस कारण गर्भवतीको दौहृदिनी कहते हैं.

गर्भमें पुत्र पुत्री परीक्षा।

रजोवती होनेके दिनसे सम विषम दिनोंमें गर्भ रहनेसे पुत्र पुत्रीका होना निश्चय करे. यदि इस प्रकार निश्चय न हो तो स्त्री पुरुषकी निर्बलतासे पुत्री और सबलतासे पुत्रकी उत्पत्ति जानना. अथवा पुरुष सबल होनेसे पुत्र और स्त्री सबल होनेसे कन्याकी उत्पत्ति जानना. अथवा चौथे महीनेसे इस बातकी परीक्षा करनी चाहिये कि यदि गर्भका बोझ दाहिनी ओर है तो पुत्र और बाई ओर है तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. अथवा दाहिनी आंख लाल रहनेसे बालक और बाई आंख कुछ बडी होजानेसे बालिका और बाई आंख लाल हो तो कन्या और दाहिनी आंख कुछ बडी हो तो पुत्रकी उत्पत्ति जानना. अथवा स्त्रीको रतिकी इच्छा न रहे तो पुत्र और इच्छा बनीरहे तो पुत्रीकी उत्पत्ति जानना. अथवा गर्भवतीके पांवकी रगें लाल और उभरीहुई हों तो पुत्र तथा नीली और फूलीहुई हों तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. दाहिने हाथकी नाडी तेज चलती हो तो पुत्र और बायें हाथकी प्रबल चलती हो तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. अथवा गर्भवतीका दूध सफेद कपडेपर डालनेसे लाल दाग पड-जाय तो लडका, पीला हो तो लडकी. एवं चुकन्दरके पत्ते

बारीक कर नाकमें फूँकनेसे छींक आवै तो बालक हो और छींक नहीं आवे तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. अथवा जिस स्त्रीके गर्भमें पुत्र होता है उसका गर्भ दूसरे मासमें पिंडाकार गोल दिखाई देने लगता है. प्रथम दाहिने स्तनमें दूध प्रगट होता है. दाहिनी जांघ कुछ पुष्ट दीखने लगती है. मुख प्रसन्न रहता है और सम्पूर्ण पुरुषवाचक वस्तुओंका नाम प्रिय लगता है. तथा पुरुषवाचक वस्तुओंकी इच्छा होवी है. मिट्टी आदि सोंधी वस्तुपर इच्छा अधिक चलती है और पुरुषवाचक वस्तु जैसे आम्र-आदि फल, कमल आदि फूल स्वप्नमें देख पडते हैं. मुखका रस मधुर रहता है. चलनेके समय पहले दाहिना पांव सुखसे उठता है. उठनेके समय दाहिना हाथ टेककर गर्भवती उठती है, स्तनका अग्रभग लाल रंग दीख पडता है. चीका रंग बदल जाता है. उसका दूध दर्पण (आईना) पर डालनेसे मोतीसा होजाताहै. दूधमें जुवां डालनेसे रेंगनेलगताहै. चार माशा जरावंद मुद्द पीसकर भगमें रखनेसे मुखका रस मधुर होजाय. सुखपूर्वक नींद और कमती नींद आवे. भयानक स्वप्न न देख पडें. उत्तम स्वप्न देखें, ये सब लक्षण पुत्रकी उत्पत्तिके जानने. इन लक्षणोंसे विपरीत लक्षण हों तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. यदि गर्भमें बालिकासे बालक बदलनेकी इच्छा हो तो गर्भवतीको तीसरे महीनेसे नीचे लिखे अनुसार आहार हित है. चावल, छोटी जुन्दरीका आटा, अथवा गेहूँका आटा, उर्द, चना, चुकन्दर, गोभी, शलगम, सेमकी फलियां, गाजर, गौका दूध उसमें शकर थोडीसी डालकर पिलाया करें और आलू, मीठे फल, गुलकन्द, ईख शहद इत्यादि और गर्भवती विश्राम अधिक करें और अपने मनमें सदैव पुत्रकी कामना रक्खें तो अवश्य पुत्रीसे पुत्र होजाना संभव है, परन्तु चार माससे अधिकका गर्भ होजानेपर यह उपाय वृथा है. और यदि लक्षण पुत्रके हों और पुत्रीकी इच्छा हो तो नीचे लिखे अनुसार

आहार हित है. जौका आटा, मकई, बाजरा, मूँगकी दाल, साबू-दाना, मटर, आड़ू, कमरख, शहतूत, किशमिश, अधिक शक्कर बकरीका दूध इत्यादि. सब काम बायें हाथसे करना, बायें नेत्रसे विशेष बल करके देखना, बाईं हथेली टेककर उठना, बायाँ पाँव उठाकर चलना, बायें कानसे शब्दकी ओर अधिक ध्यान देकर सुनना और पुत्री होनेकी इच्छा सदैव रखना, इस प्रकार बर्तावसे पुत्रीकी उत्पत्ति होती है. परंतु पुत्रसे पुत्रीकी कामना बहुत कम लोगोंको होगी. यह उपाय तीसरे महीनेसे पाँच महीनेतक अर्थात् जब गर्भ सात महीनेका होजाय तबतक ठीक है।

BHA... 20403 S.N. ... LIBRARY

गर्भिणी धर्म।

गर्भिणी स्त्रीको दूसरे तीसरे महीनेमें मधुर और शीतल भोजन करना चाहिये. तीसरे महीनेमें दूधके साथ भात खाना चाहिये. चौथे महीनेमें दहीके साथ भात खाना चाहिये. पाँचवें महीनेमें दूधके साथ, छठे महीनेमें उत्तम घीके साथ, सातवें महीनेमें उत्तम शीघ्र पचनेवाले भोजन हितकारक जानने. गर्भिणीको सदा प्रसन्न-मुख रहना चाहिये और पवित्र तथा अलंकृत रहना चाहिये. निर्मल वस्त्र और स्वच्छ बिछौना तथा सुगन्धित पदार्थ सूँघते रहना चाहिये. इस नियमसे रहे कि कोई रोग उत्पन्न न होजाय. अपथ्य और ऋतुविरुद्ध कोई भी पदार्थ न खाय. तथा गर्भिणीको उचित है कि अधिक परिश्रम न करे, दिनमें न सोवे, रात्रिमें न जागे, शोक न करे, बोझा न उठावे, ऊंचेपर न चढ़े, दौड़कर न चले, नदी नाले न लाँघे, क्रोध न करे, लंघन न करे, कड़ुए, तीखे, चरपरे, खट्टे और बहुत गरम पदार्थ न खाय, भय न करे, भयके स्थानमें न जाय, भयंकर वस्तु न देखे, इन-मेंसे यदि एक बात भी बर्तावमें आ जाती है तो गर्भको हानि पहुँचती है. कई स्त्रियोंको बन्दर साँप और हाथीके आकार विकृत

अंगवाले बालक जन्मते सुना और देखा है. इस कारण गर्भिणीको सावधान रहना चाहिये. गर्भिणीको यदि गोरे रंगके बालककी अभिलाषा हो तो चावलकी खीर खावे. गेहुँए रंगका बालक चाहे तो दही चावल खाय. लाल रंगका बालक चाहे तो घी अधिक खाय. पंडित बालक चाहे तो मधु चॉवल खाय. पंडिता कन्या चाहे तो तिल चावल खाय. वीरपुत्र चाहे तो वीररसकी कथा पढे और अपने बालकके वीर होनेकी बातें दूसरोंसे करती रहे. बुद्धिमान् और सुशील बालक चाहे तो विद्याकी चर्चा करती रहे और बुद्धिमान् व सुशील पुरुषोंके इतिहास पढती और सुनती रहे. एवं गानेवाला बालक चाहे तो गाना सुनती रहे. कवि बालक चाहे तो छन्द प्रबन्ध सुनती रहे. गणितज्ञ बालकको अभिलाषा हो तो गणित करती रहे. एवं जिसको जैसा बालक चाहिये उसी अनुसार प्राप्त हो सकता है. यह ईश्वरीय नियम है. इस विषयमें अनेक दृष्टान्त देख देखाके हैं परंतु विस्तार होनेसे यहां लिखनेकी आवश्यकता नहीं. गर्भिणी स्त्रीको पुरुषसंग कदापि नहीं करना चाहिये. क्यों कि प्रसंग करना तो सन्तानके निमित्त है सो जब गर्भ होनेसे सन्तानके प्राप्त होनेकी आशा है तब प्रसंगकी क्या आवश्यकता है. प्रसंग करनेसे गर्भको हानि पहुँचती है. ये सामान्य धर्म गर्भिणी स्त्रीके हैं.

धात्री शिक्षा ।

बालक उत्पन्न होनेसे पहले नवम मासमें गर्भवती स्त्रीको सूतिकाभवनमें रखना. जो भवन (घर) भली भांति सुथरा देश कालके अनुसार हो और सब सामग्रीसे युक्त हो. प्रसव होनेसे आठ दश दिन पहले गर्भिणीको कुछ कुछ आनन्द जान पडता है, शरीर हलका होजाता है, श्वास सुखपूर्वक लेती है, क्योंकि बालक नीचे वस्तिदेशमें उतरता है. जिस समय बालक

उत्पन्न होना चाहता है, उस समय गर्भवतीका पेट ढीला होजाता है, जंघामें पीडा होने लगती है, वारवार मलमूत्र उतरनेकी शंका होती है और जलनसी भी पडने लगती है. ऐसा होनेका कारण यह है कि उस समय मूत्रस्थानपर वोझ अधिक पडता है. कभी कभी ऐसा भी होता है, कि गुदस्थानपर विशेष वोझ पडनेके कारण दस्त बन्द हो जाता है, तो उस समय पेडूपर सुहाता सुहाता सेंक देवै और गुदापर रेंडीके तेलकी पट्टी लगावै. प्रसव-काल समीप आतेही गर्भिणीकी कमर पीठकी पसुली (गेड) में पीडा होने लगती है तथा मूत्र करते समय प्रसवस्थानके मुखपर कफ आकर दर्द करता है. योनिमें दुःख होनेका कारण यह है कि वालकको गर्भाशयसे वाहर निकलनेके कारण योनि कभी संकोच कभी विकास पाती है, तव जानना कि शीघ्र वालक प्रगट होगा. उस समय गर्भिणीको यदि सरदी लगे तो उसको चाय पिलाना चाहिये. गर्भस्थानमें दर्द होनेलगे तव स्त्रीको चलना फिरना चाहिये. जिससे उसको खलास शीघ्र और सहजमें हो जाताहै. प्रसव होना यह स्वाभाविक वात है. इस कारण उसको स्वाभाविक रीतिसेही होनेदेना चाहिये. उसमें व्यर्थ बुद्धि लडानेकी आवश्यकता नहीं है. प्रसूताको जो पहले वेदना होती है, उसका उपाय करना नहीं चाहिये कारण इस वेदनासेही गर्भस्थान और दूसरे कई भाग लंबे तथा चौडे होनेसे वालक वाहर आनेमें सुगम होता है. परन्तु दाई चतुर और ज्ञाता चाहिये. प्रसूतिके लक्षण दिखादेतेही गर्भिणीको गरम जलसे स्नान कराना चाहिये. जननेसे पहले दूधकी कांजी उत्तम प्रकारसे वना-कर कंठपर्यन्त पिलाकर उत्तम कोमल विछौनेपर पांवकी पोटली जंघाओंसे भिडाकर औंधी सुलाना योग्य है और धायको चाहिये कि अपने हाथके नख कटा लेवै. यदि प्रसूतिके काममें निपुण हो तो प्रसूतिका काम करै. धायको प्रसूत होनेवाली स्त्रीके

गर्भस्थानके मुखप्रदेशको हाथसे मलना चाहिये. फिर जब गर्भके वन्द और उनके नाडीके वन्द ढीले होनेलगे और कमरके पिछले भागमें पीठ पसुली (रीड) वस्तिप्रदेश (पेडू) और मस्तकमें पीडा होनेलगे तब धीरे धीरे मलना. गर्भ मार्गमें आनेलगे तब अधिक मलना और जब वह मुखपर आवे तब उससे भी अधिक मलना, यह क्रिया बाहर आनेतक करनी योग्य है. उचित समय होनेके पहले यदि ठीक ठीक उपाय न कियाजाय तो बालक बहरा, गूँगा, मस्तकविकारी, कास श्वास और शरद्विकारसे युक्त तथा दुर्बल होजाता है. गर्भका मस्तक जननेन्द्रियके मुखमें आतेही प्रसूतिकाको युक्तिसे बांया करवट बदलाना. गर्भस्थ बालकका मस्तक बाहर निकलतेही उसको दाहिने हाथपर लेना, परंतु बलपूर्वक दाबना नहीं चाहिये. जैसे जैसे कंधा, बाह और शरीरके और और अंग बाहर आनेलगें तब पेटपरसे नीचेतक धीरे धीरे हाथसे दबाना. यदि बालकका मस्तकही बाहर दिखाई दे तो उसके कोखसे शनैः शनैः युक्तिपूर्वक अंगुली डालकर बडी सावधानीसे उसको बाहर निकाले. इस क्रियामें कुछभी असावधानी होनेसे बालकका गला बैठजाता है. बालकको तुरन्त सामान्य शीतलजलसे स्नान कराना और उसके गलेका चिकना पदार्थ अंगुलीसे निकाल डालना. कभी कभी बालकके आसपास पतला पर्दा रहता है उसको देखतेही उसी समय नखोंसे फाडकर बालकको अलग करना. ऐसा करनेमें विलंब करनेसे बालक मरजाता है. बालक जन्मतेही उसके श्वासोच्छ्वासक्रिया प्रारंभ होती है और वह रोनेलगता है. उसको श्वासोच्छ्वास ठीक प्रकारसे होता हो तो उसका नाल नाभिसे चार अंगुलके अन्तरपर चार वा छैतह डोरेसे कसकर बांधना और वैसेही चार अंगुलके फासलेपर दूसरा वन्द लगाना फिर इन दोनों वन्दके बीचमें कैंचीसे काटना. इस प्रकार नाल काटनेसे रक्तस्राव नहीं होता. नाल काटनेपर खैरीसे संलग्न

नालका टुकडा एक स्त्रीको बलपूर्वक पकडना चाहिये, ऐसा न करनेसे नालका भाग फिर भीतर चलाजाताहै. बालक जन्मतेही यदि न रोवे तो उसको धीरेसे एक चिकोटी काटकर रुलाना जो न रोवै तो जानना कि बालक अभी हांफता है. जबतक बालक हांफता रहै तबतक नाल नहीं काटना. हांफना बन्द करनेका उपाय यह है कि बालकके मुखमेंसे लार निकालडाले फिर बालकके मुखपर शीतल जलके चार पांच छींटे देवै तो बालक रोनेलगताहै. तब भी न रोवै तो बालकको शीतल जलमें डबोकर तुरन्त निकालना, तो चौंककर बालक रोने लगता है. इससे भी न रोवे तो गरम शीतल जल अलग अलग रखकर शीतलमें डुबोय गरममें थोडी देर रक्खै. यदि इससे भी न रोवे तो उसके पांजरको हाथोंसे दबाय अपने मुखसे उसके मुखपर धीरे फूंक देनी चाहिये. फूँकते समय हाथ छोड दे और बालकको दाब दे. तब भी न चेतै तो उसके नाक और तालुको सुरसुरावे और धीरे धीरे थपकी देवै फिर नाल काटे. जो बालक होकर नीला पडगया हो, रोता न हो तो ठोडीकी ओरसे नालको तीन अंगुल छोडकर काट देना. अधिक लोहू न गिरनेदे. कोई बालकको रुलानेको थोडी रुई तेलमें डुबाय दीपकपर सेंककर उसका धुवाँ बालकको सुँघाते हैं, इससे पृथक् क्रिया रुलानेकी नहीं चाहिये. नाल काटनेपर ध्यान रहे कि पेटमें दूसरा बालक तो नहीं है. क्योंकि जोरिया बालकोंका नाल एकही होता है. जो नालमें दूसरी ओर गांठ न दीजाय तो लोहू बहकर दूसरा बालक मरजाता है. नालको नरम कपडेकी पट्टीमें लपेटकर उसके पेटपर पट्टी बांधना. कपडेका जो भाग नालमें लगै वहांपर मीठा तेल लगाना, ऐसा करनेसे एक दो दिनमें अपने आप गल जाता है. नाल गलकर गिरजानेपर नाभिसे खून आने लगै तो रुई जलाकर की राख लगाना. जन्मनेपर दो तीन दिन बालकको बताशा

कि प्रायः लोग धनादि-पदार्थोंमें ऐसे-बँधे हैं कि एक पैसा भी उसमेंसे कम नहीं करसकते. इसका उपायही क्या है. यदि है तो यही है कि मनमें इस बातका विचार करे कि हमारे पीछे यह हमारा संचित धन धराही रहजावेगा. यदि कोई पावेगा तो वह व्यर्थ व्यय करेगा. इससे जो धर्म हम इस धनसे करजावेंगे वही हमारे साथ होगा इत्यादि. दूसरी आसक्ति यह कि अनेक जन इस संसारमें ऐसे हैं कि किसी स्त्री अथवा बालककी सुन्दरतामें मनको लगाकर अनेक प्रकारके क्लेश सहते हैं. यह एक ऐसा दुर्व्यसन है कि पहले कुछ समय तो अपने प्रियदर्शन आदिसे कुछ सुख प्राप्त होता है फिर विना दुःखके और कुछ लाभ नहीं होता. क्योंकि क्षण क्षणपर यही भ्रम रहता है कि हमारा प्रिय किसी दूसरेके मोहमें न खिंचा हो. अथवा हमारे प्रेमसे हटाकर कोई दूसरा पुरुष अपनी ओर न खींचले. कभी कभी उसके तन मन और बोलचालमें ऐसी वृथा शंकाएँ उत्पन्न होजाती हैं कि किसी दूसरेको स्वप्नमेंभी ऐसी शंकाएँ उत्पन्न नहीं होसकतीं. कभी कभी वह प्रेमी पुरुष अपने प्रियसे सन्तप्त होकर यह नियम भी करलेताहै कि अब मैं मृत्युपर्यन्त इसका दर्शन नहीं करूंगा. परन्तु फिर शीघ्रही अपने नियमको तोडकर प्रियके सन्मुख दीन होनेलगता है. यदि उस प्रेमी अथवा सम्बद्ध पुरुषके अवगुण लिखे जायँ तो लिखनेमें बहुत विस्तार होजाय परन्तु यहां केवल मात्र अवगुण जो बहुत भारी हैं वे आगे प्रकट करते हैं.

१ प्रेमी पुरुषको अपने प्रियके चिन्तनके विना अन्य किसी कार्यका अवकाश नहीं रहता है.

२ प्रेमी पुरुष सदा चिन्ता, भय, शोकमें प्रेमयुक्त रहता है.

३ उसकी आयु सामान्यप्रकारके जडके सदृश हेरफेरही वृथा नष्ट हो जाती है. अपने प्रियके संयोग वियोगमें यह सुध नहीं रहती कि कल सूर्य निकला और कब अस्त हो गया और आज दिन हमने क्या काम बनाया.

४ सम्बद्धपुरुष जगत्में प्रायः सबहीको अपना शत्रु समझने लग जाताहै कि सब कोई हमारे प्रियको ताकता है.

५ सम्बद्धपुरुष व्यर्थ शंकाएँ उठाकर श्वासश्वास चिंताग्निमें दग्ध होता है और उसकी निवृत्तिका कुछ उपाय नहीं कर सकता है.

६ सम्बद्धपुरुष अपने प्रियके विना किसी अन्य पुरुषकी समीपता नहीं चाहता. किन्तु सबको विषवत् जानता है.

७ सम्बद्धपुरुष आठों पहर उन्मत्तोंकी नाईं चुपचाप और उदासीन रहता है. योग्य है कि पुरुष इस दुःखसे सदैव बचता रहे.

यद्यपि इस रोगकी चिकित्सा तो बहुत कठिन है परंतु इस रोगीको अपने प्रिय तथा उसके संयोगजन्य सुखमें सदा दोष ढूंढते रहना चाहिये. अथवा हठ करके तुरन्त इस रोगीको उस देशमें लेजावे कि जहां प्रियका सन्देश तक न पहुँचसके. यद्यपि अदर्शन आदिसे कुछ काल तो वह बहुत सन्तापयुक्त रहेगा, परन्तु अन्तमें अवश्य धैर्य और शान्ति होजावेगी. यह अत्रक कामरोगका वर्णन किया.

आगे परत्रक काम रोग वर्णन करते हैं. दूसरा परत्रक काम यह है कि श्रवण किये हुए परलोककी कामना और पवित्रताके निमित्त सदैव अपनेको व्रती और हठी विवाहरहित एकाकी तथा सर्वत्र प्रकारके आवश्यक आनन्दसे अत्यन्त वर्जित रखना. विरागी और तपस्वीलोग तो भोगोंके अत्यन्त त्यागको मोक्षका कारण कहते हैं. सो भोगोंकी अत्यन्त कामना तो हम भी श्रेष्ठ समझते हैं कि जिनका नाम आसक्ति है. परन्तु आवश्यक आनन्दका त्याग हम अच्छा नहीं समझते. जैसा कि विवाहादिके अत्यन्त त्यागमें हम अनेक दोष देखते हैं. प्रथम तो यह बात अत्यन्त असम्भव है कि कोई मनुष्य मूत्रपुरीषके विसर्गकी नाईं वीर्यके विसर्गको आवश्यक न समझे. द्वितीय यदि कोई रोकना भी चाहे तो

है कि आर्किंचन साधुके विना कि जो केवल - देहस्थितिको चाहता और उसके लिये केवल अन्न वस्त्रमात्रकी कामना रखके अन्य उद्यम नहीं करता. परन्तु उस आर्किंचनसाधुको भी उचित है कि अन्नवस्त्र उसीका ले कि जिसको कुछ भली शिक्षा करैं और जिसको अन्न वस्त्र देनेकी पूर्ण श्रद्धा हो, जहांलों होसके भी-खही न मांगै. भीख मांगनेका सबको दोष है. इसी भांति जो लोग उपहास, ठट्ठा, स्वांग, भाँडपन आदिकके आश्रय आजीविका करते हैं वे सर्वदा निन्द्य गिनेजाते हैं क्योंकि उत्तम जनोंने नौ प्रकारसे पेट पालनको बहुत निन्द्य और कुवृत्तिरूप माना है. १ भीख मांगनेसे, २ नटविद्यासे, ३ नाचने आदिसे, ४ भांडपनसे, ५ कुटिनीपनसे, ६ वेश्यापनसे, ७ छलसे, ८ द्यूत (जुवांखेलने) से और ९ चोरीसे. चोरी दो प्रकारकी होती है एक तनसे दूसरी मनसे. तनसे चोरी यह है कि दूसरेकी वस्तुको छिपाकर हरण करलेना और मनसे चोरी यह है कि मिथ्यालाप द्वारा धनीके मनको भय वा लोभ देके उसके हाथों उसका पदार्थ समक्षही हरलेना. यहां जो कोई चोरी करनेवाला यह कहे कि जहां राजभय प्रजाभय और निन्दादिका भय हो वहां चोरी न करै और जब किसीका भय न हो और जहां कोई देखता सुनता न हो वहां चोरी करनेमें क्या दोष है ? इसका ठीक उत्तर यह है कि धनका हरना तो किसी कार्यके निमित्त होता है. सो ज्ञानवान् पुरुषके तो ऐसा कोई कार्यही नहीं रहता, कि जिसके पूरा करनेको चोरी वा झूंठ, छल अथवा कपट करना अथवा हिंसा करनी पडे. क्योंकि वह ऐसे काम करता है जो निरुपद्रव पूरे होसकें. और जो अज्ञानी जीव बहुत कामना और कार्योंके घेरेहुए होते हैं, कि जिनको चोरी आदिक करनीपडे. उनके शिरपर परमेश्वरका भय खडा है कि जो उनको गुप्तमें चोरी नहीं करनेदेता. ज्ञानवान् पुरुषको यह भी निश्चय है कि

गुप्त स्थानमें चोरी करना अथवा मिथ्यालाप और छलद्वारा समक्षही किसीके पदार्थको हरलेना उस पुरुषको तो दुःखी करो वा न करो परन्तु अनेक प्रकारके अनर्थ और दुःख वह इस छल करनेवालेके शिरपरही खडे करदेता है. जैसा कि सुनो, चोरी वा छल आदिसे प्राप्त किये हुए धनसे प्रथम तो सदाकाल मनमें भय और कम्प बनारहता है. कि मेरा यह अपकर्म कभी प्रकट न होजावे, दूसरे ऐसे निर्यत्न धनलाभसे अनेक खोटे संकल्प और भोग मनमें भरजाते हैं कि जिनसे सारा आयु दुःखसहित व्यतीत हो. तीसरे जब एक बार चोरी वा छलद्वारा मुख मीठा होगया, तब सदा उसी कामको अच्छा समझेगा और फिर कभी पकडा भी अवश्य जावेगा इत्यादि. अब दूसरा उत्कर्ष नाम रोग कहथा अर्थ उसका यह है कि चाहे यथार्थ शुचि प्राप्त भी होजावे तो भी उसको बढानेके निमित्त देहको मलमलकर दुःखी होते रहना. इस रोगके होनेपर यही विचार लेना उचित है कि किसी कार्यकी भी अत्यन्त अधिकता ठीक नहीं. जहांलों हो सके सर्व व्यवहारोंको समभावपर रखना चाहिये. इस उत्कर्षनाम रोगके बढजानेसे संशय, भ्रम, संकोच ये तीन रोग उत्पन्न होजाते हैं. इनमें संकोच रोगके बढ जानेसे विद्रोह, नैर्घृण्य, पक्षपात ये तीन रोग उत्पन्न होजाते हैं. इन सबका वर्णन विस्तारपूर्वक लिखा जायं तो एक पुस्तक बनजाय और प्रसंग छूटजाय इस कारण इस विषयकी एक पुस्तक 'आत्मसंशोधन' नामक लिखकर प्रकाशित करेंगे. आत्मसम्बंधी कामरोग संक्षेप रीतिसे लिखकर अब हम देह-सम्बन्धी कामरोग संक्षेप रीतिसे लिखते हैं. शरीरसे इस प्रकार कामरोगकी उत्पत्ति होती है कि अधिक स्निग्ध पदार्थ खाना, घृतसहित दुग्ध आदि पदार्थ सेवन करना, रसकथा सुनना, बेकाम अकेले बैठना, जिसमें अंग रगडे ऐसे काम करना जैसे मशीन चलाना, पांव उठाकर लटकते हुए ऊंचेपर बैठना.- गीले

है कि अकिंचन साधुके विना कि जो केवल देहस्थितिको चाहता और उसके लिये केवल अन्न वस्त्रमात्रकी कामना रखके अन्य उद्यम नहीं करता. परन्तु उस अकिंचनसाधुको भी उचित है कि अन्नवस्त्र उसीका ले कि जिसको कुछ भली शिक्षा करै और जिसको अन्न वस्त्र देनेकी पूर्ण श्रद्धा हो, जहांलों होसके भीखही न मांगे. भीख मांगनेका सबको दोष है. इसी भांति जो लोग उपहास, ठट्टा, स्वांग, भाँडपन आदिकके आश्रय आजीविका करते हैं वे सर्वदा निन्द्य गिनेजाते हैं क्योंकि उत्तम जनोंने नौ प्रकारसे पेट पालनको बहुत निन्द्य और कुवृत्तिरूप माना है. १ भीख मांगनेसे, २ नटविद्यासे, ३ नाचने आदिसे, ४ भांडपनसे, ५ कुटिनीपनसे, ६ वेश्यापनसे, ७ छलसे, ८ यूत (जुवां-खेलने) से और ९ चोरीसे. चोरी दो प्रकारकी होती है एक तनसे दूसरी मनसे. तनसे चोरी यह है कि दूसरेकी वस्तुको छिपाकर हरण करलेना और मनसे चोरी यह है कि मिथ्यालाप द्वारा धनीके मनको भय वा लोभ देके उसके हाथों उसका पदार्थ समक्षही हरलेना. यहां जो कोई चोरी करनेवाला यह कहै कि जहां राजभय प्रजाभय और निन्दादिका भय हो वहां चोरी न करै और जब किसीका भय न हो और जहां कोई देखता सुनता न हो वहां चोरी करनेमें क्या दोष है ? इसका ठीक उत्तर यह है कि धनका हरना तो किसी कार्यके निमित्त होता है. सो ज्ञानवान् पुरुषके तो ऐसा कोई कार्यही नहीं रहता, कि जिसके पूरा करनेको चोरी वा झूँठ, छल अथवा कपट करना अथवा हिंसा करनी पडे. क्योंकि वह ऐसे काम करता है जो निरुपद्रव पूरे होसकें. और जो अज्ञानी जीव बहुत कामना और कार्योंके घेरेहुए होते हैं, कि जिनको चोरी आदिक करनीपडे. उनके शिरपर परमेश्वरका भय सदा है कि जो उनको गुप्तमें चोरी नहीं करनेदेता. ज्ञानवान् पुरुषको यह भी निश्चय है कि

गुप्त स्थानमें चोरी करना अथवा मिथ्यालाप और छलद्वारा समक्षहीं किसीके पदार्थको हरलेना उस पुरुषको तो दुःखी करो वा न करो परन्तु अनेक प्रकारके अनर्थ और दुःख वह इस छल करनेवालेके शिरपरही खडे करदेता है. जैसा कि सुनो, चोरी वा छल आदिसे प्राप्त किये हुए धनसे प्रथम तो सदाकाल मनमें भय और कम्प बनारहता है. कि मेरा यह अपकर्म कभी प्रकट न होजावे. दूसरे ऐसे निर्यत्न धनलाभसे अनेक खोटे संकल्प और भोग मनमें भरजाते हैं कि जिनसे सारा आयु दुःखसहित व्यतीत हो. तीसरे जब एक बार चोरी वा छलद्वारा मुख मीठा होगया. तब सदा उसी कामको अच्छा समझेगा और फिर कभी पकडा भी अवश्य जावेगा इत्यादि. अब दूसरा उत्कर्ष नाम रोग कहथा अर्थ उसका यह है कि चाहे यथार्थ शुचि प्राप्त भी होजावे तो भी उसको बढानेके निमित्त देहको मलमलकर दुःखी होते रहना. इस रोगके होनेपर यही विचार लेना उचित है कि किसी कार्यकी भी अत्यन्त अधिकता ठीक नहीं. जहांलो हो सके सर्व व्यवहारोंको सममावपर रखना चाहिये. इस उत्कर्षनाम रोगके बढजानेसे संशय, भ्रम, संकोच ये तीन रोग उत्पन्न होजाते हैं. इनमें संकोच रोगके बढ जानेसे विद्रोह, नैर्घृण्य, पक्षपात ये तीन रोग उत्पन्न होजाते हैं. इन सबका वर्णन विस्तारपूर्वक लिखा जायं तो एक पुस्तक बनजाय और प्रसंग छूटजाय इस कारण इस विषयकी एक पुस्तक ' आत्मसंशोधन ' नामक लिखकर प्रकाशित करेंगे. आत्मसम्बंधी कामरोग संक्षेप रीतिसे लिखकर अब हम देह-सम्बन्धी कामरोग संक्षेप रीतिसे लिखते हैं. शरीरसे इस प्रकार कामरोगकी उत्पत्ति होती है कि अधिक स्निग्ध पदार्थ खाना, घृतसहित दुग्ध आदि पदार्थ सेवन करना, रसकथा सुनना, बेकाम अकेले बैठना, जिसमें अंग रगडे ऐसे काम करना जैसे मशीन चलाना, पांव उठाकर लटकते हुए ऊंचेपर बैठना,- गीले

कपडे पहिनना, एकान्तमें स्त्रीके समीप होना, स्त्रीके साथ शयन करना, रसीली पुस्तकें देखना, नंगे चित्र देखना, जागकर शय्या-पर व्यर्थ पडेरहना, मलमूत्रको रोकना, अधिक बैठनेका काम करना, सवारीपर चढना, अजीर्ण होना, अधिक रात्रि व्यतीत हुए भोजन करना, कामध्वजके सुपारीपर श्वेत मल जमजाना, मांस, मदिरा, लवण, खटाई, मिर्च, मसाला, हुक्का और चाय, सिरका इनका अधिक सेवन करना ये सब कामको जगानेवाले हैं. कामको जगानेवाले कामोंसे बचना चाहिये, और दंडकसरत करना, पढने लिखनेमें सर्वदा मनको लगाये रखना, रासकथाओं और कामीजनोंके संगसे पृथक् रहना, सामान्य और शीघ्र पचने योग्य भोजन करना, वारवार लघुशंका करना, स्त्रीको न देखना, कामध्वजको शीतल जलसे भलीभांति साफ रखना, यथाशक्ति परिश्रम करते रहना, ये सब कामको रोकनेवाले हैं.

हस्तमैथुन।

यह रोग प्रायः छोटी अवस्थासेही कुसंगतिके कारण उत्पन्न होजाताहै और इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त होजाता है कि इसका छूटना बहुत कठिनही नहीं, बल्कि असंभवसा होजाता है. इस रोगमें बडी अद्भुत बात यह है कि इसके दोषोंको जानकर और इससे हानि समझकर भी इसका रोगी इस दुर्व्यसनसे पृथक् नहीं होता. एक पढा लिखा नव युवक बडे प्रेमके साथ एकान्तमें इस कामको कररहाथा कि इतनेमें हम अकस्मात् उधर पहुँचे और उसको यह कर्म करते देखलिया. जब उस नवयुवकसे हमने पूछा कि भाई! यह अनुचित काम क्यों कर रहेथे इसमें तो बडी भारी अज्ञानता है. वृथा वीर्य खोना शरीरको निर्बल करना है, यह सुनकर उसने कहा कि–

एकान्ते वा नदीतीरे ह्यथवा शून्यमन्दिरे।
हस्तक्रिया प्रकर्तव्या भार्यायाः किं प्रयोजनम् ॥ १॥

नवयुवकका यह कथन सुनकर हमने कहा, वाह भाई! आपने श्लोक तो खूब सुनाया. परन्तु यह तो बताइये यह श्लोक किस धर्मग्रन्थका है? अपना प्रयोजन साधननिमित्त तुम्हारे साथी लोग अपने मनको ऐसे ही समझा लेते हैं. इस बुद्धिसे तो खेती करनेवाले मूर्खकी बुद्धि अच्छी है कि जो अपने बीजको अपनेही खेतमें समयानुसार डालता है, फिर उससे अनेकगुणा बीज बढाकर अपने शरीरका पालन करता है और दूसरोंकोभी लाभ पहुँचाता है. अपने बीजको कभी नष्ट नहीं होनेदेता है. इतनी बात सुनतेही वह नवयुवक निरुत्तर होकर चलागया. इसी प्रकार आजकलके प्रायः नवयुवक इस रोगमें ग्रसित होकर अपने शरीरको नष्ट भ्रष्ट कर डालते हैं. इस रोगका रोगी तुरन्त पहिचान लिया जाता है. क्योंकि इस रोगीके मुखकी कान्ति जाती रहती है. नेत्र गढेमें पैठेसे मालूम होते हैं. गाल पिचक जाते हैं. हृदय धडकता रहता है. पसुरी दिखानेलगती हैं. हृदयके ऊपर हड्डीपरका मांस सूखजाता है. इस कर्मके निमित्त एकान्त ढूंढता रहता है. ये ऊपरी लक्षण प्रत्यक्ष देखनेमें आते हैं. इस रोगके भीतरी दोष ये हैं, कि इस रोगके अधिक बढजानेसे शरीरसे बल निकल जाता है, वीर्य पतला हो जाता है, कि जिससे विना निकाले भी रात्रिसमय स्वप्नमें निकलजाता है, क्योंकि जो वीर्य शरीरसे निकलाही करता है उसको रोकनेके लिये यत्न करनेपर भी वह रुक नहीं सकता. इस बातको तो सबही जानते हैं कि शरीरका बल पराक्रम वीर्यही है, और बलपराक्रमसे ही यह शरीर चलरहा है. तथा इसके रोगीका हृदय निर्बल होजाता है. शक्ति क्षीण हो जाती है. मस्तिष्कशक्ति स्मरणशक्ति घटती रहती है. वीर्यके क्रीम (कीडे) नष्ट होजाते हैं कि जिससे सन्तान होनेमें बाधा पहुँचती है. प्रथम तो इन्द्री शिथिल होजाने और जड पतली होजाने तथा धरनतक न पहुँचनेके कारण,

इस रोगीके सन्तानही नहीं होती. यदि होती भी है तो अति निर्बल और इस रोगीको स्त्रीरमण करनेकी शक्ति न रहनेसे उसको लज्जित होनेपडता है. और स्त्रीका चित्त भी दुःखी रहता है. ऐसी दशामें स्त्रीका विगडजाना भी संभव है. क्योंकि हस्तमैथुनवाला पुरुष धीरे धीरे पूरा नपुंसक होजाता है, उसका सम्पूर्ण पुरुषत्व नष्ट होजाता है, जबतक पुरुषत्व नष्ट न होनेपावे तबतक चिकित्सा द्वारा इस रोगको दूर करना चाहिये. सबसे पहली चिकित्सा तो इस रोगकी यह है कि जबसे अपनेको इसके दोष प्रगट होजावें और हानि होती देखै तो इस कर्मको छोडनेका प्रयत्न करे, क्योंकि सहसा इसका छोडदेना कठिन है. यदि सहसा छोडदेवे तो बहुतही अच्छी बात है, छोडदेनेपर भी यदि निर्बलता जानपडे तो नीचे लिखा तिला कामध्वजपर लगाया करे. परन्तु जबतक औषधि प्रयोग करै तबतक बहुत शीतल जलसे कामध्वजको बचाये रहे. ढाई पाव धतूरेके अर्कमें १६ अंगुल बारीक सफेद निर्मल कपडा लेके २० दिनतक भिगोये रक्खे इक्कीसवें दिन उसको निकालकर आधी छटाँक तिलोंके तेलमें मन्द आँचसे पकावे अनन्तर उसको लोहेकी सीकमें लटकाय काँसेकी थाली नीचे रख एक ओरसे अग्नि लगादेवे, वस्त्र जलकर जो तेल थालीमें टपककर गिरे उसको एक शीशीमें रखकर प्रतिदिन उस तेलको कामध्वजपर मले. परन्तु कामध्वजका शिर छोडकर तेल मलना चाहिये. इसी प्रकार आकके दूधमें वस्त्र भिगोय एक रात दिन उसीमें रक्खे, अनन्तर उसको सुखाय घीमें तर करके बत्ती बनाय जलावे, नीचे काँसेकी थाली रख टपकेहुए घीको शीशीमें बन्द करदेवे. फिर प्रतिदिन दो बार थोडासा शिर छोडकर कामध्वजपर मलकर ऊपर एरंडके पत्ते अथवा बँगलापान बाँधदेवे. खानेके निमित्त औषधी यह है कि तालमखाना, असगन्ध, गोखरू, शतावरी, खरैटीके बीज, सफेद

मूशली एक एक तोला लेवै, मिश्री एक छटाँक इन सबको वारीक पीसकर फंकी बनालेवै. एक तोला औषधि गाय अथवा भैंसके दूधके साथ खावै. गायका दूध तो उचितही है, न मिलनेपर भैंसका दूध बलानुमान फंकी फांककर पीवे. दूसरी औषधी यह है कि काली मूशली आधपाव लेके उसको पावभर दूधमें औटावै, जब दूध मिल जावे तब उसको छायामें सुखाकर कूट लेवै और वारीक छानकर उसमें जावित्री डेढ तोला और जायफल डेढ तोला तथा असली कस्तूरी दो माशे भलीभांति पीसकर मिलादेवै. फिर उत्तम शहतमें चासनी करके उडदके बराबर गोली बनालेवै, बलानुमान गाय अथवा भैंसके दूधके साथ एक सप्ताह प्रातःसमय एक एक गोली खाय, फिर दोनों समय एक एक गोली खाय. अन्य भी अनेक औषधि इस रोगपर हैं परंतु यहां संक्षेपसे लिखदियाहै. गुप्त रोग चिकित्सा; ग्रन्थमें विस्तापूर्वक लिखेंगे.

गुदमैथुन ।

इस रोगका नाम लौंडेबाजी भी है. यह प्रायः न्यूनाधिक सब देशोंमें है. यद्यपि अंगरेज सरकारने दोनोंके लिये अधिक समय पर्यन्त दंड नियत कियाहै, तथापि यह कर्म सर्वत्र फैलाहुआहै. लौंडेबाज लोग लौंडेपर अपनी जानतक न्योछावर करदेनेको सर्वदा तैयार रहते हैं. और जैसे बनै तैसे लौंडेको अपने वशमें करलेते हैं. आप खाना नहीं खाते, वस्त्र नहीं पहिनते, परन्तु उसको सजाये रहते हैं, और मेले तमाशे बाजारहाटमें संग लिये फिरते हैं. उनके वशमें वह लौंडाभी ऐसा बेशरम होजाताहै जिसको अपनी बदनामीका कुछ भी ध्यान नहीं रहता. बापदादेका नाम डुबाता है और निर्लज्ज होकर लज्जाको नदीमें बहाता है. दुर्व्यसन में पडकर किसी अच्छी बातका ख्याल दिलमें नहीं लाता है.

यह रोग भी बडा प्रबल है. इसमें दोनों अपना जन्म बरबाद करते हैं. हस्तमैथुनवालेकी जो गति होती है वही गति इस रोगीकी भी होती है. कामध्वजकी और अंडकोशकी नसें ढीली पडजाती हैं. वीर्य बननेमें बाधा होजाती है. जब वीर्यही नहीं बनता और जो कुछ थोडासा बनता भी है वह दुर्व्यसनमें व्यय होजाताहै तो फिर सन्तान कहां और कैसे होसकती है. मैथुनशक्ति कमसे कम चार मिनट पर्यन्त चाहिये सो यदि चार मिनटसे भी कमती हो तो उसको रोगी जानना. हस्तमैथुन और गुदमैथुनवाले पुरुष स्त्रीसे रमण करते हुए दो मिनटभी भलीभांति नहीं ठहरसकें सो उनको रोगी समझकर चिकित्साके योग्य जानना चाहिये. गुदमैथुनवाले पुरुष यदि पश्चात्तापपूर्वक अपने कुकर्मोंसे हाथ समेटलेवें और चिकित्सा करनेकी इच्छा करें तो उनके निमित्त हस्तमैथुनमें लिखे तेल और औषधिको सेवन करना उचित है.

उपदंशक (आतशक) रोग।

पुरुषके शरीरमें लिंग एक स्थूल नाडी है जिसके भीतर तीन छिद्र हैं, एकसे मूत्र आता है, दूसरेसे वीर्य अंडकोशसे लिंगमें आता है, तीसरेसे प्राणवायु जठराग्नि और रुधिर लिंगमें आते हैं तब लिंगकी नसें फूलती हैं और वह बढताहै, तथा कडा होता है. उसकी ठीक लंबाई आठ अंगुल है. सबसे अधिक लम्बाई बारह अंगुल है. छे अंगुलसे कमती होनेपर धरनतक नहीं पहुँचता, उसके बढानेके निमित्त उपाय करना चाहिये. लिंगमें उपदंश (आतशक) और मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) ये दो बडे भारी रोग होते हैं, इन रोगोंके होनेसे और बढजानेसे शक्तिका विनाश होजाताहै अर्थात् वह पुरुष स्त्रीके योग्य नहीं रहता है. यह उपदंश रोग बडा भयंकर होताहै. इसकी समता नरकाग्निसे

देनाचाहिये. दूषितयोनिवाली स्त्रीसे संभोग करने और नख आदिकी चोटसे लिंगपर फुंसी निकल आती हैं. फिर वे फुंसियां बढकर घावके रूपमें होजाती हैं और उनका विष रुधिरमें मिलजाताहै, तब शरीरपर चकत्ते पडजाते हैं, बाल गिरने लगते हैं, तालू फटने लगता है, हाथ पांवोंमें जलन रहती है, दुर्गन्धित पीव निकलता रहताहै. जब यह रोग-बहुतही बढ जाताहै, तब सारा शरीर फूटजाताहै, बडी बेचैनी होती है. नाक सडकर गिर पडती है और इन्द्रीकी तो ऐसी दुर्गति होजाती है कि जिसका वर्णन नहीं किया जाता. इस रोगकी चिकित्सा बडी सावधानीसे करना चाहिये. उचित है कि पहलेही जब इस रोगकी उत्पत्ति जानपडे और फुंसी निकलें उसी समय औषधी करें. फुंसियोंके निवारणार्थ छोटी इलायचीके दाने, मुर्दासंख, शुद्ध रसकपूर, बंगलापानका रस ये छे छे माशे, काली मिर्च तीन तोले, गायका घी पावभर लेवे. इन सबको लेके नीमके सोंटेसे फूलके कटोरेमें औषधियोंका चूर्ण कर घी मिलाय बीस प्रहर घोटै और बडे मुँहकी शीशीमें धरै. सायं प्रातः बंगलापानकी बीडीके साथ दो दो रत्ती मात्रा खाय और घावपर भी लगावै तो पन्द्रह दिनमें रोग समूल नष्ट हो जाता है.

तथा-त्रिफला अथवा नींबके पत्ते जलमें पकाय उसी जलसे घावको प्रतिदिन धोवै और त्रिफला अथवा सुपारी जलाकर उसकी राख घावपर छोडै.

अथवा-हर्र और रसौतको जलसे घिसकर घावपर लगावै ऊपरसे मुर्दाशंख बारीक पीसकर बुरकावै.

तथा-भेंडीका नैनू आधी छटॉंक नींबके पत्तोंसे पकाये हुए जलमें सौ बार धोवै और उसमें सफेद कत्था, सेलखरी, शीतलचीनी, सफेद इलायचीके दाने तीन तीन माशे पीसकर नैनूमें मिलाय घोटकर मल्हम बनालेवै. इस मल्हमको घावपर दिनमें तीन चार बार लगानेसे घाव सूखजाता है.

अथवा-सेंदुरुफ, रसौत छे छे माशे, गायका घी दो तोले सौबार धोय उसमें मिलाय मल्हम बना लेवे इस मल्हमको दिनमें तीन चार बार लगावे.

तथा-सेंदुरुफ, छोटी इलायचीके दाने, कपूर, रसकपूर, तवाखीर, चौकिया सुहागा, गिले अरमनी, मुर्दाशंख ये तीन माशे लेके पीस छान चूर्ण करे, सौ बार धोये हुए गायके घीमें मिलाकर मल्हम बना लेवे. इस मल्हमके लगानेसे घाव अच्छा होजाता है.

अथवा-छोटी इलायचीके दाने एक तोला, टोपीवाली लौंग एक तोला, रसकपूर छे माशे इनको तुलसीके रसमें चार दिन खरल करे और मटरके बराबर गोली बनावे. एक गोली प्रातःसमय गायके दूधकी मलाईमें लपेटकर निगलजाय तो तीन सप्ताहमें रोग समूल नष्ट हो जाताहै.

तथा-मुर्दाशंख छे माशे सिंगजराउ एक तोला, रोहिणी तीन माशे, शीतलचीनी तीन माशे, सफेद इलायचीके दाने एक सौ ग्यारह, सफेद कत्था एक तोला, रसकपूर छे माशे, माजूफल एक, इन सबको पीस छान झरबेरीके बेरके बराबर गोली बनावे. एक गोली प्रातःसमय जलके साथ निगलजावे परंतु तीसरे तीसरे दिन गोली खावे.

जुलाब लेनेकी आवश्यकता हो तो त्रिफला आधी छटाँक, चूक आधी छटाँक, सनाय एक छटाँक लेके पीस लेवे और झरबेरीके बेरकी बराबर गोली बनावे. पहले तीन दिन घीके साथ मूँगकी पतली खिचडी खावे तब जुलाब लेवे. बलानुसार एक वा दो गोली प्रतिदिन सबेरे खाय. दो दिन अथवा तीन दिनमें दूषित मल निकलकर शरीर शुद्ध हो जायगा. रुधिरको शुद्ध करनेके निमित्त चिरायता एक छटाँक शाहतरा, शरफोंका, जंगी हर्र, धनियाँ, दो दो तोले लेके दो सेर जलमें औटाय आधा रह जानेपर उतारकर छान लेवे. एक छटाँक इस अर्कमें छे माशे

शहत मिलाय प्रतिदिन प्रातःसमय पीनेसे रुधिरदोष शान्त हो जाता है.

उपदंशरोगमें पथ्य।

वमन, विरेचन, (कै कराना, दस्त कराना), लिंगकी मध्यगामिनी नाडीका वेधन, जोंक लगवाना, सेचन, प्रलेप, जौ, चावल, मूंगका रस, घी, करेला, सहिंजनेकी फली, परवल, नवीन मूली, कडुए कपैले रस, शहत, कुएँका जल, तिलोंका तेल, ये सब उपदंश (आतशक) रोगमें हितकारी हैं, परंतु यहां प्रथम चार प्रयोग वमन विरेचन आदि तब करै कि जब रोग अधिक बढगया हो. जबतक मलहम और औषधि खानेसे काम निकलजाय तबतक कै, दस्त, नाडीका वेधन और जोंक लगाना ये काम न करै.

उपदंशरोगमें अपथ्य।

दिनमें शयन, मूत्रवेगका रोकना, भारी अन्न, अधिक गरम पदार्थ, मैथुन, गुड, खटाई, छाछ ये उपदंश रोगमें अपथ्य (अहितकारी) हैं.

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोग।

मूत्रकृच्छ्र रोग भी अति भयंकर रोग है. यह रोग मूत्रवेग रोकनेसे, स्वप्नदोषसे, दूषित योनिवाली स्त्रीके संग रमण करनेसे अथवा कभी कभी अधिक गरम वस्तु खाने और कडी धूपमें चलनेसे, तथा गर्भवतीसे विषय करनेसे, अधिक हस्तक्रियासे, श्वेतप्रदररोगवाली स्त्रीका मवाद लगनेसे, पेडूको अधिक शीत लगजानेसे, अधिक समयतक मैथुनके अभ्याससे, अधिक मदिरा पीनेके स्वभावसे, गिल्टियोंके रोग बढजानेसे, लाल मिर्च अधिक खानेसे, विषयकी इच्छा बढजानेपर इच्छा पूरी न होनेसे. वीर्य भीतरही

रुकजानेसे पृथक् पृथक् प्रकारसे यह रोग उत्पन्न होजाताहै. इनसे पृथक् अन्य भी कारण इस रोगकी उत्पत्तिके हैं और इस रोगको जाननेके लिये भी अनेक उपाय हैं उनको यहां विस्तारभयसे नहीं लिखेंगे, यहां तो संक्षेप रीतिसे लिखाहै. गरम वस्तुओंके अधिक खाने दौडने और अधिक परिश्रम करनेसे और इन्द्रीमें वीर्य रुकजानेसे जब यह रोग प्रगट होजावे तो बिनौले दो तोले रात्रिसमय भिगोकर सबेरे आधसेर जलमें एक तोला कच्ची शकर मिलाय पीवे और खटाई, लाल मिर्च, तेल न खाय.

मूत्रकृच्छ्ररोगका दूसरा कारण यह है कि इसी रोगवाली स्त्रीसे बिना जाने प्रसंग करनेसे ऐसा जानपडताहै कि इन्द्री भुलभुलमें गडगई. ऐसा कुकर्म होजानेसे यह होताहै कि दो तीन दिन उपरान्त मूत्र कठिनतासे उतरताहै. अन्तमें पीव निकलने लगताहै. यदि पीव श्वेत वा पीतवर्ण हो तो सिरसके बीज, कपासके बीज, वकायनकी गूदी एक एक तोला पीसकर वर्गदके दूधमें झरबेरीके बेरकी बराबर गोली बनावे. एक गोली खाकर ऊपरसे पावभर गोदुग्ध पीवे. बादी वस्तु और खटाई आदि न खाय.

तीसरा कारण इस रोगके उत्पन्न होनेका यह है कि बहुतेरे जन कईबार प्रसंग करते और सोरहते हैं और जागजागकर स्त्रीको लिपटाकरते हैं. जो धातु रगके भीतर रहजाता है वह तेजाबके समान प्रकृतिवाला होकर प्रातःसमय तक घाव करदेता है. एवं जो मूर्खजन पशुवत् मैथुन करते हैं उनकी दशाका क्या ठिकाना है. जब मूत्र नहीं उतरताहै तब पिचकारी लगवानेसे लिंगका छिद्र बढजाताहै और पिचकारीका पानी नीचे उतर जानेसे अंडकोश बढजातेहैं. उसकी औषधि यह है कि कतीराके बीज, तालमखाना एक एक तोला पीसकर

पावभर गायके दूधके साथ शक्कर मिलाय सेवन करे. सर्वदा पिचकारीसे इन्द्री जुलाब उत्तम है, कवावचीनी, खेतचीनी, दारचीनी, छोटी इलायची, सफेद जीरा एक एक तोला, शोराकलमी दो तोले, सफेद मिश्री चार तोले पीस छानकर रक्खे और एक सेर गायके दूधमें चार सेर जल मिलाकर आठ आठ माशे दवाके साथ थोडा थोडा जल मिलाय दूध बराबर पीवे. जिससे भली भाँति इन्द्री जुलाब होजावै. मूँगकी धोई दाल और भात खावे अथवा दूध भात खावे. दूसरे दिन काहूके बीज, खीरेके बीज, ककरीके बीज छे छे माशे रातको भिगोकर सवेरे मलकर छानके पीवै और दही भात खावै.

तथा-यदि स्त्री रजस्वला हो और वह पुरुषसे अधिक बलवती हो तो उस समय प्रसंग होनेपर भी यह रोग शीघ्र प्रगट होजाता है. उसको शान्तिके अर्थ, बिहीदाना चार माशे रातको भिगोकर सवेरे मलकर छानलेवे और सिंगजराज दो माशे, ईसबगोलकी भूसी छे माशे फाँककर बिहीदानाके लुआवमें सवासेर गोदुग्ध मिलाय ऊपरसे पीवे. मूँगकी दाल रोटी खावे.

तथा-बालक उत्पन्न होने उपरान्त जबतक स्त्री रजस्वला न हो तबतक पुरुषको भूलकरकेभी स्त्रीप्रसंग नहीं करना चाहिये. बालक उत्पन्न होनेपर स्त्री गरम गरम वस्तुएँ खाती हैं. उनकी गरमी स्त्रीके शरीरमें होती है. एवं जो पुरुष गरम वस्तुएँ अधिक खाता हो तो उसके शरीरमें भी गरमी बहुत होती है. ऐसी दशामें कभी पुरुषको कभी स्त्रीको यह रोग प्रसंगसे उत्पन्न होजाता है. उसकी औषधि यह है कि-बालंगाबीज, बिहीदाना, खीरेके बीज, कासनीके बीज, सौंफ, मिश्री छे छे माशे लेके चार चार माशे दोनों समय खाकर ऊपरसे गायका दूध पीवे.

इस रोग और प्रमेहकी यह औषधी भी है कि गुडहलके फूल एक एक बढाकर आठ दिन खाय फिर आठ दिन एक एक घटाके घटाकर खावे.

तथा-यदि इस रोगमें पीडा होने लगीहो तो कलमी शोरा पांच माशे, शीतलचीनी तीन माशे, जलमें पीस एक सेर जलमें आध सेर गायका दूध मिलाकर सबको घोलकर छाने और कई वारमें पीवै तो पीडा दूर हो और मूत्र साफ उतरे. तथा गंदाबिरोजाका तेल डमरूयंत्रद्वारा निकाले उसमें चंदनका तेल मिलाय शक्करके साथ पीनेसे सुजाकरोग अवश्य शान्त होजाता है.

तथा-मखाना, नीमकी अन्तर्छाल, बबूरका गोंद ये आध आध पाव लेके पहले बबूरके गोंदको गायके घीमें फुलायले, अनन्तर सबको पीसछानकर छे छे माशेकी पुडिया बनाय एक पुडिया प्रातः एक संध्यासमय गायके दूध और जलके साथ खाय. एक मासपर्यन्त यह औषध सेवन करनेसे रोग समूल नष्ट होजाता है.

तथा-खेतचीनी, छोटी इलायचीके दाने, फटकरी एक एक तोला, कलमी शोरा डेढ तोला, शीतलचीनी दो तोले, सबको पीसछानकर तीन तीन माशेकी पुडिया बनाय लेवै. रातदिनमें चार पुडियां जल मिले गायके दूधके साथ खाय तो मूत्रकृच्छ्र रोग शान्त हो जाताहै.

तथा-सफेद कत्था, फटकरी, कपूर, रसौत, चार चार माशे, सफेद सुरमा एक तोला, सबको एक सेर जलमें घोटकर मिलावे और बारीक कपडेसे छानलेवै अनंतर सायं प्रातः कांचकी पिचकारीसे पिचकारी लेनेसे यह सुजाकरोग शान्त हो जाता है.

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोगमें पथ्य।

वातविकारसे उत्पन्न सुजाकमें तैलादिमर्दन, बस्तिकर्म, स्नेहनकर्म, निरूहण, स्नान, उदरबस्ति, सेचनकर्म करे और पित्तजनित सुजाकरोगमें जलमें पैठकर स्नान तथा बस्ति और विरेचनविधि करे. परन्तु यह विधि ग्रीष्मऋतुमें करना चाहिये. तथा कफजन्य सुजाक रोगमें विरेचन, वमन, स्वेदन, क्षार, यवके पदार्थ,

तीक्ष्ण और गरम द्रव्य देवै तथा त्रिदोष (वात पित्त कफ) जनित मूत्रकृच्छ्रमें पहले मालिश करे फिर जो पूर्व तीनों दोषोंपर कर्म करने लिखे हैं सो करे. मूत्राघातसे उत्पन्न सुजाकमें वातजन्य क्रिया करे. वीर्यके रुकनेसे उत्पन्न सुजाकमें शिलाजीत और शहत मिलाय अवलेह हित है. मलसे उत्पन्न सुजाकमें स्वेदनकर्म चूर्णक्रिया उबटना और बस्ति (सलाई) कर्म तथा पुराने लाल चावल, छाछ, गायका दूध, दही, मूंगका रस, शक्कर, पुराना पेठा, ग्वारपाठा, परवल, अदरख, गोखरू, खजूर, सुपारी, नारियलकी गिरी, हर्र, ताडके वृक्षकी कोंपल, ताडफलकी गुठलीका गूदा, खीरा, छोटी इलायची, पीनेके शीतल पदार्थ, शीतल भोजन, नदीका तट ये सब सुजाकमें पथ्य हैं.

मूत्रकृच्छ्ररोगमें अपथ्य।

स्त्रीप्रसंग, मदिरापान, परिश्रम, हाथी घोडेपर चढना, सब प्रकारके विरुद्ध भोजन, विषम भोजन, पान, मछली, तेलकी भुनी वस्तु, तिलकी खल, तिल, सरसों, हींग, मलमूत्रादि वेगको रोकना, उडद, टेंटी, सब प्रकारके रूखे अतितीक्ष्ण व खट्टे भोजन ये सब सुजाकमें अहितकारी हैं.

क्षयरोग।

मनुष्यके शरीरमें वीर्य एक प्रधान वस्तु है. प्राणोंका पराक्रम इसीको कहते हैं. इन्द्रियोंमें बल पराक्रम इसीसे प्राप्त होताहै. बुद्धिको साहसको बढानेवाला पदार्थ वीर्यही है. यह जब शरीरसे निकलकर स्त्रीके गर्भाशयमें ठीक प्रकारसे पहुँचताहै तो दूसरा शरीर तैयार करदेता है. इस वीर्यमें एक प्रकारके कीडे चपटे स्वच्छ होते हैं, जिनकी पूँछ नीचेकी ओर होती है, जो सूक्ष्मवीक्षणयंत्रसे देखे जा सकते हैं. इन्हीं कीडोंपर सन्तानोत्पत्ति निर्भर है. यह कीडे इन्द्रीसे बाहर निकलकर कई घंटे जीवित रहते हैं.

वीर्यमें और भी ऐसे गुण पायेजाते हैं. जिन जीवोंके वीर्यमें कीडे कम होते हैं उनको अधिक समयतक मैथुन करना पडता है. मनुष्यके युवावस्थामें वीर्यकी उत्पत्ति होती है. युवावस्थासे पहले एक पतला रस होता है जिसमें कीडे नहीं होते, क्योंकि कीडे तो युवावस्थाके साथही वीर्यमें उत्पन्न होते हैं. जिनके वीर्यमें कीडे नष्ट होजाते हैं उनको सन्तानोत्पन्न करनेकी सामर्थ्य नहीं होती, क्योंकि वीर्यके कीडेही सन्तानोत्पत्तिके कारण हैं. और जिसके शरीरमें वीर्यही बननेका क्रम नहीं रहता यही क्षयरोग है. वीर्यके क्षय होजानेको क्षयीरोग कहते हैं. क्षयी रोगकी औषधियोंमें एक औषधी सितोपलादि है जिसको प्रायः सबही जानते हैं और प्रत्येक वैद्यके पास यह औषधी प्राप्त होजाती है.

तथा-सोंठ चार तोले, काली मिर्च दो तोले, असगन्ध आठ तोले, बडी इलायची, नागकेशर, दालचीनी, भारंगी, तेजपात, कचूर, सफेद जीरा, तालीसपत्र, अजवायन, कायफल, जटामासी, नागरमोथा, शीतलचीनी, रासनि, कूट, कुटकी, सफेद हड पांच पांच माशे मिश्री पावभर सब औषधियोंको कूट पीस कपडछान कर चूर्ण बनाले. ये. यह चूर्ण बलानुसार तीन माशेसे छे माशेतक वातजन्य क्षयरोगमें गरम जलके साथ, पित्तजन्य क्षयरोगमें गायके वा बकरीके दूधके साथ, कफजनित क्षयरोगमें शहतके साथ, प्रमेहमें माखनके साथ, पित्तदोषमें गोखरूके चूर्णके साथ खानेसे रोग शान्त हो जाता है.

अथवा-धाईके फूल, आमिली, पीपरि, अजमोद, अनार दाना ये एक एक तोला और चीता, सोंठ, नागकेशर, छोटी इलायची, तेजपात, अजवायन, कलमी दालचीनी, पिपलामूल, सफेद जीरा, सुगन्धवाला, काली मिर्च, धनियां ये चार चार माशे, मिश्री दो तोले, पकीहुई पांचकी सूखी गिरी तीन तोले सबको कूटपीस छानकर चूर्ण बनावे. इस चूर्णके सेवनसे

क्षय, वायगोला, अतीसार और संग्रहणी रोग शान्त हो जाता है.

अथवा-वकरीके दूधमें वरावर जल मिलाय तीन पीपरि डालकर आंचपर चढावे जल जलजानेपर पीपरि खाय ऊपरसे दूध पी लेवै.

अथवा-एक एक पीपरि वढाय और एक एक पीपरि घटाय वीस दिनतक खानेसे क्षयरोग शान्त हो जाता है.

क्षयरोगमें पथ्य।

सांठी चावल, मूंग, गेहूं, शालिधान, जो ये धान्य पथ्य हैं. जो क्षयरोग अधिक दोषवाला हो तो हलके जुलावसे शुद्ध करलेवे और लाल चावल, चना, शीतल पदार्थ, गरम मसाला, वालूसाई आदि, चन्द्रमाकी चांदनी, मीठे रस, केलेकी पकी फली, पका कटहर, पका आम, आंवला छुहारा, कमलकंद, फालसा, नारियल, सहिंजना, दाख, तेंदु, तालके नवीन फल, सौंफ, सेंधा नमक, अडूसेके पत्ते, गाय भैंसका घी, वकरियोंमें रहना. अथवा वकरीकी लेंडी व मूत्रका लेप, मिश्री, शिखरन, रसाला (जो कच्चा दूध मिश्री और जल काली मिर्च मिलाकर वनताहै), कपूर, कस्तूरी, सफेद चंदन, सुगंधित वस्तुओंका लेप, उवटन, स्नान, उत्तम वस्त्र, आभूषणधारण, जलमें क्रीडा करना, मनोहर स्थानमें निवास, फूलमालाधारण, कामोद्दीपन करनेवाली वार्ताओंका सुनना, मन्द सुगन्धित पवन, गीत, नृत्य, चंद्रमाकी शीतल किरणोंमें विहार, वीणा आदिकी ध्वनि, सुवर्णके वर्क, मोती और मणि आदिका धारण, दान, हवन, पूजन, प्रसन्न करनेवाले अन्न, पान ये सव क्षयरोगमें हितकारी हैं.

क्षयरोगमें अपथ्य।

मलमूत्रादि वेगोंका धारण, जुलाव, परिश्रम, स्त्रीप्रसंग, पसीना निकालना, सामर्थ्यसे अधिक काम करने लगना, रूखे अन्नका

भोजन, विषमभोजन, पान, तरबूज, कुलथी, उडद, हींग, लहसन, खट्टे पदार्थ, बांसकी कोंपल, कषैले, कडुए पदार्थ, चरफरे पत्तोंके शाक, क्षार, स्वभावसे विरुद्ध भोजन, कुंदरू, सेम, करेला और सब प्रकारके दाहकारी पदार्थ ये सब क्षयरोगमें अहितकारी हैं.

प्रमेह रोग ।

प्रमेह रोग प्रायः मनुष्योंके होता है. इस रोगका धोखा बहुत मनुष्योंको रहता है. प्रमेह रोगके धोखेसे प्रायः जन औषधि करते करते असली प्रमेहरोगसे ग्रस्त होकर सचमुच रोगी बन जाते हैं. इस रोगका धोखा इस प्रकार होता है कि मूत्र होनेसे पहले इन्द्रीकी भीतरी त्वचाको द्रव और स्निग्ध करनेके निमित्त रस निकला करता है कि इन्द्रीको मूत्रके खारापनसे हानि न पहुँचे. उस रसके निकलनेसे प्रमेहरोगका धोखा होता है. दूसरे जो वीर्य रात्रिसमय पात होजाता है उससे भी प्रायः लोग प्रमेहरोग मानलेते हैं और वीर्य शीघ्र स्खलित होजानेको भी प्रायः जन प्रमेह समझलेते हैं. परंतु यह प्रमेहरोग नहीं होता. प्रमेह रोगके लक्षण वैद्यक ग्रन्थोंमें लिखे हैं वहाँ बीस प्रकारका प्रमेह कहा है. उसको यहां विस्तारभयसे न लिखकर केवल एक ही लक्षण इस रोगके पहचानके लिखते हैं. प्रमेह रोगीका वीर्य वस्त्रके ऊपर रखनेसे वस्त्रको गीला कर दूसरी ओर निकल जाता है, और शुद्ध वीर्य वस्त्रपर उपरही जम जाता है क्यों कि गाढा होता है. प्रमेहका रोगी मूत्रवेगको रोक नहीं सकता. तथा प्रमेहके रोगीको मैथुनमें पूर्ण आनन्द नहीं आता. यह

तथा-हंसपदी एक तोला लेके आधपाव जलमें संध्यासमय भिगोवै और प्रातःसमय औटाय आधा रहनेपर छानकर शहत मिलाय पीवै तो प्रमेह रोग जाता रहताहै. एवं पीपलकी छालका काढाभी प्रमेहको दूर करता है. तथा त्रिफलाका काढाभी मूत्रके सब विकारोंको दूर करताहै.

तथा-एक रत्तीप्रमाण वंगरस वडके दूधमें मिलाकर खानेसे प्रमेह रोग शान्त होजाताहै.

तथा-हलदी एक तोला पीसकर शहत मिलाय प्रतिदिन खानेसे प्रमेहरोग शान्त हो जाताहै, अथवा मौलश्रीकेचूर्णमें वरावर मिश्री मिलाय खाय ऊपरसे दूध पीवे तो वीर्य पुष्ट होता है.

अथवा-बताशेमें दो बूँद बडका दूध सूर्योदयसे पहले खाय. एक बूंद प्रतिदिन वढाकर वीस बूंदतक सेवन करनेसे प्रमेहरोग शान्त होजाता है.

तथा-शहतमें शिलाजीत मिलाय दूधमें डालकर पीनेसे प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र रोग शान्त हो जाता है. परंतु शिलाजीत शुद्ध होना चाहिये.

प्रमेहरोगमें पथ्य.

लंघन, वमन, विरेचन, पुराने तृणधान्य, कांगनी, जौं, वांसी चावल, कोदों, सामा, ज्वार, नागरमोथा, पुराने गेहूँ, शालीचावल, कुलथी, मूँग, चना, अरहर, तिल, खील, शहत, छाछ, भैंसका मूत्र, सहिंजना, परवल, करेला, ककेरी, गूलर, लहसन, केलाकी नवीन फली, गोखरू, गिलोय, त्रिफला, कैथ, जामुन, कसेरू, कमल, कमलगट्टा, मसींडा, खजूर, कलियारी, सोंठ, मिर्च, पीपरि, तेंदू, खदिर, तरवूज, सब प्रकारके तीखे और कषेले पदार्थ, हाथी घोडेकी सवारी, अतिभ्रमण, सूर्यकी धूप, दंडकसरत, पचने योग्य थोडा भोजन, शतावरीपाक, गोखरूपाक,

सुपारीपाक, मूशलीपाक, असगंधपाक, आम्रपाक, रूपरस, मूंगारस, मोतीरस, सोने चांदीके वर्क, कस्तूरी, सफेद इलायची, सफेद चन्दन, पिस्ता, बादाम, छुहारा, वंशलोचन, अखरोट, किशमिश, चिलगोजा, पोस्त, तालमखाना, मिश्री, मक्खन, नारियल ये सब प्रमेहरोगको हितकारी हैं.

प्रमेहरोगमें अपथ्य ।

मूत्रवेगका रोकना, स्नेहनकर्म, धूमपान, रुधिर निकलाना, अधिक बैठना, नवीन अन्न, दिनमें शयन, दही पिट्टीके पदार्थ, स्त्रीप्रसंग, काँजी, मदिरा, मांस, सिरका, तेल, घी, गुड, दूध, तौंवी, तालफलकी गुठलीकी मींगी, कुम्हडा, ईख, विरुद्ध भोजन, दुष्ट जल, खट्टा मीठा और निमकीन रस ये सब प्रमेहरोगमें अहितकारी हैं.

नपुंसकरोग ।

नपुंसकरोगके लक्षण और चिकित्सा सुश्रुत और चरकमें भली भांति वर्णन है उसी अनुसार "नपुंसकसंजीवनीपुस्तक" हमने लिखी है जो हमारे पुस्तकालयमें और (बंबई) में प्राप्त होती है. यहां उससे पृथक् लक्षण समयानुसार लिखते हैं. नपुंसक चौदह प्रकारके होते हैं. १ आयुके कारण, २ मस्तकमें चोट पहुँचनेसे, ३ देहकी कृशतासे, ४ भ्रमसे और ५ स्थूलशरीर होजानेसे, ६ अमैथुनसे, ७ वीर्यकी न्यूनतासे, ८ प्रमेहरोगके बढ जानेसे, ९ वीर्य दूषित होजानेसे, १० शीघ्र वीर्य पात होजानेसे, ११ स्वप्नदोषसे, १२ मादक वस्तुके अधिक सेवनसे, १३ प्रसंगमें वीर्यपात न होनेसे, १४ कामोद्दीपन शक्ति न्यून होजानेसे मनुष्य नपुंसक होजाता है. इनके पृथक् पृथक् लक्षण ये हैं.

बाल्यावस्था अथवा कुमार अवस्थाके आरंभमें जब संतान उत्पन्न करनेकी शक्ति नहीं होती उस समय जो बालक मैथुन

करते हैं उनका नपुंसक होजाना संभव है, क्यों कि जहां वीर्यकी उत्पत्ति होती है वह स्थान ढीला पडजाताहै. वीर्य बननेका प्रभाव न्यून होजाताहै और समयपर वीर्य बनता भी है तो ठहरता नहीं है. जो बालक सुखपूर्वक रहते हैं, उनमें बारह वर्षकी आयुमेंही संभोग शक्ति उत्पन्न होजाती है और पन्द्रह वर्षकी आयुमें संतानोत्पत्ति शक्ति होती है, परंतु पन्द्रह वर्षसे पहले जो मैथुन कर्म करते हैं उनका नपुंसक होजाना संभव है, अतः पन्द्रह वर्षकी अवस्थासे पहले कदापि मैथुन कर्म न करे. पीछे कंठकी ओरसे चोट लगने अथवा चूतडोंके बल गिर पडनेसे शिरमें आघात पहुँचताहै कि जिससे अंडकोश और लिंगभी बलहीन हो जानेसे नपुंसक हो जाना सम्भव है. तथा दुष्ट जल अथवा दुष्ट पवनसे अधिक दुःख प्राप्त होता है. भली भांति आहार नहीं मिलता अथवा जो मनुष्य अधिक मैथुन करता है तो उसका शरीर दुर्बल हो जानेसे नपुंसक होजाना संभव है. एवं जिन मनुष्योंको अपने शरीरमें रोग होनेका भ्रम है वे सदा भ्रममें रहते रहते सचे नपुंसक हो जाते हैं. तथा जिन मनुष्योंका शरीर स्थूल होजाता है वे आलसी होनेसे उनको अजीर्ण रोग प्रगट हो जाता है और मज्जा अधिक प्रगट होजाती है जिससे नपुंसक होजाना संभव है. तथा वीर्यकी आधिक्यतासेही कामोद्दीपन होताहै और रुधिर परिपक्व होनेसे वीर्य बनता है. मनुष्यका ध्यान जब लिंगकी ओर होता है तब रुधिर लिंगमें आकर उसको बढा देता है और जो मनुष्य लँगोटीबन्द होकर अपना ध्यान उस ओरसे खींचकर विरक्त हो जाता है तो रुधिर नहीं दौडता और अंडकोशोंमें वीर्यका बनना बन्द होजाता है ऐसी दशामें नपुंसक हो जाना संभव है. तथा मैथुनोपरान्त वीर्यपात होजानेसे जबतक पुनः वीर्य न बने तबतक मैथुन शक्ति नहीं होती. जब किसी कारणसे वीर्य न्यून हो और वह मैथुन बार बार

करना न छोडे तो ऐसी दशामें नपुंसक होजाना सम्भव है. एवं प्रमेहरोग होनेपर औषधी सेवन न की जाय और प्रमेहरोग बढतारहे तो नपुंसक रोग होजाना संभव है. तथा जिस मनुष्यका वीर्य बाल्यावस्थासेही बिगड जाता है अथवा रजस्वलाके होतेही तीन दिनके भीतरही संभोग करे अथवा प्रसूतास्त्री अथवा मूत्र-कृच्छ्र उपदंश आदिरोगवाली स्त्रीसे प्रसंग करनेसे वीर्य दूषित होजाय तो ऐसी दशामें नपुंसक होजाना संभव है. तथा अधिक मैथुन करने अथवा हस्तमैथुनसे अथवा स्त्रीकी इच्छा न होते मैथुन करनेसे वीर्यका शीघ्र पात होता है. जो भोगेच्छा करतेही वा स्त्रीके समीप जातेही अथवा मैथुनकर्म प्रारंभ करतेही जो शीघ्र वीर्य स्खलित होजाता है. इसकी औषधी न खाकर जो लोग इसका शीघ्र यत्न नहीं करते हैं तो नपुंसक होजाना संभव है. तथा स्वप्नमें जिन मनुष्योंका वीर्य पात हो जाता हो उनके औषधी न करनेपर नपुंसक होजाना संभव है. एवं जो लोग अधिकतर भांग, अफीम, गांजा, चरस, तम्बाकू, आदि मादक पदार्थ सेवन करते हैं. कपूर, धनियां, श्वेतचन्दन काहू आदि पदार्थ अधिक सेवन करते हैं, गीली धोती अधिक समयतक धारण किये रहते हैं. गुलाबके फूल बिछाकर उनपर शयन करते हैं उनका नपुंसक होजाना सम्भव है. तथा जो पुरुष संभोग-समय स्खलित नहीं होता, स्थूल शरीर होनेके कारण बाल्याव-स्थामें मैथुनाभ्यास होजानेपर वीर्य न बननेके कारण प्रसंगसमय स्खलित न होना, ठकवा आदिरोगके कारण स्खलित न होना ऐसी दशामें भी नपुंसक होजाना सम्भव है. तथा बहु मैथुन करने अथवा हस्तमैथुन गुदमैथुनसे कामध्वजकी नसें ढीली पड-जानेसे उद्दीपन शक्ति क्षीण होजाती है. कामध्वजकी क्रियामें न्यूनता आजानेसे नपुंसक होजाना संभव है. प्रायः लोग नपुंसक रोगसे ग्रस्त होकर पीछेसे पछताते हैं, जो पहलेहीसे अपनी दशा

सुधारे रहें तो रोगीही क्यों होवें. नपुंसक रोगकी मुख्य औषधी वाजीकरण पदार्थ हैं. वाजीकरण पदार्थोंमें सबसे बढकर दूध है. यदि घीमें दूध छौंककर अधौटा होजानेपर मिश्री मिलाय पान किया जाय तो शरीरको अत्यन्त बलवान् करता है, जिससे नपुंसक रोग दूर होने लगता है. परन्तु दूधको पचानेकी सामर्थ्य सब किसीको नहीं होती. बिनौलाकी गिरी दो तोले लेके आधसेर भैंसके दूधके साथ पन्द्रह दिनतक खानेसे नपुंसक रोग न्यून होने लगता है. तथा सूखे गोखरू पीसकर पानीमें भिगोवे और सोंठ दो तोले, अकरकरा दश माशे, सोंठके मुरब्बेके शीरेमें इनकी माजूम बनाय एक तोलाभर प्रतिदिन दूधके साथ बीस दिनतक खानेसे नपुंसकता दूर होनेलगती है तथा बलानुमान कच्चे चना भैंसके दूधमें सन्ध्यासमय भिगोकर प्रातःकाल शकर मिलाय चालीस दिन पर्यन्त खानेसे नपुंसकरोग शान्त हो जाता है. तथा दशगुणे दूधमें शतावरीको पकाकर उसमें असगन्ध, मूशली, पीपरि, गोखरू, गायका घी और मिश्री मिलाकर एक एक तोलेके लड्डू बांधे, एक लड्डू प्रतिदिन खावे.

तथा-सच्चे मोती डेढ माशा लेके जल पीनेके घडेमें डालकर उस घडेका जल पीना अच्छा है. तथा कौंचकी जड दूधमें औटाकर उस दूधको पीवे तो वीर्य बढता रहता है. तथा बादामकी मींगी घी शकरके साथ खानेसे वीर्य गाढा हो जाता है और शरीरमें बल पराक्रमकी वृद्धि होती है. तथा कौंच, शतावरी, असगंध, गोखरू, जावित्री, जायफल, लौंग, अकरकरा, सालममिशरी, मूशली, मस्तंगी, मोचरस, बंशलोचन, मुलहठी, विदारीकंद, वाराहीकन्द, तालमखाना, आंवला, सोंठ, पीपरि, पोस्त, खुरासानी अजवायन, गन्ना, तिल, मुनक्का इत्यादि औषधि वाजीकरण हैं. यदि वाजीकरण औषधियोंका सेवन किया जाय और नियमानुसार आहार विहार किया जाय तो सुखपूर्वक सौ वर्षमेभी अधिक आयु

हो सकती है और यदि योगशास्त्रानुसार वर्ताव किया जाय तो मनुष्य तीन सौ वर्षतक जो सकता है. जिसके प्रमाणमें श्रुति– ' त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् ' इति.

× अंडवृद्धि रोग ।

व्यर्थ पिचकारी लगानेसे अथवा अधिक समयतक वातविकारसें अथवा पानी उतर आनेसे अंडवृद्धि रोग होजाता है, इसकी औषधीभी शीघ्र उचित है. गायका दूध पावभर अंडीका तेल एक तोला मिलाकर गुनगुना पीवे तो महीनेभरमें वातरोग-जनित अंडवृद्धिरोग समूल नष्ट हो जाता है अर्थात् वातविकारसे फिर कभी यह रोग नहीं होताहै. तथा गूगल और अंडीका तेल गोमूत्रके साथ पीनेसे पित्तजनित अंडवृद्धिरोग दूर होजाता है. तथा सोंठ, मिर्च, पीपरि, आंवला, हर्र, बहेडा एक एक तोलेभर लेकर पावभर जलमें दो तोले भर औषधीका काढा बनाय सेंधालवण और जवाखार मिलाय पीनेसे कफजनित अंडवृद्धिरोग शान्त होजाताहै. तथा कचूरको बकरीके दूधमें पीसकर गरम कर लेप करै तो अंडवृद्धि पीडा दूर होजाती है. तथा पीनेकी तमाखू गरम कर बांधदेनेसे अंड वृद्धिरोग जाता रहताहै. यदि पानी उतर आया हो तो नश्तरसे निकलवादेवे तो सूजन दूर होजाती है.

अर्श (बवासीर) रोग ।

वात, पित्त, कफ ये दोष दूषित होके पीडायुक्त मस्से गुदा स्थानमें प्रगट होकर रुधिरस्राव करते हैं. इसीको बवासीररोग कहते हैं. इसके अनेक भेद हैं परन्तु खूनी और बादी नामसे दो भेद प्रसिद्ध हैं. बवासीरके निवारणार्थ पद्माखका पत्ता, जवासा, चिरायता, नागरमोथा, रक्तचन्दन, दारुचीनी, मधु, दारुहल्दी,

नींबकी अन्तछाल इन सबका काढा शहत मिलाय पीनेसे खूनी बवासीर रोग शान्त होजाताहै. तथा कुकरौंधेकी फुनगी, काली मिर्च पीसकर जलमें घोट पीवे तो बवासीरका रुधिर मन्द हो जाताहै. अथवा छोटी इलायचीके दाने एक तोला, तज दो तोले, तेजपात तीन तोले, नागकेशर चार तोले, काली मिर्च पांच तोले, पीपरि छे तोले, सोंठ सात तोले, मिश्री डेढपाव, सबको पीस छान चूर्ण बनाय छे छे माशेकी मात्रा प्रातःकाल सायंकाल खानेसे दोनों प्रकारका बवासीर रोग शान्त होजाताहै.

मस्सोंकी औषधी।

कुकरौंधेको मलकर जलमें मिलाय उसीसे शौच लेवै, अथवा फटकरीके जलसे शौच लेवै अथवा सेहुँडके दूधमें हलदी घिसकर मस्सेपर लगावै, अथवा निबौलीकी मींगी, चीनियां कपूर, रसौत, जलमें बारीक पीस मस्सेपर लेवै तथा गेंदा, कुकरौंधा, बनगोभी इनकी पत्ती, प्याजके बीज, गन्दनाके बीज मिलाय टिकिया बनाकर मस्सेपर बांधनेसे पीडा दूर हो जाती है. अथवा नींबका बफारा लेनेसे, भांग और लोबानकी धूनी लेनेसे पीडा शांत होती है. अथवा गेंदा, धतूरकी पत्ती अलग अलग जलसे पीसकर जलमें घोल हांडीमें रखकर बिनुएकंडोंकी आंचपर रखकर पांच सात बार बफारा लेवै तो मस्सोंसे उत्पन्न पीडा शान्त हो जाती है.

अर्शरोगमें पथ्य।

रुधिर निकलवाना, जुलाव लेना, लेपन करना, तेजाबसे जलाना, दगाना, चीरना, पुराने लाल चावल और सांठीचावल, कुलथी, जौ, धतूर, परवल, लहसन, चीता, जिमीकन्द, बथुवा, चूका, मूलीकी फली, मूलीका शाक, सोंठ, हर्र, माखन, मट्ठा, आंवले, घी, दूध, भिलावा, गोमूत्र, सरसोंका तेल, कांजी, पान, भ्रमण,

हलके भोजन, वातनाशक पदार्थ, शीघ्र पचनेवाली वस्तु, इस रोगमें मूलीकी तरकारी, जिमीकन्दकी तरकारी अधिक खाय, हरें सेवन करे. ये सब अर्शरोगमें हितकारी हैं.

अर्शरोगमें अपथ्य ।

तिलकी खल, मांस, मछली, दही, मैदा व पीठीके पदार्थ, उडद, मटर मापकी फली, वेलगिरी, पोईका साग, मसीडे, पका आम, भारी पदार्थ, नदीका जल, धूपमें चलना, वमन, वास्तिकर्म अर्थात् गुदामें पिचकारी लेना, पूर्वदिशाकी वायु, वेगोंका रोकना, स्त्रीप्रसंग, घोडा आदिपर चढना, उकडू बैठना, दोषकारक अन्न, वारंवार जलपान, दिनमें सोना, बहुत भोजन करना, लडाई लडना, खूनी बवासीर होनेसे रुधिर निकलवाना, तेजाव आदि लगाना ये सब अर्शरोगमें अहितकारी हैं.

कामध्वज दोष निवारण ।

यदि कामध्वज छोटा हो अथवा किसी रोगके कारण टेढा और पतला हो गया हो तो तीस वर्षके भीतर इसका विशेष यत्न करना उचित है. तीस वर्षके अधिक आयु होजाने उपरान्त कोई उपाय काम नहीं देता. प्रथम तो जिस दोषसे रोग उत्पन्न होगया हो उस दोषको दूर करने और पौष्टिक पदार्थ सेवन करने तथा तिला लगानेसे कामध्वज दोष दूर होजाता है. यदि तिलासे काम न चले तब दूसरा उपाय करना चाहिये. तिला-शुद्ध जमालगोटा दो तोले पिस्ताकी मींगी तीन तोले, इन दोनोंको कुचलकर पोटली बांधकर तवेपर धरे नीचे मन्द आंच करे तो पोटलीके दवानेसे तेल निकलता है उस तेलको लगावे. तथा हींग कसेरू समान भाग लेकर गायके घीमें खरल करे, जब भली भांति मिल जावे तब उसको लगाकर ऊपरसे पान बांधदेवे दो सप्ताह पर्यन्त यह औषधि लगानेसे काम-

ध्वजका टेढापन जाता रहेगा और कुछ स्थूल व दीर्घ होजावेगा. परंतु औषधि जबतक लगावे तबतक विषय कदापि न करे. तथा बैंगनके रसमें बडी पीपल सप्ताह पर्यन्त खरल कर पातालयंत्र-द्वारा तेल निकाललेवे उस तेलकी एक बूंदमात्रको चमेलीके तेलमें मिलाकर कामध्वजपर लगावे तो लाभ हो. अथवा तुरन्त भरकर लाये हुए जलमें ढाकके बीज भिगोकर एक प्रहर उपरान्त छील-कर पातालयंत्र द्वारा तेल निकाललेवे उस तेलको तिलके तेलमें मिलाकर लगावे. अथवा केंचुएकी मिट्टी स्वच्छ करके तिलके तेलमें पकावे और कुछ गरम जलसे कामध्वजको धोकर रगड-कर स्वच्छ करले अनन्तर उसको लगावे तो दीर्घ और स्थूल होताहै. तथा केंचुवा, सूखी जोंक, बीरबहूटीके मलनेसे दीर्घ व स्थूल होता है. तथा भेडके दूधमें अकरकरा पीसकर लगानेसे कामध्वजका टेढापन दूर होता है. अथवा लौंगको जैतूनके तेलमें पीसकर लगानाभी अच्छा है. तथा रससिंदूर और अफीम धतूरेके तेलमें तीन दिन खरल कर उसके बराबर मिश्री और भांग मिलाय मटरके बराबर गोली बनावे. एक गोली प्रतिदिन खाकर दूध पीवे. स्मरण रहे कि तिलाको कामध्वजकी सीवन और सुपारी छो-डकर लगावे. तिला लगाकर ऊपरसे पान बांध दे और सवेरे खोल-डाले. शीतल जल कामध्वजपर न पडने पावे और काम-ध्वजको प्रतिदिन उस्तरेसे साफ रखनेवाले और ग्रीष्मऋतुमें शीतल जलसे, वर्षाकालमें तुरंतके भरे जलसे, शीतकालमें कुछ गरम जलमें धोकर प्रतिदिन साफ रखनेवाले पुरुषके कामध्वजको प्रायः रोग नहीं होता.

× स्तम्भन।

सुहागा, कपूर, पारा य बराबर लेके अगस्तके रस और शहदमें मर्दन कर कामध्वजपर लेप करै और एक प्रहर उपरान्त धोकर

रतिकर्म करै तो वीर्यस्तम्भन होवै. तथा कमलगट्टेकी मींगी शहतके साथ पीसकर नाभिपर लेप करै, जबतक लेप रहताहै तबतक वीर्य स्खलित नहीं होवाहै. तथा एक पल खसको सोंठके काढेमें सोलहवां भाग गुड मिलाय रातको पीकर रति करै तो जबतक खटाई न खाय तबतक वीर्य स्खलित नहीं होताहै. तथा धतूरेके फल, मूल, पत्ता इनके रसमें सुपारीके चूर्णको पीसकर वारवार कामध्वजपर लेप करै तो वीर्यस्तम्भन होवै. यह वीर्यस्तम्भन प्रकार उन लोगोंके निमित्त कहा गयाहै कि जो लोग अपनी स्त्रीके समीप जाकर क्षणमात्रभी कामकेलि नहीं करसकते और तुरन्त स्खलित होकर नपुंसक समान होजाते हैं.

स्त्री द्रावण ।

कतीरा, माजूफल, फटकरी इन तीनोंको शहतमें पीसकर कामध्वजपर लेप करै और प्रसंग करै तो स्त्री द्रवीभूत होवै. तथा जलपीपरिके फल और पत्तोंको पीसकर उसमें शहत मिलाय ध्वजपर लेप कर प्रसंग करै तो स्त्री द्रवै. तथा सुअरकी वसा शहत मिलाय ध्वजपर लेप कर रति करनेसे स्त्री द्रवीभूत होती है.

वीर्यवर्द्धक मोदक ।

केशर छे माशे, जावित्री छे माशे, जायफल तीन माशे, गरीका गोला एक लेकर छेद कर उसमें तीनों औषधी भरकर छेद बन्द करदेवै, अनन्तर चिरौंजी आधपाव, छुहारा गुठली समेत आधपाव, अखरोट एक छटाँक, बादामकी गिरी एक छटाँक इन सबको गायके एक सेर दूधमें डालकर मन्द मन्द पचावै, जब छुहारा आदि कोमल होजाय तब निकालकर दूधका खोवा बनालेवै और शिलपर सब औषधियोंको पीसकर खोवामें मिलादेवै, अनंतर कडाईमें घी चढाय खोवाको भून लेवै, बबूलका गोंद आधपाव घीमें भूनकर पीसलेवै और गेहूँका आटा, उडदका

आटा पाव पावभर घीमें भूनलेवै, अनन्तर तीन पाव स्वच्छ देशी शक्कर मिलाय आधी आधी छटाँकके लड्डू बांधलेवै, प्रातःकाल सायंकाल एक एक लड्डू खानेसे वीर्यकी वृद्धि होती है. तथा गेंहू और जौका सत एक एक पाव उडदकी धोईका चूर्ण एक पाव सांठी चावलका चूर्ण आधपाव, गायके दूधमें शोधी छोटी पीपरि एक छटांक, घी तीन पाव, शक्कर डेढ सेर, बादाम, किशमिश, चिरौंजी, पिस्ता, आधआध पाव, पहले सब चूर्ण घीमें भूने अनन्तर शक्कर और मेवा मिलाय मले और एक एक छटांकके लड्डू बांधलेवै. प्रातःकाल सायंकाल एक एक लड्डू खाय तो थोडेही दिनोंमें वीर्य बढकर गाढा होजाता है. तथा कांचके बीजकी गिरीका चूर्ण, गेंहूका आटा दो दो तोले लेके आधसेर दूधमें पकाय गाढा होजानेपर उतार लेवे और घी दो तोले मिश्री दो तोले मिलाकर खानेसे वीर्यक्षीणतारोग शान्त हो जाता है, वीर्य बढता है.

वीर्यवर्द्धक चूर्ण।

कौंचके बीजकी गिरी, तालमखाना, बडा गोखरू, गुर्चका सत, असगन्ध, सेमरका मुसरा, वरियारकी जड, बीजबन्द, शतावरी, सब दो दो तोले लेके सबका चूर्ण कपडछान कर उसमें मिश्री आधपाव पीसकर मिलावे. छे माशे चूर्ण प्रातःकाल और छे माशे चूर्ण सायंकाल गायके दूधके साथ सेवन करनेसे वीर्यकी पुष्टि होती है और क्षीणता नष्ट होती है.

वशीकरण।

दोहा—वशीकरण यह मंत्र है, तजिदे बचन कठोर।
मन लगाव सब काममें, रहे इष्टकी ओर॥ १॥

इस दोहेके अनुसार पूर्णरीतिसे बर्ताव करनाही वशीकरण है. इसका भावार्थ यह है कि जिसको अपने वशमें करना चाहे उससे

कभी कठोर वचन भूलकरकेभी न बोले और निरन्तर उसका ध्यान करे अर्थात् अपने मनका लगाव सब कालमें इष्टमित्रकी ओर रहे तो थोडेही समयमें वशमें होजाता है. एवं जो स्त्री पुरुषको और पुरुष स्त्रीको वशमें लाना चाहे तो निरन्तर ध्यान रहनेसे वशीभूत होजानेमें कुछभी सन्देह नहीं जानना, और जो कोकापंडितने कोकशास्त्रमें वशीकरणनिमित्त किसी जीवका पित्ता निकालकर, किसीका रुधिर आदि निकालकर एवं अन्य अभक्ष्य वस्तुओंका खिलाना लिखा है उनको हमने इस अपनी पवित्र पुस्तकमें लिखना उचित नहीं समझा.

कार्यसिद्धि।

पूर्वोक्त दोहेका अभिप्राय लेकर मनुष्य अपना प्रत्येक कार्य पूर्ण कर सकताहै. सो इस प्रकार कि जो कार्य अपनी योग्यताके अनुसार हो उसको प्रयत्नपूर्वक निरंतर ध्यान करै तो कुछ कालमें अवश्यमेव वह कार्य सिद्ध होजाता है, इसमें कुछभी सन्देह नहीं जानना.

आवश्यक शिक्षा।

पुरुषोंको उचित है कि नीचे लिखी हुई शिक्षापर अवश्य ध्यान धरकर उचित बातको ग्रहण करें और अनुचित बातको परित्याग करें. परस्त्रीसे, गर्भवती स्त्रीसे, विधवा स्त्रीसे संभोग कदापि नहीं करें. परस्त्रीसे रमण करनेमें वीर्य वृथा जाताहै, लोकमें निन्दा होती है, घबराहटसे मस्तकको हानि पहुँचती है और अनेक प्रकारके उपद्रवोंका भय रहताहै और राजदंडभय सबसे बढकर है. इस कारण परस्त्रीकी ओर कुदृष्टिसे कदापि न देखें. गर्भवतीसे रमण करनेपर गर्भपात होनेका भय है और वीर्य गर्भस्थ बालकका भोजन होताहै और गर्भाशय टेढा होकर हानि पहुँचना संभव है. विधवास्त्रीसे रमण करनेपर प्रायः सुजाकरोग होजाताहै और परस्त्रीरमणमें जो जो दोष हैं वेही दोष इसके रमणमेंभी जानना.

वृद्धासे रमण करनेपर शरीरमें वृद्धता आ जाती है. रजोवती स्त्रीसे रमण करनेपर उपदंशरोग उत्पन्न होजाताहै. नेत्रोंकी ज्योति मन्द होजाती है और रुधिरविकारवाली सन्तान प्रगट होती है. बलात्कारपूर्वक मैथुन करनेसे पुरुष रोगी होजाताहै और सन्तान अधम प्रगट होती है. रोगिणी स्त्रीसे रमण करनेपर वही रोग होजानेका भय और निर्बलता उत्पन्न होवै है. कन्याके साथ रमण करनेसे दोनोंकी इन्द्रीको आघात पहुँचता है. दिनमें मैथुन करनेसे वीर्य और रुधिर पतला हो जाता है, जिससे शरीर निर्बल हो जाता है. अपनी स्त्रीके साथ आवश्यक समय रतिकेलि करनेसे पहले उसको भलीभांति प्रसन्न करै, क्यों कि परस्पर प्रसन्नतासे आरोग्य संतान प्रगट होवै है. परन्तु स्त्रीके साथ एक शय्यापर शयन नहीं करै और एक साथ भोजन न करै क्यों कि स्त्रीके साथ सोने और खानेसे शरीर आलसी और ढीला हो जाता है. कामोद्दीपन शक्ति न्यून होजाती है. इन आवश्यक बातोंपर पुरुषोंको अवश्य ध्यान रखना चाहिये.

केश धोनेकी रीति।

केशोंको भलीभांति धोकर तब कोई औषधी लगावै और तेल आदि डालै. उसकी रीति यह है कि, कच्चा सुहागा दो तोले, कपूर एक तोला इन दोनोंको बारीक पीस ढाईपाव जलमें गरम करै जब जल खौलने लगै तब उतारकर शीतल करलेवै अनन्तर उससे बाल धोवै तो साफ होजाते हैं.

मूँछ बढानेका तेल।

जेबरेंडीके पत्ते दो माशे, गिल्सरायन डेढ तोला, एल्कोहाल एक तोला, सिनकोना एक तोला, रम एक तोला, गुलाबजल पांच तोले. पहले सिनकोनारक और जेबरेंडीके पत्तोंको भलीभांति पीसलेवै. अनन्तर और वस्तुएं मिलाय बोतलमें भरकर मुंह बांध दे।

और एक सप्ताह पर्यन्त रखकर छान लेवै. इसके लगानेसे थोडेही दिनोंमें बाल बढ जाते हैं.

केशवर्द्धन लेप।

तिलके फूल और गोखरू पीसकर लेप करनेसे केश बढते हैं. तथा हाथीदांत जलाकर उसकी राख और रसौंत बकरीके दूधमें पीसकर लेप करनेसे केश जमकर बढते हैं.

× गंजरोगकी औषधि।

शिरपरसे केश गिरजानेको गंजरोग कहते हैं. हाथीदांतका चूर्ण और रसौंत बकरीके दूधमें घिसकर लगानेसे गंजरोग अच्छा होजाता है, परंतु बीस दिनतक लगावै. जो गंजरोग बहुत घृणा-वाला हो गया हो तो जूतेका तरा जलाय राख कर उसमें अंडीका तेल मिलाय लेप करे तो बाल जम आते हैं और गंजरोग अच्छा होजाता है.

× इन्द्रलुप्त रोगकी औषधि।

अकस्मात् केश गिरकर न जमें उसको इन्द्रलुप्तरोग कहते हैं. इसके निवारणार्थ भटकटैयाको पीसकर शहत मिलाय लेप करे. अथवा घुंघुचीको जलमें मिलाय पीसकर शहतके साथ लेप करे तो केश नहीं गिरें, और यदि केश न जमें तो केशवर्द्धन लेप बना-कर लगावै.

बाल उडानेवाला साबुन।

चूर्ण नशास्ता एक तोला, बेरियम सल्फाइट तीन माशे, पवित्र सपेद साबुन छे माशे, कपूर चार रत्ती, इन सबको बारीक पीस थोडी गरमी देके टिकिया बना लेवै इसके लेपसे बाल उड जाते हैं. तथा हरताल छे माशे, मैनशिल छे माशे, बेरियम सल्फाइट छे माशे, अरारोट एक तोला पीसकर मिलालेवै और इसके लेपसे भी बाल उडजाते हैं.

केशकल्प (खिजाव)

कच्ची फटकरी तीन माशे, संगरासिख एक तोला, नौसादर छे माशे, माजूफल दो तोले. माजूफल भूनलेवे और तीनों वस्तुओंको बारीक पीसकर लोहेके पात्रमें लोहेके मूसलसे घोटे और आंवलेके जलसे बालोंपर लगावे. एक प्रहर उपरान्त आंवलेके जलसेही धोडाले तो बाल स्याह होजाते हैं. तथा लोहका मैल एक छटांक, हर्रे एक छटांक, मदारकी जड एक छटांक इन सबको बारीक पीसकर पावभर जलमें औटावे, जब जलमें स्याही आजाय तब नीचे उतार कपडेसे छान कसीसका चूर्ण आधी छटांक मिलाय तीन दिनतक लोहेकी कडाहीमें रहने देवे. इसको तेलके साथ बालोंपर लगानेसे बाल काले होजाते हैं. आमकी गुठली पांच तोले, लोहचूर्ण दो तोले, कसीस एक तोला, नौसादर दो माशे केलेका रस एक छटांक, पहले औषधियोंको पीसलेवे अनन्तर केलेके रसमें मिलाय एक बोतलमें भरकर घोडेकी लीदमें चालीस दिनतक गाडदेवे, अनन्तर निकालकर छान लेवे, यह रस आठ दिनतक प्रतिदिन लगावे फिर तीसरे दिन लगाया करे तो बाल स्याह होंगे. तथा माजूफलका तेल पातालयंत्रद्वारा निकालकर इस पांच तोले तेलमें नीचे लिखा तेजाब मिलाकर लगावे. नौसादर बारह तोले, लवण चार तोले, फटकरी पांच तोले कूटकर एक बोतलमें भरकर उसके पेंदेमें आंच कर यंत्रद्वारा तेजाब खींचकर उपरोक्त तेलमें मिलाकर लगावे. तथा मकनातीसपत्थर एक तोला, असली कस्तूरी एक तोला, कछुएके शिरकी हड्डी एक तोला, भंगरा स्याह पांच तोले, हलेला स्याह एक तोला, इन सब औषधियोंको स्याह भंगरेके रसमें सात दिनतक भिगोवे फिर सबके बराबर शहद डालकर औटावे और माजूम बनाकर प्रतिदिन चार माशे खावे. दो मासपर्यन्त खानेसे बाल स्याह निकलते हैं और शरीरमें बलकी वृद्धिभी होती है. तथा आंवला तेल पलभर महीनापर्यन्त पीनेसे केश श्याम उत्पन्न होते हैं.

लोमशातन।

ढाककी भस्म, हरताल, केलेके रसमें मिलाय लेप करनेसे नरम केश उडजाते हैं. तथा केलेके जलमें शंखकी भस्म सात दिन भिगोवे अनन्तर हरताल मिलाय लगानेसे नरम केश उडजाते हैं.

केशश्वेतीकरण।

दूधमें तिल भिगोवे दूसरे दिन सुखाकर तेल निकलवाकर लगावे. अथवा हरसिंगारके फूल आँवलेके रसमें भिगोवे अनन्तर निकालकर मले तो केश श्वेत होजावें. कोई २ सफेद तिलोंको सात दिनतक दूधमें भिगोय तेल निकालकर लगानेसे केशश्वेत होना कहते हैं. परन्तु केशोंको श्वेत करनेवाले पुरुष जगत्में न्यून होंगे.

केशोद्भवरंजन।

गव्येन पयसा पिष्टं तिलपुष्पं सगोक्षुरम्।
सप्ताहं लेपनात्कुर्यात्केशान्दीर्घान्बहूनपि ॥ १ ॥

भावार्थ-गायके दूधमें तिलफूल और गोखरू पीसकर-सात दिन लेपन करनेसे केश बढते हैं और बहुत निकलते हैं ॥ १ ॥

शरीर सुधार।

पुरुषका शरीर यदि स्थूल हो और उसको दुर्बल करना चाहे, तो दंडकसरत करे, दौड लगावे, घोडेपर अधिक चढे, घी अधिक खाय, भोजन कमती करे, बहुत कम शयन करे, अतिस्वाद पदार्थ खीर हलुआ दूध आलु आदि नहीं खाय, प्रातः शीतल जल पीवे, पसीना अधिक निकाले, इन वर्तावोंसे शरीर दुर्बल होजायगा. यदि शरीर दुर्बल हो और स्थूल करना चाहे तो आहार विहार अपना ठीक रक्खे, चिन्ता शोक क्रोध न करे, स्वादिष्ट भोजन करे, आँवलेका मुरब्बा खाय, अपने मनको प्रसन्न

रक्खै तो दुबलाशरीर स्थूल होजायगा. जो पुरुष छोटे डीलका हो और लंबा होना चाहै तो पचीस वर्षकी आयुतक पुरुष लंबा होसकताहै. उसका उपाय यह है कि पाँव फैलाकर सोवै, सूर्यकी धूपमें लेटाकरै, जौका दरिया अधिक खाया करै, जहाँ खुला- हुआ अधिक हो, पवन अधिकतासे आवे वहाँ बडे स्थानमें रहा करै, और त्रिफलाको शहतमें मिलाकर खाया करै, गाजरका हलुवा खाया करै, एवं दूधमें घी छौंककर दूध पिया करै तो शरीर लम्बा होजाना सम्भव है, परंतु तमाखु पीना मांस खाना और छोटे पलँगपर रहना उचित नहीं है. इससे शरीर लंबा होनेमें बाधा पहुँचती है. यदि किसी अंगको मोटा करना चाहै तो उस अंगको मलमलकर धोवै जब लाल लाल होजाय तब उसपर रूपरस मल देवै और उस अंगसे काम अधिक लेवै तो वह अंगस्थूल होजाता है, परन्तु चालीस वर्षकी आयुके उपरांत स्थूल न होगा. यदि मुखकी शोभा बढाना हो तो कुमार अवस्थासेही अच्छा वर्ताव करै, पाचन शक्ति विगडने न पावै, यौवनसे पहले विषयकी ओर ध्यान भी न करै, चिंता न करै, शोक और भय न करै, उत्तम और स्वादिष्ट भोजन करै, एक वस्तु अधिक दिनोंतक न खाय, मादक (नशादार) वस्तु न खाय, तमाखू सेवन न करै, अन्न हलका भोजन करै जिससे अजीर्ण न होने पावै, मांस मछली आदि न खावै, लहसन प्याज अधिक खटाई और लाल मिर्च न खावै, अधिक तेज रोशनीमें न बैठे, महात्माओं और धर्मात्मा एवं ईश्वर भक्तजनोंके चरित्र प्रेमपूर्वक पढे, चित्तको प्रसन्न रक्खै, क्रोधको कभी समीप न आने देवै, घी अधिक खाय, खुले मैदानमें जहां वायुका संचार हो वहां प्रातः सायं भ्रमण करै, खुले स्थान हवादारमें निवास करै, दुर्गन्धित वस्तुओंसे पृथक् रहे, दाहिनी करवट अधिक सोवै, दूधमें गोलरू अथवा शतावरी औटाकर उस दूधमें मिश्री डालकर पियाकरै, परन्तु बलानुमान पीवै, ईर्षा

द्वेष किसीसे न करै, मुखको प्रफुल्लित रक्खे, किसीसे घृणाकर मुख टेढा न करै इत्यादि बर्तावसे मुखकी कान्ति और आयु दोनोंकी वृद्धि होती है. यदि अपने शरीरके रंगको गोरा करना चाहे तो शरीरको सुखी रखनेका प्रबन्ध करै, बहुत सरदी गरमीसे बचारहे, सूर्यकी धूपमें कम रहे, चाय न पीवे, सिरका, मसाला, खटाई मिठाई अधिक न खाय, दंडकसरत न करै, रात्रिको न जागे, अजीर्ण न होनेपावे, केलेकी फली, अंगूर, सेव, नारंगी, पिस्ता, बादाम, छुहारा, गोलेकी गिरी मिश्रीके साथ सेवन करै और इन्द्रायनके फलमें हलदी भरकर रखछोडे बीस दिन उपरान्त निकाल बासी पानीमें पीसकर शरीरपर मलनेसे रंग गोरा होजाता है. अथवा हलदी, दारुहलदी, सरसों, तिल, कूट इनको बासी पानीमें पीसकर मले. तथा लालचन्दन दोनों हलदी भैंसके दूधमें पीसकर मलनेसे भी रंग गोरा होजाताहै. यदि उदर दीर्घ हो और छोटा करना चाहे तो असगंधके फूल, जूहीकी जड, शक्कर, गायका घी इनको मिलाकर खाय. यदि किसी अंगमें मांस भरना चाहे तो उस अंगको शीतलजलसे भलीभांति धोवै और तौलियासे इस प्रकार रगडे कि वह अंग लाल होजावै अनन्तर तुरन्त उस अंगपर बादामकी मींगी छिलका उतारकर दो तोले, छोटी इलायचीके दाने एक तोला, अकरकरा छे मासे, दालचीनी छे मासे, केशर छे मासे, लौंग छे मासे, इन औषधियोंको बारीक पीसकर गायके मक्खनमें मल्हम बनाकर लगावै. यदि मुख अथवा बगलमें दुर्गन्ध हो तो उसको दूर करनेके अर्थ औषधी यह है कि लाल फूल एक तोला, छोटी इलायचीके दाने एक तोला, बडी इलायचीके दाने छे मासे, सौंफ एक तोला, स्याह लवण तीन मासे, जवाखार तीन मासे, लवणसेंधा तीन मासे, सूखा धनियां छे मासे, देशी अजवायन तीन मासे, नौसादर शुद्ध किया हुआ दो तोले इन सबको कूट पीसकर चूर्ण

बनाय तीन मासे चूर्ण प्रतिदिन खाय तो भीतरी दुर्गन्ध दूर होजाती है और जो ऊपरी दुर्गन्ध हो तो जलसे शुद्ध करै, जैसे दांतोंमें मल हो तो मंजन मले, शरीर मैला होनेसे दुर्गन्ध हो तो स्नान करे, बगलमें दुर्गन्धि आती हो तो बेलकी जड और हरेंको जलमें पीसकर मलनेसे बगलकी दुर्गन्धि और फुंसियां दूर होजाती हैं. कपूर, मुर्दाशंखको गुलाबमें पीसकर लगानेसे भी बगलकी दुर्गन्ध जाती रहती है. नीमकी दाँतौन करनेसे मुँहकी दुर्गंध दूर होजाती है. तथा छोटी इलायची, कत्था, रूमीमस्तगी जलमें औटाय कुल्ला करनेसे मुखकी दुर्गन्धि दूर होजाती है. अथवा छोटी इलायची पोदीनाके रसमें पीसकर पानमें रखकर खानेसे मुखकी दुर्गन्धि दूर हो जाती है. यदि सब शरीरमें दुर्गन्धि आतीहो तो छायामें आमका बौर सुखाकर शक्कर मिलाय खावे. अथवा इलायची, पत्रज, नरकचूर, मोथा पीसकर शरीरपर मर्दन करे तो दुर्गन्ध जाय. यदि चेचकके दाग दूर करना हो तो बादामकी मींगी, चिरौंजी, कद्दूके बीजकी मींगी, गायका मक्खन ये समान भाग लेके मुखपर मले. अथवा जहाँके दाग दूर करनाहो वहाँपर मले, परन्तु जितने गहरे दाग होंगे उतनेही अधिक दिन लगेंगे. पहले गेहूँकी भूसी रातको भिगोय सवेरे मुँहपर भली भांति मलकर धोवे अनन्तर उपरोक्त औषधि मले, यदि दाग स्याह हों तो जौका मैदा उससे तिहाई हुलास लेके गुलाबमें उबटन बनाय लगावे सूखजानेपर धोडाले तो स्याह दाग एक सप्ताहमें दूर होजाते हैं. यदि चाहे कि कंठ कोकिलसा हो जावे तो गायके दूधके साथ आँवला सेवन करै. अथवा कुलंजन काली मिर्च बराबर पीसकर दो चार बार माशेभर खाया करै. यदि बाल घुंघुरवाले करना हो तो नागरमोथा एक तोला, दालचीनी तीन माशे, बालछड एक तोला, लौंग दो माशे, बडी इलायचीका छिलका एक तोला इन सबको पीसकर चूर्ण बनावे अनन्तर रीठोंको भिगोकर उसके लुआबमें यह चूर्ण मिलाय शिर मले

सूख जानेपर स्नान करै, परंतु कंघी न करै. अनन्तर कुछ भीगे केशोंमें तेल लगादेवै दूसरे दिन कंघी करै. तीसरे तीसरे दिन शिर मलकर इसी प्रकार वर्ताव करनेसे बाल घुंघरवाले होजाते हैं. अथवा कांजीमें सांहिंजनेकी मींगी पीसकर धूपमें रखनेसे जो तेल निकलै उस तेलको लगावै तोभी केश घुंघरवाले होजाते हैं, तुरन्त कंघी न करै यह ध्यान रहे. यदि चाहे कि ठुड्डी देरसे निकले तो अफीममें ईसबगोलका लुआब मिलाकर लगावै तो ठुड्डीके केश देरमें निकलते हैं. यदि इच्छा हो कि केश श्वेत न होवें तो मदिरा न पीवे, हुक्का न पीवे, अजीर्ण न होनेपावे, हलका और स्वादिष्ट भोजन करे, भारी और कड़ी टोपी न देवे, मस्तकपर बोझा न सहै, विषय बहुत कम करै, जिससे वीर्यकी अधिकता हो, गरमीमें न बैठे, तेज रोशनीमें काम न करे, जल और दूध बहुत कमती पीवै, छायामें अधिक रहे, शिरमें तेल कम डाले, कुछ गरम जलसे केशोंको धोकर सुखायाकरै. मुंडी न निकलनेसे पहले मुंडी वृक्षको मूलसहित उखाडकर सुखाय लेवै फिर उसका चूर्ण सनाप प्रतिदिन प्रातः तीन माशे दश मासतक सेवनकरै. ये पुरुषोंके हित औषधि लिखीं, आगे स्त्रियोंके निमित्त औषधि लिखते हैं.

स्त्रीरोग वर्णन।

यहां हम स्त्रियोंके उन्हीं रोगोंका वर्णन संक्षेपरीतिसे लिखते हैं कि जिन रोगोंको स्त्रियां वैद्योंके सन्मुख प्रकाश करनेमें लज्जित होती हैं. अथवा जिन रोगोंके लक्षण पूछनेके समय बतलानेमें संकोच करती हैं. प्रत्येक स्त्री बारह वर्षकी अवस्थासे पचास वर्षकी अवस्थातक महीने महीने ऋतुमती होती है. यह ऋतु यदि किसी कारणसे बन्द होजाताहै तबउस स्त्रीको रोगिणी जानना चाहिये. जिसको जन्महीसे कोई रोग होताहै तो वह ऋतुमती नहीं होती है. अधिक रोगिणी स्त्री ऋतुमती नहीं होती है. अधिक शीत लगनेसे वर्षाकालमें अधिक भीगनेसे ऋतु बन्द होजाना सम्भव है.

-यदि स्त्री बहुत स्थूल होजाती है तो भी ऋतु बन्द होजाता है. जिस कारणसे ऋतु बन्द हो उसीका उपाय करना चाहिये. गर्भिणी होनेसे पहले स्त्रीका ऋतुमती होना ऐसा है जैसे वृक्षमें फूलका आना. वृक्षमें फल आनेसे पहले फूल आता है. विना फूलके फल नहीं आसकता. जो स्त्री अधिक दिन ऋतुमती रहती है उसको प्रदररोगिणी जानना चाहिये. यह प्रदर रोग ऋतुमती होनेसे पहले दूसरे तीसरे दिन पुरुष संयोग होनेसे और बहुत मैथुनसे उत्पन्न होजाता है. इसके निवारणार्थ असगन्धको कूट पीसकर बराबर मिश्री मिलाय एक एक तोलाभर दिनमें तीन बार खाय. अथवा तज, लोध, बहुत भूने चने बराबर बराबर पीसकर सबके बराबर मिश्री मिलाय एक एक तोलाभर दिनमें तीन बार खाय. अथवा स्याह मिर्च सात और हरसिंगारकी कोंपल सात लेके जलमें पीसे और छानकर दिनभरमें तीन बार पीवै. शीतल जलसे योनिको दिनभरमें चार बार धोवै. जलमें वस्त्र भिगोकर पेडूपर रक्खै. बकरीकी लेंडी सुखाकर पोटली बनाय गर्भाशयके मुखपर रखदेवे. प्रदररोगवाली स्त्रीको उचित है कि बहुत उठे बैठे नहीं. सुखपूर्वक शय्यापर विश्राम करती रहे और साथ परहेज़के रहे.

धात्रीं च पथ्यां च रसांजनं च कृत्वा विचूर्णं सजलं निपीतम् । अत्यन्तरक्तोत्थितमुग्रवेगं निवारयेत्सेतुमिवाम्बुपूरम् ॥ २ ॥

भाषार्थ—आमलकी, हरीतकी, रसोंत इनका चूर्ण बनाकर जलके साथ पीवे तो अत्यन्त रुधिरसे उत्पन्न वेगको निवारण करताहै जैसे सेतु (पुल) जलके प्रवाहको रोक देता है ॥ २ ॥

अशोकस्य त्वचासिद्धं क्षीरं रक्तहरं भवेत् ।
कुरंटकस्य मूलानि मधुकं श्वेतचन्दनम् ॥ ३ ॥

पिष्ट्वा तत्कर्षमात्रं तु पाययेत्तन्दुलाम्बुना ।
सकृत्पीत्वा माषयूषं प्रदरात्परिमुच्यते ॥ ४ ॥
घृतभृष्टमाषयूषेण पथ्यं दद्यात् ॥

भावार्थ-अशोकवृक्षकी छाल दूधमें सिद्ध कर देनेसे अधिक रुधिरस्रावरोग विनष्ट हो जाता है. अथवा कुरंटककी जड, यष्टी-मधु, श्वेतचन्दन इन तीनोंको पीसकर एक कर्ष मात्र लेके 'चांव-लोंके जलसे पीवे. एक वार पीकर उडदका यूष प्रदररोगसे मुक्त करे है. घीसे घघारे हुए उडदका यूष पथ्यमें देवे ॥ ३ ॥ ४ ॥

अपमार्गस्य मूलं तु दृढपूगेन भक्षयेत् ।
रक्तस्रावं निहन्त्याशु सुखीभवति सुन्दरी ॥ ५ ॥

भावार्थ-अपामार्ग (चिर्चिरा) की जड दृढसुपारी सहित पीसकर खाँय तो रुधिरस्रावरोग दूर हो जाता है और स्त्री सुखी हो जाती है ॥ ५ ॥

मूलं तु शरपुंखायाः पेषयेत्तंदुलोदकैः ।
पाययेत्कर्षमात्रं तदातिरक्तप्रशान्तये ॥ ६ ॥

भावार्थ-शरपुंखाकी जड चांवलके जलमें पीसकर कर्षमात्र पीनेसे अतिरुधिरस्रावरोग शान्त हो जाता है ॥ ६ ॥

चन्दनं क्षीरसंयुक्तं सघृतं पाययेद्भिषक् ।
शर्करामधुसंयुक्तमसृक्स्रावविनाशनम् ॥ ७ ॥

भावार्थ-कुशकी जड, वा केलेकी फली, वा बरियारेकी जड, वा बेरीके फल अथवा गिलोय चांवलोंके जलमें मिलाकर पीनेसे स्त्रियोंका अत्यन्तरुधिरस्रावरोग निवारण होजाताहै ॥ ८ ॥

दार्वीरसांजनवृषाब्दकिरातबिल्वभल्लातकैरथकृतो मधुना कषायः। पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं सशूलं पीतं सितारुणविलोहितनीलरूपम् ॥ ९ ॥

भावार्थ-दारुहलदी, रसौंत, वासक, चिरायता, बिल्व, भिलावा इन सब औषधियोंका काढा करके शहत मिलाय पीवै तो शूलसहित प्रदररोग, पीतवर्ण प्रदर, श्वेतप्रदर, रक्तवर्णप्रदर, लोहितवर्ण, नीलवर्णप्रदर विनष्ट होजाता है ॥ ९ ॥

शतावरीघृत।

शतावर्यास्तु मूलस्य रसान्येव समाहरेत्।
चत्वारिंशत्पलान्येव वस्त्रपूतं समाचरेत् ॥ १० ॥

भावार्थ-शतावरीकी जडका रस चालीस पल प्रमाण निकालकर वस्त्रसे छानलेवै ॥ १० ॥

द्रवतुल्यं गवां क्षीरं क्षीरस्य द्विगुणं घृतम्।
जीवन्ती शैलुमज्जा च धातकी क्षीरिकापि च ॥११॥

भावार्थ-रसके बराबर गायका दूध, दूधसे दूना घी, और जीवन्ती, अखरोट, धाईके फूल, दुद्धी ॥ ११ ॥

मुद्गपर्णी माषपर्णी महामेदा शतावरी।
द्राक्षा परुषको यष्टी जीरकं प्रतिकार्षिकम् ॥ १२ ॥

भावार्थ-मुद्गपर्णी, मांषपर्णी, महामेदा, शतावरी, दाख, फालसे, मुलहठी, जीरा ये औषधी एक कर्ष (दो तोले) प्रति औषधी लेवै ॥ १२ ॥

पलार्द्धं मधुकं पुष्पं सर्वमेकत्र कारयेत् ।
घृतशेषं समुत्तार्य शीतीभूते च निक्षिपेत् ॥ १३ ॥

भाषार्थ-आधा पल (चार तोले) महुआ लेकर सब औष-धियोंको एकत्र करै और पाक बनावे जब घी मात्र रह जाय तब आंचसे उतार शीतल करके आगे लिखी वस्तु डालै ॥ १३ ॥

पलाष्टकं शुंठिचूर्णं क्षौद्रस्यापि पलाष्टकम् ।
सितादशपलं योज्यं शतावरिघृतं त्विदम् ॥ १४ ॥
लेह्यकर्षं हरेदाशु दुःसाध्यमतिरक्तजम् ।
कामलां वातरोगांश्च ह्यश्मरीं च शिरोग्रहम् ॥ १५ ॥

भाषार्थ-सोंठका चूर्ण आठ पल, शहत आठ पल, शक्कर दश पल, यह शतावरी घृत है, यह घी प्रतिदिन एक कर्ष (दो तोले) प्रमाण सेवन करनेसे दुःसाध्य रक्तस्रावरोग, कामला और वातरोग, पथरी, शिरशूल इन रोगोंको शीघ्र हरै है ॥ १४ ॥ १५ ॥

कपित्थं वेणुपत्रं च समांशं मधुना सह ।
लीढं सप्ताहमाधिक्यं पुष्पस्योपशमं नयेत् ॥ १६ ॥

भाषार्थ-कैथ, बांसके पत्ते इनको समान भाग शहतके साथ सात दिन पर्यन्त चाटै तो अधिक पुष्प (रुधिरस्राव) निवारण हो जाता है ॥ १६ ॥

नष्टपुष्पसमुद्भव ।

तिलमूलकषायं तु ब्रह्मदंडीयमूलकम् ।
यष्टित्रिकटुकोन्मिश्रं क्वाथयुक्तं च पाययेत् ॥ १७ ॥
क्वाथं गुडञ्चूषणजं तिलभार्गीत्वचं पिबेत् ।
स्त्रीणां रक्तभवे गुल्मे नष्टपुष्पे च योजयेत् ॥ १८ ॥

भापार्थ-तिलके वृक्षकी जडका काढा बनाय उसमें ब्रह्मदंडीकी जड, मुलहठी, सोंठ, मिर्च, पीपरि इनका काढा मिलाय पीवे. अथवा गुड और सोंठ, मिर्च. पीपरि, तिल, भारंगीकी त्वचा इनका काढा बनाय पीवे तो स्त्रियोंके रक्तगुल्म, रजके विनष्ट हो जानेमें यह हितकारी है अर्थात् रक्तगुल्मरोग नष्ट हो जाता है और फूल (रज) नष्ट होगया हो तो फिर उत्पन्न होजावे ॥ १७ ॥ १८ ॥

दूर्वादल तंदुलतुल्यभागं निष्पिष्य पिष्टं परिपाचितं च। तद्भक्षयित्वा वनिता प्रनष्टं पुष्पं लभेत्स्वीयवलानुमानम् ॥ १९ ॥

भापार्थ-दूब (घास) चावल समान भाग लेकर पीसलेवे. अनन्तर पकाकर इसको खानेसे स्त्रीका नष्ट हुआ पुष्प फिर प्राप्त होता है अर्थात् स्त्री रजस्वला होती है और अपने बलके अनुमान रजकी उत्पत्ति होती है ॥ १९ ॥

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौ भृष्टं जवायाः कुसुमं च पिष्टम्। गृहाम्बुना पीतमिदं युवत्याः करोति पुष्पं हरभापितोऽयम् ॥ २० ॥

भापार्थ-मालकांगनीके अतिकोमल पत्ते अग्निमें जलाय गुडहरके फूल मिलाय पीस लेवे अनन्तर घरके जलक साथ पीवे तो स्त्रीका मासिक धर्म बन्द हो जानेपर फिर वह स्त्री मासिक धर्मवाली अर्थात् रजस्वला होती है यह शिवजीने कहा है ॥ २० ॥

ऋतु बन्द होनेका कारण भली भाँति जबतक न जानलेवे तबतक कोई औपधी सेवन न करे. कारण जान लेनेपर ऋतुको लानेवाली औषधियोंका सेवन करे. एक महीनेतक औषध सेवनका प्रमाण है. वैद्य प्रथम यह चिकित्सा करे कि प्रातःसमय प्रतिदिन

गरम जलसे भरे हुए एक कुंडमें आधे घंटेतक स्त्रीको बिठावे और कईवार गरम दूध पिलावे. परंतु यह ध्यान रहे कि स्त्रीका नीचेका अंग जलमें डूबारहे. इस उपायके उपरान्त उन औषधियोंको खिलावे जो औषधियां पूर्व कह चुके हैं.

वंध्या (बाँझ) स्त्री।

जिस स्त्रीके गर्भ नहीं ठहरता अथवा जो स्त्री भोगके योग्य नहीं होती उसको वन्ध्या कहते हैं. वन्ध्या स्त्री अनेक प्रकारकी होती हैं और अनेक कारणोंसे भी स्त्री वन्ध्या होजाती हैं. परंतु जिस स्त्रीके अंगोंमें विभेद हो, अंडकोश जो गर्भाशयके समीप बादामके समान छिपे होते हैं वे पुरुषके समान प्रगट हों, कुच न हों, योनिका छिद्र बहुत छोटा हो, रजस्वला न होतीहो ऐसी स्त्रीके निमित्त कोई उपाय करना वृथा है. कोई स्त्री ऐसी भी हैं कि एक पुरुषसे वन्ध्या रहती है वही दूसरे पुरुषसे गर्भवती होजाती है. इसमें पुरुषका दोष भी समझा जासकता है. क्यों कि नपुंसक लक्षणवाले पुरुषसे गर्भ नहीं ठहर सकता. परंतु पुरुष ठीक होने पर भी कोई स्त्री गर्भ नहीं धारती. इस बातकी परीक्षा तो वहीं होसकती है जहां (जिस ज्ञातिमें) दूसरे पुरुष करनेका प्रचार हो. गर्भधारणकी अवस्था आजकल कमसे कम दश और अधिकसे अधिक चौसठ वर्ष पर्यन्त जानना. परंतु रज रहनेका प्रमाण पचास वर्षतक है अर्थात् जो निरन्तर सुखकी दशामें स्त्री होगी और चौदह वर्षकी अवस्थासे रजस्वला होगी और नियमपूर्वक शास्त्रानुसार वर्ताव करेगी वह चौसठ वर्षकी आयुतक रजस्वला होसकती है. यही क्रम उच स्त्रियोंमें जानना. परंतु आजकलका समय बडा दुर्घट है, नियमानुसार वर्ताव करनेमें स्त्री पुरुषोंको बडा संकट ज्ञात पडता है. इसी कारण अनेक दुःख भी उपस्थित होजाते हैं. बालविधवा और वन्ध्या स्त्रियोंकी संख्या बढजानेका यही कारण है कि शास्त्रा-

नुसार वर्ताव नहीं होता है. कोई स्त्री बहुत मोटी होजाती है अथवा दुबली होजाती है अथवा किसी विशेषरोगके कारणसे वन्ध्या होजाती है. रजोवती स्त्रीका रज वन्द होजानाही वन्ध्यापन है. ऐसी दशामें अंगकम्पन कटि कूले और जंघाओंमें पीडा होने लगती है. आलस्य आजाता है. अंगोंमें हडफूटन होती है. नाभिके नीचे भारीपन होता है. नाडी तेज चलने लगती है. मुख लाल होजाता है. ज्वर होनेलगता है. प्यास अधिक होती है. शिरमें दर्द होनेलगता है. कभी कभी वमन होनेलगती है. वायगोलाके लक्षण भी प्रगट होते हैं. बेचैनी होती है. कभी रजस्वला होनेपर सरदी लगती है. दर्द होता है. सफेदरंगका रज होजाता है. कभी रज सहसा कम होजाता है. रजके दोषसे स्त्री प्रायः वन्ध्या होजाती है. स्त्रीके वन्ध्या होनेमें बाईस दोष हैं अर्थात् बाईस प्रकारसे स्त्री वन्ध्या कहाती है. १ वन्ध्या, २ अंकुरा, ३ उदावर्ता, ४ पातिता, ५ परिप्लुता, ६ विप्लुता, ७ लोहिता, ८ वातला, ९ वाहमनी, १० प्रसंगनी, ११ मृतवत्सा, १२ अत्यानन्दा, १३ पतला, १४ अचरना, १५ कुन्ती, १६ श्लेष्मला, १७ अतिचरना, १८ महायोनि, १९ त्रिदोषनी, २० सूचीवक्रा, २१ अंडनि, २२ संडी.

१ वन्ध्या उसको कहा है कि जिसके गर्भाशयमें कांटा चुभानेके समान कुछ पीडा हो और ऋतुमती ठीक ठीक न हो. २ अंकुराका लक्षण यह है कि शरीर सदा भारी जान पडै. नाभिके नीचे बहुतक्लेश जानपडै. हाथ पाँवमें दाह हो. देह प्रतिदिन दुर्बल हो. दो तीन मास ऋतु वन्द रहकर फिर अधिकतासे रज निकलने लगे. ३ उदावर्ताका लक्षण यह है कि जिस स्त्रीका महाक्लेशपूर्वक कठिनतासे कुछ रुधिर बहताहीरहै. ४ पातिताका लक्षण यह है कि कुचोंमें भारीपन हो. कुछ रुधिर बहुत दिनोंतक बहता रहे. गर्भ ठहरकर गिर जाय. ५ परिप्लुताका लक्षण यह

है कि भोगके समयमें पीडा होती है और गर्भ नहीं ठहरता. ६ विप्लुताका लक्षण यह है कि स्त्री ऋतुमती नहीं होती और गर्भाशयमें कुछ पीडा होती रहती है. ७ लोहिताका लक्षण यह है कि ऋतुमती होनेपर स्त्रीका रज दाह होकर निकलता है अर्थात् जलन पडती है. ८ वातलाका लक्षण यह है कि वारीक कांटे चुभनेके समान पीडा हो और योनि कठोर हो जाय. ९ वाह्मनीका लक्षण यह है कि ऋतुसंबंधी रुधिर स्निग्ध श्वेतवर्ण मिश्रित गाढा निकलताहै. १० प्रसंगनीका लक्षण यह है कि गर्भ होनेपर पीडाके साथ गिर जाता है और गर्भाशयका स्थान चलायमान होजाताहै अथवा हिलकर ढीला होजाताहै. ११ मृतवत्साका लक्षण यह है कि गर्भ ठहरा और रुधिर प्रवाह होकर गर्भ पात होगया. अथवा पुत्र होकर मर जानेसे उसको मृतवत्सा कहते हैं. १२ अत्यानन्दाका लक्षण यह है कि स्त्री कभी संभोगसे तृप्त न होवे और गर्भ न ठहरे. १३ पतलाका लक्षण यह है कि स्त्रीके कुछ ज्वरसी रहताहो और योनिमें बहुत जलन पडी रहती हो. १४ अचरनाका लक्षण यह है कि स्त्री संभोगसमय बहुत जल्दी द्रवीभूत होजाती है. १५ कुन्तीका लक्षण यह है कि स्त्रीकी योनिमें छोटी छोटी फुंसियां होती हैं और खुजली पडती है. १६ श्लेष्मलाका लक्षण यह है कि स्त्रीकी योनि फुंसी और खुजलीसे युक्त होनेपर स्निग्ध और शीतल होती है. १७ अतिचरनाका लक्षण यह है कि स्त्रीको भोगमें आनन्द प्राप्त नहीं होता, स्खलितभी नहीं होती और गर्भ भी नहीं ठहरता. ये उपरोक्त वन्ध्यायें साध्य हैं इनकी चिकित्सा होनेसे गर्भधारण हो सकता है और जो असाध्य हैं वे नीचे लिखते हैं. १८ महायोनि नामवाली असाध्य वन्ध्याका लक्षण यह है कि स्त्रीकी योनि बहुत विस्तारवाली होनेसे गर्भ नहीं ठहरता है. १९ त्रिभेपूर्णाका लक्षण यह है कि

योनिमें फुंसियां खुजली जलन होती है और ऐसी पीडा होती है जैसे कोई सुई चुभा रहा है. २० सूचीवक्त्राका लक्षण यह है कि योनि बहुत छोटे मुँहकी होती है. २१ अंडनीका लक्षण यह है कि जो स्त्री छोटीही अवस्थासे युवकोंसे भोग करानेके कारण लंबी हो जानेके कारण योनि दूषित हो जाती है. २२ खंडीका लक्षण यह है कि स्त्रीकी योनि खरखरी और रूखी होती है. ऋतुमती नहीं होती और स्तन बहुत कम उठते हैं. जो रोग साध्य होता है और रोगी अच्छा होजानेके योग्य होता है, परन्तु उसकी चिकित्सा नहीं की जाती तो वही रोग असाध्य होजाता है इस कारण उचित है कि रोगको शान्ति करदेनेका उपाय शीघ्र करें.

वन्ध्या चिकित्सा।

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत्।
एकवर्णगवां क्षीरे कन्याहस्तेन पेषयेत्॥ २१॥
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या पलार्धं तद्दिने दिने।
क्षीरशाल्यन्नमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत्॥ २२॥
उद्वेगं भयशोकं च दिवानिद्रां विवर्जयेत्।
अतिक्रोधं च हर्षं च वर्जयेच्छीतमातपम्॥ २३॥
न तथा परमां सेवां व्यायामं च विवर्जयेत्।
एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या भवति पुत्रिणी॥ २४॥

भापार्थ-शालिंच शाककी जड और पत्तोंसहित रविवारके दिन उखाड लावे और एकरंगकी गायके दूधके साथ कुमारीकन्याके हाथसे पेषण करावे और ऋतुकालमें वन्ध्या स्त्री प्रतिदिन आधा पल (चार तोले) प्रमाण सेवन करे, दूध भात मूंगकी दाल

आदि लघु आहार (हलका भोजन) करे और उद्वेग (सोच) भय, शोक, दिनमें शयन नहीं करे और बहुत क्रोध, हर्ष तथा शीत धूपसे बचाव रक्खे तथा बहुत सेवा टहल और अधिक अंग संचालनका कर्म न करे, इस प्रकार सात दिनतक औषध सेवन करे तो वन्ध्या पुत्रवती होती है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

एकमेव तु रुद्राक्षं रक्ताक्षीकर्षमात्रकम् ।
पूर्ववच्च गवां क्षीरैर्ऋतुकाले प्रदापयेत् ॥ २५ ॥

भापार्थ-एक रुद्राक्ष और रक्ताक्षी एक कर्ष (दो तोले) मात्र लेके एक रंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे पेषण कराकर ऋतुकालमें पीनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ॥ २५ ॥

पत्रमेकं पलाशस्य सुरभीपयसान्वितम् ।
पीत्वा तु लभते पुत्रं रूपवन्तं न संशयः ॥ २६ ॥

भापार्थ-ढाकका एक पत्ता सफेद गायके दूधके साथ पीनेसे रूपवान् पुत्र प्राप्त होता है ॥ २६ ॥

देवदालीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
निष्कत्रयं पिबेत्स्त्री रैः पूर्ववत्क्रमयोगतः ॥ २७ ॥
शीततोयेन संपिष्टं शरपुंखीयमूलकम् ।
कर्षं पीत्वा लभेद्गर्भं पूर्ववत्क्रमयोगतः ॥ २८ ॥
मुस्ताप्रियंगु सौवीरं लाक्षालोध्रं समं पिबेत् ।
कर्षं तंदुलतोयेन वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ २९ ॥

भापार्थ-देवदालीकी जड पुष्यनक्षत्र रविवारमें उखाड लावै और तीन निष्क (बारह तोले) प्रमाण एक रंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे वन्ध्या स्त्री ऋतुकालमें सात दिन पीवै तो पुत्रवती होवै. अथवा शरपुंखाकी जड शीतल जलमें पीसकर

एक कर्ष (दो तोले) प्रमाण एक रंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे वन्ध्या स्त्री पीवै तो पुत्रवती होवै. अथवा मोथा, मालकांगनी, कांजी लाख और शहत इन औषधियोंको समान भाग लेके एक कर्ष प्रमाण चावलोंके जलके साथ पान करनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

समूलां सहदेवीं च संग्राह्य पुष्यभास्करे ।
छायाशुष्कं च तच्चूर्णं एकवर्णगवां पयः ॥
पूर्ववत् पिवते नारी वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ ३० ॥

भाषार्थ-सहदेवीवृक्ष जडसहित पुष्यनक्षत्र रविवारके दिन उखाड लावै उसको छायामें सुखाय चूर्ण बनावै. उस चूर्णको एक रंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे वन्ध्या स्त्री ऋतुकालमें पीवै तो पुत्रवती होती है ॥ ३० ॥

कृष्णापराजितामूलमजाक्षीरेण संपिवेत् ।
ऋतुस्नाता त्रिधा या तु वन्ध्या गर्भधरा भवेत्॥ ३१॥
नागकेशरचूर्णं च नूतनं पयसा सह ।
पिवेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ॥ ३२ ॥
तद्दतो लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ।
पुत्रजीवस्य पत्रैकं पिवेत्क्षीरे ऋतौ तु या ॥ ३३ ॥
पतिसंगाच्च सा नारी वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।
तस्य मूलं चैकवर्णाक्षीरैः पीत्वा च पुत्रिणी ॥ ३४ ॥

भाषार्थ-कृष्ण अपराजिता (काली शालिपर्णी) की जड बकरीके दूधमें ऋतुस्नाता वन्ध्या तीन दिन पीवै तो गर्भ धारण करती है. तथा नागकेशरका चूर्ण एकवर्णवाली नवीन गायके दूधके साथ सात दिन पीवै और घीके साथ

भोजन करै तो ऋतुकालमें पतिके संगसे वह स्त्री गर्भवती होवै. तथा पुत्रजीवक (पतिजिया) का एक पत्र दूधके साथ पीसकर जो स्त्री ऋतुकालमें पीवे तो पतिके संगसे वह वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है. तथा पतिजिया वृक्षकी जड एक वर्णवाली गायके दूधके साथ पीसकर पीनेसे वन्ध्या नारी पुत्रवती होती है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ।
एतानि समभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत् ॥ ३५ ॥
त्रिरात्रं पंचरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम् ।
अस्मिन्निपीयमाने तु गर्भो भवति निश्चितम् ॥ ३६ ॥

भाषार्थ-श्वेतकदम्बपत्र अर्थात् कदम्बके वृक्षके सफेद पत्ते कटाईकी जड समान भाग लेकर बकरीके दूधमें पेषण कर तीन रात्रि वा पाँच रात्रिपर्यन्त यह औषधि पीवे तो इसके पीनेसे वन्ध्या स्त्री अवश्य गर्भवती होती है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

अश्विन्यां बोधिवृक्षस्य वन्दाकं ग्राहयेद्बुधः ।
गोक्षीरैः पानमात्रेण वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥ ३७ ॥
काकोल्यौ लक्ष्मणामूलं तथा षष्टिकतंडुलम् ।
नार्यैकवर्णपयसा पीत्वा गर्भवती ऋतौ ॥ ३८ ॥

भाषार्थ-अश्विनीनक्षत्रमें पीपलवृक्षका बाँदा लाकर गायके दूधके साथ पीसकर पीवे तो वन्ध्या पुत्रवती होवे. काकोली क्षीरकाकोली तथा लक्ष्मणाकी जड और साँठीके चावल समानभाग लेकर एकवर्णवाली गायके दूधके साथ पीनेसे वन्ध्या नारी ऋतुकालमें गर्भवती होवै ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

गोक्षुरस्य च बीजं तु पिबेन्निर्गुंडिकारसैः ।
त्रिरात्रं पंचरात्रं वा वन्ध्या गर्भवती भवेत् ॥ ३९ ॥

भगाख्ये चैव नक्षत्रे वटवृक्षस्य मूलकम् ।
हस्ते बद्धा लभेत्पुत्रं गोक्षीरेण पिबेत्तथा ॥ ४० ॥

भाषार्थ-गोखरूके बीज सँभालूके रसमें मिलाकर तीन दिन वा पांच दिन वन्ध्या स्त्री पीवै तो गर्भवती होवै. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें वडवृक्षकी जड लाकर हाथमें बांधै तथा गायके दूधके साथ पीवै तो पुत्र प्राप्त होवै॥ ३९ ॥ ४० ॥

कंकोलबीजचूर्णं तु एकवर्णगवां पयः ।
ऋतौ निपीयमाने तु वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ ४१॥
एकवर्णसवत्साया गोक्षीरेण सुपेषितम् ।
भावितं वटवन्दाकं पीतं वन्ध्या सुतं लभेत् ॥ ४२॥

भाषार्थ-काकोली बीजका चूर्ण एकवर्णवाली गायके दूधके साथ ऋतुकालमें पीनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होवै. वटवृक्षका बांदा एक वर्णवाली बछरासमेत गायके दूधके साथ पीनेसे वन्ध्या पुत्रवती होती है ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

तिलरसकुडवैकं गोकरीषाग्नियोगात् तरुणवृषभमूत्रं प्रस्थयुक्तं विपक्वम् । ऋतुसुदिवसमध्ये सप्तवारैश्च पीतं जनयति सुतमेतन्निश्चितं पुष्पितेव ४३॥

भाषार्थ-तिलका तेल एक कुडव (सेरभर) सूखे गोबरकी अग्निसे पकाय उसमें तरुण वृषभका मूत्र प्रस्थभर (चार सेर) मिलाय पचावै और तेल रहजानेपर उतार लेवै उस तेलको ऋतुके दिनोंमें सात वार अर्थात् सात दिन सेवन करनेसे वन्ध्या स्त्री अवश्य पुत्र उत्पन्न करै ॥ ४३ ॥

सपिप्पली केशरशृंगवेरं क्षुद्रोपणं गव्यघृतेन पीतम् । वन्ध्यापि पुत्रं लभ्यते हठेन योगोत्तमोऽयं मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ ४४ ॥

भापार्थ-पीपरि, नागकेशर, अदरख, छोटी कटैया, काली मिर्च इन सबका चूर्ण गायके घीके साथ पीवै तो वन्ध्या भी पुत्रवती होवै, यह उत्तम योग मुनियोंने कथन किया है ॥ ४४ ॥

मूलं शिफां वा किल लक्ष्मणाया ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः। पथ्यानुचर्यं नियमेन भुंक्ते पुत्रं प्रसूते वनिता चिरेण ॥ ४५ ॥

भापार्थ-लक्ष्मणाकी जड अथवा छड लेके दूधके साथ पीसै और ऋतुकालमें तीन दिन नियमानुसार पथ्यसहित वन्ध्या स्त्री पीवै तो शीघ्र गर्भ धारण कर पुत्र उत्पन्न करे ॥ ४५ ॥

तुरंगगन्धा घृतवारिसिद्धं साज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा। घृतं तु पेयं शयनस्य काले वन्ध्यापि पुत्रं पुरुषप्रसंगात् ॥ ४६ ॥ प्राप्नोतीति शेषः ॥

भापार्थ-असगन्ध घी जलमें सिद्ध कर दूधके साथ ऋतुमती स्त्री स्नानके दिन पीवे और शयनकालमें घी पीवै तो वन्ध्या भी पुरुषप्रसंगसे पुत्रको प्राप्त होती है ॥ ४६ ॥

पुष्योद्धृतं लक्ष्मणमेव चूर्णं पुंसा निपिष्टं सघृतं निपीय। क्षीरोदनं प्राश्य पतिप्रसंगाद्गर्भं विदध्यात्तरुणी न चित्रम् ॥ ४७ ॥

भापार्थ-पुष्यनक्षत्रमें लक्ष्मणाकी जड लाकर चूर्ण करै परंतु पुरुषके हाथसे चूर्ण बनवाय घी सहित औषधी पान करै और खीर खाय तो पतिप्रसंगसे युवती निस्सन्देह गर्भवती होवै ॥ ४७ ॥

काकवन्ध्या चिकित्सा।

पूर्वं पुत्रवती भूत्वा पश्चान्नो सूयते यदि।
काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा च प्रकथ्यते॥४८॥

भाषार्थ-पहले एक पुत्रवाली होकर फिर यदि पुत्र उत्पन्न नहीं होवै उसको काकवन्ध्या जानिये. उसकी चिकित्सा कही जाती है ॥ ४८ ॥

विष्णुक्रान्तां समूलां च पिष्ट्वा दुग्धैस्तु माहिषैः ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले च भक्षयेत् ॥ ४९ ॥
एवं सप्तदिनं कुर्यात्पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ।
अश्वगन्धीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥ ५० ॥
योजयेन्माहिषीक्षीरैः पलार्धं भक्षयेत्सदा ।
सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या न संशयः ॥ ५१ ॥

भाषार्थ-अपराजितालताको जडसहित उखाड लावे और पीसकर भैंसके दूधके साथ भैंसका नैनू मिलाय ऋतुकालमें भक्षण करे एवं सात दिन करे, पूर्व कथनानुसार पथ्यसे वर्ताव करे. अथवा असगन्धकी जड पुष्यनक्षत्र रविवारके दिन लावे और भैंसके दूधके साथ आधे पल (चार तोले) प्रमाण प्रतिदिन सेवन करे. सात दिन सेवन करनेसे काकवन्ध्या निस्सन्देह गर्भ धारण करे ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

मृतवत्सा चिकित्सा ।

गर्भः संजातमात्रेण पक्षान्मासाच्च वत्सरात् ।
म्रियते द्वित्रिवर्षाद्वा यस्याः सा मृतवत्सका ॥ ५२ ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीका गर्भ उत्पन्न होतेही अथवा एक पक्षभरमें वा एक महीनेभरमें, एक वर्ष अथवा दो तीन वर्षका होकर मर-जाता है उसको मृतवत्सा कहते हैं ॥ ५२ ॥

प्राङ्मुखी कृत्तिकाभे तु वन्ध्याकर्कोटकीं हरेत् ।
तत्कन्दं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रं सदा पिबेत् ॥ ५३ ॥

भापार्थ–मृतवत्सा वन्ध्या स्त्री कृत्तिका नक्षत्रमें पूर्वमुखी हो पीतपुष्पाकी जड लाकर उसको जलमें पीसकर एक कर्ष मात्र (दो तोले) नित्य पान करै ॥ ५३ ॥

या बीजपूरद्रुममूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषा विमिश्रम् । ऋतौ निपीय स्वपति प्रयाति दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ॥ ५४ ॥

भापार्थ–बिजौरानींबूकी जड दूधमें सिद्ध कर घी मिलाय जो स्त्री ऋतुकालमें पीकर अपने पतिके समीप जाती है वह दीर्घ आयुवाला पुत्र उत्पन्न करती है ॥ ५४ ॥

द्रुममूलघृत ।

मंजिष्ठा मधुकं द्राक्षा त्रिफला शर्करा बला ।
मेदा पयस्या काकोली मूलं चैवाश्वगंधजम् ॥५५॥
अजमोदा हरिद्रे द्वे सुहिंगु कटुरोहिणी ।
उत्पलं कुमुदं कुष्टं काकोल्यो चन्दनद्वयम् ॥ ५६ ॥
एतेषां कार्षिकेर्भागैर्घृतं प्रस्थं विपाचयेत् ।
शतावरीरसं क्षीरं घृताद्देयं चतुर्गुणम् ॥ ५७ ॥
जीववत्सैकवर्णाया घृतमत्र तु दीयते ।
आरण्यगोमयेनैव वह्निज्वाला प्रदीयते ॥ ५८ ॥
अनुक्तं लक्ष्मणमूलं क्षिपन्त्यत्र चिकित्सकाः ।
सर्पिरेतन्नरः पीत्वा नित्यं स्त्रीषु वृषायते ॥ ५९ ॥
पुत्रान् जनयते नारी मेधाढ्यान् प्रियदर्शनान् ।
या चैव स्थिरगर्भा स्याद्या नारीजनयेन्मृतम् ॥६०॥

स्वल्पायुषं वा जनयेद्या च कन्याः प्रसूयते।
योनिदोषे रजोदोषे गर्भस्रावे च शस्यते ॥ ६१ ॥
प्रजावर्द्धनमायुष्यं सर्वग्रहनिवारणम्।
नाम्ना द्रुमघृतं ह्येतदश्विभ्यां परिकीर्तितम् ॥ ६२ ॥

भाषार्थ-मजीठ, यष्टीमधु, दाख, त्रिफला (हड आँवला बहेडा), शक्कर, वरियारा, मेदा, भूमिकूष्मांड, काकोलीकी जड, असगंध, अजमोद, हलदी, दारुहलदी, शुद्ध हींग, कुटकी, नीलोत्पल, कुमुद, कूट, काकोली, क्षीरकाकोली, लालचंदन, श्वेतचंदन ये सब औषध दो दो तोले प्रमाण लेवें चार सेर घीमें मिलाकर पचावे और शतावरीका रस सोलह सेर गायका दूध सोलह सेर मिलावे. यहां एकरंगवाली गाय कि जिसका बछरा जीता हो उसका घी इस औषधिमें देना और जंगली सूखे गोबरकी अग्निसे पचाना ठीक है. उपरोक्त औषधियोंमें नहीं कही हुई लक्ष्मणाकी जड चिकित्सक जन मिलाते हैं अर्थात् वैद्यजन लक्ष्मणाकी जड भी डालते हैं. यह घृत यथाविधि पाक कर मनुष्य सेवन करे तो अधिक बलवान् होता है, नित्य स्त्रीमें बल प्रकाश करता है. स्त्री इस औषधिको सेवन करनेसे बुद्धिमान् और सुंदर पुत्र उत्पन्न करती है. इससे गर्भ स्थिर होता है. जिस स्त्रीके बालक उत्पन्न होकर मर जाते हैं अथवा जिस स्त्रीके बालक थोडे कालतक जीते हैं. जो स्त्री कन्या उत्पन्न करती है तथा योनिदोष रजदोष और गर्भस्राव ये सब दोष इस घृत सेवनसे शान्त होजाते हैं. सन्तानकी आयुको बढानेवाला सब दोषोंको शान्त करनेवाला यह द्रुमघृत नामक औषध अश्विनीकुमार (देवताओंके दोनों वैद्यों) ने कथन किया है ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥

मिथ्या गर्भ ।

प्रायः ऐसा भी होजाता है कि उदरमें गर्भ न होनेपर भी गर्भकेसे लक्षण देख पडते हैं. आलस्यके कारण अपने घरका काम न करने और अधिकतर बादी वस्तुओंके सेवनसे गर्भाशय फूल जाता है, उसके भीतर मांसका लोथडासा होजाता है तो गर्भ होनेका भ्रम रहता है और प्रतिदिन बढतासा जान पडता है. रज बन्द होजाता है जिससे निश्चय होजाता है कि स्त्री गर्भवती है. परन्तु यदि पांचवें महीनेमें गर्भ न फडके और स्त्रीकी भूख घट जाय, चित्तकी प्रसन्नता जातीरहे तथा नाडी दूनी फडकनेलगे तो मिथ्या गर्भ जानकर रजका रोग जानना. एवं प्रातःकाल कुँएसे तुरन्त जल लाकर उसमें दो तोले शहद मिलाकर स्त्रीको पिलानेसे यदि नाभिके नीचे पीडा होनेलगे तो गर्भ जानना और पीडा न होवै तो रजरोग जानना. इसके निवारणार्थ चार छै दस्त करादेना और वातविकारनाशक तथा रजदोषनिवारक औषधी वैद्यकी सम्मतिसे देना उचित है. अवधि बीत जानेपर मिथ्या गर्भका गोला मांसपिंड स्वयं पतन होजाता है. यही मिथ्यागर्भ है.

गर्भपात निवारण यत्न ।

गर्भवतीके उदरमें यदि गर्भस्थ बालक पांचवें महीनेमें न हिले डुले तो बालक पेटमें मरगया है. ऐसी दशामें गर्भपात होजाना अच्छा है और गर्भस्थ बालक फडकताहो और गर्भपातका लक्षण जान पडे अर्थात् गर्भवतीकी पीठमें पीडा होने लगे, मनमें आलस्य भरजाय, चित्त व्याकुल होने, लगे शरीर निर्बल होजाय, वमन आनेका भ्रम हो तो गर्भवतीको उत्तम बिछौनेपर करवटके बल लिटादेवे और बहुत शीतल जलमें वस्त्र भिगोकर पेडूसे नीचेतक रक्खे और शीतल जल आध सेर लेके उसमें फटकरी तीन तोले पीसकर मिलाय बारीक कपडा भिगोय योनिमें ऊपरतक रक्खे और

गर्भवतीको उठने बैठने न दे, अतिलघु आहार देवै, शीतल जल पीनेको देवै, गरम वस्तु कोईभी न देवै तो गर्भपात नहीं होगा.

गर्भवती रोग।

गर्भवतीका बहुतही सावधानतासे रहना चाहिये. असावधानी होनेसे गर्भवती रोगिणी होजाती है. रोगिणी होजानेपर गर्भवती की चिकित्सा करना भी कठिन काम है. बहुतही समझकर गर्भवतीको औषधी देना चाहिये. यदि गर्भवतीको ज्वर आने लगे तो मृदु चिकित्सा करै. क्योंकि तीक्ष्ण औषधियोंके द्वारा चिकित्सा करनेसे गर्भ पतित हो जाता है. थोडीसी गुर्च बांटकर दूधमें मिलाय उसमें आधी छटांक मिश्री डालकर पिलावै. अथवा गौरीसर, लाल चन्दन, किशमिश, महुआ, मुलहठी, नेत्रवाला, खस, धनियां, मिश्री इन सबको बराबर ले काढा बनाय सात दिन पिलानेसे गर्भवतीका ज्वर शान्त हो जाता है. अथवा लाल चन्दन खस, अनन्तमूल, पुष्करमूल, मुलहठी ये दो दो तोले लेके छे मात्रा बनावै, एक मात्रा पावभर जलमें पकाय छटांकभर रहनेसे मलकर छानले और शहत अथवा शक्कर मिलाकर पिलानेसे गर्भवतीका ज्वर शान्त हो जाता है. अथवा कासनीकी जड दश माशे घोट छानकर देवै. यदि ज्वर शीत लगकर आता हो तो चाय बनाकर उसमें दो तोले गुलकन्द डालकर पिलावै. अथवा अंडीका निर्मल तेल गरम दूधमें एक तोला डालकर पिलावै. अथवा बादामका तेल एक तोला भर गरम दूध पाव भरमें डालकर पिलावै तो गर्भवतीका ज्वर शान्त हो जाता है. यदि गर्भवतीको दस्त आने लगें तो जामुन और आमकी छालका काढा और चावलके सत्तू देवै. अथवा दही चावल साबूदाना, अथवा आंवलेका मुरब्बा खिलावै. यदि गर्भवतीके हृदयमें शूल हो तो कास, डाभ, गोखरू, अरंड इन सबकी जडको दूधमें औटाकर छानके

पिलावे तो हृदयशूल शान्त हो जाता है. यदि गर्भवतीका मूत्र रुक गया हो तो डाभ, कास, दूबकी जडको दूधमें औटाय छानकर पिलावे. अथवा कासनीका अर्क मकोयके अर्कमें मिलाकर पिला देवे. यदि गर्भवतीको वमन होने लगे तो वटवृक्षकी जटाको जलाय उसकी भस्मको शहतमें मिलाय चटावे. अथवा कपूर और कचरियाको पीसकर मूंगके बराबर गोली बनावे. वमन होनेसे पहले और पीछे एक एक गोली खिलावे तो वमन होना बंद होजावे. यदि गर्भवतीके लेस् वहता हो तो गुलनार, फटकरी, धायके फूल इनको बराबर पीसकर एक तोला प्रमाण लेके एक सेर वासी जलमें मिलाय पिचकारी लेवे. यदि गर्भवतीका कोठ बद्ध होजाय तो दो तोले गुलकन्द खाकर ऊपरसे दूध पीवे. अथवा रोगन बादाम दूधके साथ लेवे. यदि गर्भवतीके हृदयमें धडकन हो तो सेवका मुरब्बा तीन तोले अर्क बेदमुश्क सात तोले मिलाकर खाय अथवा आंवलेका मुरब्बा दो तोले सोनेके वर्क लपेटकर खाय तो धडकन बन्द होजावे. यदि गर्भवतीको खांसी आतीहो तो प्यास लगनेपर अर्क गावजुवां देवे, कचा जल न पिलावे. यदि गर्भवतीको मूर्छा हो तो मुखपर केवडा गुलाबका छींटा देवे और नौसादर चूना बराबर जलके साथ शीशीमें भरकर मिलाय सुँघावे और वस्त्र ढीले कर देवे तो मूर्च्छा शांत होवे. यदि गर्भवतीके शिरमें पीडा हो तो कपूर दो माशे, श्वेतचन्दन दो माशे, काहू दो तोले गुलाबमें घिसकर मस्तकपर लेप करे. यदि आधाशीशी हो तो दुध जलेबी खाय और हलका भोजन करे अर्थात् भूख बनी रहे. यदि गर्भवतीको बहुत थूक आती हो तो गरम वस्तु (मसाला, मांस आदि) न खाय, और कीकरकी छालको उबालकर उसमें थोडी फटकरी पीसकर मिलावे, उसकी कुल्ला करे तो बहुत थूक आना बन्द हो जायगा. यदि गर्भवतीके दांतोंमें पीडा होनेलगे तो अदरखको छीलकर उसपर लवण लगाय गरम

करके खावे. यदि गर्भवतीके कुच दुखने लगें तो चमेलीका तेल गरम जलमें मिलाकर कुचोंपर मलना चाहिये. यदि गर्भवतीको नींद न आती हो तो रातको शयन करते समय भैंसके दूधमें भांगके बीज पीसकर पांवके तलुओंपर लेप करै, बादामका तेल शिरपर मले, कुलफा और कद्दूकी भाजी खाय.

गर्भ विकृत चिकित्सा।

दुष्ट पवनसे गर्भ टेढा होकर अनेक प्रकारसे योनिके मुखपर आकर अड जाता है. तहां कोई गर्भ योनिके मुखको मस्तकसे कोई, उदरसे योनिद्वारको रोक लेता है. कोई एक हाथसे, कोई दोनों हाथोंसे, कोई तिरछा होके, कोई नीचा मुख होके, कोई पसलियोंको टेढा करके योनिद्वारको रोकता है. ऐसे आठ प्रकारसे विकृत गर्भकी गति होती है. इस विकारको दूर करनेके अर्थ नागदौनकी जड और लाल चीतेकी जडको जलमें पीसकर पिलानेसे तत्काल थोडे दिनोंका वा बहुत दिनोंका मराहुआ विकारी गर्भ पतित होजाता है.

गर्भ स्राव।

चार महीनेतक यदि कुछ गडबड हो जाय तो उसको गर्भस्राव कहते हैं और यदि पांचवें छठे मासमें गर्भ स्थिर हो जानेपर गडबड होजाय तो उसको गर्भपात कहते हैं. जैसे वृक्षसे कच्चा फल चोट लगनेसे विना समय गिर जाता है, उसी प्रकार चोट लगने दबने अथवा विषम भोजन करनेसे पीडित हो विना समय गर्भ गिर जाता है. अतीस, नागरमोथा, मोचरस, इन्द्रजव, सुगन्धवाला एक एक तोला लेके कुचलकर दो मात्रा बनावे. एक मात्रा पावभर जलमें औटावे, जब छटांकभर रहजाय तब उतार छानकर शीतल कर लेवे. इस काढेके पीनेसे चलित गर्भ प्रदर, और पीडाका नाश होता है.

प्रथममासे-गर्भरक्षा ।

जो गर्भवतीके प्रथम मासमें गर्भशूल हो तो लालचन्दन, मुलहठी, लोध, नागकेशर, नीलकमल, सिंघाडे, कसेरू इनको बराबर लेके चूर्ण बनाय प्रातःकाल दूधके साथ पीवै. परंतु पांच पांच माशेसे कम कोई औषधी न हो और गायका दूध पावभरसे कम न हो. अथवा बेलाके फूल, श्वेत चन्दन, सौंफ पांच २ माशेभर लेके चावलके धोवनके साथ शिलपर पीस उसी जलमें मिलाय छानकर दो तोले मिश्री मिलाय पावभर गायके दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त हो जाती है.

द्वितीयमासे-गर्भरक्षा ।

जो दूसरे मासमें गर्भशूल प्रगट हो तो केशर, तगर, कपूर, बेलगिरी इनको दूधमें पीस दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त होती है. अथवा कसेरू, जीरा, खजूर, सिंघाडा, बेलपत्र इनको शीतल जलमें पीस दूधके साथ पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

तृतीयमासे-गर्भरक्षा ।

श्वेत चन्दन, तगर, पद्माख, खस ये पांच २ माशेभर लेके शीतल जलसे पीसकर बकरीके दूधके साथ तीसरे महीने पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

चतुर्थमासे-गर्भरक्षा ।

यदि चौथे महीनेमें गर्भवतीके गर्भपीडा हो तो बडा गोखरू, सुगन्धवाला, नीला कमल, वनमूंग इनको मिश्री दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त होती है. अथवा केलेके पत्ते, अनारदाना, सिंघाडा, दाख, केलेकी जड इनको शीतल जलमें पीस बकरीके दूधमें छानकर पीनेसे गर्भपीडा शान्त हो जाती है.

पंचममासे-गर्भरक्षा।

जो पांचवें महीनेमें गर्भशूल हो तो नीलोत्पलका कन्द, कमलगट्टा, कमलकी नाल, शक्कर इन सबको बराबर लेके दूधमें मिलाय पीवै. अथवा नागकेशर, कमलगट्टेकी गिरी, कुमुदपुष्प, कमलकी नाल इनको गाय वा बकरीके दूधमें पीसकर पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

षष्ठमासे-गर्भरक्षा।

यदि छठे महीनेमें गर्भशूल हो तो मुनका, दाख, वच, इलायची, कमलगट्टा, नागकेशर इनको शीतल जलमें पीस छानकर पीवै. अथवा श्वेत चन्दन, कुमुदके बीज, बिजौरा नींबूके बीज दूधमें पीसकर पीवै. अथवा बालछड, छोटी इलायची, नागकेशर, किशमिश मुनक्का, कमलगट्टेकी गिरी इनको शीतल जलमें पीसकर पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

सप्तममासे-गर्भरक्षा।

यदि सातवें महीनेमें गर्भपीडा हो तो इन्द्रजौ, कैथका फल शालममिश्री, धानकी खील इनको बकरीके दूधमें पीस बकरीके दूधके संग पीवै. अथवा शतावरी और कमलकी नालको दूधमें पीसकर दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त हो जाती है.

अष्टममासे-गर्भरक्षा।

जो आठवें महीनेमें गर्भपीडा हो तो गजपीपल, पद्माख, कमलगट्टेकी गिरी, कमलफूल, धनियां इनको शीतल जलमें पीस दूधमें मिलाय पीवै तो गर्भपीडा शान्त होवै.

नवममासे-गर्भरक्षा।

यादि नवम मासमें गर्भवेदना हो तो ढाकके पत्तोंको चांवलके धोवनमें पीसकर पीवै. अथवा छोटी इलायची, वायविडंग, गज-

पीपरि, सफेद जीरा, बकरीके दूधमें पीस बकरीके दूधके साथ पीवे. अथवा क्षीरकाकोलीको दूधमें पीसकर पीवे तो गर्भपीडा शान्त होती है. परन्तु नवम मासमें प्रायः स्त्रियां गर्भ जनती हैं.

दशममासे-गर्भरक्षा।

जो दशवें महीनेमें गर्भवेदना हो तो कमलका फूल, मिश्री, मुलहटी, कमलगट्टा, पद्माख इनको शीतल जलमें पीस दूधके साथ पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

एकादशमासे-गर्भरक्षा।

यदि ग्यारहवें मासमें गर्भपीडा हो तो त्रिकुटा, त्रिफला, सांठीकी जड, नागरमोथा, भांगरा इनको बकरीके दूधके साथ पीसकर पीवे. अथवा चन्दन, खस, मजीठ, सिंघाडा, कसेरू, गिलोय इनको पीसकर इसकी फंकी बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे गर्भजनित पीडा शांत होती है.

द्वादशमासे-गर्भरक्षा।

यदि बारहवें मासमें गर्भवेदना हो तो सिंघाडा, कमलगट्टा, नीलकमलका फूल, कमलकी डंडी इनको जलमें पीस दूधके साथ पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है. एक वर्ष पर्यन्त गर्भ धारणका प्रमाण है. नवम मासके अन्तमें और दशम मासके आदिमें तो सबही स्त्रियां गर्भ जनती हैं.

गर्भविलास-तैल।

विदारीकन्द, आंवला, अनारके पत्ते, हर्र, बहेडा, हलदी, सिंघाडेके पत्ते, शतावरी, नीलकमल, श्वेतकमल, चमेलीके फूल ये सब दो दो तोले कूट पीस लुगदी बनाय बकरीका दूध चार सेर, काले तिलका तेल एक सेरभर इन सबको कढाईमें डाल आंचपर रखकर पचावे, तेल सिद्ध होजानेपर छानकर बोतलमें भर छोडे. इस तेलके मर्दनसे गर्भसम्बन्धी सब विकार शान्त होजाते हैं.

तथा गर्भस्थिति यत्न।

कशेरुशृंगाटकजीरकानि पयोघनैरण्डशतावरी च। सिद्धं पयः शर्करया विमिश्रं संस्थापयेद्गर्भमुदीर्य शूलम् ॥ ६३ ॥

भाषार्थ-कसेरु, सिंघाडा, जीरा, मोथा, एरंड, शतावरी इन सबको गायके दूधमें पकाकर शकर मिलाय सेवन करनेसे गर्भ स्थिर रहता है ॥ ६३ ॥

कन्दं कौमुदकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्ययुक्तं पिबेत्।
सप्ताहं सितया सुपक्कमचला शीतीकृतं वायुना ॥
गर्भस्रावमशेषकं सपवनं शोषं त्रिदोषं वमिं।
शूलं सर्वविधं निहन्ति नियमादेवं च सत्संमतम् ६४।

भाषार्थ-कुमुदकी जड, शहत, गायका दूध, घी, वरियारा और शकर इन सबको भली भांति पकाकर वायुद्वारा शीतल करके सात दिन सेवन करै तो गर्भस्राव दोष, वायुदोष, सूजन, त्रिदोष, वमन, सब प्रकारकी वेदनाका नाश होता है. यह उत्तम मत है ॥ ६४ ॥

ह्रीबेरातिविषामुस्तैर्मोचशक्रैः शृतं पयः।
दद्याद्गर्भयुते चैव प्रदरे कुक्षिसंरुजि ॥ ६५ ॥
पद्मोत्पलस्य मूलानि मधुशर्करया तिलाः।
क्षरत्प्रमुखगर्भेषु गर्भस्थापनमुत्तमम् ॥ ६६ ॥

भाषार्थ-सुगन्धवाला, अतीस, मोथा, इन्द्रजव, मोचरस इसका काढा बनाय उसमें दूध मिश्री मिलाय गर्भवती स्त्री प्रदररोग और कुक्षिरोगमें सेवन करनेसे सब दोष दूर होजाते हैं. पद्मोत्पलकी जड और शहत शकर कुले तिल इनके सेवनसे गिरता हुआ गर्भ स्थिर होजाता है ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

गोक्षीरं शर्करायुक्तं शुष्कगर्भप्रशान्तये ।
पिबेद्वा मधुकं चूर्णं गाम्भारीफलचूर्णकम् ॥
समांशं गव्यदुग्धेन गर्भिणी तत्प्रशान्तये ॥ ६७ ॥

भापार्थ-गायका दूध, शक्कर मिलाय शुष्क गर्भ अर्थात् गर्भ सूख जानेपर उसको शान्त और स्थिर करनेके निमित्त पीवै, अथवा मुलहठीका चूर्ण और गाम्भारीके फलका चूर्ण समान भाग लेके गायके दूधके साथ पीनेसे गर्भिणीके गर्भशुष्क दोषकी शान्ति होती है ॥ ६७ ॥

× सुख प्रसव ।

श्वेतं पुनर्नवामूलं गर्भद्वारे प्रवेशयेत् ।
क्षणात्प्रसूयते नारी गर्भं नातिप्रपीड्यते ॥ ६८ ॥

भापार्थ-जिस गर्भवतीको गर्भस्थबालक उत्पन्न समय अधिक पीडा हो तो सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होनेके अर्थ श्वेतपुनर्नवा (सफेद गदापुरना) की जड गर्भद्वारमें प्रवेश करे अर्थात् चूर्ण कर पोटली बनाय जननेन्द्रियके भीतर रक्खे तो स्त्री सुखपूर्वक प्रसव करे, गर्भमें अतिपीडा नहीं होवे ॥ ६८ ॥

अपामार्गस्य मूलं तु ग्राहयेच्चतुरंगुलम् ।
नारी प्रवेशयेद्योनौ तत्क्षणात्सा प्रसूयते ॥ ६९ ॥
तोयेन लांगलीमूलं पिष्ट्वा योनौ प्रवेशयेत् ।
नाभिं प्रलेपयेत्तेन क्षणात्संसूयते सुखम् ॥ ७० ॥

भापार्थ-चिरचिरेकी जड चार अंगुल प्रमाण लेकर नारीकी योनिमें प्रवेश करनेसे उसी समय वह बालक जनती है, तथा कलि-हारीकी जड उसको पीसकर योनिमें प्रवेश करे और उसीका लेप नाभिपर करे तो शीघ्रही सुख प्रसव होवे ॥ ६९ ॥ ७० ॥

दशमूलीशृतं तोयं घृतसैन्धवसंयुतम्।
शूलातुरा पिवेदाशु सुखं नारी प्रसूयते ॥ ७१ ॥
गुंजाफलाऽर्कपुष्पं च तोये पूगं तथार्द्धकम्।
पिवेद्वा तोयपिष्टं च सा सुखेन प्रसूयते ॥ ७२ ॥

भापार्थ-दशमूलका काढा घी सेंधा मिलाय पीनेसे स्त्रीकी अतिपीडा दूर होती है और शीघ्र सुखसे प्रसव करती है. घुँघुची, मदारका फूल और आधी सुपारी जलके साथ पीसकर पीवे अथवा इनका चूर्ण जलके साथ पीवै तो स्त्री सुखपूर्वक बालक उत्पन्न करती है ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

उत्तराभिमुखं ग्राह्यं श्वेतगुंजीयमूलकम्।
कट्यां बद्धा विमुक्तं च गर्भं पुत्रं च तत्क्षणात्॥७३॥
वासकस्य च मूलं तु चोत्तरस्थं समुद्धरेत्।
कट्यां बद्धा सप्तसूत्रैः सुखं नारी प्रसूयते ॥
सहदेव्यास्तु मूलं च कटिस्थं प्रसवेत्सुखम् ॥ ७४ ॥

भापार्थ-सपेद घुँघुचीकी जड उत्तरमुख होकर उखाड लावै और स्त्रीके कटिमें बांधै तो उसी समय पुत्र उत्पन्न करै. वासाकी जड उत्तरमुख होकर लावै और सात तागा सूत्रसे गर्भिणीके कटिमें बांधे तो स्त्री सुखसे प्रसव करै. अथवा सहदेईकी जड कटिमें बांधनेसे स्त्री सुखसे बालक उत्पन्न करती है ॥७३॥७४॥

अगारधूमं गृहवारिणा वा पीत्वाऽबला शीघ्रतरं प्रसूते। अलम्बुपामूलमथो निबद्धं योगद्वयं भूपतिरित्यवादीत् ॥ ७५ ॥

भापार्थ-जिस घरमें गर्भवती हो उस घरमें मोरेठीका धुवां करै उस धुवांके पीनेसे स्त्री शीघ्र प्रसव करती है और लाजव-

स्त्रीकी जड कटिमें बांधनेसे भी शीघ्र प्रसव करती है. यह दोनों योग भूपति (राजा शंभूसिंहजी) ने वर्णन किये हैं ॥ ७५ ॥

गुंजातरोर्मूलमुदङ्मुखेन उत्पाट्य पुष्ये च रवौ निबद्धम् । कटीतटे मूर्द्धनि नीलसूत्रैः शीघ्रं प्रसूतिं कुरुतेऽङ्गनायाः ॥ ७६ ॥

भावार्थ-घुंघुचीकी जड उत्तरमुख होकर पुष्यनक्षत्र रविवारके दिन उखाडकर रख लेवै, समयपर गर्भवतीकी कटि और मस्तकपर नीलसूत्रसे बांधे तो स्त्री शीघ्र प्रसव करती है ॥ ७६ ॥

समातुलुंगं मधुकस्य चूर्णं मध्वाज्यमिश्रं प्रमदा निपीय । व्यथाविहीनं प्रथमं हठेन प्राप्नोति नैवात्र विकल्पबुद्धिः ॥ ७७ ॥

भावार्थ-मातुलुंगसहित मुलहठीका चूर्ण शहद घी मिलाय स्त्री पीवै तो पीडा न हो और निस्सन्देह शीघ्र बालक जनै॥७७॥

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहिनि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा । अनेन मन्त्रेण जलं सुतप्तं पातुं प्रदेयं शुचिना नरेण। तोयाभिपानात्खलु गर्भवत्या प्रसूयते शीघ्रतरं सुखेन ॥ ७८ ॥

भावार्थ-(ॐ मन्मथ मन्मथ वाहिनि लम्बोदर मुंच मुंच स्वाहा) इस मंत्रसे मनुष्य पवित्रतापूर्वक जल लाकर गरम करै और गर्भवतीको पिलावे, जल पीनेसे गर्भवती शीघ्र सुखसे बालक उत्पन्न करती है. यहां एक हाथमें भरा हुआ जल इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर पिलाया जाता है और कोई कोई ' अस्ति गोदावरीतीरे जम्भला नाम राक्षसी । तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥' इस मंत्रसे भी जलको अभिमंत्रित करते हैं, तथा गायत्री मंत्रसे भी अभिमंत्रित करके जल देते हैं ॥ ७८ ॥

प्रसूता रोग।

यदि प्रसूता स्त्रीको ज्वर आने लगे तो त्रिफलाके काढेको भली भांति छानकर इसकी पिचकारी लगाकर गर्भाशयको शुद्ध कर देवे, क्योंकि प्रायः गर्भाशयमें मल रह जानेसे ज्वर आने लगता है. और खानेकी औषधि यह है, कि सोंठ १ भाग, काली मिर्च २ भाग, पीपरि ३ भाग और हरा नीलाथोथा २ भाग लेके चूर्णकर संभालूके पत्तोंके रसमें खरल कर चनेके समान गोली बनावे. एक गोली प्रातःसमय गायके दूधके साथ खाय तो प्रसूता ज्वर शान्त हो जाता है. यदि दूध उतरनेके कारण ज्वर हो तो किसी उपायसे दूध निकाल देना चाहिये. अथवा दूसरे बालकोंको पिला देवै और रोगनगुलमें बाबूना खरल कर स्तनोंपर लेप कर देवे. अथवा बादामका तेल जलमें मिलाकर पिलावे जिससे दो तीन दुस्त आकर पेट शुद्ध हो जानेसे स्तनोंका तनाव ढीला होकर ज्वर उतर जाता है. यदि प्रसूता स्त्रीके दूध कमती हो तो प्रसूताको सोंठ न खिलावे, मक्खन और दूध अधिक खिलावे, जैतूनका तेल कुचोंपर मले. अथवा पेठेके बीज, मूलीके बीज, गाजरके बीज, शलगमके बीज, तालमखाना, पोस्त, मुंडी इनको समान भाग लेके चूर्ण करे. नौ माशे चूर्ण प्रातःसमय दूधके साथ पीवे. जो प्रसूताका दूध अच्छा न हो तो दूधको शुद्ध करे. निकृष्ट दूधकी पहचान यह है कि यदि दूधका स्वाद कषैला हो और जलमें डालनेसे ऊपर तैरै तो वातदोषवाला जानना, और यदि खट्टा, कडुवा वा निमकीन हो जलमें डालनेसे पीली धारियां देख पडैं तो पित्तदोषवाला दूध जानना. यदि लसदार गाढा हो और जलमें डालनेसे डूब जाय तो कफदोषवाला दूध जानना. दोषयुक्त दूध बालकको कदापि नहीं पिलावे, शुद्ध दूध पिलाना चाहिये. यदि दूध मीठा स्वाद पीलाई लिये हो और जलमें डालनेसे मिल जाय तो शुद्ध

जानना. प्रसूता स्त्री पथ्यसे रहे तो दूध कभी नहीं बिगडता है. दूधको शुद्ध करनेके निमित्त बबूलका गोंद घीमें भून और घीमें भुनी मेवोंके साथ शक्करकी चासनीमें कतरी बनाकर खाना चाहिये. पथ्यसे रहे, गेहूंकी रोटी, मूंगकी दाल, पुराने चावलोंका भात खाय. यदि दूध बहुत हो तो जीरा, मसूर, काहूके बीज, सिरकेमें पीसकर छातियोंपर लेप करनेसे दूध कम हो जाता है. यदि प्रसूताको कफयुक्त खांसी हो तो पीपरी एक तोला कपडेमें लपेट भूमलमें घंटाभर भूनकर हाथोंसे मलकर दाने निकाल ले और भुना सुहागा एक तोला, कुलंजन एक तोला, अकरकरा छः माशे, काली मिर्च एक तोला सबको पीसकर घीग्वारके गूदेमें आठ प्रहर खरल कर मटरके बराबर गोली बनावे और सुखाकर रख छोडे. एक एक गोली एक एक प्रहर उपरान्त मुखमें रखकर चूसे. यदि खांसी खुखी होवे तो बिहीदाना, खूबकलां, छिली मुलहठी, उनाब, जूफा तीन तीन माशे, बनफशा छे माशे लेके आधसेर जलमें औटावे. जब एक छटांक जल रह जाय तब छानकर उत्तम शहत, दो तोले मिलाकर पिलावे. यदि प्रसूताको जुखाम हो तो बिहीदाना, मुलहठी तीन तीन माशे, गावजवां, बनफशा छे छे माशे, पावभर जलमें औटाय एक छटांक रह जानेपर एक तोला मिश्री मिलाय पिलावे. यदि पेटमें पीडा हो तो पिपरमेंट रस तीन बूंद दो तोले जलमें मिलाकर पिलावे. अथवा गुलाबफूल, सौंफ, बनफशा छे छे माशे भर लेकर जलमें औटाय छानकर मिश्री मिलाय पिलावे. यदि प्रसूताके बवासीर होगई हो तो जिमीकन्द पाक बनाकर खिलावे और ऊपरसे गायका दूध पिलावे और संध्यासमय भोजनोपरान्त मुनक्का बादाम खिलाकर दूध पिलावे, मस्सोंपर अफीम, कत्था, रसौंत बारीक पीसकर मले.

स्तन दृढीकरण।

यदि प्रसूताके स्तन बहुत ढीले होगये हों और उनको उभारना

और कठोर करना चाहे तो नागवला, खरैटी, वच, कूट इन औषधियोंको समान भाग लेके जलमें पीसकर लेप करे अथवा असगन्धकी जड और लाजवन्तीको जलमें पीसकर कुचोंपर लगानेसे कठोर और उभरे हुए हो जावे हैं.

योनि संकोचन।

ढाकके फूल गूलरका फल, इनका चूर्ण तिलके तेलमें मिलाय शहत डाल योनिमें लेप करै अथवा छौंछ आँवलेका काढा इनसे धोवै तो योनि दृढ होजाती है.

दोहा—करेलाकी मूल घिसी, त्रि मलेप दिन लाय।
भग संकोचन होत है, अतिदृढ योनि उपाय॥

वन्ध्याकरण विचार।

सामान्य विचार वन्ध्याकरण विषयमें यह है कि जिस कुल व ज्ञातिमें द्वितीय पति होनेका निषेध है उस कुल व ज्ञातिमें विधवाको उचित है कि विषयवासनासे अपने चित्तको नितान्त हटाकर किसी विशेष उद्यममें लगावै, और यदि पढी हो तो पढने लिखनेमें अपने मनको मग्न रखती हुई परमेश्वरके गुणानुवाद गाया करै. आज कलका समय दुर्घट है इसमें नाना प्रकारके धर्मसंकट आकर उपस्थित होजाते हैं, उन संकटोंसे बचनेके लिये उपाय अवश्य करना चाहिये सो उपाय यह है कि पुराना गुड तीन वर्षका एक टके भर लेके प्रतिदिन जलमें औटाय ऋतुकालमें पन्द्रह दिन पी लेवै. परन्तु यह श्रेष्ठ मत नहीं है इससे तो यह श्रेष्ठ है कि कामोत्तेजना न्यून करनेकी औषधि खाय.

स्त्रियोंकी कामोत्तेजना न्यूनकरण।

लाजवन्तीकी जड, फटकरी, खील डेढ डेढ माशा लेकर बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे सात दिनमें कामोत्तेजना न्यून होजाती है. अथवा कारूका साग खानेसे कामोत्तेजना न्यून होजाती है.

अथवा गरमीके समयमें गुलाबके फूल बिछौनेपर बिछाकर शयन करनेसे कामोत्तेजना न्यून होजाती है. अथवा निर्मली, नागकेशर दोनों समान भाग लेके बारीक कर जलमें औटाय छानकर कुछ नमक मिलाय पीनेसे दश दिनमें स्त्रीकी कामोत्तेजना न्यून होजाती है. शीतल पदार्थ सेवन करनेसे कामोत्तेजना नहीं होती है. अथवा सुनी फटकरी एक माशेभर मिश्रीके शर्बतके साथ प्रतिदिन प्रातःसमय सेवन करनेसे दो सप्ताहमें कामशक्ति न्यून होजाती है. मैथुनकर्म पुत्रोत्पत्ति निमित्त है. वृथा मैथुन करना शास्त्र विरुद्ध, नियमविरुद्ध और सृष्टिक्रमके विरुद्ध है. इस कारण यद्यपि गर्भ न ठहरनेवाले उपाय वृथा है, तथापि धर्मसंकट उपस्थित होनेपर उपाय यह है कि यदि स्त्री चाहै कि गर्भ न ठहरे तो मैथुनोपरान्त तुरन्त खडी होजाय जिससे वीर्य न ठहरे. और पुरुषको भी उचित है स्खलितसमय कामध्वजको बाहरकी ओर खिंचा रक्खे. और एक साथ स्खलित न होवे. अथवा हर्र, आंवला, रसौत इनको पीस छे माशे भर लेके ऋतुस्नानके अनन्तर शीतल जलके साथ फांकलेनेसे स्त्री गर्भवती नहीं होती है. अथवा चमेलीकी एक कली निगल लेवे. अथवा मैथुनके अनन्तर योनिमें काली मिर्च रख लेवे. तथा यदि पुरुष अपने कामध्वजको मीठे तेलसे चिकना करके प्रसंग करता है तो गर्भ नहीं ठहरता है. ये सब उपाय स्त्रियोंके समयके हैं. जिस स्त्रीकी कामोत्तेजना अधिक हो और गर्भ धारण आदिसे मन ग्लानियुक्त हो अथवा सामर्थ्य न हो उसके निमित्त उपरोक्त उपाय हैं.

स्त्री पुरुष दोष ज्ञान।

यदि स्त्री पूर्ण रीतिसे रजस्वला होती हो और मासिक समय न टले और रजमें किसी प्रकारका विकार न हो तो जानना कि स्त्रीमें कोई दोष नहीं है. और शुद्ध रजके लक्षण पूर्व लिख चुके

हैं उसमें देखकर परीक्षा कर लेवे और यदि पुरुषका वीर्य शुद्ध हो और अंडकोश और कामध्वज ये छोटे न हों तो पुरुषमें भी कोई दोष नहीं. शुद्ध वीर्य और वीर्यस्थित कीडोंकी परीक्षा पूर्व लिख चुके हैं. यदि भली भांति स्त्री पुरुषकी परीक्षा न कर मिले और सन्तानोत्पत्ति न होती हो तो इस रीतिसे परीक्षा करना कि, कद्दूकी जडमें स्त्री पुरुष पृथक् पृथक् मूत्र करें, जिसके मूत्रसे वेल सूख जाय उसीमें दोष जानना और एक प्याला जलसे भरकर उसमें पुरुष वीर्य डाले, यदि वीर्य जलमें नीचे बैठजाय तो पुरुषमें दोष नहीं जानना. तथा दो कुंडा मिट्टीके लेके उनमें शुद्ध मिट्टी डालकर उनमें गेहूँ अथवा जौके दश दश दाने बोवे और एकमें स्त्री एकमें पुरुष आठ दिनतक मूत्र करें जिसके कुंडामें दाने ऊग आवें उसमें दोष नहीं जानना.

बाल रोग।

बालकोंके रोगका जानना अति कठिन है, क्यों कि जो रोगी बोल नहीं सकता और संकेतसे भी अपने रोगको प्रकाशित नहीं कर सकता उसके रोगको कौन जान सकता है. परंतु बुद्धिमान् जनोंने युक्तियोंको अनुमान करके लिखा है सो उनका अनुमान भी ठीक है. सो कुछ अनुमान नीचे लिखते हैं. जिस बालकके मलमें दुर्गन्ध हो, मल पतला हो, पीले रंगका न हो तो बालकके उदरमें विकार जानना. यदि बालक मल करते समय बहुत बल करता हो और मल थोडा और सूखासा निकले तो दूध पचनेमें बाधा जानना. यदि बालक सहसा उबकाने लगे तो जानना कि उदरमें कुछ विकार है. यदि बालकका मूत्र लाल हो तो शारीरिक विकार जानना यदि बालक अपने मूत्रस्थानको खींचता हो, स्पर्श करता हो, शयन करते समय दांत किटकिटाता हो, अपनी नासिका और गुदाको बारबार

स्पर्श करता हो तो पेटमें चुनचुने जानना. इसमें कभी कभी ऊपर का होंठ भी सूज जाता है. अनारकी जडकी छाल जलमें औटाय छानकर प्रातः सायं दोनों काल थोडा थोडा पिलानेसे चुनचुने निकल जाते हैं. अथवा अंडीका निर्मल तेल तीन माशे भर लेके गरम दूधमें मिलाकर पिलावे. यदि बालकके पेटमें विकार जान पडे तो सौंफका अर्क अथवा पोदीनाका अर्क दो दो बूंद दो दो घंटे उपरान्त पिलावे. यदि पेटमें पीडा हो तो पेटपर मन्द सेक देवे. सेक देनेसे लाभ न हो तो जल औटाय कुछ गरम रहनेपर बोतलमें भरे और छै माशे चूना डालकर चार प्रहर बन्द रक्खे. जब चूना नीचे बैठ जाय तब दूसरी बोतलमें उस जलको भली भांति निकालले यह पानी दूधमें मिलाकर पिलावे. यदि बालक दूध डालता हो तो उपरोक्त चूनाका पानी पिलावे. दूध न पचता हो तो सौंफका अर्क पिलावे. अथवा शर्बत बनफशा चटावे तो दूध पचने लगेगा. यदि बालकको दस्त आते हों तो सफेद खडिया मिट्टी एक तोला, मिश्री दो तोले, छोटी इलायचीके दाने एक माशा, लौंग एक माशा, केशर तीन माशे, जायफल तीन माशे, दालचीनी चार माशे इन सबको कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे और एक शीशीमें बन्द कर रख छोडें. एक रत्ती अथवा दो रत्तीभर चूर्ण जलमें घोलकर दस्त आनेके उपरान्त बालकको पिलावे. यदि बालकको खांसी आती हो तो कतीरा एक माशा, मुलहठीका सत एक माशा, [illegible] एक माशा, गेरूका

रसौंत, पठानी लोध, मिश्री ये सब एक एक तोला परंतु अफीम आधा ही तोला लेना, इनको पानीमें पीस अग्निपर चढाय पकाकर रख छोडें दिनमें तीन वार पलकोंपर लगावे. यदि इस दवाका कुछ अंश नेत्रमें भी जायगा तो कुछ हानि नहीं करेगा. कोथियां हो जानेपर सिंघाडे, लोध, कटेया, बनमंटा, पुनर्नवा इनका लेप गुनगुना नेत्रोंपर लगावे. यदि बालकको मुँहा रोग हो गया हो तो सफाईका ध्यान रहे, साफ हलका भोजन दे, स्थान और वस्त्र निर्मल रहें, ऊपरी दूध न पिलावें, माताका अथवा गायका दूध पिलावे. बालकको घुटी पिलावे जिससे पेट साफ रहे तब यह दवा देना चाहिये. भुनी हुई सौंफ १ तोला, ईसबगोल १ तोला, बडी इलायची ६ माशे, सोहागेका फूला ६ माशे, पोस्तका डोरा ३ माशे इन सबको कूट पीस बारीक छानले और एक महीनेके बालकको एक रत्ती, दो महीनेके बालकको दो रत्ती इसी प्रकार प्रतिमास एक रत्ती इस हिसाबसे तीन वार औषधी देना चाहिये. और दो तोले सोडा एक पाव जलमें मिलाय दिनमें आध आध घंटे पर फुरहरी बनाय बालकके मुँहको धोवे, इस प्रकार चार छः दिनमें आराम हो जाता है. मुँहको सोडाके जलसे साफ रखना. दूध पीनेसे पहले या पीछे मुँह साफ करना और बालकके भोजनका ठीक प्रबंध करना. ये सफेद मुँहाकी मुख्य दवा है. लाल मुँहा तो दांत निकलनेके समय होता है, उसमें भुना सुहागा शहतमें मिलाय दिनमें कई वार लगावे और सौंफ ईसबगोलावाली दवा लगावे. पांच महीनेतक बालक आरोग्य रहनेपर आधी छटांक प्रतिदिन बढता है. रोग युक्त होनेसे न्यूनाधिक वृद्धि होती है. बालकके शिरकी हड्डियां बहुत नर्म होती हैं. बालककी चाँदके ऊपरका भाग शिरकी खालमें ढका रहता है, यहां हड्डी नहीं होती. तीन महीनेके उपरान्त हड्डी बनना आरंभ होती है. दो वर्षमें वह भाग हड्डीमें आच्छादित हो जाता है. यदि

इस समयतक आच्छादित न हो तो कोई रोग जानकर औषधी प्रदान करना चाहिये. माताको पौष्टिक पदार्थ खिलाना चाहिये, क्यों कि ऐसी दशामें सूखा आदिका रोग हो जाना संभव है. बालकके पांचवें महीनेमें आंसू आने लगते हैं, लार थूक पैदा होती है, येही लक्षण दांत निकलनेके होते हैं. बालकोंको दांत निकलनेके समय बडी कठिनता होती है. उस समय बालकको ज्वर, दस्त, खांसी, वमन, शिरःपीडा आदि रोग हो जाते हैं. मुँहा भी आ जाता है, छोटी छोटी फुंसिया भी निकल आती हैं. प्रायः स्त्रियां ऐसे समय इलाज नहीं करने देतीं कि दांतोंके उठनेसे रोग हो गया है. इलाज न करो. इलाज न करनेका परिणाम यह होता है कि रोग बढकर बालकका प्राणघातक हो जाता है. सैकडों बालक इस अज्ञानतासे कालवश हो जाते हैं. इस कारण जब बालकके दांत और दाढें भलीभांति निकल चुकें तब जानना कि हमारे घर बालकका जन्म हुआ है, क्यों कि जानबूझकर भी स्त्रियां असावधानी करती हैं. यदि माता कुछ मन भी करती है कि इलाज करें तो बाहरकी मूर्ख स्त्रियां आकर बातें बनाय चित्तको इलाजकी ओरसे उचाट कर देती हैं और ऐसी ऐसी मिसालें देती हैं कि किसी प्रकारकी शंका नहीं रहती, उन मूर्खाओंके सामने भोली स्त्रीका ज्ञान हर जाता है, इसी अज्ञानताके कारण सैकडों बालक इस भारतवर्षमें मर जाते हैं. उचित है कि दांत निकलते समय माता पिताको पूर्ण रीतिसे सावधान होजाना चाहिये. सब बातोंमें बालककी देख भाल करनी चाहिये. बालकके शरीरकी रक्षा हर प्रकारसे करनी चाहिये. दांत निकलने समय बालकको ज्वर आजाय तो हलका जुलाब देवे. कास्ट्रेल ६ माशेतक पिलावे. और बारीक सेंधालवण पीस छान शहतमें मिलाय मसूडोंपर मले, गुलरोगनमे ..१ तर रक्खे, अथवा पीपरि और धवके फूलका चूर्ण, वा बादा-

मका तेल अथवा आंवलेका रस, वा अच्छा शहत मसूडोंपर धीरे धीरे रगडे. दँतौनाकी जड, मुलहठी, धायके फूल, पीपरि इनको आंवलेके रसमें मिलाकर चटावे, अथवा मसूडोंपर मले तो दांत सुगमतासे निकल आते हैं. दांत निकलने उपरांत रोग स्वतः शांत हो जाते हैं. इस जगत्में परमात्माने सब योनियोंका प्रबन्ध उचित रीतिसे कर रक्खा है. पशुपक्षियोंकी ओर ध्यान दो कि शीत उष्ण देशके अनुसार उनके शरीरमें त्वचा, केश, व पंख दिये हैं. उनके पालनार्थ अनेक प्रकार कन्द मूल फल फूल घास पत्ते दिये हैं. बच्चोंकी पालना करनेको उनमें मोह उत्पन्न किया है. मनुष्यको बुद्धि अधिक दी है कि जिसके द्वारा मनुष्य अपना जीवन सुखसे पूर्ण कर सकता है. ऐसी श्रेष्ठ बुद्धि मनुष्य पाकर जो अपने जीवनको सुखमय नहीं कर सकते उनकी बुद्धि और उनके आलसपनेको धिक्कार है. जो अपनी बुद्धिसे उचित अनुचित विचारकर ठीक प्रबन्ध नहीं करते और ईश्वरको व्यर्थ दोष देते हैं उनकी बुद्धिको दूरसेही नमस्कार करना चाहिये. बुद्धिके द्वारा प्रबन्ध करना यही है कि, रोग उत्पन्न होतेही रोग नाशका उपाय करे. स्त्रियों और बालकोंके रोगकी चिकित्सा करनेमें प्रायः स्त्रियां चतुर होती हैं. जो प्रसिद्ध होजाती हैं, उस प्रसिद्ध दाईको बुलाकर चिकित्सा करावे, अथवा इस विषयमें प्रसिद्ध वैद्यको बुलाकर चिकित्सा करावे, और बालककी माता जो पढी लिखी हो उसको चाहिये कि बालपोषणके नियमोंको सीखले, और (चतुर दाईसे दवायें भी सीखले) दवायें सीखनेके लिये दाईसे पूछनेकी आवश्यकता नहीं, जो स्त्री चतुरा होती है वह देख सुनकर सब कुछ सीख सकती है, फिर पढी लिखी स्त्री तो उसी समय देखी सुनी बातको तुरंत लिख सकती है, फिर कभी भूल नहीं सकती है. आजकल तो स्त्रीशिक्षा, स्त्रीरोगचिकित्सा, बालचिकित्सा, बालतंत्र, कुमारतंत्र आदि पुस्तकें भी प्राप्त होती हैं.

हमने भी विचार किया है कि बालरोगचिकित्सा, बालपोषण ये दो पुस्तक अवश्य लिखें परंतु परमात्माकी कृपा चाहिये. इस देशमें बालकोंको अफीम खिलाने और गहने पहिरानेकी रीति बहुतही अनुचित है. अफीम खिलानेसे बालककी बुद्धि मन्द हो जाती है. गहने पहिरानेसे अंग शिथिल हो जाते हैं. नसें दब जाती हैं, उत्तेजन शक्ति मन्द हो जाती है. " नराणां भूषणं विद्या " मनुष्योंका आभूषण विद्या है, ' नारीणां भूषणं शीलम् ' स्त्रियोंका आभूषण शील है. अतः बालकोंको विद्या और कन्याओंको शीलकी शिक्षा देनी चाहिये. नीतिशास्त्रके ये वचन कैसे उत्तम और उपयोगी हैं. बालकके हृदय और शिरपर चोट न लगने पावे. प्रायः जन बालकके शिरपर चपत्त लगादेते हैं यह महा अनुचित बर्ताव है, क्योंकि हृदयमें जीव और शिरमें बुद्धिका निवास होता है, हृदयमें चोट लगनेसे जीव विकल होजाता है और शिरमें चोट लगनेसे बुद्धि मन्द हो जाती है.

महीने महीने वर्जित पदार्थ ।

चौ०—सावन दूध भाद्रपद मही । क्वाँर करेला कातिक दही ॥
अगहन धनियां पूसे जीरं । माहे मिसरी फागुन हीर ॥
चैते गुड बैशाखे तेल । जेठे पंथ अषाढे बेल ॥
इन वस्तुनको जो परिहरे । ताको विपति कबहुँ नहिं परै ॥

यहां हीर चनाको कहते हैं.

शिशिर ऋतुके अन्तमें जब कि नींबके पत्ते झर जाते हैं उस समय नींबकी जड लेनी चाहिये और जिस समय हरे हरे नवीन पत्ते उत्पन्न होते हैं तब पत्ते और छालको ग्रहण करें, जब फूल लगें तब फूल लेवे, एवं फल पक जायं तब फल लेवे और मींगी निकाल लेवे. यह पंचांग वर्षभर काममें लाया जा सकता है. इस पंचांगमें अनेक गुण हैं. विशेषकर यह फोडा.फुंसी घाव व रुधिर-

विकारको दूर करता है. ज्वरमें यदि इसके अर्कको पीना चाहे तो आठ गुणे वारह गुणे सोलह गुणे जलके साथ डेगमें भरकर इसका अर्क खींच लेवै और छानकर रख छोडै. आधी छटांक वा एक छटांक भर प्रतिदिन पीवै तो ज्वर छूट जाता है. यदि आरोग्य पुरुष भी सोलह गुणे जलके साथ औटाकर निकाला हुआ यह अर्क आधी छटांक प्रति दिन पीवै तो किसी प्रकारका रोग उसके समीप नहीं आवै, परंतु आहार विहारका नियम सर्वदा रक्खे. आहार विहार जिसका ठीक नहीं उसको कोई भी औषधी गुण नहीं करती है.

अवस्था प्रतीकार।

चौ०—भेद अवस्था सुनिये सोय। प्रकृति वयसमें उपजे जोय॥
प्रकृति समय पर परिहर आय। अब सब विधि हौं देउँ वताय॥
वर्ष दशक लौं क्रीडा करै। वर्ष वीस लौं वलको धरै॥
शीत उष्णतें श्रम नहिं मानैं। अहित प्रकार कछू नहिं जानै॥
दो०—वीस वर्षके ऊपरे, तीस वर्ष लग सोय।
समभोजन ताको कह्यो, वैद्य ग्रन्थ बहु जोय॥ १॥
चौ०—करै दाह रुन्धन उर करै। दिन दिन मन्दाग्निनि ह्वै जरै॥
ऊपर तीस चालिसों होइ। देही रुक्ष उष्णता सोइ॥
भोजन स्निग्ध कह्यो परधान। हरै रुक्षता कर वलवान॥
चालिस ऊपर लग पंचास। रूखी देह शीत परकास॥
दो०—वर्ष गये पंचाश जब, अर्द्ध वृद्धता होय।
जरा आय घेरत भई, गई तरुणता रोय॥ २॥
चौ०—भोजन स्निग्ध उष्ण कहँ होइ। शीत तासुको व्यापति सोइ॥
जो याते ऊपर चढि चलै। ताको आय वायु तन दलै॥
ताको भोजन उष्ण बखान। कीन्हो वैद्यजनन परमान॥
श्लेष्मा प्राणरन्ध्र प्रगटाय। कफ प्रगटै मुख मारग आय॥

दो०-सत्तरहूके बीचमें, साठि वर्ष उपरान्त।
होयँ सभी इन्द्रिय शिथिल, नारी सों एकान्त॥ ३॥
चौ०-या उपरान्त सौतेहू ऊन। गई बीति आयू भई न्यून॥
गयो तेज सबही यह देह। उपजै शीत वायु कर गेह॥
उगलै भोजन जो कछु खाय। मैथुन इच्छा वृथा कराय॥
ताकी औषध दई बताय। लै माला हरिके गुणगाय॥
दो०-है स्वतंत्र सन्तति सहित, भोजन करै विचार।
गुण अवगुणको होत है, अब आगे विस्तार॥ ४॥
चौ०-रहै यत्नसों अमल न खाय। अधिक न खाय सुखी न रहाय॥
मिताहारसों सब सुख होय। अधिक अशन उपजै दुख सोय॥
कविमन ऐसी बुद्धि विचारी। अधिक अशनतें अधिक खुआरी॥
एक समय भोजन सज्ञान। दूजे समय खाय अज्ञान॥
दो०-पथ्य कि रीतिहि पक्षरिसें करिये, भोजन नेम।
अति भोजन अति दुख करै, सम भोजनतें क्षेम॥ ५॥
चौ०-निज बल देखि रमहि नरनारि। घटै न तेज कहौं निरधारि॥
होय अबल तिय संगति करै। सोय क्षीणबलको नहिं धरै॥
शीतसमयमें उष्णहि खाय। उष्ण काल शीतल सुखदाय॥
तातें भोजन करै विचार। नारायण कीन्हो निरधार॥
दो०-मैदाकी रोटी अहित, हितकर आटा जान।
मन्द मन्द जल दे मलै, रोटी करै प्रमान॥ ६॥
चौ०-यह रोटी रुचि भोजन करै। तौ नारायण बल बहु धरै॥
वर्ष पचास आयु उपरान्त। नारी सोवत रहै इकान्त॥
संग शयन कबहूँ नहिं कीजै। अप्रमाण वीरज नहिं दीजै॥
करत संग जल पान न करिये। उपजै रोग बचै नहिं मरिये॥
दो०-तातें ऐसी विधि सदा, रहै सम्हारे लोय।
उपजै रोग न देहमें, सुखी होय नर सोय॥ ७॥
सो०-वैद्यन कह्यो विचार, धावनतें जो होत है।
कीन्हो यह निरधार, बल प्रमाण मारग चलै॥ ८॥

चौ०-जो मग चलै होय असवार। चलै पदाति चरण आधार॥
अध्व चलै देही श्रम होय। उपजै श्रम वह करै न कोय॥
सम भोजन ताको हित जान। अजर न जरै यहै परमान॥
परिहै जोर नसन पर आइ। तातें पित्त प्रगट हुइ जाइ॥

दोहा-अतिहि वृद्ध जो होत हैं, जात अध्वतें हार।
कछुक गेहमें देखिये, अपर लोकके द्वार॥ ९॥
जो श्रम बैठे होत है, सो अब करौं बखान।
प्रगट श्लेपम होत है, अति बैठकतें जान॥ १०॥

चौ०-अप्रमाण जो बैठक करै। ता तनु अश्लेपम अनुसरै॥
जो चाहै मज्जाकी वृद्धि। ताको बैठक आवै सिद्धि॥
स्थूल होये, दुर्बल ते जान। यह बैठकका है परमान॥
गुण अवगुण सब दियो बताय। नारायण मत यों समुझाय॥
अतिनिद्रा करि है जो कोय। कमलवाय ताके तनु होय॥
कछु सोवै जागरन बहु करै। ताको रोग आय विस्तरै॥
ताते करै बराबर दोय। ताको दुख कबहूँ नहिं होय॥
ताको अशन तुरत पचि जाय। सुख उपजै यह कह्यो उपाय॥
जागै रैनि सोय दिन रहै। गुण अवगुण ताके कवि कहै॥
जागै रैनि प्रात नित सोवै। बुद्धि विक्षिप्त तासुकी होवै॥
भक्ति हेतु जागै निशि सारी। धरै ध्यान लगावै तारी॥
ताके रोग निकट नहिं आय। रक्षक ताके हरिहर राय॥

परस्पर विरुद्ध द्रव्य।

नमक और मीठेका विरोध है, एवं कडुए और मीठेका विरोध है, मीठे और तीतेको भी विरोध है, कसैला रस साधारण है, इसका किसीसे विरोध नहीं. कांसेके पात्रमें दश दिनतक घी रखनेसे विष समान हो जाता है. घी शहत बराबर मिला हुआ विषवत् हो जाता है. शहतमें मेघजल मिल जानेसे विषवत् हो जाता है.

१ चरपरा-तीखा,

उडदके साथ मीठा अवगुण करता है. घीके साथ उडदका पदार्थ मीठेमें बना हो तो अधिक दिन तक नहीं रखना चाहिये. शीतकालमें और भोजनोपरान्त फस्द खुलवाना विष समान होता है. हेमन्तऋतुमें रूखा (खुश्क) पदार्थ और वसन्तऋतुमें गरम वस्तुओंका सेवन अयोग्य है. शीतल प्रकृतिवालेको शहत सेवन करना चाहिये. शीतल पदार्थ अधिकवासे नहीं सेवन करना चाहिये. मांस खानेसे स्वभाव निर्दय हो जाता है. क्रोध शीघ्र प्रगट होता है. मांसके साथ हींगका खाना विषवत् जानना. मसूर और कुँदरू फलकी तरकारी खानेसे बुद्धि मन्द हो जाती है और शरीर क्षीण होने लगता है. वर्षा समय जुलाब न लेवे. अधिक खटाई खानेसे पट्ठे शिथिल होजानेसे बैठने उठनेमें दुःख होता है. नारंगी और नारंगीका रस सेवन करनेसे हृदय निर्बल हो जाता है. अतिनिस्सन्देह रहनेसे उन्मत्तता रोग हो जाता है. अतिचिन्ता करनेसे शरीर निर्बल हो जाता है. रात्रिको जागते समय आकाशकी ओर अधिक देखनेसे अकालजरा अर्थात् नजला और खांसी तथा ग्रन्थिपीडाका आक्रमण होता है. दिनमें सोने और रात्रिमें जागनेसे नेत्रोंकी ज्योति मन्द हो जाती है. मुख मलीन हो जाता है. अति मद्य पान करनेसे बुद्धि भ्रष्ट होजाती है, शरीर निर्बल होजाता है. परस्त्री रमण करनेसे बुद्धि दूर जाती है, लाज छूट जाती है, वीर्य क्षीण हो जाता है. गांजा भांग चरस पीने और अफीम खानेसे बुद्धि मन्द हो जाती है, शरीर दुबला हो जानेसे स्मरण शक्ति न्यून होजाती है, अधिक सेवनसे कपालमें गरमी भर जाती है जिससे अनेक रोग प्रगट हो जानेका भय रहता है. बवासीर, गरमी, सुजाक, दाद, खाज, कोढ, शीतला इन रोगोंसे युक्त प्राणीके अधिक संसर्गसे वही रोग प्रगट हो जानेका भय रहता है. यहां परोपकार दृष्टिसे वैद्यकमतानुसार कुछ सदुपदेश लिख दिया है सो स्मरण रखने योग्य है.

देह पुष्टिप्रकार ।

शरीरकी पुष्टि और अपुष्टिपर मनुष्यकी आरोग्यता है. शरीर पुष्ट होनेसे कोई रोग निकट नहीं आता, देह दुर्बल होनेसे निर्बलताके कारण अनेक रोग प्रगट हो जाते हैं. विशेष करके भोजनादिके संयमसे, ऋतु ऋतुमें यथोचित भोजन करनेसे और युक्ताहार विहारादिकोंके करनेसे शरीरकी आरोग्यता होती है और आरोग्यता होनेसे सुख प्राप्त होता है. भोजनादि बनाने व नियमपूर्वक खाने आनेका विस्तार देखना हो तो हमारे लिखे हुए ' देहारोग्यविधान ' नामक पुस्तकमें देखना.

सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्धनानि किं सन्ति नो भुवि बहूनि रसायनानि । कन्दर्पवर्धिनि परन्तु सिताज्ययुक्ताद्दुग्धादृते न मम कोऽपि मतः प्रयोगः ॥ ७९ ॥

यहां लोलिम्बराजजी अपनी प्रियासे कहते हैं कि हे कामको बढानेवाली प्रिये ! सुन्दरता, पुष्टि, बल और वीर्य इनके बढानेवाले रसायन (जराव्याधिनाशक) औषध पृथ्वीमें बहुत हैं परन्तु मिश्री और घी मिला हो जिसमें ऐसे दूधसे बढकर दूसरा कोई प्रयोग मेरे मतमें नहीं है ॥ ७९ ॥

दोहा-मौरेठी चूरण शहद, घीव दूधसों खाय ।
वो स्त्री संगम अति करै, वीर्य पुष्ट होजाय ॥ ११ ॥
तथा-गुर्च आंवले गोखरू, सम शर्करा मिलाउ ।
घृतमें चूरण लेहके, ऊपर दूध पियाउ ॥ १२ ॥
अजर अमर अति वीर्यकै, कामदेव सम होय ।
महापुष्टि तिय मद दमन, जो यह सेवै कोय ॥ १३ ॥
तथा-सकल वैद्यमत अब सुनो, पुरुष विलासी जोग ।
आनि शतावरि मूलको, चूरण कीजै सोय ॥ १४ ॥

पयके सँग सेवन करै, रमै एक शत तीय ।
हाँ अवहीं यह पानके, रतिमें देखो मीय ॥ १५ ॥
तथा—खोदि विदारीकन्दको· चूरण करो सुजान ।
घीव दूधसों खाइये, कर्ष जु चारि प्रमान ॥ १६ ॥
वृद्ध पुरुषको तरुणकै, काम चौगुनो जान ।
पुष्ट क्षीणता हरणको, औषध अमी समान ॥ १७ ॥

आरोग्यप्रकार ।

दोहा—नींव दतूनी जो करै, उठतै हर्रै खाय ।
आंवलासों शिरको मलै, दिनमें सोवै नाय ॥ १८ ॥
नियमसहित भोजन करै, निशिमें जागै नाहिं ।
शक्ति सहश व्यारज करै, सुखी रहै जगमाहिं ॥ १९ ॥
आयु होय शतवर्षको, रहै सतत बलवान ।
नियमसहित संसारमें, वरते यथुहि सुजान ॥ २० ॥
सदा नियमसों जो रहै, सो नर रहै अरोग ।
शुद्धाहार विहार रत, है भोगै सुख भोग ॥ २१ ॥

उषःकाले जलपान ।

पिबति पर्युषितं जलमन्वहं तिमिरिणो चरमे प्रहरे यदा । तथा—अम्भसः प्रसृतोरष्टौ रवावनुदिते पिबेत् ॥ वातपित्तकफाञ्जित्वा जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥ ८० ॥

विगतघननिशीथे प्रातरुत्थाय नित्यं पिबति खलु नरो यो नासिकारन्ध्रवारि। स भवति मतिपूर्णश्चक्षुपा तार्क्ष्यतुल्यो वलिपलितविहीनः सर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ ८१ ॥

अर्थ—आकाशका अन्धकार दूर होकर प्रातःकाल होनेपर उठकर प्रतिदिन जो मनुष्य नासिका द्वारा जलपान करता है, वह बुद्धिमान् पुरुष गरुडके तुल्य दूरतक देखनेवाला और जरारोगरहित हो जाता है और सब रोगोंसे छूट जाता है. कोई रोग उसके समीप नहीं आता ॥ ८१ ॥

परन्तु जिस मनुष्यने तेल पिया हो, जिसके शरीरमें :: व्यथ हो, अफरा रोग हो, पेटमें विकार हो, हिचकी आती हो, कफ वातका रोग हो तो प्रातःसमय नासिका द्वारा जल पान न करे.

संक्षिप्त ऋतुचर्या।

माघ फाल्गुन मासमें शिशिर ऋतु, चैत्र वैशाखमें वसन्त ऋतु, ज्येष्ठ आषाढमें ग्रीष्म ऋतु, और श्रावण भाद्रपदमें वर्षा ऋतु, तथा आश्विनकार्तिकमें शरद् ऋतु, एवं मार्गशिर पौषमें हेमन्त ऋतु होती है. यह ऋतुव्यवहार विशेष करके श्रीभागीरथी (गंगा) जीके उत्तर देशोंमेंही है. अन्यत्र ऋतुव्यवहारकी न्यूनता है. कहीं सरदी अधिक समयतक रहती है. कहीं सदा सर्दी रहती है, कहीं गरमीका अधिक प्रकोप रहता है, कहीं आठ महीनेतक वर्षा होती है.

आयुर्वेदशास्त्रके मतसे ऋतु वर्णन इस प्रकार किया है कि, भाद्रपद आश्विन मासमें वर्षा ऋतु और कार्तिक मार्गशिर मासमें शरद् ऋतु, पौष माघमें हेमन्त ऋतु तथा फाल्गुन चैत्रमें वसन्त ऋतु, वैशाख ज्येष्ठमें ग्रीष्म ऋतु, एवं आषाढ श्रावणमें प्रावृट काल (बरसात वर्षाका आरंभकाल). शरद्, वसन्त, ग्रीष्म इन

तीनों ऋतुओंके संधिकालमें कफका कोप होता है. ग्रीष्ममें वायुका संचय शरीरमें होता है और गरमीकी अधिकता होती है. प्रावृट् और वर्षाकी सन्धिमें वायुका कोप होता है, और पित्तका संचय होता है. वर्षा और शरद् ऋतुकी सन्धिमें पित्तका कोप होता है. हेमन्त और शरद् ऋतुमें पाचक जठराग्नि बलवती होती है और कफका संचय होता है. गरमीकी ऋतुमें वादी और गरम पदार्थोंसे बचना चाहिये. बहुत परिश्रम दिनमें शयन और अधिक मैथुन नहीं करे. बरसातमें भी वादी और गरम पदार्थोंसे बचता रहे. मैले स्थान, मैली वस्तु, नदीका पानी, गरिष्ट भोजन इनसे बचना चाहिये. ऊँचे पर रहना और तुरन्तका भरा हुआ कूप जल पीना चाहिये. सरदीकी ऋतुमें पुष्ट व चिकना भोजन तैलकी मालिश और दंड कसरत करना चाहिये. तथा दूध, घी, खांड, तुरन्तका कूपजल ये वस्तुयें हितकारी हैं. कोदों अन्न, कुसमय भोजन, प्रातःकालमें शयन नहीं करना चाहिये.

वातप्रकृति वाला मनुष्य।

जो मनुष्य दुबला व रूखा हो, जिसके केश कड़े हों, जो बहुत बोलता हो उसकी वात (वादी) प्रकृति जानना. वात प्रकृतिवालेको रूखा शीतल और वादी भोजन हानिकारक और गरमतर पदार्थ गुणकारक जानना.

पित्तप्रकृतिवाला मनुष्य।

जो मनुष्य दुबला हो, पर रूखा न हो, क्रोधी हो, पाचन शक्ति अधिक हो, केश थोड़ीही अवस्थामें पकने लगें उसकी पित्त प्रकृति जानना. पित्त प्रकृतिवालेको पतला शीतल और तर भोजन गुणकारी है और कड़ा चरपरा हानिकारक है.

कफप्रकृतिवाला मनुष्य।

जो मनुष्य मोटा हो, गंभीर हो, जिसके केश नरम हों, बात कम

करता हो, बुद्धि स्थिर हो, सोता बहुत हो उस मनुष्यकी कफ प्रकृति जानना. कफ प्रकृतिवालेको पतली चिकनी और बहुत ठंढी तथा गरिष्ठ वस्तु हानिकारक और परिश्रम, रूखा गरम और शोषण पदार्थ गुणकारक जानना. बाल्यावस्थामें पित्तकी अधिकता होती है इसीसे बालकोंकी जठराग्नि प्रबल होती है. अनेक वार किया हुआ भोजन पच जाता है और ज्यों ज्यों अवस्था बढती है त्यों त्यों कफ और वातकी वृद्धि होती जाती है. युवावस्थामें कफकी अधिकता होती है इसीसे बल पराक्रम अधिक होता है. परिश्रम करनेकी शक्ति अधिक होती है. जठराग्नि स्थिर होजाती है जिससे दो वारका किया हुआ भोजन पच जाता है. वृद्धावस्थामें वातकी अधिकता होती है इसीसे धातु उपधातु सब शोषित होने लगते हैं. वातदोषसे जठराग्नि विषम होवे है जिससे दो वारका किया हुआ भोजन कभी पच जाता है कभी नहीं पचता. भोजनके रसको वायु शोष लेता है इस कारण शरीर क्षीण होता जाता है, शक्ति घटती जाती है.

वसन्तऋतु वर्णन ।

कवित्त–आई है बहार वनबेलिन नवेलिनमें बहुधा चमेलिनमें भौंर भीर छाई है । छाई है छपाकर मरीचिका दरीचिनमें तिनहूँ लखतके अतन ताप ताई है ॥ ताई है सफल सुधि बुधि बलवन्त मेरी जबते पियारे प्राणप्यारे बिसराई है । राई है न नेक कहूँ नवमें कलेवरमें कहियो हो कन्तसों वसन्त ऋतु आई है ॥२२॥

दोहा–अलि गुंजत कूजत विहँग, प्रफुलित कुसुम अनन्त ॥
शीतल मन्द सुगन्ध वह, पौन बसानि वसन्त ॥२३॥

वसन्तऋतुमें कफको जीतनेका प्रयत्न अवश्य करे क्यों कि शिशिरऋतुमें जो कफ संचित होता है वह सूर्यकी किरणोंसे संतप्त होकर जलके समान पतला होनेसे जठराग्निको मन्द कर

देता है इस कारण अनेक रोगोंके उत्पन्न होनेका भय रहता है. कफको जीतनेके लिये तीक्ष्ण वमन, नस्य, विरेचनादि करके और लघु व रुक्ष करके तथा व्यायाम उद्वर्तन और कुश्ती लडने आदि करके कफको जीते. तथा सोंठका औटा हुआ जल वा खैरसार चन्दन आदि सारको मिलाय औटाया हुआ जल वा शहत मिला जल अथवा नागरमोथा मिलाय औटाये हुए जलको पीवे. वसन्त ऋतुमें विहार करै, इस ऋतुमें अदरख, सोंठ, मूली, पोईका शाक, पेठा, हींग, मेथी, तूँवा, पका खीरा, बथुआ, कचनारकी कली, चौलाई, परवल, जिमीकन्द, मरसेका साग, करेला, घिया तुरई आदि पदार्थ हितकारी हैं. खान पानमें शीघ्र पचने योग्य सब पदार्थ सब ऋतुओंमें हितकारी हैं. गरिष्ट और बहुत बादी पदार्थ सर्वदा विचारकर खाना चाहिये. सरदीकी ऋतुमें गरम पदार्थ और गरमीकी ऋतुमें शीतल पदार्थ सेवन करै. बलाबल और प्रकृतिके अनुसार खान पान सदा हितकारक जानना. वसन्तऋतुमें नारीका साग, पोईका साग, गलकातुरई, उडद, दही, सिंघाडे, ईख, खिचडी, दिवाशयन, समा, पसईके चावल, होला ये सब अपथ्य हैं.

ग्रीष्मऋतु वर्णन।

कवित्त-तपत प्रचंड मार्तंड महिमंडलमें ग्रीषमको तीक्षण तपन आर पार है। कहै नारायण कोंच कीचमों वहन लाग्यो मयो नद नदी नीर अदहनकी धार है ॥ झपट चहूँहनते लपट लपेटी लूह शेषफेंसी फूंक पौन झकनकी झार है। तवासी अटारी तपी आवाँसी अवनि महा दावारो महल भौ पजावामें पहार है ॥ २४ ॥

दोहा-रूप चटक करि चेटकनि, फांसी पवन चलाय।
मारत दुपहर चौंचमें, नाहि ग्रीषम ठग आय ॥ २५ ॥

नाहिं न यह पावक प्रबल, लुवें चलें चहुँ पास।
मानहुँ विरह वसन्तकी, ग्रीषम लेत उसास ॥ २६ ॥

ग्रीष्मऋतुमें सूर्य तीक्ष्ण किरणोंवाला होकर संसारकी चिकनाईको हर लेता है इस कारण प्रतिदिन कफ क्षीण होता है और वातकी वृद्धि होती है. इसीसे ग्रीष्मऋतुमें निमकीन, चरपरा और खट्टारस. दंड-कसरत और सूर्यकी धूप वर्जित है. इस ऋतुमें मधुर, हलके, चिकने, शीतल और पतले पदार्थ सेवन करे और सरोवर, बावली, नदी, वन इनमें विहार करे. फूलमाला धारण करे. चन्दन लेपन, शीतल घर, मंथ, गुड मिला हरेका चूर्ण सेवन करे तथा शालीचावल, साँठी चावल, जौ, ज्वार, मूँग, नीवार. गेहूँ, मटर, अरहर, कोदों, चौरा, मटरकी दाल, मसूर. कच्चा तरबूज, कच्ची ककडी, कच्चा खीरा, पेठा, करेला, वथुआ, चौलाई, चूका, घीया, परवल, शक्कर मिला गाढा दही, मिश्री मिला मठा, गलका तुरई, मरसेका साग, पोईका साग, सिंघाडे, कसेरू ये पदार्थ हितकारी हैं, और बहुत निमकीन, खट्टा, गरम, कडुआ पदार्थ न खाय. मैथुन, रातमें जागना, आग तापना, धूपमें चलना, बैंगन, पका तरबूज, सहँजना, लहसन, उडद, चौरा, कागनी, खिचडी, सरसों, राई, उपवास, मार्ग चलना, परिश्रम, दही ये सब ग्रीष्मऋतुमें अहित हैं. गरमीकी ऋतु आरोग्यताके लिये सामान्य है. प्यास बहुत लगती है. इस ऋतुमें दो बार स्नान करना, बारीक वस्त्र धारण करना, शीतल पदार्थ सेवन करना, धूपसे बचाव रखना उचित है, इसमें शीतल जलकी अधिक आवश्यकता है. जो लोग बर्फ डालकर जलको शीतल करते हैं उनकी प्यास उस समय तो बुझ जाती है परंतु शीतल जलमें जो गुण हैं वे गुण उस बर्फवाले जलमें नहीं होस-कते. इस कारण शीतल जलके उपाय लिखते हैं. कोरे सुराही झज्झर व घडेको दिनमें धूपमें रक्खे, संध्यासमय उसमें जल भरकर ऊँचे हवादार स्थानमें रख देवे, प्रातःकाल किसी छायावाले शीतल

स्थानमें रक्खै तो जल शीतल रहेगा. अथवा कोरे घडेमें जल भरकर दिनमें धूपमें रक्खे रातको ऊँचे हवादार स्थानमें रक्खे तो जल ठंढा रहता है. अथवा जलको औटाय मिट्टीके कोरे पात्रमें जहाँ वायुका झकोरा आताहो वहां ऊँचे पर रखनेसे जल शीतल और पाचक होजाता है. अथवा पृथ्वीमें एक गड्ढा खोदकर उसमें मिट्टीका कोरा मटका गाड देवे और उसके चारों ओर मिट्टी बनाय जौ बोवै और जलसे सींचता रहे तो उस मटकेका पानी ठंढा रहता है. बीस दिन बाद मटकेको बदले, जौभी फिर बोवै, मिट्टी भी नवीन लावै. अथवा बर्फके बीच जलकी सुराहीको शीतल कर उसका जल पीवै. अथवा नौसादर ५ भाग, शोरा ५ भाग, जल १६ भाग सुराही या मिट्टीकी नांदमें भरे ऊपरसे मोटा कपडा वा टाट लपेट देवे तो जल बहुत शीतल होजाता है.

वर्षाऋतु वर्णन।

कवित्त-वाटिका विहंगनपै वारिका तरंगनपै वायुवेग गंगनपै वसुधा वगार है। बांकी वेणु ताननपै खंजन वितानन पै वेप औध पाननपै बीथिन बजार है॥ वृन्दावन वेलिनपै वनिता नवेलिनपै ब्रजचन्द वेलिनपै वंशीवट भार है। बारिके कनाफनपै वद्दलन घांकनपै बिज्जुलीवहारनपै वर्षा बहार है॥ २७॥

सासु नी न्यारी ननँद मायके सिधारी यह रैन अँधियारी कारी सूझत न कर है। प्रीतम गो गौन नारायण न सुहाय आली पवन चलावे अरु लागो मेघ झर है॥ संग ना सहेली गृह मांह हीं अकेली अरु वैस है नवेली तन लाग्यो मैन डर है। आई अधरात मेरो जियरा डरात जागु जागु रे पपीहा चहा पीयकै दर है॥ २८॥

दो०-चमचमात चपला चहें, नाचत घन घहरात।
हंस हरत पवनने, सुन्दर श्यामल गात॥ २९॥

वर्षाऋतुमें सुन्दर सजे स्थानमें रहना, छानकर निर्मल जल पीना, तिलका तेल, चिकना, खट्टा पदार्थ सेवन करना और सेंधा मिला हर्रका चूर्ण, सुगन्धित स्थानमें शयन, हलदी व केशरकी मालिश करनी चाहिये. तथा गेहूं, साठी चावल, लाल चावल, कुलथी, उड्द, राई, सरसों, अलसी, पका पेठा, खीरा, तरबूज, गलकातुरई, बैंगन, बथुआ, मरसेका साग, चूका, परवल, सेंधा मिला मठा, शक्कर, सहिंजना ये पदार्थ हितकारी हैं. एवं दही, ईख, खिचडी घी पडी हुई, खीर, मालपुआ आदि पदार्थ भी हितकारी हैं. तथा वर्षा ऋतुमें कची काकडी, कचा खीरा, रामतुरई, घियातुरई, जौ, नारीका साग, करेला, अचेडा, पालक, कसेरू, सिंघाडे, भैंसका दूध, आलू, राजमाष, चना, मटर, मूँग, अरहर, मसूर ये सब अधिक सेवन न करे, और बार बार भोजन, ओसमें शयन, अधिक परिश्रम, जलमें क्रीडा, वेगका रोकना, कडुए, कसैले, रूखे, सूखे, साग इन सबको त्याग देवें.

शरद ऋतु वर्णन।

कवित्त—चन्द्रमा प्रकाशनमें चन्द्रमुखी हासनमें अवनि अकाशनमें कासनमें छाई है । सीताराम तालनमें इन्दी वनमालनमें चंचरीक जालनमें अधिक अमाई है ॥ मैत्रकाकी डारिनमें मालती कियारिनमें फूली फुलवारिनमें सौगुनी सुहाई है। कामके खेतिनमें बालुका समेतिनमें सूरसुता रेतिनमें शरद समाई है ॥ ३० ॥

दोहा—चन्द्रवदन दरशाइ अरु, खंजन चख निचलाइ ॥
सकल धराको छलत मन, शरद अप्सरा आइ ॥ ३१ ॥

शरदऋतुमें पित्त करके गाढा रुधिर सूर्यकी किरणों द्वारा बढताहै, तब रुधिर निकल्वाना चाहिये. इस ऋतुमें सरोवरका जल, लालचावल, मूंग, गायका घी, ईखविकार (गुड गादि), मिर्च मिले चटपटे पदार्थ, मिश्री मिला हर्रका चूर्ण, रातमें चंद्रमाकी चांदनी, वृक्षोंकी छाया, चन्दनलेपन, मिश्री मिला

औटा दूध, शक्कर मिला आंवलेका चूर्ण, धनियां, गोमी, कमलगट्टा, मसीडे, मुनक्का, घी, नारियल, बकरीका दूध, बथुआ, नारीका साग, केलेकी गहर, अनार, कसेरू, चूकेका साग ये सब हितकारी हैं. इस ऋतुमें जुलाब लेना हितकारी है. शरदऋतुकी गरमी पित्तको प्रगट करनेवाली होती है, जिससे बल घट जाता है, इस कारण पित्तकारक सब पदार्थ त्याग देवै. पीपरि, मिर्च, भांग, सौंफ. लहसन, हींग, मठा, खिचडी, दही, सरसोंका तेल, कढी, खट्टा, चरपरा, कडुवा, धूपमें घूमना, व्यायाम, दिनमें शयन, उडदके पदार्थ, रात्रि जागरण ये सब त्याग देवै.

हेमन्तऋतु वर्णन।

कवित्त–आयो है हिमन्त जोर जाडेके प्रसंगनसों रेशमके अंगनमें अंगन दुरावे देत। कहत नारायण त्यों हमामहू न काम सरे घाम घाम आला पौन पालाको उसासे देत॥ तू लपेट पीटिन अँगीठिनमें दीठी लगी तरुणी विहीन तन कंप सरसावे देत। दो गुनो कहो तो चित चौगुनो चुरात हेरि नौ गुनो न सौ गुनो समीर शीत नाये देत॥ ३२॥

दोहा–दिन निशि रवि शशि लहत है, हेम शीतके योग।
भरम चकोरन भोग है, कोकन भरम वियोग॥ ३३॥

हेमन्त ऋतुमें शीत और वायुकरके बाहर आनेवाली गरमी रुककर देहमके छिद्रमें जाकर अपने स्थानमें पीडित हो प्रचंड होती है. इस कारण इस ऋतुमें वातप्रिहारक विधि कही है, जिसमें वाही दूर होकर प्रचंड अग्नि शान्त होवै. तथा हेमंत ऋतुमें शीतके प्रभावसे संरोधको प्राप्त होकर जठराग्नि प्रबल होती है. यदि उस समय भोजनरूपी ईंधन न मिले तो वह वायु प्रेरित रस रक्त आदिको पचावे है. अतः स्वादु, खट्टे, लवणसे बनेहुए पदार्थ सेवन करै, रात्रि बडी होनेके कारण प्रातःकाल क्षुधा लगती है तब मलमूत्रोत्सर्गादिसे निवृत्त हो प्रथम भोजन करना चाहिये. भोजन

न करनेसे जठराग्नि मन्द होजाती है., जैसे विना ईन्धनके अग्नि बुझ जाती है. तथा इस ऋतुमें आँवला, हर्र, गुड मिली हर्र, वहेडेकी मींगी, सोंठ, कैथ, कमलगट्टा, सेंधालवण, दही, मठा, जिमीकन्द, रेशमी कपडोंका विछौना, सुगन्धित पदार्थ, वथुआ, मूँग, तेल, शक्कर मिला वकरीका दूध, अग्निसे तापना, मूली, व्यायाम, लाल चावलोंका भात, सूर्यकी धूप, परिश्रम, तैलमर्दन ये सब हितकारी हैं. और इस हेमन्तऋतुमें केलेकी फली, कसेरू, सिंघाडे, आलू, उडद, भैंसका दूध, उडद, मोठ, दिवा शयन, लंघन, शीतल अन्न, शीतल जलसे स्नान, दवा खाना, एक वार भोजन, सत्तू, कडुए, चरफरे, रूखे पदार्थ अहितकारी हैं.

शिशिरऋतु वर्णन।

कवित्त—असनमें आसनमें अमल अवासनमें सासनमें फतुक हुताशनमें आइगो। फूलनमें तूलनमें मंजु मखतूलनमें दोहरे दुकूलनमें कूलन अघाइगो॥ सेजनमें तीखे सुरतेजन उताजनमें मदन मजेजन करेजन कँपाइगो। नीरनमें त्योंही जगमोहन समीरनमें जहां जहां देखो तहां शिशिर समाइगो॥ ३४॥

इस शिशिर ऋतुमें हितकारी और अहितकारी पदार्थ हेमन्त ऋतुमें कहे अनुसार जानना. विशेषता यह कि इस ऋतुमें पीपरि मिला हर्रका चूर्ण, कुछ कुछ गरम भोजन, अदरख पानीका अचार, सेंधा व घी मिला पदार्थ और खिचडी इनका सेवन हितकारी है. नये चावलोंकी खिचडीसे दूना जल और पुराने चावलोंकी खिचडी हो तो ढाई गुना जल मिलाकर चढावे. खिचडीमें हींग अदरख मसाला और नवीन घी डाले. कच्ची मूली भी इसके साथ खाई जाती है. इस खिचडीके चार यार घी पापड औ दही अचार. भोरहि मूली मूरि सजीवन दुपहर मूली मूरी। सांझ खाय कच्ची मूली त्यहि, भोरहि आवे जूरी॥ इस कारण दिनमें कच्ची मूली खया

संध्या समय और रातको न खाय. जो खिचडी चनेकी दाल, चावल, घी, मिश्री, मेवा, दूध मिलाकर बनती है सोभी स्वादिष्ट होती है. वसन्त ग्रीष्म वर्षा आदि ऋतुओंके आदि अन्तके सात सात दिन ऋतुसन्धिके जानना. इस ऋतुसन्धिमें पहले ऋतुकी विधिका त्याग करै और आगेकी ऋतुमें जो विधि कही है उस विधिका सेवन क्रमशः करै, क्योंकि सहसा विधि छोडनेसे असात्म्यज रोग उत्पन्न हो जाते हैं. वसन्तऋतुमें कफको, शरदृऋतुमें पित्तको और वर्षा ऋतुमें वादीको वमन विरेचनादि द्वारा शमन करना चाहिये.

वृक्ष विज्ञान ।

यह भी एक विद्या है कि जिससे वृक्षसम्बन्धी अनेक बातें जानी जा सकती हैं. अपनी अपनी विद्यामें सबही निपुण होते हैं. जिसको जो विद्या आती है वह दूसरेको बतलाना नहीं चाहता. परन्तु सज्जन पुरुष जिस विद्याको जान लेते हैं वह अपने उपकारी स्वभावसे दूसरोंके निमित्त प्रगट कर देते हैं. हमारा यह भारतवर्ष सब विद्याओंका भंडार था, परंतु यवनराज्यमें अनेक पक्षपाती बादशाहोंने हमारी अनेक पवित्र पुस्तकोंको जलवा दिया, लाखों पुस्तकें जलाकर हम्माम गरम कराये गये, इसीसे अनेक पुस्तकोंकी खोज करनेपर भी पता नहीं चलता, सैकडों पुस्तकें खंडित होगई, अब वर्तमान सुराज्यमें अनेक गुप्त पुस्तकें शनैः शनैः प्रकाशित हो रही हैं, और सैकडों नवीन पुस्तकें बनगई हैं और बनती जाती हैं जिनसे बडा उपकार होरहा है और होगा. आगे हम वृक्षसम्बन्धी दो चार बातें लिखते हैं उनोंके उत्पन्न

ऐसी भूमिपर वृक्ष नहीं उगते, यदि उगतेभी हैं तो वे विकारी होते हैं, भलीभांति बढते और फूलते फलते नहीं हैं. काली, पीली, लाल और सफेद भूमिके गुण पृथक् पृथक् हैं और स्वाद भी पृथक् पृथक् है. सफेद भूमि जलके किनारे अच्छी होती है. ऐसी भूमिमें आम, जामन, जँभीरी, कटहल, ताड, बडहर, कदम, महुआ, खजूर, वट, केला, केतकी, सुपारी, नारियल, वांस आदि वृक्ष भलीभांति उत्पन्न होकर फूलते फलते हैं. जहां समीप जल नहीं है ऐसी निरस भूमिमें वेर, वेल, फालसा, कद्दू, नीम, छौंकर, अशोक ये वृक्ष भली भांति उत्पन्न होकर फूलते फलते हैं. तथा साधारण भूमिमें अनार, नींबू, चंपा आदि वृक्ष भली भांति उत्पन्न होकर फूलते फलते हैं. ऊपर भूमिमें बीज नहीं उगते परंतु यदि वहां भूमिको अच्छे प्रकारसे नरम कर बहुतसा गोवर आदि पवित्र खाद डालकर गायके गोबर और दूधमें बीजको भिगोकर बोवे तो उस बीजसे शीघ्र अंकुर उत्पन्न होता है. वृक्षविज्ञान ग्रन्थमें कलम लगाना, दव्वा लगाना, छल्ला लगाना, पत्ता लगाना, पैमद लगाना, चश्मा बांधना आदि अनेक उपायोंसे वृक्ष तैयार करना लिखा है. फिर उन वृक्षोंके भलीभांति फूलने फलनेके निमित्त सींचनेके मसाले लिखे हैं सो अतिसंक्षेप रीतिसे हम यहां लिखते हैं.

कलम लगाना।

भूमिमें वृक्षकी एक डालीको काटकर गाड देवै, वह जड पकडने लग जाय इसीको कलम लगाना कहते हैं. अनेक वृक्षोंकी कलम सब ऋतुओंमें लग जाती है और अनेकोंकी केवल बरसातमेंही लगती है. कोई वृक्ष ऐसे हैं कि जिनकी कलम पकी अच्छी होती है और कोई वृक्ष ऐसे हैं जिनकी कची कलम अच्छी होती है. वृक्षके जडकी कलम अधिक स्थान घेरती है उसमें कुछ विलंबसे फूल अधिक लगते हैं और वृक्षके सिरेकी कलम जलदी फूलती है परंतु उसका फूल छोटा होता है.

दवा लगाना।

लीची और जुही आदि वृक्षोंका दवा फरवरी और जूनमें लगाया जाता है. सो इस प्रकार कि वृक्षकी डालीको झुकाकर और उसको बीचसे कुछ चीरकर उसके मुखमें लकडी लगाकर भूमिमें गाड देवे एक भाग उसका बाहरकी ओर रहनेदे और जड वृक्षमें लगी रहे. चार महीनेमें जब जड पकडले तब उसको जडपरसे काट देवे तो ठीक दवा लग जाता है.

छल्ला लगना।

वृक्षकी अच्छी डालीको चारों ओरसे छीलकर दो इंचके बराबर छालका छल्ला उतार ले और वहांपर अच्छी चिकनी मिट्टी बहुतसी लपेट कर उसपर पत्ते लगाय सनसे बांध देवे फिर दूसरे वृक्षपर एक जलभरी हांडी लटकाकर उसकी पेंदीमें छेद कर उसमें रस्सी लगाय दूसरा सिरा वहां बांध देवे जिससे उसपर धीरे धीरे जल पहुँचता रहे. चार महीने उपरांत छल्लेके स्थानपर जड फूटने लगेगी तब उसे नीचेसे काटकर वृक्षसे अलग करले और जहां इच्छा हो वहां लगादे यह क्रिया बरसातमें करे.

पत्ता लगाना।

वृक्षकी डालीमेंसे टेढी बाहिन पत्तेको इस प्रकार काटले कि डालीको हानि न पहुँचे और कुछ छाल भी आजावे उसको गाड देवें. जब वह सवा महीनेमें मिट्टी पकडले तो जानलेना कि पत्ता लग गया.

पैमद लगाना।

झुकाय उसको छील उस पौदेको वीचमें कुछ खराशकर दोनोंको मिलाके सनसे बांधदे, पाँच मास उपरान्त जब दोनों मिल जांय तब पौदेका शिर काटदे और डालीको काटकर वृक्षसे अलग करले. परन्तु एकही जातिके वृक्षोंसे पैमद लगता है, अन्यजातिवाले वृक्षसे भी पैमद लग जाना संभव है, परंतु फूलने फलनेमें सन्देह है. पैमद लगाकर उसके मोरसेही जल सींचना चाहिये, जिससे नम बना रहे, धूपसे भी बचाना उचित है.

नकली पैमद।

दो पौदा लेकर उनका सिरा मिलाय वीचमें पैमद बांध देवे. जब ठीक होजाय तब एकको जडकी ओरसे दूसरेको सिरेकी ओरसे काट देवे तो असली पैमद जान पडेगा. आम और नारंगीका जिगर एक है. नारंगीका पैमद आमपर चढावे तो एकही वृक्षपर जुदे जुदे फल लगते हैं. तीन प्रकारके बेर होते हैं. उनका पैमद चढावे. वृक्षपर पैमद चढानेसे साधारण फलता है. पैमद पर पैमद अधिक फलता है. आड चीन, सपतालक, बादाम, आडू ये चार वृक्ष एक जाति हैं, और शहतूत, ऊमर, अंजीर, वट एक जाति हैं, पैमद चढाकर चार प्रकारके फल हो सकते हैं.

चश्मा बांधना।

जाडे वा वर्षा ऋतुमें गुलाब नारंगी नींबू आदि वृक्षोंके चश्मा बांधनेकी रीति यह है कि वृक्षकी शाखमेंसे आंख निकालले. आंखके साथ इंच प्रमाण छालभी नीचेकी ओर आवे इस छालको भी पौदेकी छालके भीतर चीरकर मिलादे. मिलानेकी रीति यह है कि आंखको पौदेकी शाखमें उसका छिलका चीरकर मिलावें और ऊपरसे बांध देवे, पांचवें महीनेमें पत्ते फूटते हैं.

वृक्षोंके मसाले।

जलमें उडदकी पीठीको घोलकर सींचनेसे आवला बढता है

सुअरके मांससे सींचनेपर बडहर और नारंगीका वृक्ष बहुत बढता है. सरसोंकी खली जलमें घोलकर सींचनेसे खजूर और कटहर बहुत फलता है. दूध और जल सींचनेसे नारियल अधिक बढता है और बहुत मीठा होजाता है. आमको पहले दश दिन घीसे सींचे फिर पंच पल्लवको दूधमें औटाय शीतल कर उससे सींचे तो आमवृक्षमें फल अधिक और सुगन्धित व मधुर उत्पन्न होते हैं. मछलीके मांस और मुरगेकी बीठको जलमें घोलकर सींचनेसे दाख बहुत फलता है. घी और जलसे सींचनेपर अनार बहुत फूलता फलता है और दाना रसीला होता है. मुलहठी, शहत, कस्तूरी और तिलको जलमें मिलाकर सींचनेसे बेर बहुत फलता है और सुगन्धित व मधुर फल होते हैं. सुअरका मांस बकरीके मूत्रमें मिलाकर सींचनेसे बिजौरानींबू बहुत फलता है, फल भी बडा होजाता है. कदम्ब, नागकेशर और प्रियंगु, वृक्ष तेल दही और कांजीमें मेथी मिलाय खारी जलसे सींचनेपर उनमें बहुत सुगंधित फूल प्रगट होते हैं. खस, मोथा, तगरका चूर्णकर सब वृक्षोंकी जडमें डाले और एक महीना भर सींचे तो वृक्ष बहुत फूलते फलते हैं.

एक वृक्षपर अनेक प्रकारके फूल।

मोगरा, मोतिया, पचरिया, धूलिया, रायबेल, इकहरी, मदनबान ये वृक्ष एक जातिके हैं. इनमेंसे एकही वृक्षपर सबका पैवद लगानेसे जब वृक्ष फूलते हैं, तब सबके फूल पृथक् पृथक् शोभायमान लगते हैं. जिस वृक्षके फूलका रँग बदलना हो तो उसी रँगके पानीसे सींचे और गन्धक धुआं देवे.

फूलोंका ताजा करना।

उबलते हुए जलमें कुम्हलाये हुए फूलकी डंडीको डुबोदे. एक भाग जलमें रहे, दूसरा भाग बाहर रहे. जल शीतल होनेपर निका-

लले, अथवा गिलासमें कुछ कोयला रख उसमें जल डालकर फूलोंको रक्खै.

एकही वृक्षपर अनेक फल।

संतरा, महतावी, चकोतरा, सदाफल, नारंगी, कागजी नींबू, तुरंज, कवला, अमलवेद, नींबू, बिजौरा ये वृक्ष एक जातिके हैं. इनमेंसे एक वृक्षपर सबका पैमद चढाया जा सकता है. सबके फल पृथक् पृथक् लगकर शोभायमान होसकते हैं.

कपास वृक्षमें हरी लाल नीली कपास।

त्रिफला, नील, हलदी, सेमरकी छाल इनको कूट मदिरामें मिलाय औटाकर सींचे तो हरी कपास उपजैगी. तथा जौ, तिल, हल्दी, ढाककों जलमें पीसकर सींचनेसे कपासका रंग लाल होवै. तथा जौ, तिल, मैनशिल, दारुहलदी, मजीठ, बिछौतिया, मदारकी जड, जयंतीके पत्ते गायके दूधमें पीसकर सींचे तो कपासका रंग नीला होवै.

वृक्षदुर्गन्ध निवारण।

गोमूत्र, सरसों, विडंग, घी, तिल इनको पीसकर चन्दन मिला लेवै फिर औटाकर लेप करै घीकी धूनी देवै तो वृक्षकी दुर्गन्ध दूर होवै.

असमय फूलना फलना।

गौका गोबर, तिल, खल, वायविडंग, सरसों इनको गांडेके रसमें पीसकर सींचनेसे असमय फल फूल आसकते हैं. अथवा बिलाईकन्दको गांडेके रसमें पीसकर सींचनेसे असमय फल फूल लग सकते हैं.

वृक्ष शीघ्र उगै।

जौकी सींक, अकोलका तेल, वाल लेवै जौकी सींक पहले

सुअरके मांससे सींचनेपर वडहर और नारंगीका वृक्ष बहुत बढता है. सरसोंकी खली जलमें घोलकर सींचनेसे खजूर और बड़हर बहुत फलता है. दूध और जल सींचनेसे नारियल अधिक बढता है और बहुत मीठा होजाता है. आमको पहले दश दिन घीसे सींचे फिर पंच पल्लवको दूधमें औटाय शीतल कर उससे सींचै तो आमवृक्षमें फल अधिक और सुगन्धित व मधुर उत्पन्न होते हैं. मछलीके मांस और मुरगेकी वीठको जलमें घोलकर सींचनेसे दाख बहुत फलता है. घी और जलसे सींचनेपर अनार बहुत फूलता फलता है और दाना रसीला होता है. मुलहठी, शहत, कस्तूरी और तिलको जलमें मिलाकर सींचनेसे बेर बहुत फलता है और सुगन्धित व मधुर फल होते हैं. सुअरका मांस बकरीके मूत्रमें मिलाकर सींचनेसे बिजौरानींबू बहुत फलता है, फल भी बडा होजाता है. कदम्ब, नागकेशर और प्रियंगु, वृक्ष तेल दही और कांजीमें मेथी मिलाय खारी जलसे सींचनेपर उनमें बहुत सुगंधित फूल प्रगट होते हैं. खस, मोथा, तगरका चूर्णकर सब वृक्षोंकी जडमें डालै और एक महीना भर सींचे तो वृक्ष बहुत फूलते फलते हैं.

एक वृक्षपर अनेक प्रकारके फूल।

मोगरा, मोतिया, चमेलिया, जूलिया, रायवेल, इकहरी, मदनवान ये वृक्ष एक जातिके हैं. इनमेंसे एकही वृक्षपर सबका पैमद लगानेसे जब वृक्ष फूलते हैं, तब सबके फूल पृथक् पृथक् शोभायमान लगते हैं. जिस वृक्षके फूलका रंग बदलना हो तो उसी रंगके पानीसे सींचै और गन्धक धुआं देवे.

फूलोंका ताजा करना।

उबलते हुए जलमें कुम्हलाये हुए फूलकी डंडीको डुबोदे. एक भाग जलमें रहे, दूसरा भाग बाहर रहे. जल शीतल होनेपर निका-

वृक्षके आरोग्यका उपाय।

शहत, कूट, मिश्री, महुएको कूट पीस गोला बनाय भूमिमें रख उसपर मिट्टी डाल वृक्ष लगावै तो वह आरोग्य रहे. वृक्ष जड जीव हैं, मनुष्योंके समान वृक्षोंको भी वात पित्त कफ दोष होते हैं. जो वृक्ष खुश्क रूखा और बडा व पतला हो, फल कमती हों उसको वातदोष जानना और जो वृक्ष पीला हो, धूप न सहसकै, पत्ते और डाली गिर पडनेसे पित्तदोष जानना और जो वृक्ष चिकना हो, फूल चिकना और गोल होकर लिपट जाय तो कफदोष जानना. खारी कडुवी द्रव्यके काढेसे सींचनेपर वातदोष दूर होजाता है. चिकनी दालको बनाकर मीठा जल मिलाय सींचनेसे पित्तदोष दूर होजाता है. इमली घी नमकसे अथवा खारी कषैली रूखी वस्तुके काढेसे सींचनेपर कफदोष शांत होवै. एवं अनेक उपाय हैं परंतु गुरुकी सर्वत्र आवश्यकता है. क्यों कि ठीक क्रियाके विना यथार्थ फल प्राप्त न होना कुछ आश्चर्य नहीं है. एक हिंदी कहावत है कि ' विन गुरु पुआ नहीं होते '.

शारीरक।

आयुर्वेद ग्रन्थोंमें पंचतत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) इस प्रकार वर्णन है कि आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि, अग्निसे जल, जलसे पृथ्वी. पृथ्वीके पांच गुण (गंध, रस, रूप, स्पर्श शब्द), जलके चार गुण (रस, रूप, स्पर्श, शब्द), तेजके तीन गुण (रूप, स्पर्श, शब्द), वायुके दो गुण (स्पर्श, शब्द) आकाशका एक गुण (शब्द), तहां गन्धके नव प्रकार, रसके छे प्रकार, रूपके सोलह प्रकार, स्पर्शके ग्यारह प्रकार, शब्दके सात प्रकार हैं सो यहां विस्तारके कारण नहीं लिखे. पृथ्वी भारी है, जल चिकना है, अग्नि तेज है, वायु रूखा है, आकाश हलका है. इन्हीं गुणोंसे सब • औषधियोंके प्रकृतिकी परीक्षा होती है. शरीरमें सात कला (झोरी) हैं, सात

पीसकर तेल डाल मिलावे फिर बीजोंको इसमें डुबोकर बोवे और निर्मल जलसे सींचे तो वृक्ष जलदी उगकर बढने लगेगा.

शीघ्र फल आना।

राल लपेटकर सूखे बीजोंको बोवे.

अधिक फल आना।

अकोलके तेलमें बीजको बोरकर बोवे, मैनफलके पानीसे सींचे तो आम आदि वृक्षोंमें फल अधिक लगें.

फल मीठा करना।

शहतमें बीजको भिगोकर बोवे और राब व गुडके शर्बतसे सींचे अथवा गुड, जौ, शहत, विडंगको पीस दूधमें मिलाय सींचनेसे वृक्षका खट्टा फल भी मीठा हो जाता है.

सूखा वृक्ष हरा करना।

केलाका पत्ता, सरसों, मछली, सुअरकी बीट इनका चूर्ण धूपमें सुखाले और सूखे वृक्ष पर लगावे तो हरा होजाना संभव है और जिस वृक्षको बिजली मार गई हो उसके चारों ओर भूमि खोद डाले फिर सरसों छोडे, दही रक्खें, एक सप्ताह पर्यन्त जडमें भात और दही धरे तो वृक्ष हरा हो जाना संभव है.

सदा फल लगें।

मूलको अकोलकर थाला करले उनमें घी, सरसों, शहद पीसकर डाले और सुअर व हिरनकी चर्बी मिलाकर सींचे तो सदैव फल लगें.

फलको अनेक स्वादवाला करना।

वृक्षको अच्छे प्रकार गाडे और गाडकर घी शकर महुएका फल बहेडेका फल पीस शहतमें मिलाय लेप करें तो फल अनेक स्वादवाले होवें.

दोहा—तालमखाना पीसिके, दूध माहिं मिलवाय।
मदमातेको प्याइये, नशा तुरत नशि जाय ॥ ३४ ॥
मूली अरु ले फटकरी, पानीमें पिसवाय।
मदमातेको प्याइये, नशा तुरत घटि जाय ॥ ३५ ॥
सोंठि चूर्ण गोदधि विषे, सेवै तुरत बनाय।
नारायणहरिकृपाते, भांग गरल हटि जाय ॥ ३६ ॥

धतूरेका विष दूध मिश्री पीने और बैंगनके बीजोंके रसको पीनेसे शांत होजाता है. भिलावेकी सूजन जहां हो वहां चौलाईका रस और मक्खन मिलाकर लगावे. कनेरका विष मिश्री मिला भैंसका दूध पीनेसे जाता रहता है. घुंघुचीका विष मिश्री मिला चौलाईका रस पीनेसे दूर हो जाता है, ऊपरसे दूध पीलेवे. ठंडे जलमें मिश्री मिलाय पीनेसे थूहरका विष शांत होजाता है. दही मिश्री धनियां मिलाय पीनेसे जयपाल विष शांत हो जाता है. बडी कटेयाके रसमें दूध मिलाय पीनेसे संखियाका विष शांत हो जाता है. विषोंकी शांतिके लिये वमन और जुलाव हितकारी है. कोईभी रस अधिक खाजाय तो घी दूध मिश्री पीने खानेसे गरमी शान्त होजाती है, यह स्थावर विषके विषयमें संक्षेपसे कहा.

जंगमविष लक्षण और चिकित्सा।

नींद आने लगे, देह घूमने लगे, नेत्रोंके आगे अँधेरा आने लगे, काटे स्थानमें सूजन आजाय, दस्त आने लगें, ज्ञान जाता रहे तो जानना कि किसी विषैले जीवने काट खाया है.

बीछूविष निवारण।

सिरसके फूल, करंजके बीज, केशर, कूट, मैनसिल इनको जलमें पीसकर वा घिसकर लेप बनावे, काटे हुए स्थानपर लेप करे. अथवा नमक मूली खावे. अथवा अपामार्गकी जड छे माशे,

१ अपामार्गकी जड अकेलीही घिसकर लगानेसे भी पीडा शान्त होती है

स्थान हैं, सात धातु हैं, सात-धातुमल हैं, सात उपधातु हैं, सात त्वचा हैं, तीन दोष अथवा मल हैं, नौ सौ नसें हैं, दो सौ दश जोड हैं, तीन सौ हाड हैं, एक सौ सात मलस्थान हैं, सात सौ मध्यम नसें हैं, चौवीस स्थूल नाडी हैं, पांच सौ मांसग्रन्थि हैं, दश छिद्र हैं, स्त्रीके शरीरमें वीस ग्रंथि अधिक हैं. सोलह पुष्ट नसें अधिक हैं, जो फैलती सिमटती हैं और तीन छिद्र अधिक हैं. इनका विस्तार सुश्रुत ग्रन्थमें है यहां नाममात्र लिख दिया है.

स्थावर जंगम विष।

स्थावर जंगम नामक दो प्रकारके विष हैं. इनमें स्थावर दश स्थानोंमें रहता है. १ वृक्षकी मूलमें, २ पत्रमें, ३ फूलमें, ४ फलमें, ५ वृक्षके दूधमें, ६ वृक्षके रसमें, ७ छालमें, ८ गोंदमें ९हरताल आदि धातुमात्रमें, १० सिंगीमोहरा आदि कन्दमें. और जंगमविष तेरह स्थानोंमें रहता है. १ मनुष्य आदिकी दृष्टिमें, २ सर्प आदिकको श्वासमें, ३ कुत्ता सियार आदिकी दाढमें, ४ व्याघ्र आदिकोंके नखोंमें, ५ विषखपरा आदिकके नखोंमें, ६ विषखपरा आदिकोंके मूत्रमें, ७ वंदर आदिकके वीर्यमें, ८ बावले कुत्ता शृगाल आदिककी गुदामें, ९ सांप आदिकोंके हाड अथवा दाढमें, १० न्यौला मच्छर आदिकके पित्तमें, ११ भौंरा आदिके कांटेमें, १२ मूषकके दांतमें, १३ सिंह आदिकोंके रोममें.

स्थावर विष लक्षण और चिकित्सा।

गला रुँध जाय, दांत खट्टे होजाय, हिचकी और ज्वर हो, मूर्च्छा छर्दि अरुचि हो, मुखमें फेन आवे ये लक्षण स्थावर विष खाजानेके हैं. स्थावरविष खा जानेवालेको वमन करावे. विष सब गरम हैं, अतः शीतल उपाय उचित है. स्थावरविषवाला मांठी चावल सेंधालवण खावे, लालमिर्च खटाई न खावे.

बर्रं विष निवारण।

शहदकी मक्खी और बर्रके काटनेपर सोंठ, तगर, केशरको जलमें बारीक पीस लेप करनेसे मक्खीका विष शान्त हो जाता है. मिट्टीका तेल डंकके स्थानपर मलनेसे सूजन और दर्द कमती होती है. फौलादके लगानेसे भी सूजन नहीं आती. बर्रके काटतेही जल पीलेवे, आलू जलमें पीसकर लगावे, सोख्ता कागज लगादे, दिया सलाईका मसाला रगडे, गोबर मल देवे, चूसकर वा दाबकर विष निकालदे, सरसोंका तेल मल देवे.

भौंरा विष निवारण।

भौंरा काटतेही बहुत पीडा होती है, जांघे भर जाती हैं, चलनेपर रानोंमें दर्द होता है. इसके काटनेसे कभी कभी मनुष्य मर भी जाता है. इसके काटतेही धनियां खा लेवे और काटे स्थानको गरम पानीमें घंटेभर रक्खे. सिरका और तालाबकी काई पानीमें मिलाकर रक्खे, पथ्यसे रहे.

मूषक विष निवारण।

मूषक तो १८ प्रकारके हैं जो सुश्रुतसंहितामें लिखे हैं. महामारी रोग मूषकोंसेही प्रगट होता है जिसको प्लेग ताऊन कहते हैं, जिसका वर्णन उपाय सहित हम रसराजमहोदयके पंचम भागमें लिख चुके हैं, जो बंबईमें छपा है. साधारण मूषकके काटनेसे सेंधा, मजीठ, धमासा इनको जलमें पीस लेप करै तो विष शान्त हो जाता है.

जोंक विष निवारण।

विषैली जोंक लगनेसे रोग बढ जाता है, वह स्थान सूजजाता है, खुजली और मूर्च्छा उत्पन्न हो जाती है. इसमें इन्द्रायनकी जड, जरावन्द मदहरज, फढुआ नकछूल, जरावन्द तवील, अफ-

संखिया छे माशे, इनको घोटकर चने बराबर गोली बनाय सुखा लेवें, आवश्यक समय जलमें घिसकर डंकके स्थानपर लगावे.. अथवा ईखके रसका कच्चा सिरका मले. अथवा मदारके दूधमें पलासपापडेको घिसकर लगानेसे बीछूका विष दूर हो जाता है. बीछूके काटनेसे जलन पडती है और बडी पीडा होती है.

पागल कुत्ता विष निवारण ।

पागल कुत्तेके काटनेसे विष चार दिनमें सब शरीरमें फैल जाता है. रोगीको क्रोध, अज्ञानता, चिन्ता, पागलपन ये घेरलेते हैं. कभी कभी कोई लक्षण प्रगट नहीं होते और रोगी मर जाता है. इस रोगमें मुख सूखने लगता है, चेहरा लाल हो जाताहै, चिल्लाताहै, जलको देखकर डरने लगताहै, क्योंकि जलमें कुत्ते देख पडते हैं, आवाज बैठ जाती है, दुःस्वप्न देखताहै, दूसरोंको काटने दौडता है, इस कारण पागल कुत्तेकी चिकित्सा करानेको कसौली जाना चाहिये. कसौली जानेसे पहले काटे स्थानसे कुछ ऊपर कसकर एक पट्टी बांधदे और घावको नश्तरसे बढावे. फिर लाल दवा जो कुओंमें डाली जाती है उसको महीन पीसकर घावमें भरे, तब कसौली जाय. जानेके लिये गरीबको सरकारसे खर्चा मिल जाता है. एक अर्जी जिलाके हाकिमको देकर खरचा मांग ले जानेमें देर न करे, कालका होकर कसौली जाना होता है. ई. आई. रेलोके अन्तमें वहांसे नौ मील कसौलीका अस्पताल पहाडपर जिला अम्बालेमें है. रेलसे उतरतेही स्टेशनपर सवारी मिल जाती है. दूसरा रस्ता कसौलीका यह है कि कालकासे रेल शिमलेको जाती है. धर्मपुर स्टेशनतक जाकर वहांसे तांगा सवारी मिल जाती है. कसौलीमें इलाज चौदह दिन होती है. कुछ दवा पिचकारीसे अन्दर पहुँचाई जाती है. फ़ीस कुछ भी होती है. साधारण कुत्ता काटेपर कुछ भय नहीं. कुत्ता काटनेपर खून निकालदे और कार्बोलिक लगादे वा घावमें चूना लाल मिर्च भर देवे.

फिरावे तो दांत निकल आते हैं, फिर सिंगी लगवाकर वहांसे कुछ रुधिर निकालदे और काटे स्थानको गरम जलसे भिगोवे और जोंक विष निवारणमें कही हुई औषधी खावे.

वम्हनीविष निवारण।

यह चार हाथ पांववाला छोटी पूँछका जीव अग्निमें छोडनेसे नहीं जलता है. जहां यह काटता है वहां पीडा होने लगती है, जलन पडती है, शरीर सुन्न होकर कांपने लगता है, काटनेका स्थान स्याह हो जाता है और सडकर गिर जाता है, बोलनेकी शक्ति नहीं रहती. इसके काटनेपर कुकुरौंधेका काढा पीवे, रातौनज शहतमें मिलाकर खाय.

मकरीविष निवारण।

मकरी आदि छोटे अनेक जीव ऐसे हैं जिनके काटनेसे क्लेश होता है. कोई तो ऐसे हैं जो देख नहीं पडते और सहसा काट खाते हैं. किसीके काटनेसे पेट फूल जाता है. किसीके काटनेसे वमन होने लगता है. किसीके काटनेसे पेटमें दर्द होने लगता है. किसीके काटनेसे मल मूत्र करते समय दर्द होता है. किसीके काटनेसे शरीर शीतल हो जाता है, पसीना निकल आता है. किसीके काटनेसे जाडा लगता है. किसीके काटनेसे जलन पडती है, प्यास बढने लगती है. किसीके काटनेसे बीछूके डंक मारने समान पीडा होती है. इन जीवोंके विषकी शांतिके लिये जोंक विष निवारणमें लिखी हुई औषधी खाय. मकरीके काटनेपर विषको खींचनेका उपाय करे. गरम शीतल मिले हुए जलसे थोडी थोडी देर बाद स्नान करावे, जबतक दर्द दूर न हो जाय.

सर्पविष निवारण।

अनेक प्रकारके सॉप इस संसारमें हैं परन्तु सॉपके विषके

सान्तिनकी बुकनी ये सब एक एक तोले, शहत तीन तोले, शिलारस तीन तोले, मिलाय बालकको बलानुसार मनुष्यको दो माशे भर देवे तो विष दूर हो.

कनखजूरा विष निवारण।

यह हाथ भरतक लंबा होता है, चवालीस पांव इसके होते हैं, यह आगे पीछे दोनों ओर चलता है, इसीको कातर कहते हैं. यह अच्छी तरह चिपट जाता है तो इसका छूटना कठिन हो जाता है. इसके चिपट जानेपर तेल छोड गरम लोहेसे दागै, वा मिश्री घोलकर टपकावै. इसीके बहुत छोटे बचे कानसलाई कहाते हैं, जो कानमें घुस जाते हैं. इसके काटे स्थानपर नमक सिरका अथवा दीपकमें मीठा तेल जलाय उस तेलको लगानेसे दर्द अच्छा हो जाता है.

मेंडकाविष निवारण।

दरियाई मेंडक दूसरे जीवोंको देखकर उछलता है और काट खाता है. इसके काटनेसे मनुष्य मर जाता है, काटा स्थान सूज जाता है, प्यास बढती है, पीडा होती है, वमन होने लगता है. इसके काटतेही विषको निचोडदे, रोगीको सोने न दे और जोंक विष निवारण जो औषधी लिखी है वह देवै और इन्द्र लगाए जरायन्दतवील इन दोनोंको बराबर लेके कूट पीस छानले और अच्छे शहदमें मिलाकर रख छोडे, गरम जलके संग साढे चार माशे खाय तो सब विषधर जीवोंका विष दूर हो जाता है.

छिपकलीविष निवारण।

छिपकलीके दांत काटे हुए स्थानपरही टूटकर रह जाते हैं. जिससे खुजली उत्पन्न होजाती है, दर्द होने लगता है, इस कारण रेशमका डोरा बटकर उस स्थानके लंबाई चौडाई दोनों ओरसे

शरीरमें फैलकर प्राणीको मारदेता है. विष जितनी जल्दी चढता है उतनी जल्दी औषधी अपना प्रभाव नहीं करसकती. सांप काटतेही उसको झटककर फेंक देना चाहिये और तुरन्त आधसेर दूधमें छटांक भर पिसी हुई फटकरी मिलाकर पी लेना चाहिये. क्यों कि फटकरी कलेजेमें पहुँचकर जम जाती है जिससे विष कलेजेमें घुस नहीं सकता. फटकरीसे टकर खाकर हट जाता है. वार वार टकराते टकराते विष निर्बल होजाता है और चिकित्सा करनेको समय मिलताहै. विष जवतक काटे स्थानपर रहता है तवतक वहां सूजन रहती है. सूजन घट जानेपर जान लेना चाहिये कि विष आगे बढ गया. यदि ठीक नाडी (नस) पर काटा है तो विष शीघ्र रुधिरमें प्रवेश होकर शरीरमें फैल जाताहै. जिस रोमके नीचे विष आताहै वह उसी समय चिपक जाता है और विष हटतेही खडा होजाता है. ज्यों ज्यों विष आगे वढता है त्यों त्यों रोम गिरते और उठते जाते हैं. यह जाननेके निमित्त चिकित्सककी दृष्टि वहुत तेज होना चाहिये. इस देखनेसे प्रयोजन यह है कि यदि विष नाडीमें हो वह निकाल लिया जा सकताहै. सांप काटतेही वन्धन लगाना, चूसकर विष निकालना, चीरकर रुधिर निकालना, दागना, इनमेंसे जो काम उचित जान पडे तुरन्त करें क्योंकि मुख्य चिकित्सा यही है. विष रुधिरमें मिलकर शरीरको शिथिल करता हुआ फेफडेके समीप पहुँचकर कंठमें कफ भर देता है जिससे श्वास वन्द होकर मनुष्य डवकर मर जाता है. कंठमें कफ भर जानेपर तेल तूतिया इमली मछलीके धोवनका जल मिलाकर पिलावै इससे वमन न हो तो नीमके पत्ते काली मिर्च मिलाय नागफनी खिलावै तो वमन होनेसे रोगी वच सकता है. सांपका विष भंडारमें पहुँच जानेसे रोगीकी मांसकी नलीमें एक प्रकारकी लार उत्पन्न होकर मुखसे फेन निकलने लगता है जिससे श्वास रुक जाती है. फेन निकालनेका उपाय

तीन दरजे मानेगये हैं. पहले दरजेका साँप जिसको काटताहै वह प्राणी शीघ्र मर जाता है, कुछ उपाय नहीं चलता. कोई साँप ऐसे विषधर होते हैं कि जिसके समीप जावेही प्राणी निर्बल होकर मर जाता है. किसीका शब्द सुनतेही मनुष्य निर्जीव होजाता है. ऐसे सांपकी दृष्टि जिस प्राणी पर पड जाती है वह वहीं मर जाता है. वह जिसको काटता है उसका शरीर सूज जाता है और रांगाके समान अंग गलकर पानीके समान बहने लगता है और वह प्राणी तुरंत मर जाता है. उस मृतक शरीरके समीप जानेवाला भी मर जाता है, ऐसे सांप तुरकिस्तानमें बहुत हैं. यहां दूसरे तीसरे दरजेके विषवाले सांप रहते हैं. सांप भिन्न २ देशोंमें भिन्न रंगके होते हैं और भिन्न भिन्न देशोंके वायु जलके अनुसार विष होता है, इसी कारण बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था, पुरुषजाति, स्त्रीजाति, पेटभरे, भूंखे इत्यादि समयानुसार अधिक और कमती विष होता है. जैसे एक ही प्रकारके सांप जलके समीप रहनेवाले कमती विषवाले और जलसे दूर रहनेवाले अधिक विषवाले होते हैं. क्योंकि सरदीमें रहनेसे विष कम होता है. गरमीमें रहनेसे विष अधिक होता है. एक सांप सफेद पतला दश हाथसे साठ हाथतक लंबा होता है, उसका मुख चौडा नेत्र बडे भौंहोंपर बडे बडे बाल होते हैं उसके काटने पर मल्हम आदि लगानेसे विष शान्त होजाता है. विषैले सांपके काटनेपर उस स्थानको किसी तेज धारवाली छुरीसे फाडकर अलग करदे तो शायदही विष निकल जाता है. जो वह स्थान काटने योग्य न हो तो काटे हुए स्थानपर बहुत गरम लोहा वा आगसे भलीभांति दाग देवे जिससे काटे हुए स्थानका विष जल जाय तो मनुष्य जी सकता है. सांपके दांतोंकी जडमें जो विष पोटली होती है उसमेंका विष सांपके फन चटकनेही अथवा काटतेही उसके दांतोंके छिद्रसे तुरन्त निकल पडता है. सांपका थोडासा विषभी रुधिरमें मिलनेसे सब

कमी तीस मिनट तक ठहर जाती है. जब गाडी छूटनेको हुई तब पूरनपुरतक जानेवाले एक ब्राह्मणदेवता हमारे निकट आकर बैठ गये. गांवके रहनेवाले ब्राह्मणोंका प्रायः ऐसा स्वभाव होता है कि वे दूसरे ब्राह्मणको देखकर गोत्र, आस्पद, नाम धाम पूछने लगते हैं. ब्राह्मणदेवताने अपने स्वभावानुसार हमारा गोत्र आदि पूछकर पढना लिखना पूंछा और कहा कि हमारा एक बालक है उसको हम पढाना चाहते हैं. लखीमपुरमें तो हमने एक पाठशाला सुनी है, हमने कहा कि हां. सनातन धर्मपाठशाला है उसमें तुम्हारा लडका पढेगा तो अवश्य विद्वान् होसकता है. परन्तु गांवके रहनेवाले लोग प्रायः ऐसे हैं जो बाहर पढनेके लिये भेजनेमें सकुचाते हैं. यदि पिता अपने बालकको भेजना चाहता भी है तो बालककी माता बालकको अपनी निगाहसे अलग नहीं करना चाहती, फिर बालक कैसे पढ सकता है. इस प्रकार बात चीत हो रही थी कि इतनेमें हमारी दृष्टि ब्राह्मणदेवताके हाथकी एक कटी अंगुली पर पडी. हमने पूँछा कि यह आपकी अँगुली कैसे कटगई ? यह सुन ब्राह्मणने कहा कि एक दिन हम अपने पशुओंके निमित्त चारा काटरहे थे उस चारामें एक सांप बैठा था. थोडा चारा काटकर हमने ज्योंही चाराका मूठा लेनेके लिये हाथ बढाया त्योंही सांपने इस अँगुलीमें काटखाया और मारे क्रोधके चिपटगया. हमारे दूसरे हाथमें गँडासा था तुरन्त सांपको काटकर मार डाला और इस अँगुलीको भी ओटपर रखकर उडादिया. अँगुली दुखनेसे दो महीनेतक क्लेश तो रहा परन्तु प्राण बचगये. यह सुनकर हमने कहा कि आपने बडी चतुरतासे काम लिया. ब्राह्मणने कहा कि ईश्वरने हमको उस समय ऐसीही बुद्धि देदी. पूरनपुरका स्टेशन आजानेपर ब्राह्मणदेवता रेलपरसे उतरगये. हम बरेली चलेगये. अब बरेली पुस्तकालयसे हमने अपना सम्बन्ध तोड दिया जिसको

करै, कफ स्थान पर्यन्त अँगुली वा चिथडा डाले और फेनको निकाले, कुछ कुछ गरम जल पिलावे जिससे फेन नीचे उतरता रहे, नींबूकी खटाई खिलावे, जिससे विषकी तेजी घट जाय. सरसोंके असली तेलमें इमली मिलाकर पिलावे. इसकी चिकित्सा यदि विस्तारपूर्वक लिखी जाय तो ग्रन्थ बहुत बढ जायगा इस कारण यहां संक्षेपरीतिसे लिख दी है. विस्तारपूर्वक सर्पविष चिकित्सा पुस्तक लिखेंगे.

विषैले जीवोंका भगाना।

सनोबरकी लकडीका चूर्ण आगपर रख धूनी देनेसे मच्छर भाग जाते हैं. अथवा सफेद गायके गोबरकी कंडी, सरोंकी पत्ती, गुगल इनकी धूनीसे भी मच्छर भाग जाते हैं. घोडेके पूँछके बाल द्वारपर लटकानेसे भी मसा मच्छर भाग जाते हैं. गन्धक और लहसनकी धूनी बर्रके छत्तेपर देनेसे बर्रे भाग जाती हैं. चुम्बक पथरी समीप रख देनेसे चींटी भाग जाती हैं. नीली सोसनकी जड, बकरीकी खाल, गन्धक, अक्करकरा, बारासिंगेका सींग इनकी धूनीसे सांप भाग जाते हैं, अथवा राई नौसादरका छींटा देनेसे अथवा नौसादरको पानीमें घोलकर छिडक देनेसे घरमें सांप नहीं आते. बीछूके बिलपर मूलीका छिलका रखदेनेसे बीछू बाहर नहीं निकलता. कनेरकी लकडी और गन्धककी धूनी देनेसे खटमल भाग जाते हैं, तथा इन्द्रायनको जलमें मलकर घरमें छिडक देनेसे घरसे खटमल निकल जाते हैं.

सांप काटेपर दृष्टान्त।

विक्रमीय संवत् १९५५ में एक दिन हम करीमपुरसे रेलगाडी पर बैठकर बोरीको अपनी दूसरी दूकान पर जा रहे थे. जब रेलगाडी मैलानी स्टेशनपर पहुँची तो वहां सवारी गाडी कमी

पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधं निषेवणैः ।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ॥

अर्थात् परहेजसे रहे तो रोगीको औषधसे क्या प्रयोजन, और परहेजसे न रहे तो रोगीको औषध देनेसे क्या लाभ होसकता है. जो रोगी परहेजसे रहता है उसको औषधी शीघ्र गुण करती है. जो रोगी परहेज नहीं करता उसका रोग शीघ्र बढ जाता है. परहेज करनेसे रोग आपही शान्त होजाता है. जैसे 'अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति' विना तृणवाली भूमिपर गिरी हुई अग्नि आपही बुझ जाती है.

अजीर्ण आदि रोगनिवारण।

पिपरमेंट ६ माशे, अजवायनका सत ६ माशे, कपूर ६ माशे इन तीनोंको एक निर्मल शीशोमें भरकर डाट लगादे. जैसे अमृतार्णव, अमृतबिन्दु, अमृतधारा, सुधासिंधु, सुधाविन्दु नाम है वैसेही इसका नाम नारायणबिन्दु कहना चाहिये, चार बूँद एक बताशेमें डालकर खाय ऊपरसे दो घूंट जल पी लेवे, अथवा ताजे जलमें चार बूंद डालकर पीवे तो अजीर्ण और उदरशूल (पेटका दर्द) शान्त होजाता है, पित्तजनित विकारमें भी चार बूंद बताशेमें डालकर खानेसे पित्तविकार दूर होजाता है.

शिररोग निवारण।

केशर ३ माशे, मुचकुन्दके फूल १ तोला गुलाबजलमें पीस मस्तकपर लेप करनेसे गरमी और सरदीसे उत्पन्न शिरःपीडा शान्त होजाती है. तथा वादामका तेल सूंघने या चूना नौसादर हथेलीपर मलकर सूंघनेसे शिरदर्द जाता रहता है. तथा ब्रह्मदंडीका हुलास लेनेसे अथवा गायके घीमें कपूर मिलाकर नासिका द्वारा ऊपरको चढा लेवे तो शिरका दर्द जाय. यदि शिरकी निर्बलताके कारण पीडा हो तो धनियां चावलोंका आटा १ पाव घी

तेरह वर्ष हुए. वह मुकुन्दरामके अधिकारमें रहकर उन्हींके कर्मोसे नष्ट हो गया है और लखीमपुरका पुस्तकालय हमारे और सीतारामके अधिकारमें है.

तथा दूसरा दृष्टान्त।

विक्रमी संवत् १९५७ में यहां एक वैश्यको सांपने काटखाया जब विष शरीरमें प्रवेश होनेलगा और मूर्च्छासी आनेलगी उस समय बहुतसे मनुष्य इकठे होगये. वहीं एक साधु भी आ गया, उसने बतलाया कि मुरगीका बचा मँगाओ हम इसको अच्छा करेंगे. मुरगीका बचा मँगाया गया. साधुने कहा औरभी कई बचे मगाओ. जो बचा आया था उसको पकडकर साधुने उसकी गुदाको सांपके काटे स्थानपर लगाया, लगतेही बचा लगगया. घावमेंसे विष निकलकर उस बचेके कोमल शरीरमें प्रवेश करने लगा, पांच मिनटमें वह बचा मूर्च्छित होकर गिरगया. तब साधुने दूसरा बचा लगाया, पांच मिनटमें वह भी गिरगया. इसी प्रकारसे पांच बचे लगाये गये तब वह वैश्य निर्विष शरीर होनेसे चैतन्य हो गया, मूर्च्छा जातीरही, साधु चलागया. यहां मुरगी लगानेमें एक बातका ध्यान रहे कि जिस मुरगीका गुदस्थान बहुत कोमल होता है वह घावपर शीघ्र चिपक जाता है. मुरगीको लगाकर उसे पकडे रहे नहीं तो मुरगी छूटकर फिर उसका लगना कठिन हो जायगा. जो मुरगी न मिल सके अथवा घावपर न लगे तो और उपाय करे क्यों कि विलंब करनेसे रोगीका चंगा होना कठिन होजाता है.

अनुभव चुटकले।

अब आगे हम अनुभव चुटकले लिखते हैं. रोगके उत्पन्न होनेपर तुरन्त औषध सेवन करना चाहिये. तुरंत उपाय करनेसे रोग नहीं बढता है. कोईभी रोग प्रगट हो, परहेज अवश्य करना चाहिये, परहेज करनेसे प्रायः रोग शान्त होजाता है. लिखा भी है कि—

जाय. तथा आकके दूधमें रुईका फोहा भिगोकर वाईं आंखमें दर्द हो तो पांवके दाहिने अंगूठेपर बांधे और दाहिनी आंख- दुखती हो तो पांवके बायें अंगूठे पर बांधे तो नेत्रपीडा जाय. तथा अफीम और भुनी फटकरी वरावर लेके शहतमें घोटकर सलाईसे तीन वार रात दिन नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रपीडा जाय. तथा त्रिफला (आंवला हर्र वहेडा), त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पीपरि), वायविडंग, सेंधानमक, पोस्त, समुद्रफेन इन सबको घोटकर रख छोडे इस अंजनसे नेत्रोंका पानी वहना, लाल होना, दर्द अच्छा हो जाता है. तथा एक छटांक गुलाव अर्कमें दो माशे फटकरी पीसकर डाले, फिर बूँद बूँद कर नेत्रोंमें डाले तो लाली कट जाती है, पीडा दूर हो जाती है. तथा फटकरी, अफीम पोस्त, लोध, भुनी हलदी इनको कांसेके पात्रमें रगडकर सुरमाके समान स्याह करले और अंगुलीसे नेत्रोंमें लगावे तो लाली और पीडा जाय तथा स्याह हर्र, पीपरि, आंवलेकी गुठलीकी मींगी इनको भँगराके रससे घोटकर एक वत्ती कपडेकी वनाकर उसपर लेपदे फिर सरसोंके तेलमें जलाय काजल वनाले, उसमें भीमसेनी कपूर वरावर मिलाय सुरमा वनावे. आंखोंमें यह सुरमा आंजनेसे नेत्रोंसे पानी वहना वन्द हो जाता है. तथा आधी वोतल पानीमें कौडी भर फटकरी डालकर हिलावे जव मिल जाय तव रुईके फोहा वा कलमसे एक एक बूंद टपकावे तो नेत्रपीडा जाय. जहां मार्ग आदिमें नेत्र दुखने लगें कोई औषधी न मिल सके वहां दाहिनी आंख दुखती हो तो वायें पांवके अंगूठेमें और वाईं दुखती हो तो दाहिने पांवके अंगूठेमें अपने वरावर डोरा नापकर वांध देवे तो आंख दुखनेसे रुक जाती है. तथा चमेलीके फूल एक सौ, तिलफूल एक सौ सुखाकर काली मिर्च पीपरि धेला धेला भर मिलाकर वासी पानीसे घोटे सुरमाके समान हो जानेपर गोली वनाले. प्रतिदिन घिसकर अंजन लगावे तो नेत्रज्योति वढे.

शक्कर आध सेर इनके लड्डू आधी आधी छटांक प्रमाण बनावे. प्रतिदिन १ लड्डू खाकर ऊपरसे दूध पीवे तो शिरकी पीडा शान्त हो अथवा गायके दूधमें आधसेर पोस्तके दाना भिगोवे प्रातः समय पीसकर लुगदी बनावे, फिर आधसेर गायके घीमें आधसेर गेहूँकी मैदा भूने और पोस्तके दानाकी लुगदी भी भूने और बादाम गोला, चिरौंजी, किशमिश, दक्षिणी मिर्च ये एक एक छटांक डाले और दो सेर शक्करकी चासनी कर सबको मिलाय आधी छटांकके लड्डू बांधे. एक एक लड्डू प्रातः सायं सेवन करनेसे कैसाही शिरदर्द हो थोडेही दिनोंमें अच्छा होजाता है.

नेत्रपीडा निवारण।

जस्तका सफेदा, फूलका मैल मिलाय भाखी लगानेसे नेत्र पीडा शांत हो जाती है, लाली कट जाती है. अथवा छोटे अंडेकी गिरी पीसकर नेत्रोंपर बांधे और सो रहे प्रातःसमय खोले तो नेत्रपीडा जाय. तथा धतूरेके पत्तोंका अर्क कानमें डालनेसे भी नेत्र पीडा शांत होती है तथा बकरी वा गायके दूधमें रुईका फोहा भिगोकर आंखपर बांधे सबेरे खोले तो नेत्रपीडा जाय, परंतु दूध कचा और ताजा होना चाहिये. तथा अधकुटे लोधकी पोटली अफीमके जलमें भिगोकर आंखपर बांधे तो नेत्रपीडा जाय. तथा थोडीसी फटकरी पीसकर गायके ताजे दूधमें डाले तो दूध फट जायगा उसका पानी निकालकर फेंकदे और गाढा दूध लेकर रुईके फोहापर रखकर आंखोंपर बांधे तो नेत्रपीडा जाय. तथा मीठे अनारदानेका अर्क नेत्रमें डालनेसे भी पीडा शांत हो जाती है. तथा हरॅकी बकली, भुनी फटकरी, अफीम, लोध, रसौत, आंबाहल्दी ये दो दो माशे भर, लौंग १ माशे भर, इनको इमलीके पत्तोंके १ छटांक रसमें पकाकर टिकिया बांध लेवे. उस टिकियाको जलमें घिसकर आंखोंमें आंजे तो नेत्रपीडा

अथवा आकके पत्तोंपर घी चुपड सेंककर निचोडे और गरम अर्क कानमें डाले अथवा सुखदर्शनके पत्तेको गरम कर कानमें निचोडे, वा सहिंजनेके पत्तोंका रस कानमें निचोडे, अथवा घोडेकी लीदका रस निचोडे तो कानका दर्द जाय. सेमके पत्तोंका रस कुछ गरम कर कानमें डालनेसे चालीस दिनमें बहिरापन जाता रहता है. कानमें फुंसियां हों तो आककी छाल कुछ नमक पानीमें पकाय कानमें डालनेसे फुंसियां फुटकर बह जाती हैं.

झाईं निवारण।

कागजी नींबूके रसमें चंपाके फूल घोटकर लगावे. अथवा स्याह जीरा, काले तिल, सिरसवृक्षकी छाल बारीक पीसकर मले तो मुखकी झाईं दूर हो जाती है.

नकसीर निवारण।

बादामका तेल सूँघे और चिर्चिरेके रसमें एक छटांक गेहूँका आटा मलकर रोटी बनाय सेंककर गायके घीके साथ पांच दिन खाय अथवा सफेदचंदन, रूमीमस्तगी, इन्द्रजौ, मोथा चार चार माशे लेके भुका करे और एक छटांक शहद मिलाकर रख छोडे. प्रतिदिन प्रातःसमय छे माशे चाटे तो नकसीर बन्द हो जाय.

मृगी निवारण।

काली मिर्चको पानीसे घोटकर नेत्रोंमें लगानेसे मृगीरोगवाले मनुष्यकी मूर्छा दूर होजाती है. अकरकराको शहतमें पीसकर प्रतिदिन खाय, अथवा आकाशबेल एक माशा काली मिर्च एक माशा एक छटांक जलमें घोट छानकर प्रातःसमय पीवे तो सात दिनमें मृगी रोग जाय. दूध भात शकर खाय और कुछ न खाय. मृगी आनेके समय कागजी नींबूका रस शकरके शर्बतमें मिलाकर पिलावें. अथवा पेठेके बीजोंकी मींगी घोटकर मिश्री मिलाय पिलावें

तथा कालीमिर्च, हरेंकी बकली, सोंठ, नागरमोथा बराबर लेके पीसै और पीलूके रससे कांसेके पात्रमें खरल सुरमाके समान स्याह हो जानेपर गोली बनाय प्रतिदिन भीमसेनी कपूरके साथ घिसकर अंजन लगावै तो नेत्ररोग तिमिररोग जाय. तथा कागजी नींबू-की दो फांक कर एकमें हरेंकी छोटी छोटी दो गांठ रखकर दूसरी फांक ऊपरसे जमाय सूतके डोरेसे बांधै छायामें सुखावै इसी प्रकार सात नींबुओंमें दोनों गांठ धर धरकर छायामें सुखावै सूख जानेपर वे गांठ निकाललें फिर शहतमें घिसकर लगानेसे नेत्रोंकी लाली और खुजली दूर हो जाती है. इसीको स्त्रीके दूधमें घिसकर आंजनेसे धुंध दूर हो जाती है. तथा इन्द्रायनके फलोंमें आंबा हलदी रखकर बन्द करदे ऊपरसे कपरौटी कर चालीस दिन पर्यन्त पृथ्वीमें गाडदे फिर निकाल-कर सुरमेके समान पीस लेवे और सलाईसे अंजन लगावै तो धुंध फूल दूर हो जाय. तथा साबनके जलमें अफीमको घिसकर आंजनेसें नाखूना रोग जाता रहता है. अथवा शहदमें कानका मैल घिसकर आंजनेसे नेत्रोंका नाखूना रोग जाता रहता है. फूली कट जाती है. तथा कांचकी हरी चूडी पीसकर एक सौ बार धोये हुए गायके घीमें बीस पहरतक खरल करै और फूलीपर आंजै तो इक्कीस दिनमें फूली कट जाती है. तथा सिरसके पत्तोंका अर्क बेसनमें मिलाय रोटी बनाय घी चुपडकर खानेसे रतौंधी जाती रहती है.

कर्णरोग निवारण।

जो कन्याकी माता हो उस स्त्रीके दूधकी धार कानमें लगानेसे कानका दर्द जाता रहता है. तथा मुलहटीका अच्छा दूध कुछ गरम कर कानमें टपकावै तो कर्णपीडा जाय. तथा नौसादर पीसकर कानमें डाल ऊपरसे नींबू निचोडै तो कर्णपीडा जाय.

ज्वरं निवारयेत्' जो गिलोय "गुर्च' नीमवृक्ष' पर होती है वह अनुमानसे लेकर जलके साथ पीसे, कुछ सेंधा नमक मिलाय गरम पीवे तो तीन दिनमें ज्वर जाता रहेगा. अथवा काली मिर्च तुलसीपत्र खानेसे अथवा गुर्च और सोंठका काढा पीनेसे ज्वर नहीं रहता है.

विषमज्वरपर दृष्टान्त।

एक वैद्यजीको ज्वर आनेलगा. वैद्यजीने कोई उपाय नहीं किया एक कहावत है ' कि नाइन सबके पांव धोती है पर अपने पांव धोते लजाती है ' वैद्य सबकी दवा करते हैं पर अपनी दवा नहीं करते. कोई २ वैद्य बीमार होनेपर कह देते हैं कि अपनी दवा अपनेसे नहीं होती यह भूलकी बात है. जो रोग अकस्मात् बढ-कर ज्ञान नष्ट कर दे तो बात दूसरी है, परंतु साधारण ज्वर आजा-नेपर उसके दूर न करनेमें आलस्य करना कितनी बडी भूलकी बात है. वैद्यजीके शरीरमें ज्वर बढते बढते क्षुधा मन्द होगई, शय्याकी शरण लेनी पडी तब वैद्यजीका ज्ञान नष्ट होगया, वैद्यजीकी स्त्रीको बडी चिन्ता हुई छोटे छोटे साधारण वैद्य आकर दवा करने लगे. ज्योतिषीजीने आकर ग्रहदशा देख वर्ष निकाल-कर ग्रहोंका दान कराय महामृत्युंजय जप करना प्रारंभ किया, टोनावालोंने झाडफूँक करना आरंभ किया. अच्छे वैद्यजी तो बीमारही थे. सामान्य वैद्य जो उस ग्राममें थे सबकी दवा दो दो चार चार दिन दी गई कुछ आराम न हुई. अन्तको एक साधु वहां उस गांवमें आया, वैद्यजीकेएक मित्रने साधुजीकोअपने साथ लाकर वैद्यजीको दिखाया उसने कहा कि इनकी असावधानीसे ज्वर बढ गया और नस नसमें अपना स्थान करलिया है. इसका उपाय एक है उस उपायसे इनके प्राण बच सकते हैं. यह सुनकर विनय-पूर्वक वैद्यजीके मित्रने पूँछा, तब साधुने कहा कि एक पीपरी ठेके गुलरी वृक्षकी शाखामें गोदकर ग्रामको रक्खी जाय कि जिससे

तो मृगी रोग जाय. अथवा छे माशे वच दूध और शहतके साथ चाटै तो मृगीरोग जाय. मृगीकी मूर्च्छाके समय लौंग सोंठ पीसकर सुँघावै तो मृगी रोग जाय.

शीतज्वर निवारण ।

करेलेके आधसेर रसमें एक तोला फटकरी घोटकर चनेके बराबर गोली बनावै. जाडा आनेसे एक घंटा पहले एक गोली खाय अथवा अमलतासकी गूदी, कुटकी, हड, पिपलामूल, मोथा, इनका काढा प्रातःसमय पीनेसे शीतज्वर (जाडा बुखार) जाता रहता है. अथवा कंआके पत्ते, मकोय, कुकुरौंधा छे छे माशे सोंठ तीन माशे इनको थोडे जलमें घोंट छान एक तोला शर्बत व जूरी मिलाय पीनेसे शीतज्वर जाता रहता है. अथवा कपूर तीन माशे शहतमें घोटकर हाथ पांवके तलुवोंपर मले तो जाडा जाय. अथवा भांग काली मिर्च नमक मिलाकर फंकी बनावै. जाडा आनेसे एक घंटा पहले चार माशे अथवा जितनेमें नशा आजाय उतनी फंकी फांके ऊपरसे एक घूँट गरम जल पीवे तो जाडा नहीं आवै. अथवा सुहागेकी खील जाडा आनेसे तीन एक घंटा पहले एक एक घंटापर बताशेमें रखकर खावै तो जाडा नहीं आवै. अथवा कपूर कत्था घोटकर चना बराबर गोली बनाय एक घंटा पहले एक गोली खाय तो जाडा जाय. अथवा अंकरकरा दो माशे शिंगरफ एक माशा बारीक पीस बादामके तेलमें गरम कर हाथ पांवके तलुए छोडकर किहुनी और गोडोंतक मले, कमरपर भी एक घंटा पहलेसे मले तो जाडा नहीं आवै. अथवा अगस्तके पत्तोंका अर्क टकाभर एक घंटा भर पहले पीवै. अथवा कुकुरौंधेका आधपाव अर्क गरम कर पीवे तो चौथियाज्वर जाय, साधारण ज्वर हो. अदरख सेंधा नमक खानेसे क्षुधा बढती है, कफ दूर हो जाता है ज्वरका अंश नहीं रहता. अथवा ' गुडुची

चौकिया सुहागाका लावा ये छे छे माशे, पिपरमेंट १ माशे शहत डेढ पाव, अदरख तीन छटाँक, पहले अदरख पीसकर लुगदी बनावे उसको शहतमें पकावे फिर वंशलोचन आदि छे औषधी पीसकर मिलावे ऊपरसे पिपरमेंट मिलाय रख छोडे भोजन करते समय पहले ग्रासके साथ एक पल भर खाय अथवा भोजनोपरान्त एक अँगुलीके साथ जितना आवे उतना खाय तो हृदयकी निर्बलता (माद्दा जोफ) दूर होजावे है.

× प्लेग निवारण।

अफीम, काली मिर्च, कुचिला एक एक तोला लेके बँगलापानके अर्कमें घोटकर गोली बनावे. बलानुसार यह गोली प्रतिदिन खानेसे प्लेगका भय नहीं रहता.

अहिफेनविष निवारण।

यदि मनुष्यको अफीम चढ गई हो तो तितली वृक्षका रस अथवा वृक्ष वांटकर छानकर पिलावे तो अफीमका नशा उतर जाता है. बालकको अफीमका नशा बढ गया हो तो केलेका पट्टा भुलभुलाके निचोडले और एक दो वार पिला देवे.

उदररोग निवारण।

काली मिर्च, छोटी पीपरि, वायविडंग, धनियां, पांचों नमक, स्याह जीरा, पिपलामूल, नागकेशर, चव्य, अमलवेत, पत्रज ये दो दो तोले, सफेद जीरा, सुठी सोंठ एक एक तोला, इलायची छे माशे, अनारदाना पांच तोले, तज छे माशे इन सबका चूर्ण बनाय प्रतिदिन प्रातःसमय चार माशे प्रमाण फंकी फांककर ऊपरसे गायका मठा अथवा दहीका पानी अथवा ताजा पानी पीनेसे सब उदरविकार दूर होजाते हैं.

रातभर वह पीपरि गुलरीका दूध पीती रहे, सवेरे उस पीपरिको लाय असली शहतमें मिलाकर चाटनेसे कुछ समयमें ज्वर शान्त हो जायगा. परंतु इनका ज्वर एक वर्षसे ठहर रहा है, चालीस दिनमें ज्वर जायगा. यह कहकर साधु चला गया. वैद्यजीने चालीस दिन पीपरिका सेवन किया, ज्वर जाता रहा, शरीर आरोग्य होगया.

कासश्वास निवारण।

खाँसी और दमा बढजानेपर प्राण संकटमें होजाते हैं, इस कारण खांसी और दमाके दमनका उपाय शीघ्र करे. काली मिर्च एक तोला, पीपरि एक तोला, अनारकी छाल दो तोले, जवाखार छे माशे इनको कूट पीस चूर्ण बनाय आठ तोले गुड मिलाकर चार चार माशेकी गोली बनावे. यह गोली मुखमें रख चूसनेसे खाँसी दमा रोग शांत होजाता है, तथा एक खट्टे अनारमें अजवायन, पीपरि, काली मिर्च, काला लोन, स्वेद जीरा और थोडीसी अफीम रखकर बन्द कर देवे और कपडमिट्टी कर भूभलमें डालदे, भली भांति पक जानेपर निकालले, उसमें अनुमानसे सेंधा नमक मिलाय पीसकर गोली बना लेवे, झरबेरीके बेरके बराबर गोलियां बनावे. इस गोलीका रस चूसनेसे खांसी जाती रहती है. तथा कहरुआत-भई ६ माशे, सकरतीगाल ६ माशे, सफेद इलायचीके दाने ६ माशे, जूफा खुश्क ३ माशे, बबूलका गोंद ६ माशे, रबेसूस (मौरेठीका सत) ९ माशे, मौरेठीका मदा ९ माशे, चाकलाके बीजका आटा १ तोला, इनमें बबूलका गोंद पानीमें भिगोवे बाकी दवा कूट पीसकर गोंदमें मिलाय झरबेरीके बेरके बराबर गोलियां बनावे. इस गोलीका रस चूसनेसे भी खांसी जाती रहती है. तथा अदरखका रस शहतके साथ पीनेसे दमा रोग जाता रहता है.

हृदयरोग निवारण।

बंसलोचन, काली मिर्च, जतीम, ककर्गासगी, गुर्चका सत,

कुछ नमक डालकर पीसे और कडछीमें कुछ घी गरम कर उस पिसी पत्तीको छौंक देवे और गरमागरम रखकर बाध देवे अथवा सफेद तिल्ली पानीमें पीसकर घावपर लगावें तो घाव अच्छा हो जाता है.

अग्निव्रण निवारण।

जौ जलाकर तिलीके तेलमें मिलाकर लेप करै अथवा जीरा, मोम, रार, सिरका इनको घीमें पीसकर लेप करै अथवा दहीके जलमें पुराना गुड पीसकर अग्निसे जल जानेपर लेप करै.

मूत्रकृच्छ्रनिवारण।

सफेद इलायचीके दाने १ तोला, वंशलोचन १ तोला, सताबिरोजा १ तोला, कबाबचीनी १ तोला, गुर्चका असली सत १ तोला, चन्दनका तेल १॥ तोला, चन्दनके तेलमें सब दवा पीस छानकर मिलाय वेर बराबर गोली बनावै. १ गोली १ पाव गोदुग्धके साथ प्रातःसमय खानेसे सुजाक रोग शांत हो जाता है. तथा आंवला आध पाव, वहेडा आध पाव, रसौंत १ छटांक, कबाबचीनी आधी छटांक, मुरदाशंख १ छटांक, तूतिया छे माशे, सफेद इलायची दो तोले, पहले आंवला और वहेडेको अलग अलग हांडीमें आध आध सेर जलमें भिगोवै, तीसरे दिन एक हांडी आंचपर चढाय सब औषधियोंको कूट पीसकर मिलादे और डेढ सेर जल डालदे और मन्द मन्द आंच करै, जब औटते औटते आधा जल रह जाय तब गाढा गाढा छान लेवै, कुछ शीतल होनेपर बोतलमें भरलेवे और रख छोडे, जब पिचकारी लेना हो तब कांचकी पिचकारीसे पिचकारी लेवे, छे छे घडी उपरांत पिचकारी ले, दवाई लेते समय बोतलको हिलादे जिससे दवा एक समान हो जाय. इन्द्रीकी खाल उठाय हाथकी अँगुलियोंसे पकडकर उसमें पिचकारी रख दवा भरदे और वारंवार हिलावे.

कृमि निवारण।

छे माशे वायविडंगका चूर्ण शहत मिलाय चाटनेसे अथवा नीमकी पत्तीका रस शहत मिलाय चाटनेसे पेटमेंके कीडे (चुनचुने) मर जाते हैं.

रक्तपित्त निवारण।

पीपरिका चूर्ण शहत मिलाय चाटे अथवा अडूसेके काढेमें शहत मिलाय पीवे तो रक्तपित्त रोग शान्त होजाता है.

हिचकी निवारण।

सोंठ और पीपरिका चूर्ण शहत मिलाय चाटनेसे और जेठीमधुका चूर्ण शहत मिलाय सूँघनेसे हिचकी रोग शान्त होजाता है.

पांडु निवारण।

त्रिफलाके काढेमें थोडा शहत मिलाय पीनेसे पांडुरोग शांत हो जाता है.

तृषादाह निवारण।

मुनक्का मिश्री खानेसे और धनियांके काढेमें मिश्री मिलाय पीनेसे तृषा दाह शान्त हो जाता है.

दादखाज निवारण।

पँवारके बीज, वायविडंग, कूट, सरसों, सेंधा, हलदी इनको बराबर ले चूर्ण बनाय नीमकी पत्तोंके रसमें घोटकर लगावे तो दाद खाज जाय. और गुम्माके रसमें अफीम मिलाकर लगानेसे दाद जाता रहता है. मरिच्यादि तेल लगानेसे खाज जाता रहता है.

वानरव्रण निवारण।

यदि वानर काट खाय और घाव हो जाय तो अरहरकी पत्ती

आंवला, हर्र, वहेडा, देवदारु, हलदी, नागरमोथा छे छे माशे ले काढा बनाय एक तोला शहत मिलाय पीवै. अथवा १ रत्ती वंग-भस्म शहतमें मिलाकर खाय. गोखरूपाक सव प्रकारके प्रमेहोंको शान्त करताहै, परंतु चिंता, श्रम, तीक्ष्ण वस्तु, मद्यमांस खटाई कफकारक पदार्थ गुड इनसे परहेज करता रहे.

सफेद दाग निवारण।

सफेद दागकी तुरन्त दवा करना चाहिये. नहीं तो बढकर शरीरमें फैल जाता है. थूंहरका दूध दागपर मले. मिलायेका रस मले तो स्थान सूजकर पानी निकल जायगा, सफेदी दूर होजा-जायगी. अथवा नीमके सौ पत्ते पीसकर खाय और नीमके पत्तोंके काढेसे दागको धोवै. अथवा सुहागा, चीता, मजीठ महीन पीसकर अँगूरी सिरकामें मिलाय लगावै और मलै तो सफेद दाग जाता रहे.

वन्ध्यादोष निवारण।

मिथ्याहार विहार करनेसे वात पित्त कफ कुपित होकर स्त्रियोंकी योनिमें रोग उत्पन्न होजाता है, तथा स्त्रियोंके सात दोष होते हैं जिनसे गर्भ नहीं रहता. १ जिस छोटी स्त्रीका पुरुष बडा हो उसके संभोगसे फूल जल जाता है, गर्भ नहीं रहता. २ स्त्रीके फूलमें पवन बठनेसे गर्भ नहीं रहता, ३ स्त्रीके फूलमें मांस बढ जानेसे गर्भ नहीं रहता. ४ स्त्रीके फूलमें अग्नि प्रवेश होनेसे गर्भ नहीं रहता. ५ स्त्रीके फूलमें शीतला होनेसे गर्भ नहीं रहता. ६ स्त्रीके फूलमें जाला होनेसे गर्भ नहीं रहता. ७ स्त्रीके फूलमें कीडा बैठ जानेसे गर्भ नहीं रहता तथा भूतादि बाधा होनेसे भी गर्भ नहीं रहता. इन दोषोंकी परीक्षा यह है. १ स्त्री रजस्वला होने उपरान्त जिस दिन स्नान करै उस दिन संभोग करने उपरांत पुरुष पूँछे कि हे प्रिये! तुम्हारा

जिससे दवाका असर सीवनतक पहुँचे यह पिचकारी परीक्षित है इससे सुजाक रोग जाता रहता है, परंतु लाल मिर्च, खटाई, अधिक गरम वादी वस्तु व तेल कडुवा न खाय, परहेज करे.

उपदंश निवारण ।

सौंफको निरन्तर प्रातःसमय सेवन करै अथवा सौंफका पाक बनाकर सेवन करै तो उपदंश, बवासीर आमवात, वमन ये रोग शांत हो जाते हैं. नीमकी पत्तीके काढेसे गरमीके घावोंको धोवै और त्रिफलाकी भस्ममें शहत मिलाय लगावै तथा नीलाथोथा, सिन्दूर, कबीला, मुरदासंख, गन्धक, रसकपूर, पारा इनको पीसकर एक सौ बार धोये हुए गायके घीमें मिलाय लगानेसे उपदंश (आतशक-गरमी) के छाले अच्छे हो जाते हैं.

अर्श निवारण ।

काली मिर्च १ तोला, पिपलामूल २ तोले, जीरा १ तोला, बडी हडका बकल ५ तोले, पीपरि १ तोला, चीतेकी छाल ४ तोले, शुद्ध भिलावा ८ तोले, जवाखार २ तोले, जिमीकन्द १६ तोले इन सबको कूट पीस छानकर सबसे दूना गुड मिलाय झरबेरीके बेर बराबर गोलियां बनावे. प्रातःसमय १ वा २ गोली जलके साथ खानेसे छे प्रकारका असाध्य भी बवासीर रोग शान्त होजाता है. मस्सेपर निबौलीकी मींगी, रसौत, चोनियाकपूर जलके साथ बारीक पीसकर लेप करै अथवा थूहरके दूधमें हलदी भिगोवै दूसरे दिन घिसकर मस्सेपर लेप करै.

प्रमेह निवारण ।

हलदी १ तोला, आंवला १ तोला थोडे जलमें भिगोय प्रातःसमय घोट छानकर शहत मिलाय पीनेसे प्रमेहरोग शांत होजाता है. तथा गुर्चका रस १ तोला छे माशे शहत मिलाय पीवै. अथवा

निमें रक्खे, चौथे दिन स्नान कर पुरुष योगसे गर्भ रहे. जो स्त्री कहे कि कुछ नहीं दुखता है चित्त भ्रमसा होता है और भय लगता है, स्त्रियां दिखाई देती हैं तो भूतादि दोष जानना. उसकी औषधी अनेक यंत्र मंत्र तंत्र हैं. जो इस ग्रन्थके अन्यमार्गोमें लिखे जायँगे.

हितैषी दोहे ।

पितु माता युवती तनुज, होयँ जासु अनुकूल ।
निरुज-शरीर विचार मन, यही स्वर्ग मत भूल ॥ १ ॥
जो नर परनारी निरत, परनर रत जो नार ।
इक पल पावत शांति नाहिं, चिंता दुःख अपार ॥ २ ॥
अबला अग्निसमान इव, देखि रहे न सुहाय ।
दूरि कि आंच सुहावनी, छुए तुरत जरि जाय ॥ ३ ॥
जगत समुद्र अगाध है, सुख दुख भोग तरंग ।
उपजत मिटत स्वभावसे, यही सनातन ढंग ॥ ४ ॥
अँधियारे घरमें पवन, आवे जहाँ न जाय ।
भूत वसे त्यहि गेहमें, मानुष चुनि चुनि खाय ॥ ५ ॥
दिवा शयन निशि जागरण, क्षुधा रहित कछु खाय ।
निश्चय उपजै रोग तन, कहत वैद्य मन लाय ॥ ६ ॥
जब लग शुद्ध क्षुधा नहीं, तब लग कर उपवास ।
यही एक औषधि बडी, भाषत करि विश्वास ॥ ७ ॥
मधुर वचनसों बोलिये, सुख उपजै चहुँ ओर ।
वशीकरण यह मंत्र है, तजिये वचन कठोर ॥ ८ ॥
विना पथ्य औषध वृथा, समुझिलेहु बुधिधाम ।
पथ्यसहित जग नरनको, नाहिं औषधसे काम ॥ ९ ॥
अन्न वस्तु संयोगसे, तनमें उपजै व्याधि ।
बिन विचार वरतें जु जन, मनमें प्रगटै आधि ॥ १० ॥

कौनसा अंग दुखता है. जो स्त्री कहे कि माथा दुखता है तो जानै कि फूल जल गया है. उसकी औषध यह है कि, सेंधा, लहसुन, समुद्रफेन तीनों बराबर लेकर घिसे और फोहा बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे, चौथे दिन स्नान करे तो पुरुष योगसे गर्भ रहेगा. २ जो स्त्री कहे कि अंग कांपता है तो जानै कि फूलमें पवन भराहै, उसकी औषधी यह है कि, हींग १ टंक प्रमाण लेके तिलके तेलमें फोहा बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहे. ३ जो स्त्री कहे कि कमर दुखती है तो फूलमें मांसका बढना जानना, उसकी औषधी यह है कि, हाथीका नख, कालाजीरा, अंडीका तेल मिलाय पीसकर फोहा बनावे तीन दिन योनिमें रख चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहै. ४ जो स्त्री कहे सब शरीर दुखता है तो जानै कि फूलमें अग्नि पडी है, उसकी औषधी यह है कि, तिलके तेलमें सेवतीके फूलके रसका फोहा रुईका बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहे. ५ जो स्त्री कहे कि पिंडुरी दुखती है तो जानै कि फूलमें शीतला है, उसकी औषधी यह है कि राई, कायफल, हर्रे, बहेडा इनको पीस गोली बनाय साबुनके पानीसे फोहा बनाय गोली लपेट तीन दिन योनिमें रक्खे चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहै. ६ जो स्त्री कहे कि पेट दुखता है तो जानै कि फूलमें जाला है. उसकी औषधी यह है कि, जीरा, सुहागा, वच पानीमें पीस फोहा बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे, चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहे. ७ जो स्त्री कहे कि पेडू दुखता है तो जानै कि फूलमें कीडा बैठ गया है, उसकी औषधी यह है. केशर कस्तूरी एक एक माशा लेके ४ गोली बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे, चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहे. आंखें दुखनेको बहनेसे भी फूलमें जाला जानना उसकी औषधी आंवला, बहेडा पीस शहतमें गोली बनाय तीन दिन यो-

की आवश्यकता है वह केवल इतनीही है कि उनको नैतिक और धार्मिक शिक्षा अवश्य दीजाय, गृहस्थोपयोगी आवश्यक काम सिखलाये जायँ, धातृशिक्षा और पाकविद्या भी बतलाई जाय, धार्मिक कामोंमें वे पुरुषकी गांठ जोड संगिनी बनी बनाई ही हैं, पुरुष स्त्रीका बाह्य कारण है तो वे अन्तःकरण हैं. यदि शरीर है तो वे प्राण हैं. प्रकृतिने जैसा उनको कोमलांगी और स्वभावतः भीरु बनाया है वैसेही उनको गृहदेवी बनाकर शिशुपालनका सुखद काम सौंपकर अपनी उचितव्रता पूर्ण पालन किया है. धर्मशास्त्रका एक एक अक्षर सामाजिक दृष्टिसे स्त्री और पुरुषोंके लिये सदा सुखप्रद है. धन्य हैं वे गृह जिनमें पतिपरायणा सती देवियां और एकपत्नीव्रतधारी पुरुष निवास करते हैं. संसारसुखके लिये यही एक कल्याण मार्ग है, कि दोनों दाहिने बायें अंगके समान कार्य विभाग रखते हुए एक तनु होकर रहें, जिससे वे उभय लोकमें परमानन्दके भागी रहें. आगे कोका पंडितने जो देशान्तर परिभ्रमण करके देशदेशके स्त्री पुरुषोंके स्वभाव, रीति, व्यवहार और स्वरूप आदिका वर्णन किया है, उसको हमने केवल मन बहलावका हेतु समझकर लिखना उचित नहीं समझा है.

दोहा—पर उपकार विचारि उर, गुरुपद शीश नवाय।
कोका वैद्यक सार यह, लिख्यो सुअवसर पाय ॥ १ ॥
त्रिनग नन्द शशि वर्ष शुभ, विक्रमाब्द शुचि मास।
शुक्लसप्तमी शुक्र दिन, पूर्यो चित्त हुलास ॥ २ ॥

इति श्रीमदयोध्यामण्डलान्तर्वर्तिलखीमपुरतीरीनिवासि-ज्योतिर्वित्पंडितनारायणप्रसादमिश्रविरचिते कोकसार वैद्यक-ग्रन्थे उत्तरभागः समाप्तः।

शुभमस्तु।

आधि कष्ट है चित्तका, ताको हरै विचार।
व्याधि कष्ट है देहका, त्यहि औषधसे टार ॥ ११ ॥
मिश्रीयुत गोदुग्धमें, डारै निर्मल नीर।
बाढै बुद्धि विवेक बल, करै पान मतिधीर ॥ १२ ॥
समय साधि भोजन करै, समय साधि सब काम।
यह उपाय आरोग्यहित, पावत सब गुण धाम ॥ १३ ॥
बहु विचारि दोहे लिखे, नारायण सुखकन्द।
वरतै नर हितकर समुझि, भोगै परमानन्द ॥ १४ ॥

महर्षियोंने प्रकृतिके गूढ रहस्यपर ध्यान देकर स्त्रीजातिकी संरक्षा और उनके सम्मानपर पूरा ध्यान दिया है. जिस प्रकार एक शरीरके दो भाग हैं एक बायां, दूसरा दाहिना; बायां निर्बल और दाहिना निसर्गतः सबल होता है, इसी प्रकार प्रकृतिके वाम-भागसे स्त्री और दक्षिण भागसे पुरुष उत्पन्न हुआ है इस कारण अबला, वामा, वामांगी आदि नाम स्त्रियोंके हुए, स्त्रियां स्वयं अपनी रक्षा आप करनेमें सर्वथा असमर्थ हैं, इस लिये आत्मरक्षार्थ पुरुषोंके आधीन रहनाही उनके लिये श्रेयस्कर है. यदि स्त्रियोंको स्वतंत्रता देदीजाय तो वे कदापि अपनी रक्षा आप नहीं कर सकतीं, किन्तु गार्हस्थ्यके सारे सुखोंका विनाश हो जायगा. संसारसे पतिव्रत सरीखा पुनीत धर्म उठकर व्यभिचारका प्रचार हो जायगा. सन्तानोत्पत्तिमें भी बाधा पडजायगी और संतानोंका पालन पोषण भी ठीक न होसकेगा. व्यापारादिद्वारा स्त्रियां विशेष रीतिसे धनोपार्जन नहीं करसकतीं और बालक जनने उपरान्त बहुतकालपर्यन्त निर्बल रहती हैं. बालकके पालन पोषणकी चिन्तासेही उन्हें अवकाश नहीं मिल सकता है. नैतिक वा सामाजिक दृष्टिसे ऐसी स्वतंत्रता तो विषके समान है. जिस स्वतंत्रता से उनको हानि पहुँचे. गृहेश्वरी और गृहलक्ष्मी बनकर रहनेहीमें उनका और सबका परमहित है. वर्तमान कालमें जो कुछ प्रचार

जाहिरात.



की.रु.आ.

अष्टाङ्गहृदय–(वाग्भट) वाग्भटविरचित मूल मोटा अक्षर. २–८

अष्टाङ्गहृदय–(वाग्भट) वाग्भटविरचित तथा पं० रविदत्तकृत भाषाटीकासहित और पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र संशोधित । जिसमें सूत्रस्थान, शारीरकस्थान, निदानस्थान. चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, उत्तरस्थान इत्यादिमें संपूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, निदान, लक्षण और क्वाथ, चूर्ण, घी, तैल आदिसे अच्छी प्रकार चिकित्सा वर्णित है. ... ८–०

अमृतसागर हिन्दी भाषामें २–८

अर्कप्रकाश भाषाटीका रावणकृत (सब औषधियोंके गुण व अर्क निकालनेकी क्रिया) ०–१४

अभिनवनिघंटु (द्वितीय भाग) यह यूनानी दवाइयोंका अत्युत्तम, अपूर्व निघंटु है, इसमें हरएक दवाईका प्रसिद्ध नाम और यथा प्राप्त संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी नामोंका वर्णन है. २–८

अंजननिदान भाषाटीका अन्वयसहित. ०–८

आयुर्वेद सुषेण भा० टी० .... ०–१४

चिकित्साचक्रवर्ती–यह अकबर बादशाह निर्मित मुजर्रबात अकबरीका सरल हिन्दी अनुवाद है इसमें सैकडों फकीरी नुसखे हैं १–०

इलाजुलगुर्बा–वैद्य और हकीमोंके लिये बडे कामकी वस्तु है इसमें शिरसे पावतकके सब रोगोंके लक्षण निदान और उनके नुसखे एक २ रोगपर दश दश बीस २ दिये हैं १–४

अन्तिम सूचना.

यह कोकापंडित कृत वैद्यक ग्रन्थका सार लिखकर प्रकाशित किया गया, इसके आगे अन्यभाग प्राप्त होनेपर द्वितीय भाग भी प्रकाशित किया जायगा. अन्य भागोंकी खोजमें हैं निश्चय है कि ढूँढनेपर अवश्य खोज लग जायगा. इसके उदाहरणमें एक कहावत प्रसिद्ध है कि,

जिन ढूँढा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ ।
मैं बपुरे क्या पाइयां, जो रहे किनारे बैठ ॥ १ ॥

शुभम् ।

—•—

१५ ८।१६.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस
कल्याण-मुम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास
" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस
खेतवाडी-मुम्बई.



आयुर्वेदचिन्तामणि अर्थात् मिश्रनिघंटु (चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, राजनिघण्टु, आत्रेयसंहिता, राजवल्लभ और वैद्यक निघंटु इत्यादि अनेक ग्रंथोंसे संगृहीत और अनुवादित.) १-१२

कुमारतंत्र रावणकृत भाषाटीका ०-८

पथ्यापथ्यचंद्रोदय भाषाटीका व्यंजन बनानेका ग्रंथ. १-८

चरकसंहिता-(चरकऋषिप्रणीत) टीका टकसाल निवासी वैद्यपञ्चानन पं० रामप्रसाद वैद्योपाध्यायकृत प्रसादनी भाषाटीकासहित । चरकके आठों स्थान एकसे एक अपूर्व होनेपरभी " चिकित्सास्थान " तो अद्वितीय है उसमें निरोग मनुष्यके लिये वे सहज प्रयोग लिखे हैं कि, वह कभी बीमारही न हो और रोगी चिकित्सा करनेपर तत्काल निरोग हो । वैद्यमात्रको यह ग्रन्थ अवश्य संग्रह करना चाहिये । पहलेसे अबकी वार बहुत बड़ा होगया है जिसकी सुन्दर सुनहरी दो जिल्द बन्धी हैं. ९-०

चिकित्साखण्ड भाषाटीका प्रथम भाग ४-०

ज्वरतिमिरनाशक भाषाटीका सर्व प्रकारके ज्वरोंकी अच्छी २ अनुभवी दवाओंका संग्रह. १-०

जर्राही प्रकाश-जर्राही (शस्त्रक्रिया) संबंधी सब प्रकारके विषयोंका वर्णन है १-८

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना, कल्याण-मुंबई.